धर्म-पालन

प्रार्थना-सभा में दिये गए गांधीजी के प्रवचन —

स[illegible] साहित्य मंडल प्रकाशन

१९४७

महात्मा गांधी की
अन्य पुस्तकें

१. आत्मकथा (संपूर्ण)
२. संक्षिप्त आत्मकथा
३. अनीति की राह पर
४. हिन्द-स्वराज्य
५. ब्रह्मचर्य
६. अनासक्तियोग
७. गांधी-विचार-दोहन
८. सर्वोदय
९. ग्राम-सेवा
१० मंगलप्रभात
११. सत्यवीर सुकरात
१२. गीताबोध
१३. रचनात्मक कार्यक्रम

धर्म-पालन

[नई दिल्ली में दिये गए गांधीजी के प्रार्थना-प्रवचन]

१ अप्रैल से १६ जून तक

१६४७

संग्राहक

श्री. प्रभुदास गांधी

१६४७

सस्ता साहित्य मंडल

नई दिल्ली

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय,
सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली ।

पहली बार : १९४७
मूल्य
डेढ़ रुपया

मुद्रक
अमरचन्द्र
राजहंस प्रेस,
दिल्ली, ३४-४७ ।

पूज्य महादेव भाई को

भूमिका

इस बार आगा खां महल से छूटने के कुछ समय बाद से पूज्य गांधीजी ने शाम की प्रार्थना के बाद प्रवचन करने की प्रथा डाल दी है। उसमें वे अपने आराध्यदेव जनता जनार्दन के आगे अपने हृदय की झंकार सुनाया करते हैं और उसके द्वारा देश के दुःख, दारिद्र्य, वैमनस्य और इनसे होने वाले मानवता के उच्छेदन को रोकने का प्रयत्न करते हैं।

कोई ढाई हजार बरस पहले भगवान् तथागत भी जहां-जहां विहार करते थे, अपने हृदय की वाणी 'संघ' को नए-नए ढंग से सुनाया करते थे। और पांच हजार वर्ष पहले भगवान् व्यास ने भी जनता को कल्याण मार्ग पर ले जाने के निमित्त महाभारत का अथक गान किया था।

जब बारिश होती है या नदी जब अपने दोनों किनारे के प्रदेशों को जल-प्लावित करती है तब वह यह नहीं देखती कि कौन-सी भूमि उपजाऊ है, कौन-सी बंजर है; कौन-सा बीज निःसत्व है कौन-सा सजीव है; या कौन-सा जुता हुआ और पानी को पचा लेने वाला खेत है और कौन-सा कभी न पसीजने वाले कठोर-से-कठोर पत्थरों का ढेर है। वह तो निरपेक्ष भाव से बरस पड़ती है और नदियां उसका जल अपनी बाढ़ में बहा ले जाती हैं। बरगद या पीपल के महान् वृक्षों से लगाकर नजर में भी न आ सकने वाले घास के सूक्ष्म बीज के लिए जितने जल की जरूरत पड़ती है उससे हजारों गुनी अगाध जल-राशि हर चौमासे में व्यर्थ ही खारे समुद्र में जा मिलती है। फिर भी जितनी बूंदें काम आती हैं, वे अमृत-तुल्य सिद्ध होती हैं। कुदरत की इस देन का अधिक-से-अधिक उपयोग करने को जिस देश के लोग अपनी बुद्धि, शक्ति और बाहु-बल काम में लाते हैं और बांध बनाकर, नहरें निकालकर अनेप

खेतों को हरे-भरे रखते हैं वह देश सुसंस्कारी और उन्नत साबित होता है।

इसी तरह हजारों वर्षों के बाद जब मानव-समाज के कल्याण के लिए किसी महापुरुष के हृदय का स्रोत उमड़ पड़ता है और सनातन सत्य के ज्ञान की बाढ़ आती है तब उसका बहुत कम हिस्सा ही उपयोग में आता है और ज्यादातर यों ही बह जाता है। महर्षि की आर्षवाणी के तेज में हमारी बुद्धि चौंधिया जाती है और हमारा हृदय इतना उथला साबित होता है कि जिनको हमने अपना परम मार्ग-दर्शक माना है उसकी बातें भी हमारे दिल में नहीं समा पातीं, हम सिर खुजाते रह जाते हैं और उनका वाक्-प्रवाह बहकर निकल जाता है।

उत्सुक और मिहनती किसान को जिस तरह नदी के बांध से निकाली हुई नहर जीवन-दान देती है, उसी तरह इच्छुक लोगों को महापुरुष की आर्षवाणी का संग्रह वर्तमान, निकट भविष्य और सुदूर भविष्य में भी काम दे सकता है। हमारे जमाने का यह सौभाग्य है कि गांधीजी जैसे महापुरुष की आर्षवाणी सुनने और पढ़ने का हमें सौभाग्य प्राप्त हुआ। गांधीजी ने जो कहा और लिखा उसके संग्रह अनेक भाषाओं में हुए हैं। पर यह दुःख की बात है कि जिस भाषा में और जिस बोली में वह बोलते हैं उस भाषा और उस बोली में गांधी-वाणी के संग्रह बहुत विरल हैं। गांधीजी ने अपनी लेखनी की ओजस्विता अंग्रेजी में दरसाई है और अपनी साहित्यिक प्रतिभा का अमोघ प्रवाह गुजराती में बहाया है। पर जिस जोम और तन्मयता से प्रार्थना के समय एकत्र जनता के सामने वह अपने हृदय को उंडेलते हैं उसका संग्रह, उन्हीं की भाषा और बोली में कहीं नहीं मिलता। यह संग्रह इस दिशा में शायद सबसे पहला नम्र प्रयत्न है।

पिछले साल दिवाली के दिनों में गांधीजी नई दिल्ली की भंगी-बस्ती में ही ठहरे हुए थे। उस समय बंगाल से और विशेषकर

नोआखाली से भीषण और हृदय-द्रावक समाचार आये। इसके कारण घर-घर में शोक छा गया—देश में ऐसी उदासी छा गई कि कई जगह दिवाली नहीं मनाई गई। इस कठिन काल में देश के लोगों का ध्यान गांधीजी की ओर जाना ही था। बहुतों ने तो निराश होकर इस सारे हत्या-कांड और अकथनीय अत्याचारों के लिए उनकी अहिंसा-नीति को जिम्मेदार ठहराया। और गांधीजी के अंतेवासियों ने पूछा कि ऐसे प्रसंग पर अहिंसा से मान-मर्यादा का रक्षण कैसे करें ?

इस महा व्यथा को अनुभव कर अहिंसात्मक मार्ग की खोज में गांधीजी ने नोआखाली प्रस्थान किया और संकल्प किया कि वहां मैं अपनी अहिंसा की कसौटी करूंगा और फिर बताऊंगा कि सच-मुच में अहिंसा का दिवाला निकल गया है, या अहिंसा की युद्ध-नीति में कहीं भूल हुई है या अहिंसा की बात करने की मुझमें योग्यता ही नहीं है। इस तरह 'करूंगा या मरूंगा' का निश्चय लेकर वह वहां गये। लोगों के लाख मना करने पर भी वे नोआखाली के स्मशान बने हुए देहातों के बीच जा बैठे। और शरीर को ठिठुरा देनेवाली सरदी में बीहड़-से-बीहड़ पगडंडियों पर सैकड़ों मील वृद्धत्व से कांपती हुई शरीर-यष्टि लेकर नंगे पैर लेकिन मजबूत कदम से महीनों घूमे। वहां यद्यपि गांधीजी नोआखाली की हिंसाग्नि को निर्मूल तो न कर पाये और न लोग उस भय से सर्वथा मुक्त ही हुए। पर एक चीज वहां उन्होंने जरूर पा ली है। वह यह कि हिंसा-द्वेष रूपी जहरीले नाग से भय खाने की जरूरत नहीं है, रोने-धोने की जरूरत नहीं है, और न निराश होने ही की कोई बात है। अपना साहस और धैर्य कायम रख लें तो हमने कुछ खोया नहीं है। इन बातों का स्वानुभव लेकर वह नोआखाली से लौटे हैं और बार-बार ऐसा अनुभव करने का उनका उत्साह चौगुना हो गया है।

इस बार जब (अप्रैल १९४७) गांधीजी दिल्ली आए तब यहां भी सांप्र-दायिक वैमनस्य की आग अन्दर-ही-अन्दर भभक रही थी। छुट-पुट हमले

होते रहते थे । पंजाब की विनाश-लीला चरम सीमा पर थी और हिंदू समाज का चित्त अत्यन्त क्षुब्ध हो उठा था । लोग निराश-से होकर आहें भरते थे कि 'हाय अब हिंदू जाति का क्या होकर रहेगा ? यह अहिंसा तो हमें बचा ही नहीं सकती और आततायियों का उत्पीड़न करने वाला कोई नजर नहीं आता । अप्रैल महीने के इसी वातावरण में गांधीजी की प्रार्थना-सभायें यहां शुरू हुईं । तब से लगाकर गांधी जी तीन बार यहां आये । और इस बीच देश के राजनैतिक आकाश में कई बड़े-बड़े उथल-पुथल हुए । अंत में देश के विभाजन की योजना बनी और सब दलों द्वारा स्वीकार हुई । गांधीजी ने हर रोज प्रार्थना के बाद लोगों को और उनके द्वारा सारी पीड़ित मानवता को अभय-अमृत का पान कराया और प्रेम-भाव को कायम रखते हुए अपने विरोधियों से कैसे जीता जाय इसका प्रत्यक्ष उदाहरण भी बताया। रोज-रोज बारी-बारी से पुरुष, स्त्री और बच्चों ने प्रार्थना के कुरान की आयत वाले अंश के पाठ पर बाधा डाली । पर अन्त में गांधीजी ने सक्रिय अहिंसा के सहारे सबको शांत कर दिया और हजारों आदमी प्रसन्नता और निर्भीकता के साथ शांतिपूर्वक उनकी प्रार्थना में शरीक होते रहे ।

इन प्रवचनों में अगर कोई एक बात शुरू से अखीर तक कही गई है तो वह यही है की 'धर्म-रक्षा' केवल नारे लगाने से नहीं होती । आततायियों के दोषों का वर्णन करना ही पुरुषार्थ नहीं है । अगर हम अपने धर्म के प्रति सच्चे हैं—संजीदा हैं तो हमारा एक-मात्र कर्तव्य है अपने धर्म का पालन । धर्म की ओर से पीठ फेरकर पुरुषार्थी कहलाना असंभव है । धर्म-रक्षा में ढिलाई करके स्वरक्षा की बात करना व्यर्थ है । हिंदू धर्म को बचाना हो, अपनी मान-मर्यादा की रक्षा करनी हो तो इसी 'धर्म-पालन' द्वारा उन्हें बचाया जा सकता है; ऐसा गांधीजी का जीवित विश्वास है । वही विश्वास इन प्रवचनों में कूट-कूट कर भरा हुआ है ।

गांधीजी की भाषण-कला अपने ढंग की है। वे भाषण नहीं करते, बात करते हैं। ऐसे में उनकी भाषा सीधी-सादी होते हुए भी होती होती है कि उसे लिपि-बद्ध करना बड़ा कठिन होताहै। जब जल-प्रपात की तरह गांधीजी की वाग्धारा बहती है तब उसे सारी की-सारी झेलना कठिन हो जाता है। उसको अपने मस्तक पर झेलने में समर्थ, जो शंकर समान महादेवभाई देसाई थे, वह आज हमारे बीच नहीं रहे। उनका अभाव हमें इन प्रवचनों को पढ़ते समय बार-बार खटकता ही रहेगा।

इन प्रवचनों को दिल्ली के सुप्रसिद्ध पत्र दैनिक 'हिंदुस्तान' के लिए मैं नियमित रूप से लिखता रहा हूं। इनको पुस्तकाकार छापने की स्वीकृति देने के लिए उसके सम्पादक और संचालक का मैं कृतज्ञ हूं।

इनमें अनेक जगह पर मैं बात को ज्यों-की-त्यों नहीं ले पाया हूं। कुछ उद्गार सुनने में जैसे सरल होते हैं, लिखते समय स्पष्ट करने के लिए उनको कुछ बदलना पड़ता है। मैं ऐसा दावा नहीं कर सकता कि गांधीजी का कहा हुआ सोलहों आना इसमें आ गया है। लेकिन इसमें गांधीजी की दृष्टि या हेतु को बताने में भूल न हो इस बात की यथा सम्भव पूरी सावधानी रखी गई है। फिर भी कहीं भूल मालूम पड़े तो सुज्ञ वाचक और प्रवचन सुनने वाले श्रोतागणों से प्रार्थना है कि वे हमें अवश्य ही सूचित करने की कृपा करें ताकि अगले संस्करणों में उन्हें सुधारा जा सके।

नई दिल्ली
१६-६-४७

प्रभुदास छगनलाल गांधी

विषय-सूची

: १ :

अच्छा हिंदू अच्छा मुसलमान भी है

नई दिल्ली, १ अप्रैल १९४७

कल गांधीजी वायसराय-भवन से देर से लौटे थे इस कारण सायं-प्रार्थना में शामिल नहीं हो सके थे। आज एशियाई सम्मेलन की बैठक से समय पर लौट आये थे और प्रार्थना ठीक समय पर शुरू हुई। लेकिन कुरान की आयत का पाठ शुरू होते ही कुछ शोर हुआ और प्रार्थना रोकना पड़ी। इससे पहले प्रार्थना में ऐसा कभी नहीं हुआ था।

असहिष्णुता

गांधीजी की प्रार्थना में कुल मिलाकर छः विभाग रहते हैं। सबसे पहला बौद्ध-धर्म का जापानी भाषा का मंत्र, दूसरा संस्कृत में भगवद्गीता के श्लोक। इसके बाद तीसरा विभाग है अरबी भाषा में कुरान से एक कलमा। चौथा, फारसी भाषा में ज़रदुश्त धर्म का मंत्र। फिर पांचवां हिन्दी भाषा में या किसी भी हिन्दुस्तानी प्रांतीय भाषा में भजन, और छठा विभाग है राम-नाम या नारायण नाम की धुन। आज पहले दो विभाग की प्रार्थना हो जाने के बाद तीसरा विभाग शुरू करते हुए ज्यों ही कुमारी मनु गांधी ने कुरान के कलमे का पहला शब्द उच्चारा कि प्रार्थना-सभा में से एक युवक उठ खड़ा हुआ और शोर मचाने लगा—"बस-बस बंद कीजिए, बहुत होगया। अब हम यह नहीं बोलने देंगे। बहुत सुन लिया।" प्रार्थना सभा के श्रोताजनों में से दूसरे लोगों ने उससे

कहा—"बैठ जाओ।" पर वह नहीं बैठा। वह आगे बढ़ता हुआ बिलकुल गांधीजी के मंच के पास आकर खड़ा हो गया और कहने लगा, "आप यहांसे चले जाइए। यह हिन्दू मंदिर है। यहां मुसलमानों की प्रार्थना हम नहीं होने देंगे। आपने बहुत बार यह कह लिया, पर हमारी मां-बहिनों की हत्या पर हत्या हो रही है। हम अब यह सब सहन नहीं कर सकते।"

जब उसने गांधीजी को चले जाने के लिए कहा तो गांधीजी ने उससे कहा—"आप जा सकते हैं। आपको प्रार्थना न करनी हो तो दूसरों को करने दें। यह जगह आपकी नहीं है। यह ठीक तरीका नहीं है।" परन्तु वह लड़का, जो करीब २५-२६ वर्ष की उम्र का दीखता था, चुप हुआ ही नहीं। तब लोगों ने उसको घेर लिया और "चुप हो जाओ", "बैठ जाओ" की आवाजें बढ़ने लगीं। इसपर गांधीजी ने अपने हाथ से माईक्रोफोन नीचे रख दिया और आसन से उठकर बिलकुल मंच के किनारे जा खड़े हुए। वह लड़का भी वहीं गांधीजी के बिलकुल पास आ गया। लोग उसे पीछे की ओर खींच रहे थे और वह डटा हुआ अपनी बात और भी आवेश से दोहराता जा रहा था।

विरोध करके प्रार्थना नहीं

गांधीजी ने लोगों से उस लड़के को छोड़ देने के लिए और शांति से बैठ जाने के लिए बारबार कहा। इधर मंच पर से एक महिला भी गांधीजी और उस लड़के के बीच, गांधीजी की सहायता के लिए, खड़ी हो गई, तो गांधीजी ने उन को भी हट जाने के लिए कहा। उन्होंने कहा—'मेरे और इसके बीच कोई न आवे।' लेकिन इतने परिश्रम से गांधीजी थक-से गये। उनकी आवाज धीमी पड़ गई। उन्होंने अपने सारे गुस्से को, जो कि प्रार्थना में

विघ्न आने के कारण अत्यन्त तीव्रता के साथ उनके चेहरे पर प्रकट हो रहा था, सावधानी से मन-ही-मन पी लिया और बहुत ही शांति से इसे निपटाने का प्रयत्न करने लगे। लेकिन उस लड़के ने तो अपनी पूरी ताकत से गांधीजी के साथ बहस छेड़ दी। यह देखकर लोगों को धीरज न रहा और सबने मिल-कर उसे जबरदस्ती प्रार्थना-सभा से बाहर कर दिया।

यह देखकर गांधीजी ने कहा–"यह आपने ठीक नहीं किया। उस लड़के को आपने जबदरस्ती से निकाल दिया। ऐसा नहीं करना चाहिए था। अब वह यही कहेगा कि मैंने विजय पाई है। वह गुस्से में था। प्रार्थना नहीं सुनना चाहता था। पर मैं जानता हूँ कि आप सब तो प्रार्थना सुनना चाहते हैं। मैं किसीका विरोध करके प्रार्थना नहीं करना चाहता। अब आगे की प्रार्थना मैं छोड़ देना चाहता हूँ। जो प्रार्थना मैं करता हूँ वह आप सब जानते हैं। नोआखाली जाने से पहले भी आपने प्रार्थना सुनी है। उसमें इस मुसलमानी प्रार्थना के बाद पारसी प्रार्थना है। फिर यह लड़की आपको मधुर भजन सुनाती और फिर रामधुन होती। मैं अब रामधुन भी छोड़ता हूँ; पारसी प्रार्थना भी छोड़ता हूँ। आज अबिल्ला अरबी भाषा में कुरान के एक मंत्र का पहला शब्द है। इसे कहने से, आप यह समझते हैं कि, हिन्दू धर्म का अपमान होता है। पर मैं एक सच्चा सनातनी हिन्दू हूँ। मेरा हिन्दू धर्म बताता है कि मैं हिन्दू प्रार्थना के साथ-साथ मुसलमान प्रार्थना भी करूं, पारसी प्रार्थना भी करूं तथा ईसाई प्रार्थना भी करूं। सभी प्रार्थना करने में मेरा हिन्दूपन है, क्योंकि वही अच्छा हिन्दू है जो अच्छा मुसलमान भी है और अच्छा पारसी भी है। वह लड़का जो कह रहा था कि यह हिन्दू मन्दिर है, यहां ऐसी प्रार्थना नहीं की जा सकती, सो यह वहशियाना बात है। यह मन्दिर तो भंगियों का मन्दिर है। अगर चाहे तो

एक अकेला भंगी मुझे यहांसे उठाकर फेंक दे सकता है। लेकिन वे मुझसे प्रेम करते हैं; वे जानते हैं कि मैं हिन्दू ही हूँ। उधर जुगलकिशोर बिड़ला मेरा भाई है। पैसे में वह बड़ा है; पर वह मुझे अपना बड़ा मानता है। उसने मुझे एक अच्छा हिन्दू समझ कर यहां टिकाया है। उसने जो बड़ा भारी मन्दिर बनवाया है उसमें भी वह मुझे ले जाता है। इतने पर भी वह लड़का अगर कहता है कि तुम यहांसे चले जाओ, तुम यहां प्रार्थना नहीं कर सकते तो यह घमण्ड है। लेकिन आप लोगों को उसे प्रेम से जीतना चाहिए था। आपने तो उसे जबरदस्ती निकाल दिया। ऐसी जबरदस्ती से प्रार्थना करने में क्या फायदा? वह लड़का तो गुस्से में था और गुस्से के मारे वह वहशियाना बात कर रहा था। ऐसी ही बातों से तो पंजाब में यह सब कुछ होगया! यह गुस्सा ही तो दीवानेपन का आरम्भ है।

दीवानापन क्यों?

"अभी इस लड़की ने जो श्लोक सुनाये उनमें यह बात बताई गई है कि जब आदमी विषयों का ध्यान करता है—विषय माने एक ही बात नहीं पर पांचों इन्द्रियों के स्वादों का ध्यान धरता है—तो वह काम में फँसता है। फिर वह क्रोध करता है और तब उसे सम्मोह यानी दीवानापन घेर लेता है। ऐसे ही दीवानेपन से देहातियों ने बिहार में ऐसी बात कर डाली कि मेरा सिर झुक गया। नोआखाली में भी ऐसे ही दीवानेपन से लोगों ने ज्याद-तियां कीं। पर बिहार में नोआखाली से ज्यादा जंगलीपन हुआ। और पंजाब में बिहार से भी ज्यादा। अगर आप लोग सच्चे हिन्दू हैं तो ऐसा नहीं करना चाहिए। कहीं कोई सभा हो रही हो और वहां कही जानेवाली बात हम नहीं सुनना चाहते हों तो हमें उठ कर चले जाना चाहिए। चीखने-चिल्लाने की जरूरत नहीं

है। फिर यह तो धर्म की बात है। धर्म-चर्चा की बात छोड़ो, यह तो प्रार्थना भी नहीं करने देना चाहता। इस तरह एक लड़के को प्रार्थना में दखल नहीं देना चाहिए। ऐसी बातों से कुछ फायदा नहीं निकल सकता।

"पंजाब में जो लोग मर गये उनमें से एक भी वापस आनेवाला नहीं है। अन्त में तो हम सबको भी वहींपर जाना है। यह ठीक है कि उनको कत्ल किया गया और वे मर गये; पर दूसरा कोई हैजे से मर जाता है या और किसी तरह से मरता है। जो पैदा होगा वह मरेगा ही। पैदा होने में तो किसी अंश में मनुष्य का हाथ है भी; पर मरने में सिवाय ईश्वर के किसीका हाथ नहीं होता। मौत किसी भी तरह टाली नहीं जा सकती। वह तो हमारी साथी है, हमारी मित्र है। अगर मरनेवाले बहादुरी से मरे हैं तो उन्होंने कुछ खोया नहीं, कमाया है। लेकिन जिन लोगों ने हत्या की उनका क्या करना चाहिए, यह बड़ा सवाल है। बात ठीक है कि आदमी से भूल होजाती है। इन्सान तो भूलों की पोटली है। लेकिन हमें उन भूलों को धोना चाहिए। खुदा हमारे काम को नहीं भूलेगा। जब हम उसके यहां जायेंगे, वह हमारा हृदय देखेगा। वह हमारे हृदय को जानता है। अगर हमारा हृदय बदल गया तो वह सब भूलों को माफ कर देगा।

अंतरात्मा के कहने से पंजाब जाऊंगा

"पंजाब में बहुत से मित्र हैं जो अपनेको मेरे भक्त भी बताते हैं। पर मैं कौन हूं कि वे मेरे भक्त कहलायें ? उन सब मित्रों का आग्रह है कि जब मैं दिल्ली तक आगया हूं तो कम-से-कम एक रात को पंजाब भी जाऊं, जिससे वहां लोगों को कुछ तसल्ली मिले। हवाई जहाज से जाने में तो कुछ ही घंटे लगेंगे।

लेकिन मैं किसी के कहने पर कैसे जाऊं ? मैं तो ईश्वर के कहने पर, ईश्वर नहीं तो अपने हृदय के कहने पर ही वहां जाऊंगा। नोआखाली मैं किसीके बुलाने पर नहीं गया था। मैंने यहांसे जाते समय ही कहा था कि मेरा हृदय मुझे वहां जाने को कह रहा है। बिहार में भी बहुत समय तक लोग मुझे बुलाते रहे पर मैं किसी के बुलाने पर वहां नहीं गया। जब डाक्टर महमूद साहब ने लिखा कि तुम आजाओ तभी हमारा दिल साफ हो सकेगा, तो मैं बिहार चला गया।

"बिहार ऐसा सूबा है जहां हिंदू-मुसलमान एक साथ मिलकर रह सकते हैं। वहां भी औरत-बच्चों पर कम अत्याचार नहीं हुआ। क्रोध में भरकर लोगों ने मासूम बच्चों को मार डाला और औरतों को मारकर कुंओं में डाल दिया। यह मैं हवाई बातें नहीं करता; ये सब सिद्ध हो सकने वाली बातें हैं। तब मुसलमान जरूर कहेंगे कि हम यहां नहीं रहनेवाले हैं। परन्तु जब उनको यह भरोसा हो जाय कि अब हमारे साथ दुबारा ऐसा बरताव नहीं होगा तो वे लौटकर आ जावेंगे। इस बात को बिहार के मुसलमान करीब-करीब समझ ही गये थे। यहांतक कि मुझे विश्वास हो गया था कि हम भरोसा दिला सकें तो आसनसोल और सिंध गये हुए मुसलमान भी वापस आजावेंगे। उनके आने की नौबत भी आगई थी। पर क्या अब पंजाब का बदला बिहार लेने जाय ? फिर मद्रास लेगा ? और यह बात कहां पहुँचेगी ? इस तरह क्या हम जंगली बन जायेंगे ? कांग्रेस ने अंग्रेजों के साथ अहिंसा की लड़ाई लड़ी; अब क्या हम अपने भाइयों की हिंसा करने बैठ जायं ? ठीक है कि वे अत्याचार करते हैं पर क्या हम भी वैसा ही करें ? अंग्रेजों ने कौन-सा अत्याचार नहीं किया था ?

अहिंसा की लड़ाई के कारण अंग्रेज जा रहे हैं

"लेकिन अब अंग्रेज तो जारहे हैं। वायसराय ने मुझसे कहा कि आजतक हम लोग कहींसे नहीं हटे हैं पर यहांसे हम अहिंसा की लड़ाई की वजह से जारहे हैं। आप शायद कहेंगे कि उनको तो जाना ही था इसलिए ये बनावटी बातें कर रहे हैं। पर अगर कोई आदमी शराफत से हमारे पास आता है तो हम क्यों उसकी शराफत को शैतानियत बतावें? ज़बतक बुरा अनुभव नहीं होता तबतक शराफत को मान लेना ही मैं सीखा हूं। क्या हम इस मौके पर, जबकि वे जा रहे हैं, ऐसा नज़ारा पेश करेंगे कि 'आप तो जा रहे हैं पर हमें गोरे सिपाही तो चाहिए ही।' पंजाब में आज उन्हींकी वजह से हमारा रक्षण है। लेकिन वह क्या रक्षण है? मैं चाहता हूं कि मुट्ठी-भर आदमी रह जायें तो भी अपना रक्षण करें। मरने से न डरें। मारेंगे तो आखिर हमारे मुसलमान भाई ही तो मारेंगे न? क्या धर्म-परिवर्तन से भाई भाई न रहेगा? और वे जैसा करते हैं वैसा हम नहीं करते क्या? बिहार में हमने औरतों के साथ क्या नहीं किया? हिंदुओं ने किया याने मैंने किया। यह शरमिंदा होने की बात है। क्या मैं एक गाली के बदले में दो गालियां दूं? पर ऐसी ही बातें हिंदू और मुसलमान दोनों छिप-छिपकर करते हैं और फिर ऐसा पागलपन उनके दिमाग पर सवार हो जाता है।

"यह बादशाह खान मेरे पास बैठे हैं। इन्हें कौन हटा सकता है? मैंने उस लड़के के कारण कितनी प्रार्थना छोड़ दी? कारण, मैं सबको बताना चाहता हूं, सबसे कहना चाहता हूं, कि मैं अच्छा पारसी हूं, अच्छा मुसलमान हूं, तभी अच्छा हिंदू भी हूं। अलग-अलग धर्म को गालियां देना क्या धर्म हो सकता है? मेरे सामने अलग-अलग धर्म जैसा कुछ नहीं है।

"ये लोग जो एशिया के सभी मुल्कों से यहां बात करने आये

हैं, जवाहरलाल से कितने प्रेम से बातें करते हैं ? सब उसपर फिदा हैं। ईश्वर की कृपा से हमारे पास ऐसा जवाहर पड़ा है जो सारी दुनिया को अपनाना चाहता है। क्या उसको शोभाने के लिए भी हमें शांति से नहीं रहना चाहिए ?

वाइसराय की बात

"अब मैं थोड़ी वाइसराय की बात भी बता दूँ। कल मैं उनके पास दो घण्टे से ज्यादा रहा और आपकी प्रार्थना में न आ सका। यह अच्छा हुआ, जो इस लड़की ने प्रार्थना शुरू करा दी, क्योंकि मैं कह गया था। आज दो घण्टे तक वाइसराय ने बातें कीं। उन्होंने कहा कि मैं सचमुच कोशिश कर रहा हूँ। उन्होंने यकीन दिलाया कि 'मैं आखिरी वाइसराय हूँ। मैं तो हिन्दुस्तान आना नहीं चाहता था, समुद्र में ही रहना चाहता हूँ। पर जब मजबूर कर दिया गया तब आया हूँ।'

"मजदूर सरकार ने भारत छोड़ना तय किया तब इनको भेज दिया, क्योंकि यह राजा के खानदान के हैं। अंग्रेज लोग भली तरह से भारत छोड़ना चाहते हैं। वे कहते हैं कि हिन्दू क्या, मुसलमान क्या, अगर एक पारसी भी हिन्दुस्तान लेने को तैयार है तो वे प्रेम से उसे देने को तैयार हैं। इस तरह जो आदमी शराफत से मेरे पास आता है उसकी बात मैं क्यों न सुनूं ? अंग्रेजों ने अबतक हमारा काफी बिगाड़ा है, परन्तु इसने (लॉर्ड माउन्टबैटन ने) तो कुछ नहीं बिगाड़ा। वह तो कहता है कि यदि हो सके तो मैं आज ही से खिदमतगार बनना चाहता हूँ। लेकिन जब आप लड़ते-भिड़ते हैं तब उसका भाग जाना अच्छा नहीं। आखिर वह बहादुर कौम का है। उसे भागने की क्या जरूरत ? वह सोच रहा है कि किस तरह यहांसे जाऊँ ? वह काफी कोशिश कर रहा है। वह शराफत से चलता है। यदि हम

भी शराफत से चलेंगे तो दुनिया में जो कभी नहीं हुआ वह होनेवाला है। अगर कोई शराफत न करे, वहशियाना काम करे, तो भी उसको कैसे अपनाया जाय, यह जो सीखना चाहे मुझसे सीखे।

अरण्य-रोदन

"वाइसराय ने मुझे शुक्र तक बाँध रखा है। जवाहर भी मुझे कैदी बनाना चाहते हैं। तीन दिन बाद मैं सब बातें बता दूंगा। छिपाना कुछ नहीं है। पर होना क्या है? मेरे कहने के मुताबिक तो कुछ होगा नहीं। होगा वही जो कांग्रेस करेगी। मेरी आज चलती कहां है? मेरी चलती तो पंजाब न हुआ होता, न बिहार होता, न नोआखाली। आज कोई मेरी मानता नहीं। मैं बहुत छोटा आदमी हूं। हां, एक दिन मैं हिन्दुस्तान में बड़ा आदमी था। तब सब मेरी मानते थे, आज तो न कांग्रेस मेरी मानती है, न हिन्दू और न मुसलमान। कांग्रेस आज है कहां? वह तो तितर-बितर होगई है। मेरा तो अरण्य-रोदन चल रहा है। आप सब मुझे छोड़ सकते हैं। ईश्वर मुझे नहीं छोड़ेगा। वह अपने भक्त की परख कर लेता है। अंग्रेजी में कहा है कि वह 'हाउन्ड आफ दी हेवन' है, वह धर्म का कुत्ता है, यानी धर्म को ढूंढ लेता है। वही मेरी बात सुनेगा तो काफी है। वह ईश्वर जब आपके हृदय में आजायेगा तो आप वही करेंगे जो वह करायेगा। इसलिए हमें विचारशील प्राणी रहना चाहिए। थोड़ी-सी बात पर बकवास शुरू नहीं कर देनी चाहिए।"

: २ :

'यह हिंदू धर्म का कत्ल हो रहा है'

नई दिल्ली, २ अप्रैल १९४७

"कल की तरह प्रार्थना के बीच में आज भी कोई झगड़ा करनेवाले हों तो अभी से वे अपना इरादा मुझे बता दें, ताकि मैं शुरू से ही प्रार्थना स्थगित कर दूं। किसी का विरोध करके मैं प्रार्थना करना नहीं चाहता।" प्रार्थना-स्थान पर बैठने पर गांधीजी ने पूछा।

दो व्यक्ति खड़े हुए और बोले—आपको यदि प्रार्थना करनी ही है तो हिंदू मंदिर से बाहर आकर बैठें और इस दूसरे मैदान में अपनी प्रार्थना करें।

गांधीजी—यह मंदिर भंगियों का है। मैं भी भंगी हूँ। ट्रस्टी लोग आकर रोकेंगे तब अलग बात है। आप मुझे नहीं रोक सकते। अगर आप-लोग करने देंगे तो प्रार्थना यहीं करूँगा।

युवक—यह मंदिर पब्लिक का है। हमने देख लिया कि पंजाब में क्या हुआ। हम आपको यहां प्रार्थना हरगिज नहीं करने देंगे।

गांधीजी—मैं बहस नहीं चाहता। मैं बड़े अदब से कहना चाहता हूँ कि आप लोग भंगियों की तरफ से नहीं बोल सकते। मैं भंगी बना हुआ हूं। मैंने पाखाना उठाया है। अगर मैं कहूंगा तो आप लोगों में से कोई भी पखाना उठाने का काम करनेवाला नहीं है। फिर भी आप रोकेंगे तो मैं रुक जाऊँगा। प्रार्थना नहीं करूँगा।

लोगों की आवाजें—हम प्रार्थना सुनेंगे। हमें प्रार्थना चाहिए।

गांधीजी—इन हजारों आदमियों के बीच केवल आप दो ही जने बाधा डाल रहे हैं। यह आपके लिए शोभा की बात नहीं है। मैं जानता हूं कि आप गुस्से में भर गये हैं। आप शांत हो जायेंगे तो अपनेआप समझ जायेंगे और तभी मैं यहां प्रार्थना करूँगा।

युवक (चीखते हुए)—आप मस्जिद में जाकर गीता के श्लोक बोलिए। क्या वे बोलने देंगे? हमने पंजाब में सब-कुछ देख लिया।

गांधीजी—चीखने की जरूरत नहीं है। इस तरह आप हिन्दू धर्म की रक्षा नहीं कर रहे हैं, बल्कि उसे मारने की कोशिश कर रहे हैं। मैं किसी से डरकर प्रार्थना मुल्तवी नहीं कर रहा हूं। कोई मुझे बीच में रोकेगा तो प्रार्थना शुरू करने के बाद मैं रुकनेवाला नहीं हूं, चाहे कत्ल भी क्यों न हो जाऊँ। और उस समय भी आप देखेंगे कि मेरी आखिरी सांस छूटती होगी तब भी मेरे मुँह से 'राम-रहीम' 'कृष्ण-करीम' का जाप चलता होगा। मैंने बता दिया कि मैं भंगी हूँ, ईसाई हूँ, मुसलमान हूँ, और हिन्दू तो हूँ ही। मेरे साथ यहां बादशाह खान भी तो हैं, मुझको आप कैसे रोक सकते हैं? लेकिन आप रोकें। एक बच्चा भी मुझे रोक सकता है।

युवक—आप पंजाब जाइए।

गांधीजी—मैं वहां जाकर क्या करूँगा? मुझ में तो जितनी शक्ति है वह पंजाब, बिहार और नोआखाली की सेवा में यहां रहते हुए खर्च कर ही रहा हूं।

कई लोग उस युवक को धक्के देने लगे और कहने लगे कि तुम हटो यहां से। हम प्रार्थना सुनेंगे।

गांधीजी—आप लोग इसे धक्का न दें। शांति से काम लें।

युवक—हम लोगों को आप चार मिनट दीजिए, हम आप-

से बातें करेंगे।

गांधीजी—मेरे पास समय नहीं है और बहस की जरूरत भी नहीं है। अदब से मैं इतना ही कहूंगा कि आप मुझे 'हां' या 'ना' कह दें।

युवक—हम आपको प्रार्थना नहीं करने देंगे।

गांधीजी—सब लोग शांति से बैठे रहें। मैं जा रहा हूं। इन भाइयों को कोई न छेड़ें। ये भले ही अपनी विजय मान लें। पर यह क्या विजय है? कोई पीछे छुरा भोंक दे तो उसमें क्या बहादुरी है। मैं इतना ही कहूंगा कि यह हिन्दू धर्म का कत्ल हो रहा है। आप लोग सोचिए और समझिए। कल भी आकर मैं यही प्रश्न करूँगा और आप प्रार्थना करने को मना करेंगे तो मैं चला जाऊंगा।

यहां इतना स्मरण रहे कि नोआखाली से लौटने पर गांधी जी ने "भजमन प्यारे सीताराम" की जगह "भजमन प्यारे राम-रहीम, भजमन प्यारे कृष्ण-करीम" की धुन शुरू की है।

: ३ :

'हम गुस्सा रोककर ही आगे बढ़ सकते हैं।'

नई दिल्ली, ३ अप्रैल १९४७

प्रार्थना शुरू करने से पहले गांधीजी ने कहा—"भाइयो और बहनो, कल तो दो-तीन ही आदमी थे जो प्रार्थना में रुकावट डालना चाहते थे। पर आज बात और बढ़ गई है। मेरे पास लिखा हुआ पत्र आया है जो किसी मेहतर यूनियन के प्रेसिडेन्ट का है। उसमें लिखा है कि मुझको यहां रहना ही नहीं चाहिए। अब आप देखिए कि मेरे जैसे बूढ़े आदमी पर कैसी गुजर रही है। लेकिन यहां की यूनियन के प्रेसिडेन्ट तो और ही कोई भाई हैं। मैं भी तो मेहतर ही हूं और यहां जो मेरे मेहतर भाई हैं वे मेरी सुनते हैं। मैं उनके साथ फैसला करके यहां रहा हूं, और रहूंगा। फिर यहांके कर्ता-धर्ता तो जुगलकिशोर बिड़ला हैं, उन्होंने मुझे यहां टिकाया है। जब टिकाने वाले जाने को नहीं कहते तो फिर मेरे जाने की क्या जरूरत?

"अब मैं आज भी पूछूँगा कि मैं प्रार्थना करूँ या न करूँ; पर यह पूछने से पहले मैं एक बात और पूछूँगा कि आप कल की मेरी बात समझे हैं या नहीं? अगर समझे हैं तो आपको पता लग गया होगा कि मैंने प्रार्थना क्यों रोक दी। अगर कोई कहे कि आप प्रार्थना न करें या करें तो कुरान की न करें तो क्या मैं अपनी जीभ कटवाकर प्रार्थना करूँगा। मेरा सिर भले चला जाय, पर मैं प्रार्थना छोड़नेवाला नहीं हूं। जो इस तरह प्रार्थना रोकते हैं वे हिन्दू धर्म को बढ़ाते नहीं हैं, काटते हैं। ऐसा करने

वाले कल दो-तीन ही थे; आज ज्यादा लोग हैं।

संघ का काम

"आज जो बात मैंने सुनी वह मुझे खटक रही है। मैं चाहता हूँ वह बात सही न हो। वह यह कि ये जो अड़चन डालनेवाले लोग हैं वे एक बड़े संघ के हैं।

"परन्तु जो लोग रोज सवेरे यहां कवायद-व्यायाम करते हैं (वाल्मीकि मंदिर के पास के अहाते में नित्य प्रातःकाल राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सैकड़ों युवक व्यायाम आदि करते हैं) और जो उनके मेम्बर हैं वे तो मुझसे मुहब्बत रखते हैं। अगर वे सब मुझे यहां रहने देना नहीं चाहते तो मेरा यहां रहना फिजूल हो जाता है। मुझे यहां रहना ही नहीं चाहिए। लेकिन उनके नेता से मेरी बात हुई। उन्होंने कहा कि हम किसीका कुछ बिगाड़ना नहीं चाहते। हमने किसी से दुश्मनी करने के लिए संघ नहीं बनाया है। यह सही है कि हम लोगों ने आपकी अहिंसा को स्वीकार नहीं किया है, फिर भी हम सब कांग्रेस की कैद में रहनेवाले हैं। कांग्रेस जबतक अहिंसा का हुक्म करेगी हम शांति से रहेंगे। इस तरह उन्होंने बड़ी मुहब्बत से मीठी बातें कीं।

ईश्वर का नाम और शैतान का काम

"इतने पर भी अगर आप मुझे रोक देते हैं तो फिर कल से आप यहां न आयें। मैं इस तरह की प्रार्थना करना नहीं चाहता। मैं और ही किस्म का बना हुआ हूँ। मैं हिंदू हूँ तो मुसलमान भी हूँ और सिक्ख तो करीब-करीब हिंदू ही हैं। मैंने ग्रंथ साहब को देखा है। उसमें काफी हिस्से ज्यों-के-त्यों हिंदू धर्म के हैं—उसी धर्म के, जिस धर्म का मैं पालन करने वाला हूं। इसलिए आपसे अदब के साथ मेरी विनती है कि एक बच्चे के

कहने पर भी अगर मैं प्रार्थना रोक देता हूं तो आप शांत रहिए। यदि आपको झगड़ा करके ईश्वर का नाम लेना है तो वह नाम तो ईश्वर का होगा, पर काम शैतान का होगा। और मैं कभी शैतान का काम नहीं कर सकता। मैं ईश्वर का ही भक्त हूं।

बुजदिली नहीं

"आप इसे बुजदिली न समझें। जब आप बड़ी तादाद में होते और सब कहते कि प्रार्थना मत करो तो मैं जरूर करता। तब मैं कहता कि आप मेरा गला काटिए, मैं प्रार्थना करता हूँ। पर यहां आप सब के बीच में दो-पांच आदमी मुझे रोकना चाहते हैं। आप उन्हें दबा लें और मुझ से कहें कि प्रार्थना करो तो वह शैतानी होगी। और शैतान के साथ मेरी निभती नहीं। जो खुदा का यानी ईश्वर का दुश्मन है वह राक्षस है। उस राक्षस के साथ मेरी बन नहीं सकती। मेरा लड़ने का तरीका तो राम जैसा है। राम-रावण युद्ध जब चल रहा था तब विभीषण ने राम से पूछा कि आप बिना रथ के हैं, आप कैसे लड़ेंगे। तब राम ने सच्चाई, शौर्य आदि गुणों के आधार पर कैसे लड़ाई लड़ी जाती है यह बताया। राम ईश्वर का भक्त था इसलिए बात भी वैसी ही करता था। उसको मैंने भगवान नहीं माना है, भक्त ही माना है। फिर भक्त में से वह भगवान बन गया। तुलसीदास ने भी राम को अशरीरी बताया है। वह अशरीरी सबके शरीर में भरा है। उसीको हम भजते हैं। मैं उस राम का पुजारी हूं। रावण की पूजा मैं कैसे कर सकता हूँ? चाहें आप मुझे मार डालें, आप मुझपर थूकें, मैं मरते दम तक राम-रहीम, कृष्ण-करीम कहता रहूँगा। और फिर उस वक्त भी जब आप मुझ-पर हाथ चलाते होंगे तो मैं आपको दोष न दूंगा। मैं ईश्वर से भी यह नहीं कहूंगा कि यह तू मेरे ऊपर क्या कर रहा है? मैं उसका भक्त हूं। मैं उसका किया स्वीकार लूंगा।

का तयार हैं। आप

"लेकिन आज एक बच्चा कहेगा कि आप प्रार्थना न करें तो मैं न करूंगा। मैं चला जाऊंगा। आप शांति से बैठे रहें, बहस न करें। शांति भी प्रार्थना ही है; क्योंकि मेरी प्रार्थना जगत् को दिखाने के लिए नहीं है। मेरी प्रार्थना मन की शांति के लिए है; दिल की सफाई के लिए है। इस समय क्रोधभरे दिल से प्रार्थना करने में दिल की स्वच्छता नहीं हो सकती; इसलिए शांति को ही प्रार्थना समझें।

"अगर सब मिल कर मुझे दबाते हैं, प्रार्थना करने से रोकते हैं, और ऐसे मौके पर मार के डर से मैं प्रार्थना न करूं, तो वह धर्म न होगा, अधर्म होगा। उससे दिल की सफाई न होगी। फिर मैं नोआखाली के हिन्दुओं के पास किस मुँह से जाकर कहूंगा कि आप डरिए मत, राम-नाम लेते रहिए। इसलिए मैं ने कहा कि आप मेरा यह शांति का तरीका समझें। सब मिल कर अगर रोकते हैं तो मैं प्रार्थना क्या कर सकता हूँ, पर राम धुन लेता रहूंगा, 'राम-रहीम, राम-रहीम' और लड़के के कहने पर चला जाऊंगा।

"अब मैं पूछता हूं, मुझे हां या न में उत्तर दें। बहस न करें। मैं प्रार्थना करूं ?"

करीब तीस आदमी खड़े होगये और हवा में हाथ हिलाते हुए बोले--मत कीजिए, प्रार्थना। हम नहीं चाहते आपकी प्रार्थना।

गांधीजी--अच्छा तो सब मुखालिफ हैं ?

करीब सौ-दो-सौ लोगों की आवाज आई--नहीं, सब मुखालिफ नहीं है। आप जरूर प्रार्थना कीजिए।

गांधीजी--नहीं, ये बहुत हाथ हैं। मैं हार गया और आप जीत गये। कल और भी लोग हाथ उठाइए। इस वक्त भी आप-
इसलिए आज.बहुत काफी है। मैं अब प्रार्थना कर सकता हूँ। पर

इस समय मैं आपके हाथों मरना नहीं चाहता । मुझे अभी काम करने के लिए जिन्दा रहना है ।

लोग—सब नहीं हैं, थोड़े हैं ।

गांधीजी—ठीक है, ज्यादा के आने की जरूरत नहीं है । इतने भी चाहें तो मुझे मार सकते हैं ।

इसके बाद दोनों तरफ की आवाजें बढ़ीं, और बहुत शोर होने लगा । गांधीजी मंच के किनारे आकर खड़े होगये और कहने लगे :

"सुनिए, ऐसा गुस्सा मत कीजिए । आप हिंदू हैं । हिंदू को चाहिए कि वह खामोशी से सोचे, खूब विचारे और समझकर बोले । आप घर लौट जाइए और सोचिए कि पंजाब का जख्म कैसे मिट सकता है । मैं भी शक्ति भर सोच रहा हूँ, पर गुस्सा करने से तो वह जख्म भरनेवाला नहीं है ।"

इतना कहकर गांधीजी ने भाषण समाप्त किया । पर भीड़ में से आवाज आई, एक प्रश्न का उत्तर देते जाइए । आपने नोआखाली में रामधुन कैसे बंद करदी थी ? आप यहां भी बन्द कीजिए । अपनी कोठरी में बैठे प्रार्थना कीजिए ।

गांधीजी—मैं यहां पर कुछ जवाब नहीं देना चाहता । आप अब जायें । और बाहर जाकर भी न लड़ें ।

[याद रहे कि नोआखाली में किसी भी प्रार्थना में रामधुन बन्द नहीं हुई थी । हां, रामधुन होने पर कुछ मुसलमान भाई उठ कर चले गये थे । प्रार्थना नहीं रुकी थी ।]

गांधीजी इसके बाद जाने लगे । इस बीच पुलिस ने कुछ दखल दिया । इसपर सभा में बड़ी गड़बड़ शुरू होगई । तब गांधीजी फिर मंच के किनारे पर आये । लोगों ने उनसे कहा कि आप प्रार्थना कीजिए । लोगों को हम शांत किये देते हैं । सब बैठ जायेंगे । आपके साथ हम सब मरने को तैयार हैं । आप

प्रार्थना न छोड़ें।

ठण्डी ताकत से काम लें

तब गांधीजी ने फिर कहना शुरू किया—"आप मरें तो मेरी शर्त से मरें, अपनी शर्त से नहीं। मरने का इल्म मैं जीवनभर सिखाता आया हूँ और सीख रहा हूँ। मरना हो तो इस तरह गुस्से में खौलते हुए नहीं मरना चाहिए। ठण्डी ताकत से मरना चाहिए। इस समय ये लोग गलतफहमी में हैं। वे समझते हैं कि गांधी ही यह सब कुछ बिगाड़ता फिरता है। इसलिए इस वक्त तो शांति को ही मेरी प्रार्थना समझिए। मैं जानता हूँ कि पंजाब के कारण सबका खून उबल रहा है। क्या मेरा खून नहीं उबल रहा है? मेरे दिल में भी तो आग धधक रही है। मैं पंजाब की समस्या सही-सही समझता हूँ। पंजाबी सब मेरे भाई हैं। वे इस समय गुस्से में हैं। उन्हें शांत होना चाहिए। बिहार भी गुस्से से भर गया था। उसका गुस्सा मैंने रोका है। इस समय गुस्से को रोककर ही हम आगे बढ़ सकते हैं।

"उन दो-चार आदमियों को पुलिस हटा ले गई है। उनको हटाने के बाद मैं कैसे प्रार्थना कर सकता हूँ? वे सब यहां फिर आवें, शांति से बैठें और तब हम सब मिलकर प्रार्थना करें।

"और इस समय जो चल रहा है उसे रोकने की बात सोचने में ही तो मैं शक्ति खपा रहा हूँ। क्या मैं वाइसराय के पास खाना खाने के लिए जाता हूँ? हम दोनों मिलकर इसमें से रास्ता निकाल रहे हैं। इस सारी गड़बड़ को रोकने के लिए मुझसे ज्यादा वह परेशान हैं और उन्हें परेशान होना भी चाहिए। आखिर मैं फिर कहता हूँ, आप शांत हो जाइए। शांति ही प्रार्थना है। उनको जबरन रोका जाय, यह मुझे नहीं सुहाता।

जब इतना कहकर गांधीजी जाने लगे तो तीसरी बार लोगों ने उनको फिर रोका और कहा, "आप उन थोड़ेसे आदमियों की बात क्यों सुनते हैं जो बेकार रोड़ा अटका रहे हैं ? असल में उन लोगों ने कुछ भुगता भी नहीं है। हम लोग हैं जिन्होंने पंजाब में भुगता है; जिनके ऊपर सितम ढाया गया है। हम तो आपको नहीं रोकते। हम आपसे विनती करते हैं कि आप प्रार्थना कीजिए। थोड़ी-सी ही सही।"

गांधीजी—आपकी बात तो सही है, पर उन लोगों को समझने का मौका देना चाहिए।

आवाज—आप हमारे सवाल का जवाब देंगे ?

गांधीजी—आप सोचें तो सही, मैं बुड्ढा आदमी हूँ। क्या मैं खड़े-खड़े बात करने लायक हूँ ? वाइसराय तक से मैं माफी चाहता हूँ कि मुझे खड़े रहकर बोलने को वह न कहे। मुझ में इतनी ताकत कहां है ? पर ईश्वर मुझे बुलवाता है। वह शक्ति दे देता है। आजकल मुझे खून का दबाव भी रहता है। तब भी वह मेरी गाड़ी खींचे ले जा रहा है। कल अगर कोई मुखालिफ नहीं होगा तो मैं और बातें करूंगा।

"जो इस मुखालिफत की जड़ में हैं वे मुझे मिलें तो सही। अगर वे यही चाहेंगे कि मैं यहां न रहूँ तो मैं चला जाऊंगा। मुझे तो अपने यहां रहने के लिए बहुत लोग बुला रहे हैं। पर मैं भंगी हूं और भंगीखाने में पड़ा हूं। मुझे तो यहां इतनी जगह भी मिल गई है। उनके पास छोटे घुल्लक (दरबे) हैं। मुझसे वह बर्दाश्त नहीं होता। मुझे सफाई चाहिए। ईश्वर ताकत दे देगा तो मैं उन घुल्लकों में ही रहने लगूंगा।

"ईश्वर सबका भला करे और भारत को आजादी दे !"

: ४ :

'मेरा हृदय रोरहा है'

नई दिल्ली ४ अप्रैल १९४७

प्रार्थना के शुरू में गांधीजी ने कहा—

"भाइयो और बहिनो, क्या आज भी आप लोगों को वही करना है जो आपने कल या परसों किया था, या आज शान्ति रहेगी ?"

चारों ओर से आवाजें आई—"आज शांति है। आज कुछ न होगा। आप प्रार्थना कीजिए। शान्ति ही रहेगी।"

गांधीजी ने दुबारा पूछा —आप लोगों ने अपनी आवाज में एक-दो की आवाज को दबा तो नहीं दिया ? क्या एक भी आदमी ऐसा तो नहीं है जो विरोध करना चाहता हो ?

इसपर श्रीमती सुचेता कृपलानी ने, जो मंचपर से सब देख रही थीं, कहा कि सामने एक हाथ ऊपर उठा है। गांधीजी ने कहा—"ठीक है। तब आज भी प्रार्थना नहीं होगी। एक आदमी भी जबतक समझता नहीं है या यहां से उठकर अपनेआप चला नहीं जाता, तबतक मैं प्रार्थना नहीं करूंगा। अगर सिपाही लोग उसे पकड़कर ले जायें तो वह तो कोई बात नहीं हुई। बहुत-से आदमियों को मिलकर इस तरह थोड़ेसे आदमियों को दबाना नहीं चाहिए। थोड़े आदमी भी अगर खिलाफ रहते हैं तो उन्हें समझाना चाहिए। जहां कोई बात उन्हें पसंद नहीं, वहांसे उन्हें उठ जाना चाहिए। उन्हें रुकावट नहीं डालनी चाहिए। अगर यह बात इस एक आदमी की समझ में आती है तो वह उठकर

चला जाय, तब मैं प्रार्थना कर लूंगा, या वह शान्ति से प्रार्थना में बैठे।"

इसका जवाब कुछ आदमी देने जा रहे थे कि एक पंडितजी उठकर गांधीजी के पास आये और गांधीजी से बहुत शान्ति और विनय के साथ बोले :—"आज आप प्रार्थना करके ही जाइए। आप हमारे महान नेता हैं। आपकी प्रार्थना इतने दिनों से रुक रही है, यह इस दिल्ली की बहुत बड़ी बदनामी है। मैं आपसे केवल एक मिनट चाहता हूँ।"

गांधीजी ने उनको बोलने की इजाजत दे दी। सभा को सुनाते हुए पंडितजी बोले–"मैं हिन्दू महासभा का आदमी हूँ। दिल्ली के ऊपर और हमारी हिन्दू सभा के माथे पर जो यह कलंक लगा है वह हमें मिटा देना चाहिए। महात्माजी के साथ हमारी लड़ाई है, पर उनकी इज्जत हमारे दिल में जरा भी कम नहीं होनी चाहिए। हिन्दू के नाते हमें उनकी प्रार्थना में शामिल होना चाहिए। हम उनसे लड़ेंगे, पर प्रार्थना के मोर्चे पर नहीं। हम और जगह लड़ेंगे। यह जो मैं कह रहा हूँ, अपनी अकेले की राय लेकर कहने नहीं आया हूँ। कल और परसों कुछ लोगों ने जो किया, वह ठीक था। पर उन गरम दल वालों से मैं कहूंगा कि वे प्रार्थना न रोकें। साथ ही मैं महात्माजी से भी कहूंगा कि वे भी उनकी बातों को भुला न दें, उनपर ध्यान दें। और वह ध्यान देंगे ही।

"गरम दल वालों को इन देवता से लड़ने का मौका समझना चाहिए। वह हमारे ऐसे देवता है जो बिना शस्त्र के भारी-भारी लड़ाई लड़ते हैं। अहिंसा के बल पर केवल निहत्था लड़नेवाला और कोई देवता न होगा।

"मैं हिन्दू सभा का आदमी आपसे विनती करता हूँ कि आप आज गांधीजी को शान्ति से प्रार्थना करने दीजिए। मैं

आर्यसमाज का मन्त्री भी हूं। आज एक शब्द भी आप खिलाफ न बोलें। जिनको प्रार्थना में शामिल नहीं होना है वे यहांसे चले जायें और महात्माजी से समय मांग लें। उनका दरबार तो सदा खुला है। वह तो ऐसों की भी बात सुन लेते हैं जो कुछ भी बोलना नहीं जानते। तब आपकी क्यों नहीं सुनेंगे? वह आपकी शंका का समाधान करेंगे। हिन्दुओं को तो चाहिए कि वे गांधी-जी को मदद दें। गांधीजी हमारे नहीं हैं क्या? वह हमारे ही हैं और वह उतने ही मुसलमानों के भी हैं। गांधीजी में हिन्दुओं और मुसलमानों का साझा है।"

वह इतना कहकर शान्ति से खड़े रहे और गांधीजी को प्रार्थना शुरू करने के लिए कहा। लोग सब शान्त रहे।

अकेले विरोधी का रक्षक

गांधीजी ने प्रार्थना शुरू करने से पहले फिर पूछा—"अब आप सब शान्त हैं? वह भाई चला गया जो प्रार्थना नहीं चाहता था? मैं सबसे कहूंगा कि उस भाई को हमारी ओर से डराना या धमकाना नहीं चाहिए। अगर सिपाही उसे ले जाता है तो उस बेचारे का क्या होगा। वह अपने को कैसा भी समझे, मैं तो उसको बेचारा ही कहूंगा। अगर उसकी रक्षा मैं नहीं करूंगा तो और कौन करेगा? एक आदमी अगर अपने को हिन्दू बताता है या अपने को मुसलमान बताता है और मुझे प्रार्थना से रोकना चाहता है तो उसपर आक्रमण क्या करना?

"वह कहता है कि आप इस मन्दिर में प्रार्थना मत कीजिए। लेकिन मन्दिर तो मेहतरों का है। मेहतर भाई मेरे पास आकर रोते हैं कि हमारे मन्दिर में आकर ये दूसरे लोग ऐसी बाधा क्यों डालते हैं? इन छोटे भाइयों को मैं क्या दिलासा दूं? मैं

उनका बड़ा भाई हूँ। मैं आला भंगी हूं। मैं बाहर की सफाई करता हूँ, बाहर के पाखाने उठाता हूं, लेकिन हमारे सबके दिल में भी मैला भरा हुआ है। असली भंगी को भीतर की भी सफाई करनी होती है जो मैं कर रहा हूँ। अगर इस मैले को हमने अपने दिल से नहीं निकाला, अगर ऊंच-नीच की यह बात हममें से नहीं हटेगी तो हिंदू धर्म बचने वाला नहीं है। आज तक यह बचा हुआ है, क्योंकि यह बहुत बड़ा धर्म है। वह मरते-मरते भी टिका है। फिर भी अगर हमने ऊंच-नीच भाव न छोड़ा तो यह बड़ा होने पर भी कमजोर हो जावेगा। मेरी इस बात का डा० मुंजे ने समर्थन भी किया है। उन्होंने चिट्ठी लिखी है कि मैं आपकी और बातें तो मानता नहीं हूं; मैं तलवार की तालीम मानता हूं; पर छुआछूत और ऊंच-नीच के इस भेद को मिटाने में पूरा-पूरा आपके साथ हूँ।

हिंदू-धर्ममें सब धर्म

"इसलिए जो मेरी प्रार्थना का विरोध करते हैं वे हिंदू धर्म को मार रहे हैं। उन्हें समझना चाहिए कि मैं जितना हिंदू हूँ, उतना ही पारसी हूँ, ईसाई हूँ, मुसलमान भी हूँ। 'ओज़ अबिल्ला' का अर्थ भी कितना सुन्दर है ? मैंने तो यजुर्वेद नहीं पढ़ा है, लेकिन एक भाई ने लिखा है कि इनमें सारी बातें वे ही हैं जो यजुर्वेद में हैं। फिर आप लोग इसका विरोध क्यों करें ? धर्म की बातें अरबी में हों, संस्कृत में हों या चीनी भाषा में हों, सब अच्छी ही हैं। इसलिए मैं उस भाई से पूछूंगा कि वे इसे समझ गये हैं या नहीं ?

"अगर वे हिंदू नहीं हैं--गैर मजहब हैं, तो प्रार्थना में न आवें। मुसलमान थोड़े ही आते हैं। मुसलमान भी मुझसे कहते हैं कि तुमको क्या हक है कि तुम कुरान की आयत

बोलो। फिर भी नोआखाली में उन्होंने मुझे नहीं रोका। क्या वे रोक नहीं सकते थे ?

हिन्दू धर्म की खूबी

"लेकिन हिन्दू धर्म में किसी को शिकायत नहीं हो सकती। हमारे यहां १०८ उपनिषद् हैं। उनमें एक उपनिषद् का नाम अल्लोपनिषद है। यही तो हिन्दू धर्म की खूबी है कि वह बाहर से आनेवालों को अपना लेता है। लेकिन उसमें जो कमी है वह है अस्पृश्यता या ऊंच-नीच का भेद। यह जहर उसमें फैल गया है। उसके निकल जाने से हो वह बचेगा। ये लोग तलवार से हिन्दू धर्म को बचाने की बात करते हैं। ये तलवार लेकर कवायद करते हैं। यह सब क्यों ? मारने के लिए ? इस तरह हिन्दू धर्म बढ़नेवाला नहीं है।

"सत्य से ही धर्म बढ़ता है। और यह बात तो मैंने हिन्दू धर्म से ही सीखी है। 'सत्यान्नास्ति परो धर्मः' और 'अहिंसा परमो धर्मः' भी हिंदू धर्म ने सिखाया है। भगवान पतंजलि हैं जिन्होंने अहिंसा, अपरिग्रह, अस्तेय, ब्रह्मचर्य आदि पांच व्रतों को हिंदू धर्म में विज्ञान का स्थान दिया। और धर्मों में भी ये बातें हैं; लेकिन इनका विज्ञान तो हिंदू धर्म ने ही रचा है।

'अवाई माई' की कहानी

इसके बाद गांधीजी ने दक्षिण भारत के हरिजन संत नन्दनार और अवाईमाई की कहानी सुनाते हुए बताया कि अवाई माई के पैर किसी देवमन्दिर के सामने थे। तब कोई हिंदू उससे झगड़ने लगे। अवाईमाई ने उससे कहा कि भैया, जिधर भगवान नहीं हैं उधर मेरे पैर करदो। जहां-जहां पैरों को घुमाया गया वहां तो भगवान थे ही।

"पत्थर की मूर्ति पूजा का एक तरीका ही तो है और

दिल में भगवान है तो फिर चाहे पैर किधर भी हों। पैरों से आदमी पूजा भी कर सकता है और लात भी मार सकता है। अगर कहीं ज्वालामुखी-सी आग धधक रही हो तो वह पानी से बुझ नहीं सकती, उसे मैं पत्थर से दबाऊं और उसके ऊपर खड़ा होकर लाखों आदमियों की जान बचा लूं तो वह पत्थर से और पैरों से ईश्वर की पूजा ही तो हुई। पूजा पैर से हो सकती है, हाथ से हो सकती है और जिह्वा से होसकती है। पूजा का तरीका कुछ भी हो, पूजा सच्ची होनी चाहिए।

"इसलिए अगर वह भाई यहां है तो मैं उससे विनय करना चाहता हूँ कि वह आराम से प्रार्थना करने दे।

गीता पढ़नेवाला गुस्सा नहीं कर सकता

"इतना मैं बता देना चाहता हूं कि उन बालकों पर मुझे ज़रा भी रोष नहीं है। उन पर गुस्सा क्या करूं ? गीता गुस्सा करना नहीं सिखाती। और मैं तो दक्षिण अफ्रिका से ही प्रार्थना में गीता के श्लोक बोलता आया हूँ। मैंने वहीं से गीता की इस भलाई की सीख को अपना लिया है और उसे लेकर यहां आया हूँ। जो इसका विरोध करते हैं वे समझते नहीं हैं कि हिन्दू धर्म क्या चोज है। न समझकर हैवान का काम करते हैं और भगवान को भूल जाते हैं।"

इसके बाद सब शांत हो गये और गांधीजी ने शांति पूर्वक प्रार्थना की।

आज का भजन था 'हरि तुम हरो जनकी पीर'। राम धुन थी—

रघुपति राघव राजाराम। पतितपावन सीताराम॥
ईश्वर अल्ला तेरे नाम। सबको सन्मति दे भगवान्॥
शांति विधायक राजाराम। पतितपावन सीताराम॥
रघुपति राघव राजाराम। पतितपावन सीताराम॥

विरोधियों को धन्यवाद

प्रार्थना निर्विघ्न समाप्त होजाने के बाद गांधीजी के मुख पर सन्तोष और प्रसन्नता के भाव झलकने लगे और उन्होंने कहा—

"मैं ईश्वर का बड़ा अनुग्रह मानता हूँ कि आज चौथे रोज उसने शांति के साथ हमें प्रार्थना करने दी। और यह भी कहता हूँ कि पिछले तीन दिन प्रार्थना नहीं हुई ऐसा कोई न माने। जब आप यहां आये, मैं यहां आया और हम सब शांत रहे तो वह प्रार्थना ही थी, क्योंकि हमारे दिलों में प्रार्थना थी।

"फिर जिन भाइयों ने दखल देने की कोशिश की उनका भी मुझपर उपकार हुआ है। मैं उनका धन्यवाद मानता हूँ, क्योंकि मुझे अपना दिल देखने का मौका मिला। इस तरह प्रार्थना के बारे में अपना अन्तर जांचने का मौका मुझे पहले नहीं मिला था। मुझे अपने भीतर यह टटोलना पड़ा कि मैं कहां हूं। मेरे अन्दर उन लोगों पर रोष तो नहीं है। मेरी प्रार्थना में कहीं दूसरी बात तो नहीं है। भगवान तो तरह-तरह से अपने भक्त की परीक्षा लेना चाहता है। और आखिर वह हरिजन की पीड़ा हरता है, जैसा कि अभी के भजन में आपने सुना। इसपर से हमें यह शिक्षा लेनी है कि हमपर जो कुछ बीतता है वह भगवान् की नियामत ही होती है। भगवान की कृपा है जो मैं आज इस परीक्षा में उत्तीर्ण हुआ हूँ।

"उस भाई को भी, जो शास्त्रीजी के कहने पर समझ गया, धन्यवाद।

"भगवान ने और कठिन कसौटी से मुझे बचा लिया है। एक बार प्रार्थना शुरू कर देने के बाद अगर चार ही आदमी मुझसे कहते कि प्रार्थना मत करो तो मैं उनसे कहता, 'आप मेरा गला

काट सकते हैं, मैं 'राम-रहीम, राम-रहीम' करता रहूँगा और उस समय भी अपने दिल में रोष न लाकर, अभी जैसे धुन में कहा गया है, दिल में सोचूंगा—'भगवान इन्हें सन्मति दे।'

"आपको नोआखाली की बात एक बता दूं। वहां बड़े कष्ट से रामधुन शुरू हुई। मैं जो यात्रा करता था उसमें प्रारम्भ में रामधुन होती थी और जहां पहुंच जाते थे वहां ग्राम-प्रवेश के समय भी रामधुन होती थी। हम वहां लोगों को बताते थे कि राम, रहीम, खुदा, ईश्वर सभी भगवान के नाम हैं। बल्कि उसके तो दस करोड़ नाम हैं।

हिन्दू-धर्म को निकम्मा न बनायें

"और यह ओज़ अबिल्ला,का अगर मैं अर्थ सुनाऊँ तो आपको पता तक नहीं चलेगा कि यह अरबी से लिया गया है। तो क्या मैं अरबी में प्रार्थना करूं यह गुनाह होजायेगा ? आप लोग हिन्दू धर्म को इस तरह निकम्मा न बनाइए। यह धर्म बहुत बड़ा धर्म है, बहुत पुराना धर्म है। लोकमान्य तिलक ने इसे १० हजार वर्ष पुराना धर्म बताया है। पर मेरी समझ से यह लाख बरस से भी ज्यादा पुराना है। यह अनादि है। वेद भगवान में जो बातें बताई हैं वह धर्म का निचोड़ है और धर्म मनुष्य प्राणी के धर्म के साथ-साथ पैदा हुआ है। इसलिए वेद अनादि हैं। और ये बातें जब मनुष्यों ने जानीं तबसे कंठस्थ रखीं। बहुत दिनों बाद ये लिखी गईं, क्योंकि मनुष्य लिखना बाद में सीखा। उन लिखी हुई बातों में से भी बहुतसी गायब हो गई हैं। बाइबल का भी इस तरह से बहुत सारा हिस्सा विस्मृत होगया है। कुरान का भी ऐसा ही हुआ है। बाइबल के जानने-वाले कई लोग कहते हैं कि उसमें काफी क्षेपक हैं। इस तरह शास्त्र अनन्त हैं। शास्त्रों का यानी वेद का निचोड़ इतना ही है

कि ईश्वर है ही, और वह एक ही है। कुरान का और बाइबल का भी यही निचोड़ है। कोई यह न कहे कि बाइबल में तीन भगवान बताये हैं। वहां भी भगवान एक ही है।

"मैं वाइसराय के पास बार-बार जाता हूं। वहां काफी समय दे रहा हूं, पर वह समय व्यर्थ नहीं जाता। वहां बिहार, पंजाब, नोआखाली सभी जगह का काम कर रहा हूँ। मेरे सामने मेरा छोटे-से-छोटा काम भी बड़े-से-बड़े के बराबर ही होता है। मेरी दृष्टि से अणु-परमाणु में जो है वही ब्रह्मांडभर में है। 'यथापिंडे तथा ब्रह्मांडे'। इसी सूत्र का मैं माननेवाला हूं। पंजाब और बिहार या नोआखाली को छोड़कर मैं हिन्दुस्तान का कुछ काम नहीं कर सकता। मेरे लिए हिन्दुस्तान उन्हीं जैसी जगहों में है।

"आज बहुतसी बातें आपको समझाई गई हैं। यह अच्छा लगा है। आपकी शान्ति के लिए धन्यवाद।"

: ५ :

अमन का रास्ता

नई दिल्ली, ५ अप्रैल १९४७

प्रार्थना-स्थान पर आते ही गांधीजी ने कहा–"दुःख की बात तो है, लेकिन अभी दो-चार दिन तक मुझे पूछना ही पड़ेगा, कि कुरान की आयत पढ़ने के बारे में किसी की ओर से शिकायत तो न होगी ? अगर होगी तो उसमें न आपका फायदा है न धर्म का। जैसे अनेक नाम होने पर भी ईश्वर एक ही है, वैसे ही अनेक नाम होते हुए धर्म एक ही है। क्योंकि सारे धर्म ईश्वर से आये हैं। अगर वे ईश्वर से नहीं आये हैं तो वे निकम्मे हैं। जो धर्म ईश्वर का नहीं है वह शैतान का धर्म है और वह किसी काम का नहीं होसकता। इसलिए आप समझ लें कि जैसा तीन दिन से होता रहा है वैसा ही चलेगा तो धर्म का नाश हो जायेगा।

ज़हर का प्याला

"अगर मैं हिन्दू हूँ तो कुरान क्यों नहीं पढ़ सकता ? जेन्दा-वस्ता क्यों नहीं पढ़ सकता ? और हिन्दू की प्रार्थना में भी तो भेद कम नहीं हैं ! कोई कहेगा वेद नहीं उपनिषद् कहो, उपनिषद् नहीं गीता कहो, यजुर्वेद नहीं अथर्व वेद कहो । यानी सभी अपने-अपने ढंग की प्रार्थना करने के हकदार हैं। यदि आप मुझे रोकना चाहें तो मैं आज भी खुद हार मानकर आपको जिताने को तैयार हूँ। यदि आपमें से कोई चाहें तो मुझे वह जहर का प्याला दे सकते हैं । कोई देगा तो मैं उसे खुशी-खुशी पीना

चाहूंगा, और आप भी उसे सहन कीजिए। आपको पीना नहीं है, पर आप उसके साक्षी बनें। आप गुस्सा न करें और अपने दिल में समझें कि यह बुड्ढा जो गम खा रहा है वह ठीक ही कर रहा है।

"आप लोग इतनी संख्या में आये हैं, यह अच्छी बात है; पर आप में से एक आदमी भी 'ओज़ अबिल्ला' का पाठ न चाहेगा तो मैं प्रार्थना छोड़ दूंगा, और आपको शान्ति से लौट जाना होगा।"

लोगों के विश्वास दिलाने परआज सारी प्रार्थना शांति पूर्वक हुई। प्रार्थना के बाद गांधीजी ने प्रवचन करते हुए कहा--

ठंडी ताकत और अमन का रास्ता

"आप लोगों ने जो इतनी शान्ति रखी इसके लिए आपको धन्य-वाद है। पहले इतनी शान्ति नहीं हुआ करती थी। इससे साफ है कि पिछले तीन दिन जो हुआ उससे हमने धर्म नहीं खोया है। यदि आदमी शान्ति से न रहे, कभी अपने विचारों को भीतर से न देखे, जीवन भर दौड़-दंगल में ही रहे, और हर वक्त गरम बना रहे, तो वह उस शक्ति को पैदा नहीं कर सकता जिसे शौकतअली साहब ठंडी ताकत कहा करते। मुहम्मदअली साहब भी कहते थे कि हमें अंग्रेजों से लड़कर स्वराज्य लेना है और हमारी लड़ाई होगी तकली की तोपों से और कुकड़ियों के गोलों से। वह तो जितना विद्वान था उतना ही कल्पनाएं दौड़ाने वाला था।

"और यह सब आप की दिल्ली की ही बात है। उन दिनों मैं सेंट स्टीफेंस कालेज में रुद्र साहब के घर टिका हुआ था। आजकल तो वह कालेज कहीं बड़े मकानों में चला गया है, पर उस पुराने कालेज में ही पहली बार मैं मौ० अबुलकलाम आजाद

से मिला था। प्रो० अब्दुल बारी भी वहींपर मिले थे। और भी कई बड़े-बड़े मौलानाओं से मेरी मुलाकात हुई और वहींपर यह बात काफी बहस-मुबाहिसे के बाद तय हुई कि खिलाफत के मामले में कांग्रेस तभी साथ दे सकती है जब खिलाफत का सारा काम अमन से होगा। सबने ईश्वर को हाजिर-नाजिर करके यह ठहराया था कि खिलाफत का कोई काम बगैर अमन के न होगा। वहां ईश्वर यानी खुदा की कसम लेने की बात थी। ईश्वर और खुदा में भेद न था। उस दिन जो यह काम किया गया उसका ही यह अच्छा नतीजा आज हम पाते जा रहे हैं।

असली भारत देहातों में

"यह बात मैंने इसलिए बताई कि कल से राष्ट्रीय सप्ताह शुरू होरहा है। कल के ही दिन हिन्दुस्तान ने अपनेआपको पहचाना। हिंदुस्तान ने तब जाना कि वह इस दिल्ली या बंबई या लाहौर में नहीं है बल्कि सात लाख देहातों में बसा हुआ है। अगर कल कोई जबरदस्त भूकम्प होजाता है और सारे शहरों की तमाम आबादी नेस्तनाबूद हो जाती है तब भी हिंदुस्तान नहीं मरेगा। शहरों की कुल मिलाकर दो करोड़ की आबादी के खतम होजाने के बाद भी अड़तीस करोड़ देहाती, जो सात लाख गावों में हैं, बने ही रहेंगे। पटना में इतना भारी भूकम्प हुआ तब भी बिहार के बड़े-बड़े शहरों को ही हानि हुई, छोटे-छोटे देहात बच ही गये। हां, गीता के ग्यारहवें अध्याय में बताया हुआ विराट ईश्वर सबको निगलना चाहे तब तो कोई भी न बच सकेगा। फिर भी यह स्पष्ट है कि हिंदुस्तान का जीवन देहातों के जरिये ही है।

"ये सात लाख देहात सन उन्नीस सौ उन्नीस के अप्रैल की छठी तारीख को अचानक जाग्रत होउठे थे। जब पांच अप्रैल को मैंने

ऐलान निकाला था तब मुझे सपने में भी खयाल नहीं था हिन्दुस्तान इतना जग उठेगा। उस दिन मैं आपके आज के मिनिस्टर राजगोपालाचार्यजी के यहां सेलम में था। दिनभर मैं सोचता रहा कि सत्याग्रह शुरू कैसे किया जाय। श्री विजयराघवाचार्य (जो आज इस दुनिया में नहीं रहे हैं) और दूसरे लोग भी वहीं मिले। मुझे जब विचार आया, मैंने महादेव से (वह भी आज उठ गया है) कहा कि राजाजी को बुलाओ। राजाजी सहमत हुए और हमने अपील निकाल दी। इतने पर से ही हिंदुस्तान इतना जग उठा कि मैं तो हैरान होगया। उन दिनों कांग्रेस के पास न स्वयंसेवक दल थे न संदेशवाहक; फिर भी मानो बिजली दौड़ गई।

उपवास करना न भूलें

"हमने छठी अप्रैल को उपवास और प्रार्थना करने के लिए कहा था। हिंदुओं का उपवास तो छत्तीस घंटे का होता है, पर मुसलमान २४ घंटे का रोजा ही कर सकते हैं। हिंदू भी २४ घंटे का प्रदोष करते हैं। हमने भी यही २४ घंटे का उपवास ठहराया ताकि हिंदू मुसलमान दोनों ही कर सकें। इसमें अन्न, दूध, सब्जी कुछ नहीं लिया जाना चाहिए। भरपेट पानी पी सकते हैं। मेरे जैसे बूढ़े व कमजोर फल ले सकेंगे, ऐसा मैंने उस दिन कहा था। पर आप कल जब फाका करें तब पेट भरनेवाले केले जैसे फल न लें। ऐसा करना तो मेरी माता जैसे मुझे फलाहार करवाती थी और दिनभर कूट्टू की पूरी और गुलाबजामुन आदि खिलाती थी वैसी ही चीज होजायेगी। मैं अपनी मां की तरह आपका लाड़ करना नहीं चाहता। जो निरा उपवास बर्दाश्त न कर सकें वे फल का रस ले सकते हैं।

छठी अप्रैल का संदेश

“छठी अप्रैल का खास संदेश है हिंदू-मुस्लिम ऐक्य, खादी और देहात का काम। पर आज इसे कौन करेगा ? आज हिंदू-मुस्लिम ऐक्य है तो मेरे हृदय में है। चर्खा भी मेरे ही पास पड़ा है; अगर आप लोग भी इसे अपनाना चाहें तो कल अपनाइए। ऐसा करने के लिए आपको पुरानी बातें भूल जानी चाहिए। भले ही पंजाब में मुसलमानों ने और बिहार में हिंदुओं ने कितना भी आक्रमण किया; दोनों ही इस बात को भूल जायें और भाई-भाई बनने की बात सोचें। अगर ऐसा नहीं करेंगे तो क्या आप यह प्रार्थना करेंगे कि हे भगवान, हमको वैसा ही दीवाना बना दो जैसा बिहार या पंजाब में लोग बन गये थे ? क्या ऐसा करके आप अपने को और धर्म को बचा लेंगे ? इसीलिए आप उपवास तभी करें जब आपके दिल में सन् १६१६ की बात कायम हो; और वह तभी कायम हो सकेगी जब आप अमन और शांति धारण करेंगे।

शांति का माग

“शांति कैसे आयेगी ? आप रोज एक घण्टा चर्खा कातिए और आपको शान्ति न मिले तो मुझसे कहिए। भावनगर की कौंसिल के प्रमुख और भारत- मंत्री की कौंसिल के मेम्बर पट्टणी साहब को जब सैकड़ों नुस्खों से नींद नहीं आती थी तो रात को एक घण्टा चर्खा कातने पर आजाती थी।

“शान्ति से ही हिन्दू-मुस्लिम एकता कायम होसकेगी। मैं जानता हूँ कि यह बड़ा कठिन काम है। हमारे दिल में ज्वाला-मुखी दहक रहा हो तब भी ठंडा रहने में हमारी अहिंसा की परीक्षा है।

“और शान्ति रखने से अगर सब मर भी जायेंगे तो क्या

बिगड़ेगा ? अगर मुसलमान मुझे मार भी डालेगा तो मेरा भाई ही तो होगा। अगर हमने शान्ति नहीं रखी और जबरन देश को एक बना रखा, तो वह पाकिस्तान हमारे मन में भर जायेगा। और जब पाकिस्तान हमारे दिल में रहेगा और हम किसी भी तरह अपने भाइयों के साथ अमन से रहने को तैयार न होंगे तो मैं आगाह करता हूँ कि हिन्दुस्तान आजाद रह ही नहीं सकेगा।

पाकिस्तान अमृतमय कैसे बने ?

"हां पाकिस्तान एक तरह अमृतमय हो सकता है। लेकिन उसके लिए फिर पिस्तौल, भाला, तलवार क्यों होनी चाहिए ? इस तरह जबरदस्ती का पाकिस्तान तो जहरीला होगा। ऐसा जहर हम सबको क्यों खिलायें ? दूसरों के दिलों में जहर पैदा न करूं, अपने दिल में भी जहर न रखूं, और सबसे लड़ाई लेलूं और लड़ते-लड़ते मारे जाने पर भी परवा न करूं तब वह पाकिस्तान अमृतमय होगा और वैसा ही अमृतमय हिन्दुस्तान होगा। अमृतमय हिन्दुस्तान वह है जो केवल हिन्दू का नहीं है पर साथ में मुसलमान, पारसी ईसाई और सिख का भी उतना ही है जितना हिन्दुओं का। और अमृतमय पाकिस्तान भी वही है जिसमें सभी कौमों के लिए जगह हो और किसी के बारे में वहां जहर न हो। चूंकि मैं ऐसे ही हिन्दुस्तान और पाकिस्तान का माननेवाला हूँ इसलिए जब गायत्री और गीता पढ़ना चाहूंगा तब ओज अबिल्ला भी बोलूंगा।"

एण्डरूज़ को श्रद्धांजलि

एण्डरूज़ साहब की याद में बोलते हुए गांधीजीने कहा—"आज एण्डरूज़ साहब की सातवीं पुण्य तिथि है। उनके गुणों को हमें याद करना चाहिए। उनका जीवन बहुत सादा था। हम

दोनों घने मित्र रहे हैं । उनकी चमड़ी गोरी थी, लेकिन वह इतने सादे थे और देहातियों से मिलते-जुलते थे कि वह अंग्रेज हैं ऐसा पहिचानना कठिन हो जाता था । उनको कपड़े पहनने का भी शऊर न था। मोटे से बदन पर ढीली-ढाली धोती किसी तरह लपेट लेते थे। उनको ऊपर के दिखावे काम न था ? उनका दिल सोने का था।"

: ६ :

हँसते हुए मरनेवाले ही नये भारत का निर्माण करेंगे

नई दिल्ली ६ अप्रैल १९४७

आज राष्ट्रीय सप्ताह का प्रथम दिन था। प्रार्थना में श्रीमती सुचेतादेवी ने जो बंगाली गायन गाया था उसके शुरू के बोल थे—

बोलो बोलो बोलो शबे, शत बीना बेनु रबे,
भारत आबार जगत शभाई, श्रेष्ठ आशन लबे।
धर्मे महान होबे कर्मे महान होबे।
नब दीनमनी उदीबे आबार॥

सार यह कि "हमारी बंसरी की मधुर ध्वनि से आज सब मिलकर बोलो कि विश्व-सभा में इस बार भारत उच्च आसन ग्रहण करेगा। वह धर्म से और कर्म से महान बनेगा। इसके प्रांगण में नया सूर्य जगमगायेगा" आदि। भजन के बाद की धुन थी,

भजमन प्यारे राम रहीम, भजमन प्यारे कृष्ण करीम।

इसी भजन और धुन की ओर संकेत करते हुए गांधीजी ने कहा—"जब मैं यह भजन और धुन सुन रहा था तब नोआखाली-यात्रा के समय का सारा दृश्य मेरी आंखों के सामने ताजा हो आया। वहांपर यही मंडली और ये ही भाई-बहन थे जो प्रातःकाल में यात्रा शुरू होने पर पहले आध मील तक चलते थे।

भलाई न छोड़ें

"वैसे जो मुझे कहना है वह तो एक ही बात है कि हमें अपनी भलाई नहीं छोड़नी चाहिए। अगर सबके सब मुसलमान मिलकर हमें कहदें कि हम हिंदुओं के साथ किसी भी किस्म का वास्ता नहीं रखना चाहते, उनसे अलग रहना चाहते, हैं तो क्या हमें गुस्से में भरकर मारकाट शुरू कर देनी चाहिए? अगर हमने ऐसा किया तो चारों ओर ऐसी आग फैल जायगी कि हम सब उसमें भस्म होजायेंगे, कोई भी नहीं बचेगा। अंधाधुंध लूट-खसोट और आग जलाने से देशभर में बरबादी ही फैलेगी। मैं तो कहूँगा कि बाकायदा जो योद्धा लोग लड़ते हैं उससे भी विनाश ही होता है, हाथ कुछ भी नहीं आता। हमारे महाभारत में जो बात कही गई है वह सिर्फ हिंदुओं के काम की ही नहीं है, दुनियाभर के काम की है। यह कथा पांडव-कौरव की है। पांडव राम के पुजारी यानी भलाई के पूजनेवाले रहे, और कौरव रावण के पुजारी यानी बुराई को अपनानेवाले रहे। वैसे तो दोनों एक ही खानदान के भाई-भाई थे। आपस में लड़ते हैं और अहिंसा छोड़कर हिंसा का रास्ता लेते हैं। नतीजा यह आया कि रावण के पुजारी कौरव तो मारे ही गये, पर पांडवों ने भी जीतकर हार ही पाई। युद्ध की कथा सुननेभर को इनेगिने लोग बच पाये। और आखिर उनका जीवन भी इतना किरकिरा होगया कि उन्हें हिमालय में जाकर स्वर्गारोहण करना पड़ा। आज हमारे देश में जो चल रहा है, वह सब ऐसा ही है।

राष्ट्रीय सप्ताह

"आज से राष्ट्रीय सप्ताह का आरंभ हुआ है। मैं मानता हूं कि आप लोगों ने चौबीस घंटे का व्रत रखा होगा और प्रार्थनामय दिन बिताया होगा।

"आज तीसरे पहर तीन बजे से चार बजे तक यहां चर्खा-कताई भी की गई जिसमें राष्ट्रपति, उनकी पत्नी, पंडित जवाहरलाल नेहरू, आचार्य जुगलकिशोर और दूसरे भी बहुत-से थे जिनके नाम मैं कहांतक गिनाऊं ? इस तरह कताई-यज्ञ पूरी शक्ति से और खूबसूरती से पूरा हुआ और अब यहांसे जाने के बाद आपका उपवास भी खत्म होजायेगा, परंतु यह कितना अच्छा हो यदि राम-रहीम के शब्द तथा उक्त भजन का संदेश सदा के लिए सबके दिलों पर अंकित होजाय ! लेकिन यह सब आज तो हिंदुस्तान के लिए स्वप्नवत् होगया है। मेरे पास तार और खत बरस रहे हैं जिनमें गालियां भरी रहती हैं। इससे पता चलता है कि कुछ लोग मेरे विचारों को कितना गलत समझते हैं। कुछ यह समझते हैं कि मैं अपनेको इतना बड़ा समझता हूं कि लोगों के पत्रों के उत्तर नहीं देता, तथा कुछ मुझ पर यह आरोप लगाते हैं कि पंजाब जब जल रहा है तब मैं दिल्ली में मौज उड़ा रहा हूं। ये लोग कैसे समझ सकते हैं कि मैं जहां कहीं पर भी हूं उन्हींके लिए दिन-रात काम कर रहा हूं। यह ठीक है कि मैं उनके आंसू न पोंछ सका । केवल भगवान् ही ऐसा कर सकता है।

हिंदू-मुस्लिम एकता

इसके बाद गांधीजी ने वृद्ध-वीर राष्ट्रवादी मुसलमान ख्वाजा अब्दुलमजीद का उल्लेख किया जो आज उनसे मिलने आये थे । गांधीजी ने कहा—वह मुझसे मीठा झगड़ा करने के लिए आये थे। वह अलीगढ़ युनिवर्सिटी के ट्रस्टी हैं। उनके पास काफी बड़ी जायदाद है, फिर भी उनका मन तो फकीर है। मैं जब वहां जाता था उन्हींके यहां खाना खाता था। उस जमाने में स्वामी सत्यदेव (परिव्राजक) मेरे साथ रहते थे।

उन्होंने हिमालय की यात्रा की थी। ईश्वर ने आज उनकी आंखें छीन ली हैं। उस समय वह बहुत काम करनेवाले थे। उन्होंने मुझसे कहा, 'मैं तेरे साथ भ्रमण करूंगा, पर तू मुसलमान के साथ खाता है तो मैं तो नहीं खाऊंगा यह सुनकर ख्वाजा साहब ने कहा, 'अगर उनका धर्म ऐसा कहता है तो मैं उनके लिए अलग इंतजाम करूंगा।' ख्वाजा साहब के दिल में यह नहीं आया कि यह स्वामी गांधी के साथ आया है तो क्यों नहीं मेरे यहां खाया। पुराने दिन फिर वापस आयेंगे जब हिंदू-मुसलमानों के दिलों में एकता थी ख्वाजा साहब अब भी राष्ट्रीय मुसलमानों के प्रेसिडेंट है। दूसरे भी जो राष्ट्रीय भावना वाले मुसलमान लड़के उन दिनों में अलीगढ़ से निकले थे वे आज जामिया के अच्छे-अच्छे विद्यार्थी और काम करनेवाले बने हुए हैं। ये सब सहारा के रेगिस्तान में द्वीप समान हैं। ख्वाजा साहब ऐसे हैं कि उनको कोई मार डालेगा तो भी उनके मुंह से बददुआ न निकलेगी। ऐसे लोग भले थोड़े ही हों पर हमें तो अपनापन कायम रखना ही चाहिए। बदमाश को देखकर हमें भी बुराई पर नहीं उतर आना चाहिए। लेकिन बिहार में हमने यह भूल की। वहां हिंदुओं ने राष्ट्रवादी मुसलमानों की हत्या की और मुसलमानों के हिंदू मित्रों की हत्या दूसरे मुसलमानों ने की।

क्रोध को स्थान न हो

"हमें शांतिपूर्वक यह विचारना चाहिए कि हम कहां बहे जारहे हैं? हिंदुओं को मुसलमानों के विरुद्ध क्रोध नहीं करना चाहिए, चाहे मुसलमान उन्हें मिटाने का विचार ही क्यों न रखते हों अगर मुसलमान सभीको मार डालें तो हम बहादुरी से मर जायें। इस दुनिया में भले उन्हींका राज होजाय; हम नई दुनिया के बसने वाले हो जायेंगे। कम से कम मरने से हमें बिलकुल नहीं

डरना चाहिए। जन्म और मरण तो हमारे नसीब में लिखा हुआ है, फिर उसमें हर्ष-शोक क्यों करें। अगर हम हंसते-हंसते मरेंगे तो सचमुच एक नये जीवन में प्रवेश करेंगे—एक नये हिंदुस्तान का निर्माण करेंगे। गीता के दूसरे अध्याय के अंतिम श्लोकों में बताया गया है कि भगवान से डरनेवाले व्यक्ति को कैसे रहना चाहिए। मैं आपसे उन श्लोकों को पढ़ने, अर्थ समझने तथा मनन करने की प्रार्थना करता हूं। तभी आप समझेंगे कि उनके क्या सिद्धांत थे, तथा आज उनमें कितनी कमी आगई है। आजादी हमारे करीब आगई है तब हमारा यह कर्त्तव्य है कि हम अपनेसे पूछें कि क्या उसे पाने तथा रखने के योग्य भी हैं? इस सप्ताह में जबतक मैं यहां रहूंगा तबतक चाहता हूं कि आप लोगों को वह खूराक दे दूँ जिससे हम उस लायक बनें। अगर झगड़ते ही रहे तो आजादी आकर भी हाथ में नहीं रहेगी।

: ७ :

बदले की भावना छोड़ो

नई दिल्ली, ७ अप्रैल १९४७

वैसे तो आज सोमवार को महात्माजी का मौन होने के कारण प्रार्थना-सभा में उनका लिखित संदेश ही सुनाया जाने वाला था; किन्तु संयोगवश प्रार्थना आध घंटे बाद शुरू हुई। तब महात्माजी का मौन समाप्त हो गया था, इसलिए संदेश सुनाये जाने के बजाय उन्होंने नीचे लिखा भाषण दिया।

महात्माजी ने कहा—"मेरे पास बराबर ऐसे पत्र आरहे हैं जिनमें मुझपर यह इलजाम लगाया जाता है कि मैं जिना साहब का गुलाम और पांचवें दस्तेवाला बन गया हूं। कोई पत्र-लेखक कहता है, मैं कम्युनिस्ट बन गया हूं। लेकिन मैं इन बौछारों से नहीं घबराता। आप लोग हर रोज गीता के जो श्लोक सुनते हैं वे हमेशा मेरे साथ रहते हैं और इन बातों के सहने की शक्ति देते हैं। अगर मुझपर इलजाम लगानेवाले इन श्लोकों का मतलब समझते तो ऐसी बात न करते। मैं सनातनी हिंदू हूं, इसलिए ईसाई, बौद्ध और मुसलमान होने का दावा करता हूं। कुछ मुसलमान भाई भी यह महसूस करते हैं कि मुझे कुरान की अरबी आयतें पढ़ने का अधिकार नहीं है। वे समझते हैं कि कलमा पढ़कर मैं मुसलमानों को धोखे में डालता हूँ। ऐसे लोग यह नहीं जानते कि मजहब भाषा और लिपि की सीमा से बाहर है। मैं कोई कारण नहीं देखता कि मैं कलमा क्यों नहीं पढ़ सकता, और मुहम्मद को रसूल यानी अपना पैगम्बर क्यों नहीं मान

सकता, मैं तो हर मजहब के पैगम्बर और सन्तों में विश्वास रखने वाला हूं। मैं ईश्वर से प्रार्थना करूंगा कि मुझपर इलजाम लगाने वालों पर मुझे गुस्सा न आये, इतना ही नहीं बल्कि मैं उनके हाथों मरने के लिए भी तैयार रहूं; और मेरा विश्वास है कि अगर मैं अपने यकीन पर मजबूती से कायम रहा तो मैं सिर्फ हिंदू धर्म की नहीं इस्लाम की भी सेवा करूंगा।

बदला न लो

"आज रावलपिंडी का एक हिंदू वहां की घटनाओं का दुःखजनक विवरण सुनाने आया था। महज हिंदू होने के कारण उसके ५८ साथी मार डालेगये थे और वह खुद तथा उसका एक लड़का बचा गया है। और रावलपिंडी के आस-पास के गांव तो भस्म कर दिये गये हैं। यह कितने दुःख की बात है कि जिस रावलपिंडी के बारे में मुझे याद है कि किस तरह वहांके हिंदू, मुसलमान और सिख मेरा और अलीबन्धुओंका सत्कार करने में आपस में एक-दूसरे-से होड़ लगाते थे वही आज किसी भी गैरमुसलमान के लिए खतरे की जगह बन गया है। पंजाब के हिंदुओं के दिलों में गुस्से की आग जल रही है। सिख कहते हैं कि वे गुरु गोविन्दसिंह के चेले हैं, जिन्होंने उन्हें तलवार का इस्तेमाल सिखाया है। लेकिन मैं हिंदुओं और सिखों से बार-बार यही कहूंगा कि वे बदला न लें। मैं यह कहने की हिम्मत करता हूं कि बदला लेने की भावना छोड़कर अगर सब हिंदू और सिख अपने मुसलमान भाइयों के हाथों दिल में गुस्सा लाये बिना मर भी जायं तो वे सिर्फ हिंदू और सिख मजहब की ही नहीं इस्लाम और दुनिया की भी रक्षा करेंगे।

"तीस साल से मैं आपको अहिंसा और सत्य का उपदेश देता आया हूं। मैंने दक्षिण अफ्रिका में बीस साल तक इसी

तरह किया था। मेरा विश्वास है कि दक्षिण अफ्रिका के हिंदुस्तानियों ने मेरी बात मानकर फायदा ही उठाया है और यहां भी जो सत्य और अहिंसा के रास्ते पर चले हैं उन्होंने कुछ गंवाया नहीं हैं। ठीक है कि हमारे सत्याग्रहियों ने अपना सब कुछ लुटा दिया। लेकिन उसमें क्या हुआ ? रत्न को उन्होंने हाथ कर लिया और निकम्मी चीज फैंक दी। अगर मैं पंजाब गया तो मैं वहां क्या करूंगा इसकी मेरे दिल में हिचकिचाहट होरही है। वहां क्या मैं बदला लेने जाऊं ? बदला लेने की बात मीठी तो लगती है, लेकिन ईश्वर कहता है बदला लेने का काम मेरा है। मुझसे काफी लोग कहते हैं कि यहां आओ तो सही। मैं उनसे कहता हूं कि मैं वहां बदला लेने की बात का प्रचार करनेवाला नहीं हूं। ऐसा करना तो हिंदू, सिख और मुसलमान सबकी कुसेवा करना होगा।

मुसलमानों से

"मैं मुसलमानों से भी कहना चाहता हूं कि हिन्दू और सिक्खों के साथ लड़कर पाकिस्तान लेने की बात निरा पागलपन है। पाकिस्तान में तो अमन से रहने की बात है। कायदे आजम ने कहा है कि हमारे यहां हरदम इन्साफ होगा। आज वहां क्यों इन्साफ नहीं दीखता ? शायद वह पूछेंगे कि बिहार में भी क्या हुआ ? पर बिहार के प्रधान मंत्री तो आज रो रहे हैं। वह कहेंगे, आपकी कांग्रेस कहां गई थी, उसने क्या किया ? यह सवाल बड़ा है। कांग्रेस का राज्य हिन्दू-मुसलमान दोनों पर चलना चाहिए। लेकिन आज ऐसा नहीं है। मैं ऐसे पाकिस्तान की कल्पना ही नहीं कर सकता जहां कोई गैरमुसलमान शांति और सुरक्षा के साथ न रह सके। न ऐसे हिन्दुस्तान का ही खयाल कर सकता हूं जहां मुसलमान खतरे में हों। मैं बिहार

गया और वहांके हिन्दुओं के गुस्से को ठंडा करने और मुसलमानों में हिन्दुओं के प्रति विश्वास पैदा करने की कोशिश की। खुशी की बात है कि बहुतसे हिन्दुओं ने अफसोस जाहिर किया और आगे वैसा न होने देने का विश्वास दिलाया। उसी तरह मैं मुस्लिम नेताओं से अपील करूंगा कि जिन प्रांतों में उनकी आबादी ज्यादा है वहांके अपने मुस्लिम भाइयों से वे कहें कि वे अपने यहांसे गैर मुसलमानों को मिटाने की कोशिश न करें।

"पंजाब के हिन्दुओं और सिक्खों ने कितनी ही उत्तेजक भाषा का प्रयोग क्यों न किया हो फिर भी जिन इलाकों में मुसलमान ज्यादा तादाद में थे वहां उन्होंने गैरमुसलमानों के साथ जो बेरहमी और पाशविकता की उसकी कोई वजह न थी।

फौजों से कुछ नहीं होगा

"पिछले दो दिनों से नोआखाली से फिर बुरी खबरें आ रही हैं, लेकिन सब कुछ होने पर भी पुलिस या फौज की मदद मांगना गलती और कायरता है। जो लोग गड़बड़ मचने पर रोते हैं वेगुलाम हैं और जो फौज की सहायता चाहते हैं वे गुलाम बने रहेंगे। लोग न तो गृह-युद्ध में पड़ेंगे न गुलाम रहना ही पसन्द करेंगे। मुझसे सतीश बाबू व प्यारेलालजी ने पत्र लिखकर पूछा है कि घास-फूंस के झोंपड़ों के दरवाजे बन्द करके, जिसमें दस-बीस आदमी हों, जला दिया जाय तो वे क्या करें ? हरेन बाबू ने चौमुहानी से ऐसी ही बात लिखी है और बताया है कि आश्रित लोग जाना चाहते हैं पर समझाने पर रुक गये हैं। मैंने बंगाल के प्रधानमंत्री को तार दिया है कि यह खतरनाक बात है। लोगो को मैंने संदेशा भेजा है कि जिनमें साहस हो, हिम्मत हो, वे जल जायें, मिट जायें। अगर अपनेमें इतनी मजबूती वे महसूस नहीं करते तो वे वहांसे

हिजरत करें। बड़े-बड़े लोगों ने हिजरत की है। मुहम्मद साहब ने भी की है। कुछ भी करें, जिन अंग्रेजों को यहांसे हम भगाना चाहते हैं उनकी फौजों को लोग हरगिज न बुलावें। पिछली लड़ाई में इंग्लैंड के और जापान के कितने आदमी मर गये, पर उसकी वे शिकायत नहीं करते। वे बहादुर जातियां हैं। हमको अंग्रेजों का राज अच्छा लगे, यह हमारे लिए शर्मनाक बात है।

अंत में गांधीजी ने कहा—"क्या जो भूमि अमर हिमालय से घिरी हुई है और गंगा की स्वास्थ्यप्रद धाराओं से सिंचित होती है वह हिंसा से अपना नाश कर लेगी ? मैं अन्तःकरण से आशा करता हूँ कि बड़ी-बड़ी फौजें रखने का सब खयाल हम अपने दिल से निकाल डालेंगे। इन फौजों से हमारा कुछ भी भला नहीं होने वाला है और उनके रहते हमारी आजादी की कोई कीमत न होगी।

: ८ :

अहिंसा किसीको बुजदिल नहीं बना सकती

नई दिल्ली, ८ अप्रैल १९४७

गांधीजी ने कहा—"अब मैं देखता हूं कि अब आपने इतनी शांति अपना ली है कि रोज-रोज धन्यवाद देने की आवश्यकता नहीं रहती। आज मैं अपनी दुर्दशा पर ही बोलना चाहता हूं और मुझे उम्मीद है कि आपके कानों तक इसका एक-एक शब्द पहुंचेगा तथा इसकी एक-एक बात आपके हृदय का भेदन करेगी, यानी हृदय की गहराई में पहुंच कर वह अपना असर डालेगी।

"कल अखबार में आपने सतीश बाबू और हरेन बाबू के तार देखे ही होंगे। आज सतीश बाबू ने प्रत्युत्तर में जो तार भेजा है उसमें वह लिखते हैं कि "जीवनसिंहजी, प्यारेलालजी और दूसरे जो आपके साथ यहां आकर काम कर रहे हैं उन सबने मरते दम तक यहींपर बने रहने का निश्चय किया है और सभी यह बात मंजूर करते हैं कि आपका (गांधीजी का) कहना सही है। यहांके हिंदू ऐसा कर सकते हैं जैसा आपने (गांधीजी ने) लिखा है। खतरा तो पूरा है, मारे जाने का डर बढ़ता जा रहा है। वे रोते हैं, इतने पर भी वे मजबूती के साथ शांत और तैयार हो रहे हैं अब डर के मारे भाग जाना वे पसन्द नहीं करते वे सोचते हैं कि अगर मौत आने ही वाली है तो उसे ईश्वर का प्रसाद समझकर मंजूर कर लेना ही अच्छा है। और यह खुशी से मरने की बात है, मारकर मरने की बात नहीं है। यह सब आजतक किये गए काम का नतीजा है।

"मैंने उन लोगों से पुछवाया था कि क्या आप यह तो नहीं

चाहते कि मैं यहांका काम छोड़कर आपके पास चला आऊं ? मुझे दूसरे जरूरी काम हैं। मुझे बिहार जाना है। फिर पंजाब भी पड़ा है। उन लोगों ने मुझे लिखा है कि, 'तुम यहां आने का जरा भी खयाल न करो।'

'सबको सन्मति दे भगवान्'

"वे सारे लोग अलग-अलग जगह फैले हुए हैं। सतीश बाबू एक ओर हैं तो हरेन बाबू दूसरी ओर चौमुहानी में बड़ा भारी काम कर रहे हैं। अम्तुस्सलाम प्यारेलाल, कनु और आभा जैसे हरेक ने एक-एक गांव चुन लिया है। और मुझे भरोसा है कि सभी लोग मेरी उम्मीद के मुताबिक भलीभांति काम करेंगे। मेरी वह उम्मीद क्या है ? मेरी उम्मीद तो है कि भगवान से सबको सुमति मिलेगी, जैसा कि यह लड़की रामधुन में सुनाती है, 'सबको सन्मति दे भगवान्' । मैं यह उम्मीद करता ही रहूंगा कि वे समझ लेंगे कि जबरदस्ती और मारपीट से कुछ भी हासिल होनेवाला नहीं है। अगर किसीने मारपीटकर कुछ लेलिया या दूसरे से कुछ करवा लिया तो वह टिकनेवाली बात नहीं होगी। ऐसा तो चोर-डाकू करते हैं। दूसरे लोग डाका डालें तो क्या हम भी डाकू बन जायँगे ? नहीं, हम उनके रास्ते पर नहीं चलेंगे। वे हमें मारना चाहते हैं तो हम मर जायेंगे।

"हमारे बीच इस तरह मरने वाले बहादुर लोग मौजूद हैं, यह देखकर अच्छा लगता है । उनकी बहादुरी से उनका और देश का भला होगा। वे मरते-मरते भी मारनेवालों की शिकायत नहीं करेंगे। न उन्हें सजा दिलवाने की बात सोचेंगे। मारने वाले सजा में से छूटनेवाले नहीं हैं। ईश्वर उन्हें सजा देगा, हम सजा देनेवाले कौन होते हैं ? हम ईश्वर से भी नहीं कहेंगे 'हे भगवान, तू उन्हें सजा दे।' क्योंकि ईश्वर तो दयावान् है। हम

तो उससे अपने लिए और दुश्मन के लिए भी रहम ही मांगेंगे। और मरते वक्त भी सबका, मारनेवालों का भी भला चाहने की कोशिश करते हुए मरेंगे। इतने पर भी भगवान् जो करेगा उसमें दया ही भरी होगी।

"लेकिन ऐसों में से कोई वहां मर जाय तो क्या मैं यह कहूंगा, 'हाय क्या हुआ ?' मैं ऐसा नहीं कहूंगा। मैं तो कहूंगा, अच्छा ही किया जो उन्होंने इतनी बड़ी सेवा की। मुसलमानों की भी सेवा की है और ऐसा करके ईश्वर का काम किया है।

"लेकिन जो मरने को तैयार होजाते हैं,बहादुर बनते हैं, उनसे मौत हट जाती है। हम उम्मीद करें कि उन्हें मरना नहीं पड़ेगा। वहां सुहरावर्दी साहब हैं, छोटे-मोटे अफसर हैं। जो डाके डालने वाले भी हैं उनको ईश्वर सुमति देगा और डाका डालने वाले भी चेत जायेंगे तथा दूसरों को मजबूर करने की बात छोड़ देंगे। मैं तो यहांतक उम्मीद करता हूं कि वहांके सब मुसलमान भाई इकट्ठे होकर अपने हिंदू भाइयों की रखवाली अपने जिम्मे लेलेंगे और जगह-जगह से मुसलमान भाइयों के मिलकर तार मेरे पास आयेंगे कि 'आप फिकर न करें, हमारे यहांखतरे की कोई बात नहीं है।' और तब मैं नाचूंगा।

हिन्दू हूं इसलिए मुसलमान क्यों हूं

"एक भाई ने पूछा है कि 'मैं क्यों कहता हूं कि 'मैं हिंदू हूं इसलिए मुसलमान हूं ?' यह तो साफ बात है। यह मैंने गीता से सीखा है। गीता में बताया है:—

यो मां पश्यति सर्वत्र, सर्वं च मयि पश्यति।
तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति॥

यानी जो मुझे हर जगह देखता है, उसका मैं नाश नहीं करता और वह मेरा नाश नहीं करता। गोया कुरान में, जिंदा-

वस्ता में, बाइबल में, सबमें राम है और ईसाई, पारसी, सिक्ख, मुसलमान जिस गॉड को, जिस हुरमस को और जिस खुदा को भजते हैं वह ईश्वर ही है। और मैं इस धर्म का माननेवाला सच्चा हिंदू हूं इसीलिए मैं मुसलमान हूं और ईसाई भी हूं। यह सिर्फ दिमाग की या कहने की बात नहीं है; यह हकीकत है। ईशोपनिषद् में भी ऐसा ही लिखा है कि 'मैं सब चीज में हूं और सारा मुझमें ही है।' और फिर लिखा है कि 'वह दौड़ता भी है, वह स्थिर भी है।' ईश्वर के बारे में इस प्रकार कई तरह की बातें गीता-उपनिषद् में कही गई है।

राम के साथ रहीम क्यों ?

"दूसरे पत्र में कहा है कि 'अगर आप अपनेको खिदमतगार कहते हैं और 'राम और रहीम एक ही हैं तो दो में से एक को क्यों नहीं चुन लेते, इस बात का खुलासा दीजिए।" मैं खिदमतगार हूं इसलिए यह खुलासा देता हूं। विष्णु के सहस्रनाम हैं। पर ईश्वर के केवल हजार ही नाम नहीं हैं। एक लाख भी हैं। मैं तो कहता हूं कि ईश्वर के चालीस करोड़ नाम हैं, इसलिए क्या वजह है कि मैं केवल राम ही कहूँ या रहीम ही कहूँ ? और फिर किसीने पूछा है, क्या मैं मुसलमानों की खुशामद के लिए ऐसा कहता हूँ ?

"तो मेरा उत्तर है—नहीं। मैंने कोई सोच-समझकर प्रार्थना नहीं बनाई है। अब्बास तैयबजी की लड़की रेहाना जो पक्की मुसलमान भी है और हिंदू भी है उसने मुझसे कहा, ओज अबिल्ला सिखा दूं ? मैंने कहा, ठीक है सिखा दे; चाहे तो मुझे मुसलमान भी बनादे। तो वह बोली, नहीं, आप मेरे पिता हैं, मैं आपकी लड़की हूं। आप अच्छे हिंदू हैं, आपको मुसलमान बनाने की कोई जरूरत नहीं। पर उसने मुझे यह ओज अबिल्ला सिखा

दिया और वह तबसे चल रहा है। उसी तरह मेरे उपवास के बाद डा० गिल्डर ने एक पारसी मंत्र सिखा दिया। वह भी चल रहा है। मैं तो राम नाम का भूखा हूँ। उसे हजार तरीके से कहूंगा और कोई मजबूर करने आयेंगे कि फलां नाम लो फलां मत लो तो एक भी नाम न लूंगा।"

इसके बाद गांधीजी ने कुछ अन्य प्रश्नों के, जो उनके पास लिखकर आये थे, उत्तर दिये। वे संक्षेप में निम्न प्रकार हैं—

प्रश्न—आपने कहा, जिनमें मरने की ताकत नहीं है और मरना नहीं चाहते वे हिजरत करें। तो वे कहां जायं ?

उत्तर— वे मुट्ठीभर आदमी इतने लम्बे-चौड़े भारत देश में कहीं भी समा सकते हैं। अव्वल तो पंजाब में ही वे अपने लिए जगह कर सकते हैं, पर यदि नहीं कर सकते तो इतना बड़ा देश पड़ा है वे जगह ढूंढ लें। मुझे यह बताने की आवश्यकता नहीं है। इतना ध्यान रखें कि किसी से भिक्षा न माँगें, हाथ न फैलावें, बल्कि अपने-अपने बूते पर सब कुछ करें।

अंग्रेजी में लिखकर भेजे हुए कुछ पत्रों पर व्यंग करते हुए गांधीजी ने यह भी कहा कि मैं जो अंग्रेजी ठीक-ठीक नहीं जानता और जिसकी 'ऊजड़ गांव में अरंड पेड़' जैसी हालत है उसे ही इसमें गलती मिलती है तो अंग्रेजीदां कितनी गलती बता देंगे ? अंग्रेजी व टाइपराइटर की क्या जरूरत थी ?

प्रश्न— अपनी प्रार्थना में पुलिस बुलाते हुए आपको शरम नहीं आती ?

उत्तर—शरम तो बहुत आती है। और जब-जब पुलिस ने प्रार्थना में अमन करने की कोशिश की है तब-तबमैंने प्रार्थना रोकी है। फिर मैंने सरदार पटेल से याचना तो नहीं की कि आप मेरी रक्षा के लिए पुलिस भेज दें। इसपर भी पुलिस आती है तो मुमकिन है वह भी राम नाम व प्रार्थना से दो-एक भली बातें

सीख जायेगी। उसका द्वेष क्यों ?

प्रश्न—हिंदू-धर्म में आप अहिंसा कहां से ले आये? अहिंसा से तो आप हिंदुओं को बुजदिल बना रहे हैं।

उत्तर—मेरी वजह से कोई बुजदिल हुआ है ऐसा मेरे ख्वाब में भी नहीं है। वह छोटी लड़की आभा जो पहले कुछ डरती थी वह भी मेरे पास रहकर बहादुर बन गई है। मैंने उसे कह दिया, तेरा पति तेरे साथ नहीं जायेगा; तो वह अब अकेली ही खतरे की सब जगह पर चली जाती है। तो क्या वह बुजदिल है ? वह निहत्थी जाती है। यह भी नहीं कहती कि मुझे खंजर दिलवाओ तब जाऊंगी। उस बेचारी के पास तो सब्जी काटने की छुरी भी मुश्किल से रहती है। मैंने यह कभी नहीं कहा कि आप लोग खतरे की सीटी सुनते ही सब भाग निकलें। हमें मरना है, और मारकर नहीं मरना है। अहिंसा हिंदूधर्म का असली सार है। आपकी गीता ने अहिंसा सिखाई है। मैं तो कहता हूं कि मुसलमान धर्म का सार भी अहिंसा है और ईसाई धर्म भी अहिंसा सिखाता है।"

: ६ :

जबरदस्ती से पाकिस्तान कभी नहीं मिलेगा

नई दिल्ली, ९ अप्रैल १९४७

"सुचेतादेवी ने आज जो भजन सुनाया है वह आप लोगों ने पिछली बार, जब मैं यहाँ था तब भी, सुना था। उसके शब्द जितने सुन्दर हैं उतने ही मीठे स्वर से वह गाया गया है। आज भी जब मैं उसे सुन रहा था मुझे वह वैसा ही ताजा और नया-सा लग रहा था। क्या ही अच्छा हो यदि हमारा देश ऐसा ही बन जाय और हम कह सकें कि यहांपर शोक नहीं है, आह नहीं है। लेकिन हम जानते हैं कि आज देश ऐसा नहीं है। पर एक-एक करके हरेक आदमी अगर इस भजन के मुताबिक अच्छा बन जाय तो देश भी ऐसा होजायेगा। समुद्र की क्या ताकत है ? एक-एक बूँद से ही तो वह बना है। इसी तरह देश भी एक-एक आदमी से बनता है। आज हम लोग ऐसे नहीं हैं कि इस भजन को सच्चे दिल से गा सकें। ऐसा देश ढूंढने चलें तो वह कौनसा होगा ? वह देश है हमारा शरीर और उस देश के निवासी हैं हमारे शरीर में रहनेवाला आत्मा। आत्मा के जो गुण होने चाहिएं वह इस भजन में बताये हैं। हमें चाहिए कि उन गुणों को अपनायें। अगर हम लोग ऐसे बन जायं तो फिर हमारे देश का नाम चाहे हिंदुस्तान रहे या पाकिस्तान, वह सुन्दर ही होगा। भले ही फिर उसमें ११ प्रान्त हों या २१ या चाहे जितने। पर सबको ऐसा होना चाहिए कि हर कोई आराम से रह सके, कोई मुफलिस न रहे, न कोई किसीपर आक्रमण कर सके।

गालियां व स्तुतियां कृष्णार्पण

"अपने देश को ऐसा बनाने के लिए आपको जिन्दा रहना है, हम सबको जिन्दा रहना है, मुझको भी जिन्दा रहना है। लेकिन आज जो होरहा है वह उससे उलटा ही होरहा है। मेरे पास जो ढेरों चिट्ठियाँ आरही हैं जिनमें गालियां भी रहती हैं और स्तुति भी होती है। हमें चाहिए कि जो गालियाँ मिलती हैं और जो स्तुति होती है उन सभी को कृष्णार्पण करके हम बरी होजायं।

"मैं समझता हूँ कि इन चिट्ठियों के लिखनेवालों में से कुछ लोग इस मजमे में होंगे ही। मुझे यह अच्छा लगता है कि वे मेरी बात सुनते हैं। क्योंकि सुनने से वे समझेंगे और मुल्क को फायदा पहुँचायेंगे।

हिंदू-मुस्लिम दंगे क्यों ?

"हम अभी तो आजादी पा रहे हैं। अभी हमने वह पाई नहीं है। अगर हम मिलजुल कर काम करें तो आज ही वाइसराय चले जायँ या सब बागडोर हमें सौंपकर वह बैठे रहें अथवा हम जो काम बतावें वह अपने दिलबहलाव के लिए करते रहें। वह खाली बैठने वाले आदमी नहीं हैं। बादशाही खानदान के हैं, बड़े चतुर हैं। उनकी बीवी भी चतुर है। उनसे हम काम ले सकते हैं। लेकिन आज जो हालत है उसमें नहीं ले सकते। अभी तो वह चौदह महीने तक बैठे रहेंगे। और हिंदुस्तान को प्रमाणपत्र देंगे कि वह कैसा अच्छा या बुरा है। हिंदुस्तान को ही देखने के लिए एशियाई कांफ्रेंस में एशिया के लोग आये थे, लेकिन वे यह खयाल लेकर गये कि यहां हिंदू-मुसलमान लड़ रहे हैं। वे क्यों लड़ रहे हैं, यह किसीको पता नहीं। कम-से-कम मुझे तो पता नहीं है कि क्यों लड़ रहे हैं।

"क्या पाकिस्तान के लिए लड़ रहे हैं ? वे कहते हैं कि हम पाकिस्तान लेकर रहेंगे। क्या वे हमें मजबूर करके लेंगे ? जबर-दस्ती से लेंगे ? जबरदस्ती से एक इंच जमीन भी नहीं ले सकते। समझा-बुझाकर लें तो सारा हिंदुस्तान भले ही ले लें। मुझे तो यह अच्छा लगेगा कि हमारे आजाद हिंदुस्तान के पहले प्रेसी-डेंट जिना साहब बनें और वह अपनी केबिनेट बनावें। लेकिन इसमें एक ही शर्त होगी कि वह खुदा को हाजिर-नाजिर समझें यानी हिंदू, मुसलमान, पारसी सबको एक समझें।

'मुहम्मद' गांधी

"चिट्ठियाँ भेजनेवालों में एक आदमी लिखता है, 'तुम्हें 'मुह-म्मद गांधी' क्यों न कहा जाय ?' और फिर बड़ी खूबसूरत गालियाँ दी हैं, जिन्हें यहाँ दुहराने की जरूरत नहीं है। गाली देनेवाले को जवाब न दिया जाय तो वह एक, दो, तीन या अधिक बार गाली देकर थक जायगा। थककर या तो चुप हो जायगा, या और गुस्से में आकर मार डालेगा। पर मारने के बाद फिर क्या होगा ? हमारा कुछ नहीं बिगड़ेगा। कोई कहे कि फिर हमारे बीवी-बच्चों की रखवाली कौन करेगा ? तो उसे समझना चाहिए कि उनकी रखवाली करनेवाला तो ईश्वर बैठा है। फिर हम परेशान क्यों हों ?

बंगाल-विभाजन

"बंगाल-विभाजन के आन्दोलन को शान्त करने का सबसे अच्छा तरीका उस बारे में हिंदुओं के साथ दलील करके उन्हें समझाना होगा और अभी से उन्हें यह बताना होगा कि वह उनसे कोई बात जबरदस्ती नहीं कराना चाहते। अपने सर्वथा निष्पक्ष व्यवहार से यह सिद्ध करना होगा कि पाकिस्तान में

हिन्दुओं को निष्पक्षता और न्याय के बारे में किसी तरह की आशंका नहीं रखनी चाहिए । मुसलमानों के साथ केवल मुसलमान होने के कारण ही पक्षपात न किया जायगा और सरकारी नौकरी के लिए आदमी चुनते समय केवल उसकी योग्यता का ही ध्यान रखा जायगा। अगर सुहरावर्दी साहब ऐसा करें तो समूचा बंगाल एक आजाद सूबा बन जाय । फिर उसके दो या चार टुकड़े करने की बात न होगी। अल्पमत वालों की खुशामद करके उनके दिल को, इस तरह जीत लेना चाहिए—हिंदुओं के साथ उन्हें इस तरह पेश आना चाहिए—कि वे यही कहें कि 'हमारे प्रधान तो सुहरावर्दी ही होंगे । हमारा भरोसा उन्हीं पर है।'

"लेकिन अभी वैसा नहीं हैं। मेरे पास आज ही सुशीला पै का, जो पहले राजकोट में स्कूल चलाती थी, खत आया है। उसने वहांके हालात बताये हैं कि वह जहां काम करती है वहां इतना खौफ रहा कि कोई हिंदू औरत अकेली तो क्या मिलकर भी वहाँ जा नहीं सकती थी। जब वह खुद चली गई तब वे औरतें उसके पीछे-पीछे वहांपर जा सकीं।

"मैं यह कहे बिना नहीं रह सकता, अगर हिंदुस्तानियों में सच्ची बहादुरी हो तो पाकिस्तान लेने के लिए आज जो जोर-जबरदस्ती हो रही है वह अपने मकसद में नाकाम हुए बिना नहीं रह सकती । मैं हिम्मत से कहूँगा कि जबरदस्ती और डर दिखलाकर पाकिस्तान लेने की बात खाली सपना देखना है।"

: १० :

अंग्रेज़ दोस्त बनकर निकल जायं

नई दिल्ली, १० अप्रैल १९४७

प्रार्थना के आरम्भ में श्रीमती सुचेतादेवी ने गुरुदेव—का सुप्रसिद्ध बंगाली भजन गाया जिसका हिंदी भावार्थ इस प्रकार है—

"तेरे अपने लोग अगर तुझे अकेला छोड़कर चले जाते हैं तो चिन्ता करने की कोई बात नहीं। तेरी आशा-लताएं मुरझा जाती हैं और फलती नहीं हैं तो भी तू चिन्ता मत कर। बार-बार दिया जलाने पर भी वह बुझ जाता है तो घबराने की आवश्यकता नहीं। और तेरी वाणी सुनकर जंगली पशु तुझे घेर लेते हैं तो भी तुझे अपने हृदय को मजबूत रखना है।"

इसपर प्रवचन करते हुए गांधीजी ने कहा—"भजन जितना मीठा है, उसका अर्थ भी वैसा ही बुलन्द है और आज आप लोगों पर और हम सबपर वह लागू होता है। हमपर कितनी ही मुसीबतें और कठिनाइयां क्यों न आयें हमें उनसे निराश नहीं होना चाहिए, घबराना नहीं चाहिए, यह इस सारे भजन का निचोड़ है। जो दिया जलाया जाता है वह गुल हो जाता है और अंधेरा छा जाता है तो भी हमें उसे सहन करना है। जो दिया बुझ गया, जो जिन्दगी चली गई, वह लौटकर तो आनेवाली है ही नहीं। हिंदू-मुसलमान जानवर बन जाते हैं,पर उन्हें याद रखना चाहिए कि वे झुकी हुई कमरवाले जानवर नहीं है, सीधी कमरवाले मनुष्य हैं इसलिए घोर विपत्ति में भी

उन्हें धर्म और श्रद्धा नहीं छोड़नी चाहिए।

"आज भी मेरे पास काफी खत आये हैं। एक सज्जन ने लिखा है कि हिंदू-मुसलमान दोनों हैवान बने हुए हैं। दोनों लड़ते हैं। क्या इसमें से कोई रास्ता नहीं है ? रास्ता तो है। दो में से एक जानवर न बने यही इसमें से निकलने का सीधा रास्ता है। पर पत्र-लेखक ने एक बात और कही है कि 'तीसरे लोग क्या करते हैं यह बड़ा सवाल है। वाइसराय साहब हिंदुस्तान की सत्ता हिंदुस्तानियों को सौंपने आये हैं। माना कि वह सच्चे दिल से आये हैं ; अंग्रेजों ने अपने बादशाह के कुटुंब के बड़े योद्धा को यहां फैली हुई अपनी सत्ता को समेट लेने के लिए ही भेजा है ; और उनको यहां भेजनेवाले ब्रिटिश मिनिस्टर लोग भी दिल के सच्चे हैं। फिर भी सवाल यह है कि जो अंग्रेज व्यापारी इतने बरसों से हमें चूस-चूसकर खाते रहे हैं वे ठीक तरह से रहेंगे या अपनी कारगुजारियों को चलता रखेंगे ? आज तक हमारा कुल व्यापार उनके हाथों में रहा है; अब आगे वे क्या करेंगे ?' यह प्रश्न सही पूछा गया है। हिंदू-मुसलमान मिलकर उन्हें रखना चाहें तब वे दोस्त की तरह रहेंगे या उनके न चाहने पर भी जबरदस्ती हमपर वे अंग्रेज व्यापारी लदे रहेंगे। दूसरी तरफ सिविल सर्विस का जोर है। उसने तो हम लोगों पर इतना काबू जमाया है कि हम यह जान नहीं पाते थे कि हमें कभी आजादी मिल भी सकेगी या नहीं। यह तो ईश्वर की दया है कि हमारे हाथ दो-एक ऐसी तरकीबें आगईं और हालात ऐसे बन गये कि अंग्रेज जाने को कहते हैं। लेकिन अभी तो सिविल सर्विस भी है और उनके सोल्जर भी हैं। उनका खाना-दाना यहां बना रहेगा तो वे क्यों जायंगे ?

"ऐसा तो न होगा कि वाइसराय साहब की दी हुई चीज यूं ही वापस छीन ली जाय ? ऐसी शंका पर मुझे यही कहना है कि

अभी जो हालत है उसमें हम कुछ भी नहीं कह सकते। अभी स्वराज्य का अरुणोदय ही हुआ है; सूरज चमका नहीं है। हमें पता नहीं कि उस सूरज में गरमी कितनी है। इस समय तो हम थरथर कांप रहे हैं। हमारे दिलों में संदेह भरा हुआ है। सूरज चमकेगा तभी हमें उसकी सही गरमी का पता चलेगा।

"इस बारे में मैं आप लोगों से तो कुछ नहीं कहना चाहता। लेकिन उन अंग्रेज लोगों से, व्यापारी, सिविलियन और सोल्जर सभी लोगों से कहना चाहता हूं कि अगर आपको अंग्रेज़ों का नाम कायम रखना है तो आप यहांसे अब रवाना हों। आजतक आप हमारे कंधों पर बैठें रहे, यह अच्छा नहीं किया; लेकिन अब आप उतरने को तैयार हो जायं तो अच्छा होगा।

"उन लोगों से यही काम कराने के लिए माउन्टबेटन साहब यहां आगये हैं। और वह अकेले नहीं हैं। इंग्लैण्ड वालों की सारी ताकत अपने साथ लेकर वह आये हैं। ऐसा करने में उन्हें कुछ नुकसान भी उठाना पड़ेगा; पर इसके लिए वह तैयार हैं। इसका कुछ सबूत भी उन्होंने दिया है। हमने कहा कि सिविल सर्विस जानी चाहिए, तो वह सिविल सर्विस जा रही है और उन्हींके सिर पर जा रही है। यानी उनको पेन्शन आदि ब्रिटेन ही देगा।

"इधर माउन्टबेटन साहब ने गवर्नरों को और उनके सब सेक्रेटरियों को भी बुलाया है—सही बात समझाने के लिए बुलाया गया है। उधर चर्चिल और उसकी पार्टी भी मोर्चा लिये बिना न मानेगी। इतने पर भी वाइसराय साहब का कहना है कि हम ब्रिटिश प्रजा के नाम से यहां आये हैं और उसी की राय से अब हमें यहांसे लौट जाना है। वाइसराय साहब के इस काम में गवर्नरों को, अंग्रेज व्यापारियों को और सिविल सर्विस वालों को सहयोग देना चाहिए। उन सबको यहां से चला जाना

चाहिए। यहां रहना चाहें वे खुशी से रहें। पर आजतक जो किया उससे उलटा करें, यानी हमें चूसने के बदले हमें फूलने-फलने में मदद दें। ऐसा करेंगे तो उनकी नामवरी होजायेगी।

दंगों की जिम्मेदारी

"लेकिन सब जगह से बात आरही है कि जितना दंगा-फसाद होगया है उसमें उनकी शरारत भरी थी। इस बात की माउन्टबेटन साहब को भी बू आरही है। उनके दिल में शक होगया है कि लोगों की यह बात कहीं सही न निकल जाय। अब यहांके अंग्रेजों को यह देखना है कि हिंदू-मुसलमान जो बात मानते थे कि इन दंगों में अंग्रेजों का ही हाथ है वह सही साबित न हो। अगर वह बात सही है तो इतिहास किसीका लिहाज रखनेवाला नहीं है। भावी इतिहास कहेगा कि वे लुटेरे लोग थे।

जाने का निश्चय करें

"परन्तु वे कह सकते हैं कि जो हुआ सो हुआ। अब हमने नया पन्ना खोल दिया है। माउन्टबेटन साहब तो अच्छा करना चाहते हैं ही, पर उनकी कामयाबी अंग्रेज व्यापारी, अंग्रेज सोल्जर और अंग्रेज सिविलियन के हाथों में ही हैं। उन सभी की नेकनीयत न होगी तो वाइसराय का किया-कराया खतम हो जानेवाला है। इसलिए हमको प्रार्थना करनी चाहिए कि ईश्वर उन लोगों को सुमति दे। हिंदुस्तान छोड़ जाने में उन्हें चाहे कितनी ही परेशानी क्यों न हो, उनके सामने अपने भविष्य के बारे में अंधेरा ही क्यों न छाया हुआ हो, फिर भी मैं उनको कहना चाहता हूं कि उनकी उन्नति इसीमें है कि वे यहां से जाने की बात पक्की करलें।

"इसके बाद हमारा झगड़ा निपटाने में वे हमें मदद दे सकते हैं। ऐसा करने में वे सफल भी होजायंगे। फिर उनको बड़ा यश मिलेगा। मेरी ईश्वर से प्रार्थना है कि वे यहांसे दुश्मन की तरह न जाकर दोस्त की तरह भलाई के साथ जायें और हमारे दिलों में उनकी दोस्ती बनी रहे।"

: ११ :

स्वधर्म में मरना अच्छा है

नई दिल्ली ११ अप्रैल १६४७

"आपको खबर देते हुए मुझे संकोच होता है कि आज मैंने एकाएक बिहार जाने का निश्चय कर लिया है। आप जानते हैं कि मेरा क्षेत्र नोआखाली और बिहार है। इनको मैंने चुना है, ऐसा नहीं है। नोआखाली तो मैं दैवयोग से यानी ईश्वर की पुकार सुनकर चला गया। उसी सिलसिले में मेरा बिहार जाना भी हुआ। नोआखाली में मैं जितने दिन रहा, उसमें मैंने काफी काम कर लिया। वहां जो हिंदू आतंक से विह्वल हो गये थे उन्हें कुछ शांति मिली। पर जिस तरह वहां हिंदुओं के लिए काम हुआ उसी तरह मुसलमानों के लिए भी हुआ। आज उसकी कीमत न सही, पर आगे चलकर जब हवा बदलेगी तब वहां किये गए काम का मूल्य देश की समझ में आयगा। वैसे तो आज भी वहाँ की गई कोशिशों का फायदा नजर आता है। आज भी वहां नेक मुसलमान अपने हिंदू पड़ोसी को फिर से भाई समझने लगे हैं, पर अभी ऐसे लोगों की तादाद इतनी नहीं बढ़ी है जितनी बढ़नी चाहिए। फिर भी वहां जो काम होरहा है उससे भविष्य में बहुत लाभ होनेवाला है इसमें शक नहीं।

"इस समय मेरा काम उतना नोआखाली में नहीं है जितना बिहार में है। बिहार से एक मुसलमान भाई का तार आया है कि आप लंबे अरसे तक बिहार से बाहर रहे, अब आपको यहां लौट आना चाहिए; आप आयेंगे तभी हमारे दिल को तसल्ली

मिलेगी। यह ठीक है कि मैंने बिहार जाने का निश्चय इस तार के कारण नहीं किया है, पर अब मेरा दिल वहीं लगा हुआ है, क्योंकि मैंने तो वहां कहा है कि करूंगा या मरूंगा।

बिहार को आदर्श बनाना है

"करूंगा से मतलब यह है कि बिहार के हिन्दू-मुसलमान साथ मिलकर भाई-भाई की तरह रहने लगें। बिहार के बाहर चाहे सब जगह अंगार ही क्यों न बरस रहे हों तब भी वहां हिंदुओं और मुसलमानों को मिलकर अमन के साथ रहना है। बिहार में कई देहात मौजूद हैं जहां बाहर की आग का असर नहीं पहुंचा है। बिहार में ही नहीं, ऐसे नोआखाली में भी हैं और पंजाब में जहां इतना दंगा मच गया है वहां भी ऐसे गांव पड़े हैं जहां सब मिलकर शांति से और एक-दूसरे के भरोसे पर रह रहे हैं। ऐसे देहात सारे हिंदुस्तान में मिल जायेंगे।

"आप पूछ सकते हैं कि कल-परसों तो तुमने पंजाब जाने की बात की थी, उसे एक ओर रखकर अब बिहार क्यों जाना चाहते हो ? और, वाइसराय से बात करने के लिए जो इधर आये थे सो वह बात क्या पूरी हो गई ? अगर वाइसराय से बातें हो भी गई हैं तो आखिर उसका क्या अंजाम आता है यह देखने के लिए तो रुक जाओ। पर मैं अंजाम के लिए क्यों रुकूं ? अंजाम लाना मेरे हाथ की तो बात तो है नहीं। इन बातों का निर्णय करनेवाले दूसरे हैं। मुझसे वाइसराय की जो बातें होनी थीं वे हो चुकीं। मैंने कहा था कि मैं यहां दिल्ली में दो आदमियों का कैदी हूं, एक वाइसराय का और दूसरा पंडित जवाहरलाल नेहरू का। मेरे पास राजेन्द्र बाबू आये थे। उनसे मैंने बातचीत करली है और नेहरूजी के पास भी संदेशा भेज दिया है। सबने मिलकर मुझे इजाजत दे दी, तब मैंने बिहार जाने का निश्चय किया।

स्वधर्म में मरना अच्छा

"बिहार जाना मेरा स्वधर्म है। मैं गीता का सेवक हूं। गीता सिखाती है कि स्वधर्म का पालन करो और अपने ही क्षेत्र में बने रहो। गीता ने साफ-साफ कहा है कि स्वधर्म में और स्वक्षेत्र में मरना अच्छा है, परधर्म में जाना भयावह है। इसीलिए दिल्ली जैसे परक्षेत्र में रहना भयावह होजाता है।

"अगर पंजाब जाने के लिए ईश्वर की आवाज आती तो मैं जरूर ही चला जाता। आप पूछेंगे कि क्या ईश्वर तुझसे कहने को आता है? वैसा कोई ईश्वर मेरे पास नहीं आता। लेकिन भीतर से आवाज तो आती है ही। जो कोई ईश्वर का भक्त बन जाता है वह अपने भीतर बैठकर ईश्वर की आवाज सुन लेता है। पंजाब के बारे में मुझे वैसी आवाज नहीं सुनाई दी।

"पर इतना मैं कहूंगा कि पंजाब जाने की बात पर मैंने काफी गौर किया और इस नतीजे पर आया कि आज वहां जाने से कोई खास मतलब पूरा होनेवाला नहीं है, क्योंकि वहां हमारा राज नहीं है। अगर वहां लीग का भी राज होता तो वह हमारा ही राज कहा जाता, क्योंकि अगर लीगवाले आते हैं तो वे वोट के जरिये आते हैं और तब वह हमारा राज होजाता है। लोगों के वोट से जो राज आयगा वह लोगों का ही राज कहलायगा। वह राज सुख देनेवाला हो या दुःखदायी हो यह देखना हमारा काम है।

"फर्ज कीजिये कि हमारी कमनसीबी से हमारे देश में एक हिंदू राज्य होगया और दूसरा मुसलमानों का पाकिस्तान बन गया। अगर दोनों ही ऐसे बन जायं कि वहाँ दूसरी कौम वाले सुख-शांति से न रह सकें, तो वह हिंदू राज्य नरक होजायगा और वैसा पाकिस्तान नापाकिस्तान होजायगा। सच्चा पाकिस्तान वही है जहां पर अदल इन्साफ (सही-सही न्याय) हो, जहाँ मारपीट

के सहारे कुछ भी करवाने की बात न हो और जो कुछ करना-धरना है या पाना है वह दूसरों के हृदय पर असर डाल कर ही करने करवाने की बात है। परन्तु आज हमने अपना यह आदर्श भुला दिया है।"

पंजाब को सन्देश

"पर मैं पंजाब जाऊँ या न जाऊँ, वहाँ का काम तो करूँगा ही। जो वहाँ जाकर मुझे कहना है वह यहाँ पंजाब से बाहर रह-कर भी मैं सुना सकता हूँ। और मेरे सिखाने की तो एक ही बात है, जो मैं दोहराते हुए थकनेवाला नहीं हूँ। वह बात यह है कि एक-एक हिंदू व एक-एक सिख यह निश्चय करले कि वह मर जायगा पर मारेगा नहीं। मास्टर तारासिंह कहते हैं, 'हम मारेंगे।' उनका यह कहना मेरी समझ से ठीक नहीं है। उन्हें तो यही कहना चाहिए कि 'हम जो चाहते हैं, वह आप नहीं देंगे तो हम चाहे मुट्ठीभर ही आदमी क्यों न हों मर मिटेंगे पर लेकर ही रहेंगे। मारने की बात उन्हें नहीं करनी चाहिए। इतनी बात सुनाने के लिए मुझे पंजाब तक जाने की जरूरत नहीं है।

मौत से डर नहीं

"बिहार को भी मैं बाहर से सुना सकता था, पर मैं अनुभव करता हूँ कि वहाँ कुछ लोगों को समझाना जरूरी है। नोआ-खाली में भी मैं इसी वजह से घूमा। लोगों ने कहा, तुम्हें मार डालेंगे। पर मैं कहता हूँ, आप सब-के-सब रक्षा करेंगे तो भी मुझे मौत से बचा नहीं सकेंगे। डाक्टर-हकीम भी बैठे रह जायेंगे। आज जो भजन गाया गया उसमें हकीम लुकमान ने भी हाथ मलकर निराश हो कहा कि जिंदगी की बहार चन्द रोज की ही है। तो फिर हम मौत से क्यों भागें? हमें बहादुरी के साथ मरना चाहिए। इस तरह हमें चलना चाहिए कि हम पर

हाथ चलाने वालों पर दुनिया लानत बरसावे । सारी दुनिया उन लोगों से कहे कि आप जालिम होकर पाकिस्तान लेना चाहते हैं सो कैसे ले सकते हैं ?

सत्याग्रह का रहस्य

"सत्याग्रह का रहस्य ही यह है कि सत्याग्रही समूची दुनिया का मत अपनी ओर कर लेता है । मैंने शुरू से कहा था कि हमें अमेरिका या इंग्लैंड में प्रचारक लोगों के भेजने की आवश्यकता नहीं है, यहीं बैठे-बैठे हमारी सचाई चमकेगी और सारी दुनिया देखने आयगी । दक्षिण अफ्रीका में भी मैंने इसी प्रकार दुनिया की हमदर्दी कमाई थी और अंग्रेज तथा अमेरिकनों तक ने मेरी बात को सही बताया था ।"

: १२ :

अखबार जनता को गुमराह न करें

नई दिल्ली, १२ अप्रैल १९४७

प्रार्थना में आज भी महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर का सुप्रसिद्ध बंगाली भजन श्रीमती सुचेता कृपलानी ने गाया, जिसके शुरू के बोल हैं :—

जदि तोरी डाक शुनि केउना
आसवे तबे एकला चलो रे।

भावार्थ यह है—"तेरी पुकार सुनकर अगर कोई तेरे साथ न आवे तब भी तू अकेला चला जा; तेरी बात कोई न सुने या न मानें तब भी तू अपनी बात कहता चला जा। यदि तू जंगल में बिलकुल अकेला रह जाय और कांटों से जख्मी होजाय तब भी अपने लहू-लुहान पांवों से चलता चला जा। यदि अंधेरी रात में तुझे कोई रोशनी न दिखावे तो अपनी पसली को जलाकर उसकी रोशनी में आगे बढ़ता चला जा" इत्यादि।

इसके बाद गांधीजी ने कहा—"कल का दिन राष्ट्रीय सप्ताह का आखरी दिन है। छः अप्रैल का दिन जाग्रति का दिन था। उस दिन हमने देखा कि सारा हिंदुस्तान एक होगया था। शहर तो एक होते ही हैं, क्योंकि एकता के बिना उनका व्यापार नहीं चल सकता, पर हिंदुस्तान के सभी देहात एक हैं यह अनुभव हमें उसी दिन हुआ।

हिंदुस्तान के कत्ल की तारीख

"देहात का एक होना बहुत बड़ी बात है। छः अप्रैल के दिन

लोगों से मैंने उपवास रखने को कहा और सारे देश ने वह बात मान ली। मैं कौन चीज था ? पर वह ईश्वर की पुकार थी। तभी मद्रास से लेकर पंजाब तक, और पंजाब से लेकर आसाम के डिब्रूगढ़ तक सभी देहात हिल उठे। हिंदुस्तान उस रोज जाग उठा। कल की १३ अप्रैल की तारीख हिंदुस्तान के कत्ल की तारीख है। उस दिन हिंदू, मुसलमान, सिख सभी एकसाथ जलियांवाला बाग में कत्ल हुए। वह कोई बगीचा नहीं था। चारों ओर दीवारों से घिरा हुआ एक आहाता था। उस घेरे में से भागने के लिए गुंजाइश न थी। एक छोटा-सा रास्ता था। वहां पर निहत्थे लोगों को कत्ल किया गया और कम-से-कम दो हजार (शायद पांच हजार) आदमी मारे गये। उस जगह हिंदू-मुसलमान-सिख सबके खून आपस में मिल गये। कोई नहीं बता सका कि वहांपर कितनी मात्रा में किसका खून बहा था। शीशी में भरकर अगर किसीका खून भेजा जाय तो बड़े-बड़े डाक्टर भी उसे जांच कर नहीं बता सकते कि वह खून हिंदू का है, सिख का है, या मुसलमान का। मतलब यह कि, जलियांवाला बाग में सभी हिंदुस्तानी एक साथ शहीद हुए

बेगुनाहों की हत्या

"आप यह न कहें कि वे वहां मरने के इरादे से तो गये नहीं थे फिर उन्हें शहीद क्यों कहा जाय ? सच है कि वे मरने के लिए नहीं गये थे; पर वे सब निर्दोष थे। बेगुनाह लोगों का मारा जाना बड़ी भारी बात होती है। वह भुला देने की बात नहीं है। हमारा काम है कि हम उन्हें याद रखें। वह कांड इतना भीषण था कि उससे सारा देश बेचैन होगया। उसीको देखकर गुरुदेव (रवीन्द्रनाथ ठाकुर) ने सरकार को पत्र लिखा और वह हमारे साथ आगये। इसलिए कल आपको तेरह अप्रैल का

दिन मनाना है। कल मैं यहां आपके साथ शरीक नहीं रहूंगा।
यह मुझे अच्छा नहीं लगता। पर अब मैंने बिहार जाने का
निश्चय कर लिया है।

"यह सवाल हो सकता है कि एक दिन के लिए क्यों न रुक जाऊं ? लेकिन मैं बिहार भी अपने मौज-शौक के लिए तो नहीं जा रहा हूँ। वहां जाकर भी हिंदुस्तान की जो बन पड़ेगी सेवा करूंगा। उपवास तो रेलगाड़ी में भी होसकेगा। इसलिए मैं आज जाऊंगा। आप कल उपवास करें और तेरह अप्रैल उसी तरह मनावें जिस तरह पिछले इतवार को ६ अप्रैल का दिन आपने मनाया था।

आपस में लड़ें नहीं

"अगर आप लोगों ने इन सात दिनों की सारी बातें ठीक तरह समझ ली हैं तो आप जितने आदमी यहां आते रहे हैं इतना ही कल निश्चय कर लें कि हम मर जायेंगे पर मारेंगे नहीं। ऐसा हम क्यों कहें कि मार कर मरेंगे ? ऐसा भी क्यों कहें कि हमारे हाथ में तलवार या बन्दूक होगी तभी हममें मरने की हिम्मत आयेगी। बन्दूक के सहारे मैं नहीं डरूंगा और उसके बिना डर जाऊंगा, ऐसा कहने में हमारी कौनसी शोभा है ? हम लाठी, तलवार, बन्दूक सब छोड़ें और ईश्वर को अपने साथ लेकर चल दें। फिर सब जगह निडर होकर घूमें और यह ऐलान करदें कि हम हिंदू-मुसलमान कभी भी आपस में नहीं लड़ेंगे।

सच्ची आजादी

"लेकिन आज तो हम बुरी तरह से लड़ रहे हैं। विदेशी लोग जो मिलने आते हैं उनके सामने मैं शरमिंदा होजाता हूँ। फिर भी उन्हें तो मैं जवाब दे देता हूँ कि दीवाने बननेवाले चन्द लोग ही हैं, चालीस-के-चालीस करोड़ दीवाने नहीं बने हैं। और मुझे

पूरा विश्वास है कि एक दिन वह आयेगा जब हिंदुस्तान के सब लोग यह निश्चय कर लेंगे कि हम अपनी बात बुद्धि के बल से हासिल करेंगे, तलवार के बल से नहीं। हिंदुस्तान अगर सच्ची आजादी चाहता है तो सभीको यह सबक सीख लेना चाहिए।

अखबार वालों को चेतावनी

"दूसरी बात मुझे यह बतानी है कि कोई कितना ही चीखे हमारे अखबार दुरुस्त होते ही नहीं हैं। आज एक अखबार ने तो यहाँतक लिख दिया है कि गांधी इसलिए जारहा है कि वर्किङ्ग कमेटी के साथ उसका झगड़ा होगया है और वर्किंग कमेटी के साथ अब उसकी बनती नहीं है। और यह किसी छोटे-मोटे मामूली अखबार ने नहीं लिखा है। वह बड़ा प्रतिष्ठित और काफी बिकनेवाला अखबार है। इसे देखकर मुझे शरम आती है कि हमारे देश के अखबार कितने गिर गये है।

कार्यसमिति से झगड़ा नहीं

"अपने जाने का कारण मैंने यहां कल दिया था और वह शुद्ध सत्य ही बताया था। फिर भी अखबार वाले ने जो यह लिखा है वह बिलकुल निकम्मी बात है। मैं जा तो रहा हूँ, पर हममें झगड़ा थोड़े ही होगया है? हम तो एक-दूसरे से पूरी मुहब्बत करते हैं। अभी मौलाना साहब आये थे, राजा जी थे, सरदार थे, नेहरूजी थे और कृपलानी भी थे। सभी लोग आपस में बड़े प्रेम से बातें कर रहे थे। सिर्फ राजेन्द्र बाबू यहाँ नहीं आये थे, तो क्या उनका मुझसे झगड़ा हो गया था इसलिए वह नहीं आये? कैसी वाहियात बातें हैं ये सब। हाँ, ऐसा कह सकते हैं कि हमारे बीच मतभेद है। पर मतभेद कब नहीं थे? मतभेद तो सदा रहे हैं। बाप-बेटे के बीच

भी मतभेद रहता है । पर यहां तो अखबारवाले का मतभेद पर इशारा नहीं है, वह तो साफ लिखता है कि हम आपस में झगड़ पड़े हैं !

"अगर झगड़ा होने के कारण मैं जाता तो वाइसराय से जाने की इजाजत लेने क्यों जाता ? नेहरूजी और कृपलानीजी की इजाजत क्यों मांगता ? यों ही बिना कहे-सुने न चला जाता ?

"इतना ही नहीं सरदार ने तो अभी मुझसे पूछा कि लौट कर कब आओगे ? तो मैंने उत्तर दिया, 'जब आप हुक्म देंगे'। झगड़े की बात होती तो क्या मैं ऐसी बात कहता ? मैं जब बागी बन जाता हूँ बड़ा पक्का बन सकता हूँ और बड़ा ही खूबसूरत बागी बनता हूँ। मैं किसीकी सुनूंगा नहीं तो किसीको मारूंगा भी नहीं; न किसी को सताऊंगा।

गन्दी अखबारनवीसी

"लेकिन लोगों को इस तरह घबराहट में डालकर अपने अखबार की बिक्री बढ़ाना यह उनका पेशा है। पापी पेट को भरने के लिए ऐसा करना बड़ी बुरी बात है। मैं भी पुराना अखबारनवीस हूँ और मैंने उस अफ्रीका के जंगल में अच्छी-खासी अखबारनवीसी की है, जहाँपर हिंदुस्तानियों को कोई पूछने वाला भी न था। अगर ये लोग अपना पेट पालने के लिए अखबार के पन्ने भरते हैं और उससे हिन्दुस्तान का बिगाड़ होता है तो उन्हें चाहिए कि वे अखबार का काम छोड़ दें और कोई दूसरा काम गुजारे के लिए ढूँढ़ लें। अखबारों को अंग्रेजी में राज्य की चौथी शक्ति बताया गया है। इनसे बहुतसी बातें बिगाड़ी या बनाई जा सकती हैं। यदि अखबार दुरुस्त नहीं रहेंगे तो फिर हिंदुस्तान की आजादी किस काम की रहेगी ?

अखबारों की गुलामी

"हम लोग भी ऐसे हो गये हैं कि सवेरे उठते ही कुरान के बिना हमें चलेगा, गीता-रामायण के बिना काम चल जायेगा, लेकिन अखबार के बिना हमारा काम बिलकुल ही नहीं चलेगा। बड़े-बड़े लोग भी अखबार के गुलाम बन गये हैं, अगर सवेरे अखबार न मिला तो हाय-तोबा मच जाती है। अखबारवालों ने भी हवाई बातें कर-करके सबको गुलाम बना डाला है। लेकिन वे सारी बातें करीब-करीब निकम्मी ही होती हैं।

निकम्मे अखबार छोड़ दें

"मैं कहूँगा कि ऐसे निकम्मे अखबारों को आप फेंक दें। कुछ खबर सुननी हो तो दूसरों से जान-पूछ लें। अखबार न पढ़ेंगे तो आपका कोई नुकसान होनेवाला नहीं है। अगर पढ़ना ही चाहें तो सोचसमझ कर ऐसे अखबार चुन लें जो हिंदुस्तान की सेवा के लिए चलाये जा रहे हों, जो हिंदू-मुसलमानों को मिलजुलकर रहना सिखाते हों। फिर ऐसे अखबारवालों को भी इतनी धांधली में पड़ने की जरूरत नहीं रहेगी कि उन्हें रातभर जागते रहना पड़े और दिन में भी चैन न ले सकें। तथा ऐसी बेबुनियाद खबरें छापने की दौड़ भी नहीं लगानी पड़ेगी।

भले अखबारों का फर्ज

"भले अखबार वालों को चाहिए कि अगर वे कुछ बात सुन लें कि गांधी-नेहरू के या कृपलानी और आजाद के बीच झगड़ा होगया है तो उसे छापने से पहले गांधी से या नेहरू से पूछ लें। अगर ऐसा वह पूछने आते तो हम उन्हें डांट बताकर कहते कि ऐसी बेकार की बात क्यों करते हो?"

मुसलमान का सुन्दर पत्र

इसके बाद गांधीजी ने बताया कि आज एक मुसलमान भाई ने अच्छा पत्र भेजा है और एक हिंदू ने भी बढ़िया बात लिख भेजी है। मुसलमान भाई ने लिखा है कि सातवलेकरजी ने ईशोपनिषद् के मंत्र का जो अर्थ दिया है वह बड़ी बुलन्द चीज है उसी तरह का अर्थ ओजअबिल्ला का भी है। दोनों में कोई अन्तर नहीं है, कोई है तो अरबी और संस्कृत भाषा का है।

"हिंदू भाई ने पूछा है कि आप कुरान को धर्मपुस्तक मानते हैं तो मुसलमान क्यों गीता और उपनिषद आदि को धर्मपुस्तक नहीं मानते? वे क्यों मस्जिद में उन्हें नहीं पढ़ते?

"उत्तर सीधा है। सच्चे हिंदू के नाते मैं कुरान को धर्मग्रन्थ समझता हूँ, क्योंकि कुरान में खुदा की तारीफ लिखी है। लेकिन यह कौनसा न्याय है कि मैं मुसलमान से भी बलपूर्वक मनवाने जाऊं कि हमारे संस्कृत ग्रन्थों को भी तुम धर्मग्रन्थ मानो? यह तो कोई भलमनसाहत नहीं हुई।"

फिर मिलेंगे

अंत में गांधीजी ने कहा—"आशा है हम फिर मिलेंगे। जब जवाहरलाल कृपलानीजी या वाइसराय बुलायेंगे तब आजाऊंगा। बिहार से और नोआखाली से भी मैं आपका और पंजाब का काम करता रहूंगा। जिस लगान से आप इतने दिन प्रार्थना में आते रहे हैं इसी लगन से आप हरदम प्रार्थना करते रहें।"

: १३ :

शांति से समझाकर पाकिस्तान लें

नई दिल्ली १ मई १९४७

"यहां से गये मुझे बीस ही दिन हुए हैं। जब मैं गया था तभी मुझे शुबह था कि शायद जल्दी लौट कर आना पड़े। लेकिन मेरा स्थान बिहार और नोआखाली में था और मैं पन्द्रह दिन के लिए भी यहां रुक नहीं सकता था; इस वजह से मैं बिहार चला गया। मैंने कहा था कि मैं जवाहरलाल का कैदी हूं और उसके बुलाने पर आ जाऊंगा, उसका और कृपलानी का हुकम मिलने पर मैं यहां आगया हूं।

"यह जान कर आप खुश होंगे कि जब मैं यहां से बिहार गया तब लोगों ने मुझे बड़ी शांति दी। रास्ते भर किसी ने नहीं सताया। मैं आराम से सोया, थका नहीं और काम भी कर सका। लौटने में ऐसा नहीं हुआ। लोगों ने जगह-जगह शोर मचाया। उन्होंने यह नहीं सोचा कि मुझ जैसे जईफ आदमी को शांति देनी चाहिए उसकी नींद में खलल नहीं डालना चाहिए। सो न सकने के कारण आज मैं थका-थका-सा रहा। फिर भी दिन में मैंने काम तो किया ही, क्योंकि काम ही मेरा जीवन है। बिना काम किये मैं जी ही नहीं सकता। पर कम काम हुआ। लेकिन जो बात मुझे सहन नहीं होती वह है लोगों की चिल्लाहट और किस्म-किस्म के नारे। आप लोगों के द्वारा मैं सभी लोगों को सुनाना चाहता हूँ कि आगे वे ऐसा शोरगुल न करें, नारे न लगावें। स्टेशनों पर लोग जमा हो जांय तो भली ही बात है,

क्योंकि आयंगे तो दो-चार पैसे हरिजन-चन्दे के दे जायंगे। लेकिन उन्हें अशांति नहीं दिखानी चाहिए।

बिहार में क्या किया ?

"मैं आपको बताना चाहूंगा कि मैंने बिहार जाकर क्या किया ? वहां काफी काम हुआ है। जनरल शाहनवाज एक छोटी-सी जगह पर बैठ गये हैं। उनको अपने काम में अब फतह मिलने लगी है। जो मुसलमान लोग दुःख के मारे आसनसोल चले गये थे वे अब वापस आ गये हैं। आसनसोल में उन्होंने बहुत ज्यादा दुःख पाया और समझ गये कि आराम तो अपनी जगह पर ही मिल सकता है। उनके बाल बच्चे बिलकुल ही सूख गये थे, उनकी हड्डी-पसली निकल आई थी, उनकी किसी किस्म की परवरिश वहां नहीं हो पाई थी अब उन्हें दूध दिया जाता है। ताजा दूध तो मिलना अब असंभव हो गया है। क्योंकि हमारा गोधन सारा नष्ट हो चुका है, इसलिए उन बच्चों को सूखा दूध दिया जा रहा है। सुखाये हुए दूध में विटामिन नहीं रहते और वह जीवन-तत्त्व नहीं मिलता जो ताजे दूध में मिलता है। लेकिन दूध में जो अपना एक पोषक गुण है वह सूखे दूध में भी ज्यों का त्यों कायम रहता है। आसनसोल से लौटे हुए बच्चों को वह सूखा दूध दिये जाने के बाद अब वे तन्दुरुस्त हो रहे हैं, उनकी पसलियां भर आई हैं।

"दूसरा सवाल था बड़ों के राशन का। जब इतने आदमी लौट कर आ गये तब उनके खाने का इन्तजाम कैसे हो ? जहां उन्हें सताया गया था वहां खुद तो वे बाजार में राशन लेने के लिए जाने में डरते थे। सरकार ने उनके पास राशन भेजने की व्यवस्था की पर उनके हिंदू पड़ौसियों ने कहा; ये हमारे मेहमान हैं इनका राशन हम पहुँचायेंगे। सरकारी लोगों को इसलिए

परेशान होने की जरूरत नहीं है।

"एक दूसरी जगह की बात है। वहां बहुत से मुसलमान मारे गये थे। जो बचे थे वे वहां लौट कर जाने में झिझकते थे। उन की झिझक मिटाने के लिए उनके साथ आजाद हिन्द फौज के कुछ भाइयों को भेजा गया। उनको जाते देख कर हिन्दुओं ने उन आ० हि० फौज के सिपाहियों से कहा—

'आप क्यों जा रहे हैं, हम लोग हैं इन की सेवा करने के लिए; हम मर जायंगे, तब भी इनकी हिफाजत करेंगे।' आजाद हिन्द फौज के लोगों ने कहा कि हमें जनरल साहब का हुक्म है, हम नहीं लौट सकते। तब हिन्दुओं ने कहा—'क्या हम लोग हमेशा पागल थोड़े रहेंगे ? हम उस बार तो पागल ही हो गये थे। दस हजार आदमी मिल कर एक हजार को मार डालें उसमें बहादुरी ही कौन सी है। अब हम कभी ऐसा नहीं करेंगे।'

"इस प्रकार हिन्दुओं ने मुसलमानों का डर मिटा दिया और उन्हें अपनी जगह पर जाने का प्रोत्साहन दिया। नतीजा यह हुआ कि उन्हीं मुसलमान भाइयों ने खुद उन सिपाहियों को लौटा दिया। मुझे भरोसा है कि अगर बिहार सच्चा उतरता है तो हिन्दुस्तान भर में जगह-जगह जो बातें होरही हैं वे सब शांत हो जायंगी। मेरा कहना यही है कि हम सभी को बहादुर होना है। लेकिन मैंने सुना है कि अब तो दिल्ली में भी कायरता के काम हो रहे हैं। लुक-छिप कर रोज-ब-रोज कुछ हो रहा है। उधर डेरा इस्माइल खां में भी बहुत बुरी बातें हो रही हैं। अभी तक वे बन्द नहीं हुई।

शांति अपील पर हस्ताक्षर क्यों ?

"लोग पूछते हैं तुम लोगों ने जो दस्तखत किये थे वे कहां गये ? शांति क्यों नहीं होती ? जो दस्तखत मैंने दिये यह कोई जिना

साहब से मिल कर और उनसे बातचीत करके नहीं दिये। वायसराय ने आग्रह किया कि तुम दस्तखत दे दो। मैंने उनसे कहा कि मैं कौन हूँ देने वाला ? कांग्रेस का तो मैं चवन्नी का मेम्बर तक नहीं हूं। मेरे दस्तखत से फायदा क्या होगा ? मैं तो बिलकुल छोटा आदमी हूं। हां कायदे आजम बड़े आदमी हैं, उनके दस्तखत का बड़ा असर होगा। लेकिन वायसराय ने मुझसे कहा कि तुम्हारे दस्तखत जिना साहब चाहते हैं। इसके बिना वह दस्तखत के लिए तैयार नहीं होते। तुम दस्तखत कर दोगे तो हमें पता तो चल जायगा कि आखिर जिना साहब करना क्या चाहते हैं। मैंने तब दस्तखत कर दिये। इसके बाद की बातें मैं छोड़ देता हूं।

सब जातियों का प्रतिनिधि

"मेरे लिए ये दस्तखत नई बात नहीं है। जिन्दगी भर मैंने यही काम किया है और कर रहा हूं। लेकिन जिना साहब के दस्तखत भारी बात हैं। अगर उनकी कैद में सारे मुसलमान हैं तो उन सब मुसलमानों को जिना साहब की बात माननी चाहिए, क्योंकि उन्होंने मुसलमानों की ओर से दस्तखत किये हैं। मैंने हिंदू की हैसियत से दस्तखत कहां दिये हैं ? मेरी कैद में कोई नहीं है। मैं किसी भी पार्टी का नहीं हूं। मैं सभी का हूं। अगर बिहार में हिंदू फिर पागल बनेंगे तो मैं फाका करके मर जाऊंगा। उसी तरह अगर नोआखाली में मुसलमान दीवाने होंगे तो वहां भी मुझे मरना है। मैंने वह हक हासिल कर लिया है। मैं जितना हिंदू का हूं उससे कम मुसलमानों का नहीं हूं। सिख, पारसी, ईसाई का भी मैं उतना ही हूं। भले ही लोग मेरी न सुनें, पर जो मैं कहूंगा सबकी ओर से कहूंगा और सबके लिए कहूंगा।

"लेकिन जिना साहब तो बहुत बड़ी संस्था के प्रेसिडेन्ट हैं। उनके दस्तखत होजाने पर फिर क्या बात है जो मुसलमानों के हाथ से एक भी हिंदू मारा जाता है? हिंदुओं से मैं कहूंगा कि मुसलमान मारते हैं तो मर मिटो। अगर कोई मेरे कलेजे में खंजर भोंक दे और मरते-मरते मैं यह मनाऊं कि मेरा लड़का उसका बदला ले तो मैं निरा पापी हूं। मुझे बिना रोष के मरना चाहिए। पर मुसलमान छुरा मारेगा ही क्यों, जब उसे ऐसा न करने को कहा गया है?

"पर बात यह है कि सियासी मामले में जबरदस्ती नहीं चलेगी यह अभी उन्हें समझना है। लोग पूछते हैं कि जब हम दोनों ने लिख दिया, दस्तखत कर दिये कि मत मारो तब असर क्यों नहीं होता? अब भी मुसलमान शांत क्यों नहीं होते? डेराइस्माइल खां व सीमा प्रांत में यह सब क्या हो रहा है? डा० खान ने और बादशाह खान ने उसे रोकने का प्रयत्न किया पर वहां के लोग कहते हैं कि हम तो लोग वाले हैं।

शान्ति-स्थापना जिना का परम धर्म

"लीगी होकर भी सीमाप्रांत में लोग अगर जिना साहब की बात नहीं मानते तो मैं कहूंगा कि जिना साहब का यह परम धर्म है कि और सब छोड़ कर सबसे पहले उन लोगों को शांत करने का काम करें। अगर वे ऐसा नहीं करते तो क्यों नहीं करते? क्या इस तरह पाकिस्तान लेंगे? अगर उन्हें पाकिस्तान लेना है तो शांति से लें। तलवार के जोर से अगर कोई आदमी कुछ ले लेता है तो उससे बड़ी दूसरी तलवार से वह छीन लिया जाता है। जबरदस्ती से पाकिस्तान लेने की जिना साहब की बात कामयाब नहीं हो सकती।

वाइसराय से प्रश्न

"परन्तु मैं वाइसराय से भी पूछना चाहता हूं कि आपने जब

हम दोनों के दस्तखत ले लिये तो आप फिर अब क्यों कुछ नहीं कर पाते ? आप मेरा टेंटा क्यों नहीं पकड़ते ? जिना का टेंटा क्यों नहीं पकड़ते ? इस पर भी अगर हिंदू-मुसलमान लड़ते रहते हैं, सिख लड़ते हैं तो अंग्रेजों को अलग हो जाना चाहिए।

अहिंसा ही सही वीरता

"लेकिन अंग्रेज बने रहते हैं तो आप क्या करेंगे ? आप कहेंगे कि हम तलवार लेंगे पर तलवार से डर कर अंग्रेज कुछ देने वाले नहीं हैं। अब भी वे आजादी देने की जो बात कर रहे हैं सो तलवार के कारण नहीं कर रहे हैं। उनका कहना है कि हिंदुस्तान ने दुनिया को नया रास्ता बताया है। यही हमारी आजादी की वजह है। वैसे तो दुनिया में तलवार का बदला तलवार से लेने वाले बहुत होते हैं। बदला क्या वे तो एक के बदले में दस को काटने की बात करते हैं। मैं कहूंगा दस नहीं एक के बदले सौ भी काटो, फिर भी शांति न होगी। मार कर मरने में कोई बहादुरी नहीं है। वह झूठी है। न मार कर मरने वाला ही सच्चा शहीद है।

"आप पूछेंगे तब क्या सभी हिंदू, सभी सिख मर जांय । मैं कहूंगा, हां। ऐसी शहादत कभी बेकार नहीं जाने वाली है।

डर कर एक कौड़ी भी नहीं देंगे

"मेरी इस बात पर आप चाहें मुझे धन्यवाद दें चाहें गालियां दें, मैं तो अपने दिल की ही बात आपसे कहूंगा। जब आप शांति से सुन रहे हैं तब दिल का दर्द ही आपके सामने रखूंगा और कहूंगा कि आप बहादुर बनें, डरें नहीं। हम को डरा कर कोई लेना चाहेगा तो हम कुछ भी, एक कौड़ी भी, नहीं देंगे। समझा कर लेने आवें तो करोड़ भी दे देंगे। अगर आप ऐसी बहादुरी नहीं अपनाते और हिंदू, मुसलमान, सिख सभी पागल

हो जाते हैं तो अंग्रेज हिन्दुस्तान के लिए कुछ भी करें, कुछ भी दें वह हमारे हाथ में रहने वाला नहीं है। हमें जो कुछ हासिल करना है वह समझ बुझ कर हासिल करना है। इतना इल्म अगर हमने सीख लिया तब तो हमारी खैरियत है नहीं तो हिंदुस्तान का खातमा है, इसमें मुझे जरा भी शंका नहीं है।"

: १४ :

हिंदू-धर्म की जय कैसे हो ?

नई दिल्ली २ मई, १९४७

आज कुरान की आयत पढ़ने पर आपत्ति किये जाने के कारण प्रार्थना बीच में रोकनी पड़ी। जब कुरान की आयत का एक हिस्सा बोला जा चुका था तब एक नौजवान ने नारा लगाया—'बन्द करो, बन्द करो; हिन्दू धर्म की जय, बन्द करो, हिंदू धर्म की जय।' नारे को सुन कर गांधीजी ने प्रार्थना रोक दी और कहा—'ठीक है, आज उसी के मन की होने दो।' गांधीजी ने उसे शांत होने को कहा। लेकिन वह चिल्लाता रहा। इसी बीच पुलिस वाले उसे पकड़ कर ले गये। यह गांधीजी को ठीक न लगा। उन्होंने कहा—"पुलिस वालों तक अगर मेरी बात पहुंच पाती है तो मैं कहूंगा कि कृपा करके वे उस आदमी को छोड़ दें और यहां आने दें। प्रार्थना में अमन रखने के लिए पुलिस बीच में आये, यह मुझे बिलकुल नहीं सुहाता। रोज पुलिस यहाँ गिरफ्तारियां करती रहे और उसके बल पर मैं प्रार्थना करूं तो वह तो प्रार्थना नहीं हुई। मैं तो तभी प्रार्थना कर सकता हूं जब सभी लोग अपनी खुशी से उसे करने दें। आपने देखा कि इस जवान ने प्रार्थना बन्द करने को कहा तो मैंने बन्द कर दी। कल भी अगर वह बन्द करने को कहेगा तो मैं बन्द कर दूंगा। लेकिन उसने जो कहा 'हिन्दू धर्म की जय', तो धर्म की जय इस तरह नहीं हो सकती। उसे समझना चाहिए कि इससे धर्म डूब रहा है। दूसरों को प्रार्थना न करने देने से धर्म-रक्षा कैसे

हो जायगी ? पर उसका दोष नहीं है, हवा ही ऐसी चली है। आजकल सब चीज उलटी निगाह से देखी जाती है, कोई सीधी बात तो समझता ही नहीं; इसलिए अगर कोई मुझे प्रार्थना से रोकता है तो मैं गम खा लूंगा।

कुरान ने क्या बिगाड़ा है !

"परंतु मुझे इस बात का ज्यादा दर्द है कि उसने बीच में शोर मचाया। अगर शुरू से ही वह कह देता तो मैं पहले ही रुक जाता। इसमें पुलिस को बीच में आने की क्या बात थी ? इतनी पुलिस यहां प्रार्थना में शांति रखने के लिए रहती है, इससे मैं शर्मिन्दा होता हूं। मेरे धर्म की रक्षा पुलिस कैसे कर सकती है ? मैं खुद करूंगा तभी मेरे धर्म की रक्षा होगी। बल्कि 'मैं धर्म-रक्षा करूंगा' ऐसा कहना भी घमण्ड है। मेरे धर्म की रक्षा ईश्वर करेगा। आज मेरे दिल में प्रार्थना है तो ईश्वर मेरी रक्षा करेगा ही। बाहर की प्रार्थना न हुई तो क्या हुआ ?

"लेकिन आप लोग क्या कर सकते हैं ? आप तो शांति से बैठे हैं। ईश्वर का ध्यान करने, अपने को कुछ अच्छा बनाने के लिए आप यहां आये हैं। एक के कारण आप सब को भुगतना पड़ता है। पर उस एक को इतने सब मिल कर दबा दें और फिर प्रार्थना करें, तो उससे ईश्वर का दर्शन होने वाला नहीं है। वह तो अपना ही दर्शन होगा।

धर्म का पालन मरकर होता है

"मैं चाहता था कि वह लड़का शांत रह कर मेरी बात सुनता। मैं उसे समझाता। अगर वह आज न समझता तो कल समझता। कल न सही परसों समझता। कुछ भी हो, हमें यह याद रखना है कि धर्म का पालन जोर-जबरदस्ती से नहीं हो सकता। धर्म का पालन करने के लिए मरना होगा। संसार में

ऐसा कोई धर्म पैदा नहीं हुआ जिसमें मरना न पड़ा हो। मरने का इल्म सीखने के बाद ही धर्म में ताकत पैदा होती है। धर्म के वृक्ष को मरने वाले ही सींचते हैं। धर्म उन लोगों के कारण बढ़ता है जो ईश्वर का नाम लेते हैं, ईश्वर का काम करते हैं, ईश्वर का स्तवन करते हैं, उपवास और व्रत करते हैं और ईश्वर से यह आरजू करते रहते हैं कि हे भगवन् हमें रास्ता नहीं दीखता, तू ही दिखा। तब लोग कहते हैं कि वह तो भक्त है और उसके पीछे चलते हैं। धर्म इसी तरह बनता है। मारकर कोई नहीं धर्म पनपा; मर कर ही धर्म पनपा है। यही धर्म की जड़ है। सिख धर्म ऐसे ही बढ़ा है।"

इसके बाद गांधीजी ने पैगम्बर साहब की चर्चा करते हुए बताया कि किस तरह पैगम्बर मोहम्मद साहब ने भी बिना डर के हिजरत की और हजारों दुश्मनों के हाथों उनको और हजरत अली को उनकी श्रद्धा के कारण खुदा ने कैसे उन्हें बचाया; गोया, मौत के मुंह में खेल कर ही मोहम्मद साहब ने इस्लाम की जड़ मजबूत की।

"ईसाइयों का इतिहास भी ऐसा ही है। बौद्ध धर्म को भी अगर हम हिन्दू धर्म से अलग मानें तो वह भी तभी बढ़ा जब कई लोग उनके लिए मरे। जितने धर्म हैं उनमें एक भी मैंने ऐसा नहीं पाया जिसमें शुरू में कुरबानी न हुई हो। जब धर्म बन जाता है तब बाद में उसमें बहुत सारे लोग आ जाते हैं और गलत अभिमान पैदा हो जाता है। अब तो हिंदू धर्म वाले भी मारकाट पर उतर आये हैं, जब कि हिंदू धर्म में कभी खून खराबी करना नहीं सिखाया गया है।

धर्म के नाम पर

"आज तो धर्म के नाम से सभी भयभीत हो उठे हैं। लोगों

को न जाने इतना भयभीत क्यों किया जाता है ? हिंदू क्या, सिख क्या, सारा पंजाब व्याकुल हो उठा है। उधर से बंगाल की चीख सुनाई देती है। लोग कहते हैं पंजाब व बंगाल के दो टुकड़े करो। अगर टुकड़े करने ही हैं तो वे वाइसराय के पास क्यों जाते हैं ? मेरे पास क्यों नहीं आते ? आप लोगों के पास क्यों नहीं आते ? पाकिस्तान दिया जा रहा है तो क्या वह हिंदुओं को और सिखों को मटियामेट कर देने के लिए है ?

पाकिस्तान का कुरूप

"जिना साहब ने तो कहा है कि पाकिस्तान में अल्पमत वाले हिंदू और सिख पूरे सुरक्षित होंगे, उन्हें परेशान नहीं किया जायेगा। पर आज ऐसा क्यों नहीं है ? पंजाब व बंगाल में जो हो रहा है उसीमें तो मैं उनके पाकिस्तान की झलक देखूंगा न ? अगर सचमुच में पाकिस्तान ऐसा नहीं है तो जिना साहब जैसा कहते हैं वैसा करके क्यों नहीं बताते ? मुस्लिम बहुमत वाली जगहों में सिख और हिंदू जाति के एक-एक आदमी की हिफाजत क्यों नहीं होती ?

"सिंध, जहां हिंदू केवल पच्चीस ही फीसदी हैं, वहां उन्हें क्यों इतना डरना पड़ रहा है ? क्या पाकिस्तान का मतलब यह है कि उसमें सिवा मुसलमान के सभी हिंदू, सभी सिख, सभी ईसाई और दूसरे धर्म वालों को गुलाम बन कर रहना है ? ऐसा हो तो वह पाकिस्तान नहीं है। और हिंदुस्तान भी तभी सही हिंदुस्तान कहा जा सकता है जब उसके हिंदू बहुमत वाले इलाकों में मुसलमान के मासूम बच्चे तक को जरा भी आंच न आवे।

"जिना साहब पूछ सकते हैं कि हिंदुओंने क्या किया ? बिहार में हिंदुओं ने भी तो ऐसा ही किया है ? ठीक है कि उन्होंने गलती की। पर आज बिहार के हिंदू पछता रहे हैं।

प्रधान मंत्री तक कहते हैं कि मैंने गुनाह किया है। अगर सभी जगह ऐसा हो तो मैं समझूंगा कि कुछ बना। लेकिन आज तो सबने अपने धर्म का पालन छोड़ दिया है और दूसरा कोई पालन करता है तो कहते हैं कि हम उसे मारेंगे। लेकिन यह ठीक बात नहीं है। मुसलमान भाइयों को भी अपने कम तादाद पड़ौसियों से कह देना चाहिए कि सभी अपने धर्म का पालन करें, हम बीच में न आयेंगे।

हम अपना नुकसान न कर लें

"आखिर हमारे हाथ में एक चीज आ रही है उसे क्यों छोड़ें ? लेकिन सभी उसे छोड़ने की कोशिश कर रहे हैं। हिंदू मुसलमान, सिख, इसाई सभी को आपस के झगड़ों के इस पाप से छूटना चाहिए, और छूटने का एक ही तरीका है; वह यह कि हम ईश्वर से डरें। फिर हथियार की मांग नहीं होगी, तब कोई नहीं कहेगा कि हमें मिलिटरी चाहिए, राईफल, चाहिए, बंदूक चाहिए। पर आज तो सब जगह से आवाज आ रही है कि हमें सिखों जैसी कृपाण चाहिए। वह भी छोटी है इसलिए बड़ी चाहिए। यह सब किस को मारने के लिए ? अगर सबके घर में ऐसे हथियार रहेंगे तो आप उसके बीच मुझे न पायेंगे।

असहयोग ही अमोघ शस्त्र है

"मेरे पास तो एक ही उपाय है जिससे हम अंग्रेजों की उस बड़ी ताकत को भी बिलकुल मिटा दे सकते हैं, जो इस समय जमी पड़ी है। वह तरीका है–'ना' कहना, असहयोग करना। शांति पूर्ण असहयोग से वे उखड़ जायेंगे। यह चीज बड़ी ही बुलंद है। इसको अपनाने के बाद फिर हमें फौजी तालीम लेनी नहीं पड़ेगी।"

: १५ :

आज़ादी गंगा-जल जैसी निर्मल हो

नई दिल्ली ३ मई १९४७

प्रार्थना से पहले गांधीजी ने कहा, "रोज की तरह आपको शांत हो जाना चाहिए। आप प्रार्थना के लिए आते हैं, इसलिए आने के बाद शांत ही बैठे रहें। बातें तो हरदम होती ही रहती हैं। प्रार्थना से लौट कर जायं तब बातें कर सकते हैं। इससे पहले मौन रहने में ही प्रार्थना का महत्व है।"

प्रार्थना में कुरान की आयत का पाठ करते समय एक ने फिर आज टोका। गांधीजी ने प्रार्थना रोक दी और बोले—"ऐसा मालूम होता है कि बाक़ी प्रार्थना तो ठीक करने दी जाती है और सिर्फ कुरान की आयत वाली प्रार्थना ही नहीं करने दी जाती। इसलिए कल से 'ओज अबिल्ला' से ही मैं प्रार्थना शुरू करूंगा। अब तक तो प्रार्थना बौद्ध मंत्र से शुरू होती थी। यह जापानी भाषा का मन्त्र है। सेवाग्राम में मेरे पास एक जापानी साधु रहते थे वे नित्य प्रातःकाल एक घण्टे तक आश्रम की प्रदक्षिणा करते हुए अपने डिमडिम की आवाज के साथ बड़ी बुलन्द आवाज से और मधुरता से इस मंत्र का घोष करते थे। उस जापानी भाई की इच्छा उसे प्रार्थना में सुनाने की हुई तो मैंने उसकी बात मान ली और प्रार्थना में सबसे पहले यह मंत्र कहा जाने लगा। पर कल से मैं 'ओज अबिल्ला' से प्रार्थना शुरू करूंगा और उसमें किसी ने नहीं रोका तो आगे प्रार्थना होगी। अन्यथा आप लोग मौन रह कर दिल में प्रार्थना करेंगे और शान्ति से लौट जायेंगे।

सब धर्मों को अच्छाई देखो

"इतना मैं आपसे कहूँगा कि आप लौटें तब सभी धर्मों की प्रार्थना अपने दिल में लेकर जायें। आप इतना समझ लें कि सभी मजहब अच्छे हैं। विश्वास रखें कि जितने भी धर्म हैं, सबके सब ऊंचे हैं। धर्म में कसर नहीं है, कसर है तो उनके आदमियों में है। हरेक धर्म में कुछ न कुछ गन्दे आदमी पैदा हो गये हैं। ऐसी बात नहीं है कि किसी एक धर्म ने ही गन्दे आदमियों का ठेका ले रखा हो। इसीलिए हमारा कर्तव्य हो जाता है कि हम उन गन्दे आदमियों की ओर न देख कर उनके धर्म की अच्छाई को देखें। हरेक धर्म में जो रत्न की सी बात हाथ आवे उसको ले लें और अपने धर्म की अच्छाई को बढ़ाते चलें।

संसार की निगाह हमारी ओर

"अब जो बात मैंने आज कहने को सोची थी वह भी कह दूँ। आजकल हमारी हालत बड़ी ही नाजुक है। हमारा हिन्दुस्तान इतना बड़ा मुल्क है कि सारी दुनिया हमारी ओर देख रही है। जवाहरलाल ने जो एशियाई कान्फ्रेंस बुलाई उसमें आपने देखा कि सब की निगाह हिन्दुस्तान की ओर लगी हुई है। शहरियार साधारण आदमी नहीं हैं। वह काफी बड़ा आदमी है। लेकिन उसकी भी नजर आप लोगों पर यानी हिन्दुस्तान पर ही है। उधर अरब वाले भी हम को ही देखते हैं कि अगर हिन्दुस्तान में कुछ होगा तभी एशिया के मुल्क कुछ कर पायेंगे। जापान तो कुछ न कर सका। इसमें शक नहीं कि जापान ने बहुत ही बहादुरी दिखाई। कला भी बहुत बताई पर आज वह कहां है? वह एशिया की नाक नहीं बन पाया है। उसकी हालत पिछड़ गई है। उसे देखकर दिल में खेद होता है।

"हम तो अभी आजादी लेकर भी नहीं बैठ पाये हैं। इस पर भी दुनिया हमारी बात देखना चाहती है। क्योंकि हमने लड़ाई ही ऐसी ली कि आज तक आजादी के लिए ऐसी लड़ाई और किसी ने नहीं ली। धर्म के नाम से तो ऐसी लड़ाइयां लड़ी गई हैं पर आजादी के नाम पर तो ऐसी लड़ाई पहली यही है। सन् १९१९ के अप्रैल की छठी तारीख को हम लोगों ने ऐसा कदम उठाया कि अब आजादी करीब-करीब हमारे हाथों में आ गई है और सबको उम्मीद बंध गई है कि अगर हिन्दुस्तान आजाद होता है तो सारा एशिया आजाद होता है और फिर अफ्रीका भी। इसका मतलब होगा कि सारी दुनिया ने नया जन्म पा लिया।

"एशियाई कान्फ्रेंस के प्रतिनिधि यहां से यही सबक लेकर गये हैं। वे जब यहां आये तब यहां का सारा वातावरण साफ नहीं था पर उन्होंने तो हमारे यहां का मैल नहीं देखा। आजादी देखी। समझने वाले समझते हैं कि जब नदी में बाढ़ का पानी आता है तब वह गंदला होता है। वैसे ही हमारे यहां स्वतंत्रता की बाढ़ का पानी आता है तब वह गंदला होता है। वैसे ही हमारे यहां स्वतन्त्रता की बाढ़ आई है तो कुछ बदअमनी हो सकती है; पर अब हमारा काम है कि जैसे बाद में गंगा का पानी निखर जाता है वैसे ही हम भी अपनी आज़ादी को गंगा-जल की-सी स्वच्छ और पवित्र बनावें।

"यह कैसे होगा? अधर्म को धर्म मानने से हिन्दुस्तान की रक्षा होने वाली नहीं है, न धर्म की आजादी ही उस तरह से मिल पायेगी। लेकिन आज हो क्या रहा है? डेराइस्माइलखां में क्या हुआ? हजारा में क्या हुआ? सारे सीमाप्रांत में यह कैसा उधम है? तलवार लाओ भाले लाओ—बन्दूक लाओ; जाहिरा तौर से भी लाओ। और खुफिया तौर से भी लाओ।

बम के गोले भी चुपके-चुपके बनाओ। क्यों कहा जा रहा है कि मार-पीट करेंगे; धमका कर और डराकर मनमाना करायेंगे।

"इन सबसे हम न अपनी रक्षा कर सकेंगे न औरों की। न भारत आजाद हो सकेगा न एशिया। और दुनिया भी आजादी से खाली रह जायेगी।

"इसलिए हम सब प्रार्थना करें और शुद्ध भाव से समझें कि सब मजहब एक हैं। हम एक-एक अच्छे बनेंगे तो भी बहुत बड़ा काम हो जायगा।

भारतीय अखबार विदेशी-पत्रों की गन्दगी का अनुकरण न करें

"दूसरी बात मुझे बतानी है अखबारों के बारे में। एक अखबार ने हमारे वजीरों के साथ वायसराय साहब की क्या बातें हुई यह बताया है। वर्किङ्ग कमेटी में क्या हुआ इसका बयान भी उसमें आया है। वह छोटा अखबार नहीं है। हमारे दुश्मन के रूप में वह नहीं चलता। वह तो कांग्रेस के हित में चलता है। उस अखबार ने अनुमान लगाया है कि वायसराय ने क्या तजवीजें सोची हैं? वे इस तरह अनुमान करें यह भारी गलती की बात है। वायसराय को खुद को ही कहने देना था कि उसने क्या करना विचारा है। वर्किङ्ग कमेटी के काम की भी अटकल क्यों लगाई जाय? वर्किङ्ग कमेटी की तरफ से जो बयान दे दिया जाय उसी को प्रकाशित किया जाना चाहिए और कुछ नहीं होना चाहिए।

"मैं जानता हूं कि बहुत से अखबारनवीस ऐसे होते हैं जो थोड़ा इधर पूछते हैं थोड़ा उधर पूछते हैं और बात गढ़ लेते हैं। लेकिन मैं कहूंगा कि वे लोग उच्छिष्ट भोजन खाते हैं, उच्छिष्ट खाना खाना अख़बार-नवीस का धर्म नहीं है।

"अंग्रेजों ने अपने एक अच्छे आदमी को यहां भेज दिया है। वह इंग्लैंड की नाक रखने के लिए आया है। जिस खूबी से उसे भेजा गया है उसी खूबी और नियत से वह काम कर रहा है।

"फिर क्या हक है कि उसकी बात बिना उससे पूछे जाहिर की जाय! क्या हक है किसी को कि वह मीठी-मीठी बातें करता हुआ सबको फुसलाता फिरे और कुछ बात उससे निकाल ले कुछ मुझसे निकाल ले और अखबार में छाप दें।

"मैं भी तो पिछले पचास वर्षों से अखबारनवीस रहा हूं। मैं जानता हूं कि अखबारों में क्या चलता है। इंग्लैंड और अमरीका के अखबार में क्या-क्या चल रहा है इसका भी मुझे पता है। पर हम इंग्लैंड-अमरीका की गन्दगी का अनुकरण क्यों करें! अगर दूसरों की गन्दी बातों का हम अनुकरण करेंगे तो मर जायेंगे।

"मैं नहीं कहता कि इसने गलत ही लिखा है। उसमें जो-जो बातें हैं कुछ सही हैं कुछ गैर सही हैं। खिचड़ी पका कर दे दी है। ऐसी अखबारनवीसी मैं बिलकुल पसन्द नहीं करता।

"आप लोगों के मार्फत मैं सभी अखबारनवीसों को सुनाना चाहता हूं कि इस तरह पैसे पैदा करने की वे कोशिश न करें। सीधे ढंग से अगर पेट नहीं भरता तो भले ही वह फूट जाये, पर वे ऐसी बात क्यों करें कि हिन्दुस्तान का पेट फूटे। और इसने तो शीर्षक भी ऐसा दे दिया है जो किसी के ख्वाब में भी नहीं आया है।

"अच्छा हो कि हम लोग इंग्लैंड-अमरीका की गन्दी बात को छोड़ कर अच्छी बात को ग्रहण करें।

"इस सिलसिले में आज जवाहरलाल मेरे पास अपना दुःख बता रहे थे। किसे-किसे वे अपना दुःख कहें। मैं भी उन्हें क्या दिलासा दूं। हमने धर्म का युद्ध किया है; धर्म से ही हम आजादी पाने वाले हैं। अखबारनवीस भी उसमें हमें मदद दें यही प्रार्थना है।"

: १६ :

"मैं अंग्रेजी राज खत्म कर आया हूं"

नई दिल्ली ४ मई १९४७

आज शाम को प्रार्थना के समय रोज से दूनी भीड़ जमा थी। गांधीजीने ज्योंही बोलना शुरू किया लोग पूरी तरह शांत हो गये। गांधीजी ने कहा–"आज प्रार्थना कुरान से ही शुरू की जायेगी; पर इससे पहले मैं पूछूंगा कि कोई ऐसा भी है जो इतने सारे मजमे को प्रार्थना न करने देना चाहता हो। अगर प्रार्थना शुरू होने पर कोई रोकेगा तो वह रुक जायगी पर वह बहुत असभ्यता होगी। इसलिए आप कोई रोकना चाहें तो शुरू से ही रोक सकते हैं। आपमें है कोई ऐसा ?

इस पर सभा के बीच में से एक आदमी बोला 'मैं हूं।'

"क्यों ? गांधीजी ने पूछा।"

"मंदिर में कुरान का पाठ नहीं हो सकता।"

"इतने बड़े मजमे को क्या आप रोकना चाहते हैं ?"

"जी हां।"

इस नासमझी पर लोगों में जरा बेचैनी फैल गई और वे आपस में बात करने लगे। तब गांधीजी ने कहा—"आप लोग सुनें, मैं इससे बात करूंगा, देखूं तो सही क्या उसके मन की क्या दशा है।"

फिर उस आदमी को संबोधित करते हुए गांधीजी बोले:—"आपको गुस्सा करने की जरूरत नहीं है। आप शांति से मुझे समझाइए कि जब मैं रोज इस मंदिर में प्रार्थना करता हूँ तो आज क्यों न करूं ?"

"मंदिर पब्लिक का है, पब्लिक के मंदिर में आप न करें।"

"है तो मंदिर पब्लिक का, लेकिन मंदिर के पुजारी या ट्रस्टी तो मुझे रोक नहीं रहे हैं। फिर आप भगवान् का नाम लेने वाले इतने आदमी को क्यों रोकना चाहते हैं। यह मेरी समझ में नहीं आता।"

"क्योंकि मैं भी पब्लिक का आदमी हूं।"

"खैर तो आप प्रार्थना नहीं करने देंगे ?"

"नहीं ?"

अच्छा तो प्रार्थना बंद करता हूं।

धर्म में सभ्यता व अहिंसा का स्थान

"मैं आप लोगों को यह बात बताना चाहता हूं कि धर्म में सभ्यता का और अहिंसा का क्या स्थान है। आप लोग रोज ही मेरी प्रार्थना रोकते रहें तो उसमें तौहीन मेरी नहीं है, आपकी है। तरीका तो यह होना चाहिए कि एक आदमी अगर इतने आदमी की बात सुनना नहीं चाहता है। तो वह बाहर चला जाय। इतनी बड़ी सभा में कैसे हो सकता है कि एक आदमी उसे रोक दे। यह और कहीं नहीं हो सकता, मेरे पास यानी अहिंसा जगत में ही हो सकता है। मंदिर सबका है इसका मतलब यह नहीं होता कि एक आदमी जैसा चाहे रोड़ा अटकाता फिरे। ऐसा हो तब तो मंदिर का सारा काम ही रुक जाय। मैं अकेला होता और वह रोकता तो बात और थी पर यहां इतने लोगों में वह चीखता रहे और मैं प्रार्थना करूं तो आप गुस्से में आ जायेंगे। उसको गाली देंगे और पुलिस से उसे पकड़वा देंगे। इसमें हमारी कौनसी शोभा होगी ऐसा होने पर दुनिया हमें क्या कहेगी ?

मौन रहकर प्रार्थना

"इसलिए मैं प्रार्थना रोक रहा हूँ। पर ओज अबिल्ला तो वे नहीं रोक सकते। वह तो मेरे मन में है ही। हम आज उसे न कहेंगे केवल दो मिनिट मौन बैठेंगे और उसमें आप यही प्रार्थना करेंगे। ठीक है कि 'ओजअबिल्ला' आपके कंठाग्र नहीं है पर मौन रहते हुए राम-रहीम दोनों एक ही हैं, ऐसा आप मन में समझें। यानी हिंदू धर्म और मुसलमान धर्म दोनों महान हैं। दोनों धर्मों में कोई भेद नहीं है। मेरी समझ में यह बात ही नहीं आती कि दो धर्म आपस में एक दूसरे को दुश्मन क्यों माने, और किस वजह से मानें। इसलिए मैं चाहता हूं कि शांति में आपका यही मंत्र हो कि तू ईश्वर है, तेरे हजार नाम हैं' मैंने बताया था कि हमारे धर्म में विष्णु-सहस्र-नाम का बड़ा चलन है। बल्कि मैं तो मानता हूं कि दुनिया में जितने आदमी हैं उतने ईश्वर के नाम हैं। ईश्वर, भगवान, खुदा गॉड, होरमसजी कुछ भी कह लो उसी के नाम हैं। और इन सब नामों से भी वह ज्यादा है। इतने बड़े ईश्वर को जिसे कोई पहचान नहीं सकता उसका नाम लेने से रोकने की बात कैसे कोई कर सकता है। ऐसा करना तो निरा अविवेक है, असभ्यता है, हिंसा है।

"मौन के साथ आप आंख मूंद कर बैठ सकें तो और भी अच्छा। इतनी देर में अगर उस भाई को समझ आ जायेगी और वह रोकना नहीं चाहेगा तो और प्रार्थना करेंगे नहीं तो मुझे जो बातें बतानी हैं, बताऊंगा।"

इसके बाद सारी जनता गांधीजी के साथ आंख बंद करके दो मिनिट तक मौन बैठी रही। वातावरण अत्यंत शांत और पवित्र मालूम दिया।

वायसराय की मुलाकात की चर्चा

शांति की दो मिनिट समाप्त होने पर गांधीजी ने कहाः—

"आज मुझको वाइसराय से पास जाना पड़ा था यह आप जानते ही हैं। डेढ़ घंटे तक हम बैठे और हमारी बीच में बहुत अच्छी-अच्छी और काम की बातें हुईं। सभी बातें मैं यहां नहीं सुना सकता। पर एक बात बताऊंगा।

"वायसराय ने मुझे कहा कि तुम मेरी ओर से लोगों को कह दो या तुम्हारा निज का विश्वास हो तो अपनी ही ओर से कह दो कि 'मैं ब्रिटिश हकूमत को यहां से ले जाने और इस मुल्क में ब्रिटिश का राज खत्म करने आया हूँ। एक दिन में तो इतनी बड़ी हकूमत समेटी नहीं जा सकती। इतनी बड़ी फौज चुटकी बजाते-बजाते हटाई नहीं जा सकती। लेकिन यह भरोसा रखो कि ३० जून (सन् १९४८) के बाद हम यहां बिलकुल रहने वाले नहीं हैं। मैं इस काम को करने के लिए यहां आया हूं। और जितना बन पड़ता है उसे कर रहा हूं।'

"लेकिन तुम लोगों के अखबारों में कैसी-कैसी बातें आती हैं! इसे देख कर मैं हैरान हो जाता हूं। मेरा काम रुक जाता है। एक तो तुम लोग आपस में लड़ते हो और फिर उसमें अंग्रेजों का दोष ढूंढते हो और उन्हें बदनाम करते हो। माना कि अंग्रेजी सल्तनत ने आज से पहले भूल की है। पर अब तुम्हारे झगड़ों में अंग्रेजों का कितना हिस्सा था इस बात को तुम लोग भूल जाओ। अंग्रेजों ने ऐसा किया वैसा किया ऐसी बात रटते रहने पर कुछ भी सही काम बनने का नहीं है, ऐसी बातें मत कहो। आगे के काम में पिछली बातों की चर्चा छोड़ो।

अखबार तोड़-मरोड़ कर न छापें

"पर तुम्हारे अखबार ऐसा ही करते हैं। और उनकी इन हरकतों से तो सारी बात बिगड़ जाती है। मैंने तो किसी से कोई बात ऐसी नहीं कही थी जिससे अखबार वाले कुछ जान

लें। मेरे पास के रहने वालों में से भी किसी ने ऐसी बात नहीं कही है।

"और हिन्दुस्तान के लोगों को थोड़ी-सी तो सभ्यता रखनी चाहिए। अपने अखबारों में सुर्खियां भी वे ऐसे दे देते हैं कि वे बात को बहुत तोड़-मरोड़ देते हैं। यह किस आधार पर लिख दिया है कि सीमाप्रांत में खान साहब का अमल बंद हो जायगा। और फिर राष्ट्रवादी अखबार ऐसा लिखते हैं तो मुसलमान अखबार उससे भी बढ़-बढ़ कर सुर्खियां देते हैं।

"और इस तरह—आपसी जहर और भी बढ़ जायेगा। मैं यहाँ जहर बढ़ाने के लिए नहीं आया हूँ। आप लोग हिंदू-मुसलमान सिख, पारसी, ईसाई सब मिल जुल कर रहने लगोगे तो उसमें हम ब्रिटेन वालों का नाम अच्छा ही कहायेगा कि जब छोड़ा तब सब को एक करके मिलाकर छोड़ा।'

"वायसराय ने यह भी कहा—'मैं बता देना चाहता हूँ कि हिंदुस्तान के लोग अगर आज़ादी चाहते हैं तो उन्हें कुछ खामोशी से रहना चाहिए। ऐसा करना हम नहीं चाहते कि हम चले जायं और आप लोग आपस में लड़ते रहें। इसलिए सब बात सुलझाने की मैं भरसक कोशिश करता हूं। नतीजा कुछ भी हो। तीस जून ४८ को हमें जाना ही है उसमें कोई शक नहीं है। उस बात को ध्यान में रखकर मैं चलता हूँ।

"मेरा एतबार करोगे तो मैं कहना चाहता हूँ कि मैं अपने अन्तःकरण को पूछ-पूछ कर हरेक काम करता हूँ। यह ठीक है कि मैं जहाजी बेड़े का कमांडर हूं और हिंसा-शक्ति पर विश्वास करता हूं पर जैसे आप ईश्वर को मानते हैं वैसे मैं भी अपनी शक्ति भर ईश्वर को मानता हूं। और मैं वही करता हूं जो मेरी अन्तरात्मा मुझे सही बताती है। खुदा ने मुझे जैसी अकल दे रखी है उसी के मताबिक चलने वाला मैं हूं। इसके अलावा मैं दूसरी

तरह से ब्रिटिश की सेवा कर भी नहीं सकता।

"मैं अपनी पूरी कोशिश करूंगा कि तुम सब लोग मिलजुल कर काम करो। मैं ऐसी कोई बात करना नहीं चाहता जिससे अल्प-संख्यकों के साथ अन्याय हो जाय। वरना लोग कहेंगे कि हमने मुसलमान, पारसी, सिख आदि को दबाकर बहुसंख्यक हिंदुओं को सब कुछ दे दिया।

"हमारे जाने के बाद तुम लड़ना चाहोगे तो बीच-बचाव करने कौन आयेगा ? अभी तो मैं खामोशी से समाधान का प्रयत्न कर रहा हूं पर जब मेरा धीरज खतम हो जायेगा तब मैं चुप न रहूंगा। अब तो रक्षा-सदस्य भी आपका ही है। लेकिन उससे भी बात बनती दीख न पड़ेगी तो अभी यहां का कमांडर तो अंग्रेज है। गोरी फौज भी छोटी नहीं है और उनके सिखाये आदमी भी हैं। इन सबको लेकर मैं अपने धर्म का पालन करूंगा लेकिन वैसे ही आप लोग मेरी बात मान लें तो मेरा काम कुछ आसान हो सकता है।"

वायसराय का कठिन काम

"सो वायसराय साहब का काम कठिन ही है। पर अंग्रेज लोग कठिन बात से भागने वाले नहीं होते।

"आप लोगों को यह कहने की बात नहीं थी; पर मुझे लगा कि हम इतने सब मिले हैं तो आज यही कह दूं और आप लोगों की मारफत अखबार वालों से भी कह दूं।

"कल ही मैंने आप लोगों से कहा था कि जब तक हमने माउण्टबैटन साहब का विश्वास खोया नहीं है तब तक उनके उनके बारे में हमें कुछ भी इधर-उधर की बात कहनी नहीं चाहिए। हम ठीक चलेंगे फिर भी अगर वह कुछ न करेंगे तो हम अंग्रेजों से कह सकेंगे कि आपके वायसराय एक के बाद एक

आते तो हैं आजादी देने के लिए पर वे हमें दबाते ही चले जाते हैं।

"यह सब हमें असभ्य भाषा में कहने की जरूरत नहीं है। हरेक बात मीठी भाषा में कही जा सकती है। अगर हम असभ्यता बरतते हैं तो अपना ही गला काट लेते हैं।

हम लड़ते ही रहेंगे तो

"अगर हम आपस में भी लड़ते ही रहते हैं तो उनका जाना कठिन हो जाता है। उनके हाथ में डिफेंस तो है, पर उससे तो वे बाहर के हमलावरों को रोक सकते हैं। जब हम आपस में लड़ें तब वे किस तरह हमें रोकें ? वे तो कहेंगे हिंदू मुसलमानों को बदमाश (बुरे) बताते हैं और मुसलमान हिंदू को। उसमें वे क्या करें ? उनको तो जाना है। हम लड़ते ही रहेंगे और ३० जून आ जायेगी और उनसे कुछ हो नहीं सकेगा तो हम कहेंगे अब आपका अधिकार नहीं आप जाइयेगा।

"अगर वे रह जाते हैं तो फिर वे हिंदू को भी और मुसल-को भी दोनों मार-मार कर झगड़ा करने से रोक सकते हैं। और उन्होंने यह करके दिखाया भी। एक अंग्रेज के मारे जाने पर हजार-हजार आदमी को मौत के घाट उतार दिया गया है। पर जाते समय वे ऐसा नहीं कर सकते। इसलिए हमारा कर्तव्य है कि उनके यहां से जाने का काम हम अपने विश्वास से आसान करें। उनकी मुसीबत बढ़ावें नहीं।

पर आज क्या है ?

"पर आज क्या है ! खाना नहीं मिलता, कपड़ा नहीं मिलता, मुझे और आप को तो मिल जाता है, पर करोड़ों ऐसे लोग मुल्क भर में पड़े हैं जिन्हें कुछ भी खाना नहीं मिलता न कपड़ा मिलता है। आज मदरास के वजीर आये थे। उन्होंने बताया कि वहां बाढ़ आ गई है और फसल मारी गई है। खाने की किल्लत है।

अगर हम आपस में न लड़ें तो गरीबों को खाना पहुँचा सकते थे। खाना-पीना देने के लिए हिन्दू मुसलमान नहीं देखे जाते—मुल्क के सभी लोगों को वह देना होता है।

"पर आज तो सब का एक ही काम हो गया है—बस, 'काटो और मारो।' वह भी बहशियाना तरीके से। जो हिन्दू मिले उसे मुसलमान मारे, जो मुसलमान मिले उसे हिन्दू।

"अगर हम ऐसे जंगली बन जायं और कहें कि उनके (अंग्रेजों) जाने के बाद हम अच्छे बन जायंगे तो यह सारा गलत खयाल है।

बिहार की बात

"एक बात और बताता हूँ। जनरल शाहनवाज आज आये थे। बिहार से मेरे चले जाने पर भी वे वहां पर काम करते हैं। वेतन नहीं लेते। फिर भी बाकायदा पंद्रह दिन की छुट्टी लेकर घर जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि बिहार में जो मुसलमान लौट कर नहीं आते थे और जिन्हें हिन्दू पहले डराते थे वे भी अब लौट आये हैं। क्योंकि समझाने पर हिन्दू अपना धर्म समझ गये और उन्होंने मुसलमानों के स्वागत के लिए लगातार दो दिन तक परिश्रम करके उनका रास्ता साफ किया और जो झोंपड़ियां ढह गईं थीं उनके बनाने में भी योग दिया। दूसरे देहातों में भी ऐसा ही अच्छा काम हुआ है।

"अगर ऐसा ही चलता रहेगा तो बिहार के भागे हुए सभी मुसलमान लौट आयेंगे। उन्हें पैसे की मदद तो सरकार देती है। पर हिन्दुओं को चाहिये कि उन्हें डराने वालों, रोड़ा अटकाने वालों को वे समझावें। तब यह काम बन जायगा।

"सार यह कि आजकल जो 'काटो-काटो' की पुकार मची है उसके बीच भी अच्छे आदमी पड़े हैं। हरेक मुसलमान, हरेक

सिख, हरेक हिन्दू खराब नहीं है।

"जिस तरह बिहार में अमन हुआ है इसी तरह डेरा-इस्माइलखांमें और सीमा प्रान्त में भी शांति होनी ही है।

"अगर जिना साहब ने जो लिखा है, सही लिखा है, तो उन्हें वहां की हुल्लड़बाजी को रोकना ही है। फौज के रोकने से वह (हुल्लड़ बाजी) रुकने वाली नहीं है। लोगों को समझाने पर ही वह रुक सकती है। नहीं रुकती तो उसका मतलब है या तो लोग जिना साहब की मानते नहीं, या जिना साहब उसे रोकना नहीं चाहते।

"लेकिन हम जिना साहब के बारे में उल्टी बातें क्यों सोचें? जरा काम होता नहीं दीखता तो दिल में शक पैदा हो ही जाता है। अगर मैं किसी बात पर दस्तखत करूं और उससे उल्टा ही काम कर बैठूं तो वह शक की बात हो ही जायगी। इस तरह यहां भी शक हो जाता है। लेकिन हमें आखिर तक देखना होगा कि जिना साहब क्या करते हैं।

: १७ :

कुरान की आयत का अर्थ

नई दिल्ली ६ मई १९४७

प्रार्थना के समय तक गांधीजी जिना साहब के यहां से लौट कर नहीं आ सके थे। उनकी आज्ञानुसार ठीक साढ़े छः बजे प्रार्थना शुरू की गई और जनता से पूछा गया कि क्या आज कुरान की आयत बोली जाय या नहीं। इस पर सिर्फ एक आवाज आई कि 'नहीं।' तब दो मिनिट तक मौन प्रार्थना हुई और उसके बाद गांधीजी का कल का लिखा हुआ सन्देश सुना दिया गया, जो वर्षा के कारण कल नहीं पढ़ा जा सका था। वह सन्देश निम्न प्रकार है :—

"मैं पापात्मा शैतान के हाथों से (अपने को) बचाने के लिए परमात्मा की शरण लेता हूं।

"हे प्रभो ! तुम्हारे नाम को ही स्मरण करके मैं सारे कामों को आरम्भ करता हूं। तुम दया के सागर हो। तुम कृपामय हो, तुम अखिल विश्व के स्रष्टा हो, तुम ही मालिक हो मैं तुम्हारी ही मदद मांगता हूं। आखिरी न्याय देने वाले तुम्हीं हो। तुम मुझे सीधा रास्ता दिखाओ; उन्हीं का चलने का रास्ता दिखाओ जो तुम्हारी कृपा दृष्टि पाने के काबिल हो गये हैं; जो तुम्हारी अप्रसन्नता के योग्य ठहरे, जो गलत रास्ते से चले हैं, उनका रास्ता मुझे मत दिखाओ।

"ईश्वर एक है, वह सनातन है, वह निरालम्ब है, वह अज है, अद्वितीय है, वह सारी सृष्टि को पैदा करता है, उसे किसी ने पैदा नहीं किया है।"

"यह कुरान शरीफ की आयतों का तरजुमा है जो कि प्रार्थना में पढ़ी जाती हैं। उसे पढ़ने की शिकायत कोई कैसे कर सकता है। समझ में नहीं आता है। मैं तो कहूँगा कि इस प्रार्थना को हम हृदय में अंकित करें तो वह बेहतर ही हो सकता है।

"इससे अधिक आज नहीं कहूँगा।"

"जिना साहब से मिलकर जब वाल्मीकि मंदिर लौटे और मोटर से उतरे तब उनको सहारा देने वाली एक लड़की ने उनसे पूछा 'बापूजी, आप तो इतने बड़े हैं फिर आप क्यों जिना साहब के घर जाते हैं वे क्यों आपके पास नहीं आते। और नहीं तो उम्र में तो वे आपसे छोटे ही हैं ?' गांधीजी ने उत्तर दिया "वे तो बहुत बड़े प्रेसिडेंट हैं; और मैं क्या हूँ, मैं तो कुछ नहीं हूं, बहुत छोटा हूं। छोटे को तो बड़े के पास जाना ही चाहिए न ?"

प्रश्न--"नहीं, आप भी तो हमारे नेता हैं।

उत्तर--"मैं तो तुम बच्चों का नेता हूं। बच्चों का नेता तो हर कोई बन सकता है। और वे तो बहुत बड़ी लीग के प्रेसिडेंट हैं। इसके बाद भी वह लड़की अपनी बात कहने जा रही थी पर गांधीजी के सामने स्वीडन की एक महिला आई जिसे मिलने का समय दिया हुआ था और बहुत देर से खड़ी थी। दो ही मिनट गांधीजी ने उसे दिये। इस थोड़े से समय में भी उसने एक बहुत महत्व का प्रश्न पूछ लिया जिसमें यूरोप की मनोव्यथा का तादृश चित्र था।"

प्रश्न -"महात्मा जी, क्या आपके हिंदुस्तान को भी उस महान मुसीबत में फंसना पड़ेगा जिसमें हमारा सारा यूरोप तबाह हो रहा है ? अर्थात् उसे भी औद्योगीकरण अपनाना पड़ेगा मशीनरी की दलदल में उसे उतरना ही होगा। क्योंकि मैं यहां जहां-जहां गई वहां औद्योगीकरण की ही चर्चा सुनने में आई।"

गांधीजी—"आपकी बात ठीक है, पर ऐसा कहने का कोई कारण नहीं है कि हिन्दुस्तान को औद्योगीकरण में उतरे बिना चारा ही नहीं है। वह चाहे तो सम्हल सकता है। लेकिन औद्योगीकरण का मोह छूटना आसान नहीं है।"

: १८ :

सिवाय ईश्वर के मुझे कोई मजबूर नहीं कर सकता

नई दिल्ली ७ मई, १९४७

आज वाल्मीकि मंदिर में प्रार्थना का समय होने तक गांधी जी अत्यन्त व्यस्त रहे। वर्किङ्ग कमिटी की बैठक देर तक चलती रही। लेकिन ठीक साढ़े छः बजे प्रार्थना का समय होते ही गांधीजी प्रार्थना-सभा में आ पहुंचे। उनके हाथ में दो-तीन चिट्ठियां थीं और इन्हीं चिट्ठियों पर गांधीजी ने चर्चा शुरू की। सब से पहले श्रीमती उमादेवी के लिए पूछा कि क्या वे आई हैं? वे आई हुई थीं और बापूजी के कहने से उन्हें मंच पर उनके पास बैठने को स्थान दिया गया। साथ ही गांधीजी ने श्रीमती विभावरी बाई देशपांडे को भी अपने पास बुलाया और कहा कि इन दोनों बहनों से कुरान शरीफ की आयतें पढ़ने का विरोध किया है। इसके उपरान्त बीस आदमियों की सही वाला एक दूसरा पत्र भी आया है कि दो-एक आदमियों के विरोध करने पर सारी प्रार्थना रोकी नहीं जानी चाहिए। इन चिट्ठियों पर विवेचन करते हुए गांधीजी ने कहा कि "ऐसा कहने वाले बीस ही आदमी थोड़े हैं? मैं तो समझता हूं कि आप सब लोग (दो तीन हजार के करीब) जो विरोध नहीं करते और खामोशी के साथ रोज यहां बैठते हैं उन सभी के मन की बात यही है जो इन बीस आदमियों के दस्तखत वाली चिट्ठी में लिखी हुई है।

सहिष्णुता का धर्म

"लेकिन मैं आपसे कहूंगा कि आपको धैर्य रखना चाहिए। धर्म का पालन धैर्य से ही किया जा सकता है। हिन्दू धर्म ने सहिष्णुता को बड़े महत्त्व का स्थान दिया है। शंकराचार्य महाराज ने तो धीरज रखने की बात यहां तक बताई है कि 'एक तिनके की नोक पर बिन्दु-बिन्दु करके समूचे महासागर का सारे का सारा जल निकाल कर उसे दूसरे गढ़े में भर देने में जो धैर्य चाहिए उससे बढ़कर धैर्य मोक्ष पाने के लिए हमें धारण करना चाहिए।' अब आप कल्पना कीजिए कि तिनके से नहीं सही लोटा भर-भर कर ही अगर एक आदमी समुद्र खाली करने बैठता है, और दूसरी ओर उतना बड़ा गढ़ा उस पानी को भरने के लिए उसे मिल भी जाता है और वह आदमी सैकड़ों हजारों वर्ष तक जिन्दा भी रहता है, तो शायद उस अपार जलराशि को वह सोख सकता है लेकिन फिर भी जो नया पानी समुद्र में आयेगा उसका क्या होगा ? फिर, समुद्र सोखने में उसके पास कितना धैर्य चाहिए ? अर्थात् शंकराचार्यजी ने मुमुक्षु के लिए असीम धीरज बनाये रखने की बात कही है। उनका कहना यह है कि हमारा एक पैर तो हिनहिनाते घोड़े की रकब में फंसा हो; दूसरे से हम जीन पर उछाल मारने ही वाले हों और गुरूजी से कहें कि 'गुरूजी ब्रह्म क्या है, जरा बता तो दीजिए' तो वह ब्रह्म नहीं जाना जा सकता। यहां हम सब जो आये हैं, जिज्ञासु बन कर आये हैं; यानी हम लोग मुमुक्षु हैं। पर क्या इतना धैर्य धारण करने की शक्ति हमारे पास है ? अगर नहीं है तो भी प्रार्थना भर के लिए तो हम धैर्य धारण करें। इसमें हमारी क्या अच्छाई होगी कि एक ओर तो बालक चीखता रहे और दूसरी ओर हम प्रार्थना करें। ईश्वर को तो मन की प्रार्थना चाहिए

मुंह की बात को ही मान लेने जैसा वह भोला नहीं है। प्रार्थना का मतलब यह नहीं है कि जिह्वा से जो उच्चारा जाय उसे ही प्रार्थना कहा जाय! और उस उच्चार का आग्रह भी हम तब क्यों रखें, जब हम पर किसी प्रकार का खतरा न हो। क्या हम इतने आदमी एक बालक को दबा कर उसे डरा धमका कर धर्म का पालन करेंगे? धर्म का पालन तो बालक की बात को सह लेने में ही होगा। मुझे इस बात की खुशी है कि आपने इतनी बड़ी भारी संख्या में होते हुए भी शांति रख कर धर्म का पालन किया है; और अज्ञान बालक की बात को सहन किया है।

"परंतु आज तो बालक की बात नहीं एक बहन की बात है। मैं देखता हूं कि वह मेरी स्वीकृत लड़की से भी कुछ छोटी है। वह एक मंत्री महाशय की धर्मपत्नी है। उसने जो चिट्ठी भेजी है उसी की चर्चा मैं आज पहले करूंगा।

"श्रीयुत महात्माजी, मैं आपको यह सूचित कर देना चाहती हूँ कि अन्तरात्मा की प्रेरणा से मैं आपके सायं प्रार्थना में कुरान पढ़ने का निम्न कारणों से विरोध करूंगी। (१) मंदिर में कुरान पढ़ने से उसकी पवित्रता और मर्यादा नष्ट होती है। (२) कुरान को धर्म ग्रंथ मानने वालों ने बंगाल पंजाब आदि में राक्षसी अत्याचार किये हैं उसे देखते हुए कुरान पढ़ना-पढ़ाना हिन्दुओं के लिए मैं महान पाप समझता हूँ। (३) किसी मस्जिद मन्दिर में गीता या रामायण पढ़ने का साहस, आज तक आप ने किया है, ऐसा मालूम नहीं देता।"

सही—हिन्दू धर्म सेविका
उमादेवी
धर्मपत्नी संचालक दैनिक राजस्थान समाचार
और मंत्री अखिल भा० देशी राज्य हिन्दू महासभा।

कुरान से मन्दिर अपवित्र नहीं होता

"जो लिखा है उसमें हिंदू धर्म का ज्ञान नहीं है, कोरा अज्ञान भरा है। इस तरह धर्म को बचाने की जो चेष्टा की है वह वास्तव में धर्म के पतन की ही चेष्टा है। मैं सभी हिंदू और सभी सिख भाइयों से कहना चाहता हूं कि वे ऐसे ग़लत रास्ते को न अपनावें। मैं एक-एक करके इस बहन के प्रश्नों का उत्तर दूंगा।

"(१) मंदिर में कुरान पढ़ने से वह अपवित्र हो जाता है, यह कहना ठीक नहीं है। मंदिर में ईश्वर की स्तुति करना, अधर्म कैसे हो सकता है? कल यहां पर हिंदी में अोज-अबिल्ला का अर्थ सुनाया तो किसी ने उसका विरोध तो नहीं किया! क्या गीता का अनुवाद कोई अरबी में सुनावे वह अधर्म हो जायगा?' ऐसा कोई कहता है तो वह अज्ञानी है। सीमाप्रांत में एक नियम बना था कि कुरान का तरजुमा नहीं किया जा सकता। किंतु वहां अब डा० खान साहब प्रधान मंत्री हैं, जो समझदार हैं। उन्होंने कहा कि कुरान का तरजुमा करने से तो उसका फैलाव होगा। उसे ज्यादा लोग पढ़ेंगे और समझेंगे। यहां इसी मंदिर में खान साहब नमाज पढ़ते हैं तो क्या यह मन्दिर अपवित्र हो गया? नमाज में तो कुरान की आयतें बोली जाती हैं, तो क्या उनका बोलना पाप कहायेगा?

कुरान पढ़ने वाला पापात्मा नहीं

"(२) यदि आप कहें कि मुसलमानों ने पाप किया है, तो हिन्दुओं ने कौन-सा कम पाप किया है? बिहार में जो हिंदुओं ने किया वह आप लोगों को जानना चाहिए। वहां उन्होंने औरतों को मार डाला, बच्चों को मार डाला, उनके मकान जला दिये और उन्हें अपने घरों से भगा दिया। इस पर से

अगर कोई मुसलमान आवे और कहे कि भगवद्गीता पढ़ने वालों ने पाप किया है तो वह कितनी गलत बात होगी ? थोड़े अंश तक मैं यह सुनने को तैयार हो जाऊंगा कि मुसलमानों ने अत्याचार किये हैं, पाप किया है। लेकिन मेरी समझ में यह नहीं आता कि कुरान को पढ़ने वाला पापात्मा है इसलिए वह चीज भी पापमय है। इस तरह से तो गीता, उपनिषद्, वेद आदि सब के सब धर्म-ग्रंथ पाप के ग्रंथ साबित हो जाते हैं। गीता में से भी अलग-अलग अर्थ निकलते हैं। मैं जो अर्थ करता हूं उससे कई लोग बिलकुल ही दूसरा अर्थ लगाते हैं। मुझे गीता में अहिंसा की ही बात दीखती है और दूसरे कहते हैं कि गीता ने आततायी को मारने का उपदेश दिया है। मैं क्या उनके मुंह बन्द करने जाऊं ? मैं उनकी बात सुन लेता हूँ और मुझे जो सही लगता है, करता हूं।

(३) मैंने मस्जिद में गीता नहीं पढ़ी है, वहां मैं ऐसा नहीं करता यह कहने का मतलब तो यही हुआ न, कि मैं बुजदिल हूं ? मान लिया कि मैं बुजदिल हूं और मस्जिद में मुसलमानों के सामने अपनी प्रार्थना करने से डरता हूं। लेकिन अगर मैं एक जगह बुजदिल हूं तो हर जगह क्या बुजदिल बनूं ? क्या आप चाहते हैं कि मैं यहां भी बुजदिल बनूं ?

"पर आपको यह मालूम होना चाहिए कि मैं कई जगह मुसलमानों के घर में ठहरता हूं। वहां बड़े आराम से और बिना संकोच के नियमित प्रार्थना करता हूं। और वहां, नोआ-खाली में, जब मैं घूम रहा था तो खास मस्जिद तो नहीं पर बिलकुल ही मस्जिद के पास मैंने अनेक बार प्रार्थना की है। एक बार तो मस्जिद के अहाते में ही--मस्जिद के अन्दर के मकान में भी मैंने प्रार्थना की है। वहां तो मेरे साथ पूरा साज-बाज रहता था। ढोलकी भी बजती थी और तालियों के साथ

रामधुन भी होती थी। मस्जिद के अहाते में जब प्रार्थना हुई तब मेरे पास ढोलक तो नहीं थी परन्तु वहां भी तालियों के साथ रामधुन हुई थी। मैं वहां के मुसलमान भाइयों से कहता था कि जैसे आप रहीम का नाम लेते हैं वैसे ही मैं यहां रामनाम लूंगा। रहीम का नाम जो कहते हैं उन्हें रामनाम लेने वालों को रोकना नहीं चाहिए। और उन्होंने मुझे रामनाम लेने से रोका नहीं था।

"आप अत्याचार की बात करते हैं। नोआखाली में काफी अत्याचार हुए हैं। पर मैं कहूंगा कि नोआखाली में मुसलमानों ने इतने अत्याचार नहीं किये हैं जितने बिहार में हिंदुओं के हाथों हुए हैं। मैं इस बात का गवाह हूं। मैं नोआखाली भी गया हूं और बिहार में भी घूमा हूं।

"मुसलमानों के पास जाकर मैं प्रार्थना नहीं कर सकता, ऐसा जो कहे वह गांधी को नहीं जानता। यह बेचारी उमादेवी क्या जानती है कि गांधी किस मसाले का बना है। मैं अपने लिए नहीं, इसकी बात पर लज्जित होता हूं। उस मंत्री महाशय के लिए लज्जित होता हूं कि वह हिंदू धर्म सभा के मंत्री होकर ऐसे घोर अज्ञान को अपनाये हुए हैं। जब समुन्दर में आग लगेगी तो उसे कौन बुझायेगा ?"

"पर सही बात तो यह है कि इनका विरोध उस प्रार्थना से नहीं है, अरबी भाषा से है। कल जब आपको कुरान की आयत का अनुवाद सुनाया गया था तब आपमें से किसी को वह चुभा नहीं था।"

इसके बाद गांधीजी ने वह अनुवाद पढ़ सुनाया। यह कल की प्रार्थना की कार्रवाई में दिया गया है। इसके बाद गांधीजी बोले—"लीजिए, मैं सारी प्रार्थना (ओज-अबिल्ला) पढ़ गया और वह इन बहन को भी चुभी नहीं, इसमें उन्हें कोई

पाप नहीं दीखता। अगर दीखता तो वे मुझे क्यों पढ़ने देतीं, रोक न लेतीं कि "चुप हो जाओ हम यह सुनना नहीं चाहतीं।"

"वह मुझे रोकेंगी भी कैसे ! ईश्वर की मैं और प्रार्थना कर ही क्या सकता हूं ? क्या वह यह चाहती हैं कि मैं ईश्वर को 'अज' कहकर न पुकारूं ! उसको अमर न मानूं ! उसको निरालम्ब भी न कहूं ! या यह न कहूं कि तू ही मालिक है ! फिर मैं प्रार्थना में कहूंगा ही क्या ? तब वही बात जो हम प्रार्थना में कहना चाहते हैं वह अगर अरबी में कही जाती है, वह पाप हो जाता है, ऐसा कहना कितने अज्ञान की बात है ! हमें इस घोर अंधेरे से बचना ही होगा।

"तो, हम ईश्वर से प्रार्थना करें कि हे भगवान् तू हमें अंधेरे से बचा ले। हमारे हिन्दू धर्म ने तो प्रार्थना के शब्द भी ऐसे ही रखे हैं कि 'तू मुझे अंधेरे से उजाले में ले चल' (तमसो मा ज्योतिर्गमय)। ऐसे अनुपम धर्म को हम न समझें और उसे पत्थर समझ कर फेंक दें यह मुझे बहुत बुरा लगता है। और यह बात दिल में तब और भी ज्यादा चुभती है जब एक धर्मसेवक की पत्नी इस तरह से धर्म को बिगाड़ने पर तुल जाती है। हमारे यहां तो पति का धर्म बहुत ऊंचा माना गया है। पत्नी के विचारों को गलत रास्ते बहने न देना उसका कर्त्तव्य है। इन महाशय ने तो अपनी पत्नी को भारी असहिष्णुता की तालीम दी है। फिर धर्म कैसे टिक सकता है ?

"अगर हम लोग ऐसे ही बने रहेंगे तो हिन्दू धर्म तो टिकने वाला है ही नहीं, हिन्दुस्तान भी नहीं टिक सकेगा। अंग्रेज इसे छोड़ कर चले जायंगे तो भी हम हिन्दुस्तान को नहीं बचा सकेंगे। आजाद हिन्दुस्तान में तो हमें भाई-भाई बनकर रहना है। आज के दुश्मन कल दोस्त बनेंगे। तब क्या आप अपने मुसलमान पड़ौसी को यह कहेंगे कि 'कुरान मत पढ़ो ?' क्या

ऐसा कहने में ही हिन्दू धर्म का दरजा बढ़ जायगा ?

"इसलिए मैं आपसे मौन प्रार्थना करने के लिए कहता हूं। यदि इतने सारे आदमी शान्त बैठकर प्रार्थना करते हैं, एक-दो व्यक्ति पर गुस्सा नहीं लाते तो हमारी शुद्धि हो जाती है, हम पवित्र बन जाते हैं।"

भारत विभाजन के विरुद्ध

कल श्री जिना के साथ हुई अपनी बातचीत की चर्चा करते हुए गांधीजी ने कहा—"आप लोगों को मालूम ही है कि कल मैं जिना साहब से मिलने गया था। उनके साथ जो मेरी बातें हुईं वह सब की सब तो बताई नहीं जा सकतीं। हम लोगों ने आपस में निर्णय कर लिया है कि हमारी बातें सिर्फ हमारे बीच ही रहेंगी, और कहीं नहीं कही जायंगी। फिर भी बादशाह खान को, पंडित जवाहरलाल को और जो हमारे नेता हैं, उनको तो मैंने उन बातों का सार बता दिया है। यहां भी मैं उसका थोड़ा-सा उल्लेख करूंगा। हम दोनों ने एक ही दस्तावेज पर दस्तखत किये हैं। उसमें दो बातें हैं। पहली यह कि राजनैतिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए हम किसी को ज़ोर-जबरदस्ती से मजबूर नहीं करेंगे। हरेक पक्ष अपनी बात एक-दूसरे को समझाने की कोशिश करेगा और डराने-धमकाने का सहारा कभी भी नहीं लिया जायगा।

"दूसरी बात लोगों को मार-काट और अत्याचारों से रोकने की है। कल अखबार में जिना सा० के यहां से जो विज्ञप्ति निकली है उससे आप समझ गये होंगे कि हमारे बीच में राजनैतिक मतभेद पूरा है। जिना साहब पाकिस्तान चाहते है। कांग्रेस वालों ने भी तय कर लिया है कि पाकिस्तान की मांग पूरी की जाय लेकिन उसमें पंजाब का हिन्दू व सिखों का इलाका और

बंगाल में हिंदू इलाका पाकिस्तान में नहीं दिया जा सकता। केवल मुसलमानों का हिस्सा ही हिंदुस्तान से अलग हो सकता है। लेकिन मैं तो पाकिस्तान किसी भी तरह मंजूर नहीं कर सकता। देश के टुकड़े होने की बात बर्दाश्त ही नहीं होती। ऐसी तो बहुत-सी बातें होती रहती हैं जिन्हें मैं बर्दाश्त नहीं कर सकता, फिर भी वे रुकती नहीं, होती ही हैं। पर यहां बर्दाश्त न हो सकने का मतलब यह है कि मैं उसमें शरीक नहीं होना चाहता। यानी मैं इस बात में उनके वश में आने वाला नहीं हूं। अगर वे पाकिस्तान बनाना चाहें तो वे अपने और भाइयों से सुलट लें। मैं किसी एक पक्ष का प्रतिनिधि बनकर बात नहीं कर सकता। मैं सबका प्रतिनिधि हूं। सारे हिंदुस्तान में जितने हिंदू हैं, जितने मुसलमान हैं, जितने सिख और पारसी हैं, जैन और ईसाई हैं, उन सबका ट्रस्टी बनने का मेरा प्रयत्न है। अगर ट्रस्टी नहीं बन सका हूं या बनने लायक नहीं हूं तो भी मैं चाहता हूं कि मैं ट्रस्टी बनूं। इसलिए मैं पाकिस्तान बनाने में हाथ नहीं बंटा सकता। जिना साहब जो करना चाहते हैं उसको पूरी तौर से खतरनाक चीज समझते हुए यह कैसे हो सकता है कि मैं उन्हें पाकिस्तान की स्वीकृति के दस्तखत दे दूं। यह बात मैंने धीरज के साथ उनको सुना दी। हम आपस में लड़े नहीं। माधुर्य से ही हमने आपस में बातें कीं।

हिंसा से पाकिस्तान नहीं ले सकते

"मैंने जिना साहब से अदब के साथ कह दिया कि हिंसा के बल पर वे पाकिस्तान नहीं ले सकते। वे मुझको पाकिस्तान देने के लिए मजबूर नहीं कर सकते। मजबूर तो मुझे सिवाय ईश्वर के कोई कहीं भी नहीं कर सकता। अगर समझा-बुझा कर वे

लेना चाहें तो पाकिस्तान ही क्यों सारा हिंदुस्तान भी वे ले सकते हैं।

"शांति की दरखास्त में मैं उनका साझीदार बना हूं। और इसको कार-आमद करने के लिए मैंने जिना साहब से कहा है कि 'मुझसे जितना काम आप लेना चाहें ले सकते हैं। जरूरत पड़ेगी तो इस बात के लिए हजार दफे भी मैं आपके साथ चला आऊंगा।'

'आप जिना के पास न जायं'

"मैं आपको यह भी बता दूं कि जिना के पास जाने से सभी ने मुझे रोका था। सब ने मुझसे कहा कि जिना के पास जाकर उससे लाओगे क्या? मैं कहां कुछ लेने के लिए उसके पास गया था? मैं तो उसके दिल की बात जानने गया था। अगर मैं वहां से कुछ लाया नहीं हूं तो मैंने वहां जाकर कुछ गंवाया भी नहीं है। मेरा तो उनसे मित्रता का दावा है। आखिर वे भी तो हिंदुस्तान के ही हैं। मुझे सारी जिंदगी हर हालत में उनके साथ बसर करनी है। मैं कैसे उनके पास जाने से इन्कार कर दूँ।

जनता से अपील

"हमें मिलकर ही रहना होगा। मिलकर रहने के लिए भी किसी के ऊपर आपको बल-प्रयोग नहीं करना चाहिए। मैं तो कहूंगा कि वे लोग पाकिस्तान चाहते हैं तो वे हमें समझावें। औरों को भी वे समझावें कि पाकिस्तान में सब का फायदा है, तो जरूर ही उनकी बात मान सकता हूं। लेकिन मजबूर होकर वे मुससे लेना चाहें तो मैं 'हां' नहीं कह सकता।

"आप पूछेंगे कि हिंदुस्तान का बंटवारा क्यों नहीं होना

चाहिए ; उसमें हानि क्या है ? तो मैं बता सकता हूं। मेरा दिमाग खाली नहीं है। उस बारे में बहुत कुछ बात मेरे दिमाग में है। पर वे बातें आप पढ़-सुन लें। आज मैं बहुत काफी समय आप लोगों को दे चुका।

"अब मैं कलकत्ता जा रहा हूं। मैं नहीं जानता कि वहां जाकर मैं क्या कर पाऊंगा, कितनी देर वहां रहूंगा और कब लौटूंगा। यहां मैंने कह रखा है कि जब भी जवाहरलालजी, कृपलानीजी या वाइसराय भी मुझे बुलवा भेजेंगे मैं आ जाऊंगा और मुझे आशा है कि आपके दर्शन मुझे फिर मिलेंगे।

"तब तक अच्छा हो कि आप समझ लें कि मुझे प्रार्थना से रोकने में कोई फायदा नहीं हो सकता। मुझे तो खामोश रहने का फायदा मिल जाता है। आप जो लोग अपने गुस्से को दबा कर शांत रहे हैं उनको भी कम फायदा नहीं मिला है, पर रोड़ा अटकाने वाले घाटे में ही हैं। आप लोगों को चाहिए कि आप उन्हें समझावें। आपको याद होगा कि उस बार जब प्रार्थना में गड़बड़ हुई थी हिन्दू महासभा के मंत्री ने उन लोगों को समझा कर शांत किया था, उसी तरह अब भी इन्हें समझावें। दबाकर नहीं, मारपीट कर नहीं, पर खामोशी के साथ समझावें कि गांधी जो प्रार्थना करेगा उसमें धर्म ही है, अधर्म नहीं। अगर न समझें तो मुझे धीरज है। मैं मौन ही प्रार्थना कर लूंगा। इस मंदिर में भी अपने अकेले में वह प्रार्थना करूंगा ही। परसों के दिन जब बारिश थी तब यह प्रार्थना भली-भांति हुई। वही यह मंदिर था और वे ही हिन्दूभाई थे। पर आज फिर विरोध हो गया। यह है हमारी हालत जो बिलकुल ही गई-गुजरी हालत है।

"इसलिए मेरी बिनती है कि आप लोग अहिंसक दृष्टि से चेष्टा करके इन लोगों को इतना समझा दें कि वे मुझसे कहें

कि खुले दिल से हमारे साथ आप यहां पर प्रार्थना कर सकते हैं। चाहे अरबी में करें, फारसी में करें या संस्कृत में करें।

"अब आप दो मिनट शांति रखकर मौन प्रार्थना करें। आंखें भी बंद हों तो अच्छा।"

दो मिनट की शांति के बाद प्रार्थना समाप्त हुई।

: १६ :

आजादी लन्दन से नहीं आयेगी

नई दिल्ली, २५ मई १९४७

आज शाम को सात बजे प्रर्थना शुरू होने के पहले गांधी जी ने लोगों को शांति रखने के लिए धन्यवाद देते हुए कहा:—

"आप जानते हैं कि प्रार्थना में शांति रखनी चाहिए। आप लोगों ने यहां पर शांति का जो स्वाद चखाया है वह आपके जरिये से लोग सब जगह अपना रहे हैं। आपको यह जानकर खुशी होगी कि इस बार बंगाल में बहुत बड़ी-बड़ी प्रार्थना-सभाएं भी शांति से हुईं। वैसे मैं जब प्रवास करता हूं तब लोग जमा हो जाते हैं और प्रेम के वश होकर जोरों से नारे लगाते हैं, मानो चीखते हैं। मैं इस प्रेम को समझ तो सकता हूं; पर अब मेरा शरीर इस शोर-गुल को बर्दाश्त नहीं कर सकता। मैं आपको धन्यवाद देता हूं कि आपने पिछली प्रार्थना-सभाओं में गड़बड़ी होने पर भी शांति बनाये रखी और औरों के लिए अच्छा उदाहरण पेश किया। जैसे बंगाल की प्रार्थना-सभा में शांति रही वैसे ही बिहार में भी रही। वहां तो बहुत अधिक लोग जमा हो जाते थे। ऐसी भारी गरमी में मैं हर जगह जा सकूं ऐसा अब मेरी शरीर नहीं रहा है। इसलिए बिहार में रोजाना घंटा-डेढ़ घंटा रेल या मोटर में यात्रा करके मैं अलग-अलग जगह चला जाया करता था और वहां प्रार्थना होती थी। एक जगह एक नदी के किनारे करीब एक लाख से भी ज्यादा लोग जमा हो गये थे। हर बार नये-नये आदमी वहां चले आ रहे थे और जय-ध्वनि करते रहते थे।

इसलिए इतना कोलाहल हो गया कि मैं प्रार्थना न कर सका। लेकिन इस एक जगह के अलावा बिहार में नियम से मेरी प्रार्थना होती रही। बिहार की सभा बंगाल से भी बड़ी हुआ करती थी। वहां के लोग मुझे जानते हैं लेकिन फिर भी मुझे देखने चले आते हैं। हम चालीस करोड़ लोग कहां तक एक व्यक्ति को जरा देर देख-सुनकर याद रख सकते हैं? लोग मुझे देखने की हरदम इच्छा रखते हैं कि देखें तो सही कि गांधी कैसा है? आया, उसके पूंछ है, सींग है, या क्या है? (हंसी)। और इस तरह अनगिनत आदमी वहां जमा हो जाते थे। यद्यपि वहां इतने थोड़े मुसलमान हैं कि हिंदू शोर कर सकते थे कि हम अरबी में प्रार्थना सुनना नहीं चाहते, पर वहां इतने बड़े मजमे में एक भी आदमी ने ऐसा नहीं कहा। करते भी क्यों? ऐसी कौन-सी वजह है जो मैं कुरान न कह सकूं।

"आप भी यहां शांति रख रहे हैं लेकिन आप शांति के साथ अशांति भी पैदा कर देते हैं। यहां की ही तरह बंगाल की सभा में भी एक लड़के ने प्रार्थना रोकने की जुर्रत की। पर मैंने सोचा यह तो अहिंसा के नाम पर हिंसा होने जा रही है। मैंने उसकी बात पर ध्यान न दिया। वह समझ गया और शांत हो गया। यह अच्छी बात थी कि वहां पुलिस ने बीच में दखल नहीं दिया था। वहां खादी-प्रतिष्ठान में ही प्रार्थना हुआ करती थी और बहुत आदमी होने पर भी हमेशा शांति रहती थी।

"यहां प्रार्थना में रुकावट डालने का सिलसिला चला है। अब बहनों ने चिट्ठी लिखना शुरू किया है। आज एक बहन का पत्र मराठी में आया है। उसमें वह लिखती है कि आप मंदिर में कुरान का पाठ करें यह मुझे मान्य नहीं है, यानी वह कहना चाहती हैं कि आप लोगों को सबको वह मान्य नहीं है। क्योंकि कुरान बोलने वालों ने हजारों स्त्रियों और बे-गुनाहों पर अत्या-

चार किया है।

अहिंसा किसी काम में बाधक नहीं हो सकती

"लेकिन अब मैं इस रुकावट के कारण प्रार्थना छोड़ देने वाला नहीं हूं। अहिंसा कोई चीज नहीं है जो किसी काम को पूरा होने ही न दे। अहिंसा के नाम पर हिंसा का खेल होता रहे और मैं उसे देखता रहूं यह मुझसे नहीं हो सकेगा। इसलिए अब अगर वह बहन कोलाहल मचायेगी तो भी मेरी प्रार्थना चलेगी ही। मैं उस बहन और उसके पति महाशय से यदि वे यहां हों तो, कहता हूं कि ऐसा अविनय हमें शोभा नहीं देता। एक के कारण हजारों को हम तकलीफ दें। उनको प्रार्थना मान्य नहीं है तो उन्हें यहां आना नहीं चाहिए। फिर भी अगर वह बहन शोर मचायेगी तो उसे भी कोई हाथ न लगायेगा। वह निडर रहे। पुलिस भी अगर यहां हो तो वह भी उसे न पकड़े। अगर उसकी या उसके दो-तीन साथियों की आवाजें आती रहेंगी तो उसको मैं सहन कर लूंगा और प्रार्थना करूंगा। आप लोगों ने भी बहुत सहन किया। मुझे उम्मीद है कि आप लोगों में इस बहन की-सी मान्यता वाले न होंगे। अगर आप सब ऐसी मान्यता वाले हों तो फिर मैं कहूंगा कि प्रार्थना मेरे साथ के ये लड़के नहीं करेंगे, मैं खुद करूंगा और आप सब मिलकर मुझ अकेले को मार डालें। मैं हंसते-हंसते राम-राम करते मरूंगा। जब आप इतने सारे हों तब मैं अकेला आपको मार तो नहीं सकता और न पुलिस ही आपको ऐसा करने से रोक सकती है। लेकिन मुझे आशा है कि इस बहन को छोड़कर और कोई नहीं है जो कुरान के खिलाफ हो। मैं आपसे कहूंगा कि आप उस बहन की चीख-पुकार पर ध्यान न दें। कोई उसे छुए तक नहीं प्रार्थना। शांतिपूर्वक होने दें।

इसके बाद कुरान की आयत से प्रार्थना शुरू की गई और सारी प्रार्थना शांतिपूर्वक हुई।

प्रार्थना बेरोक जारी रहेगी

प्रार्थना के बाद गांधी जी ने कहा—"मैं उस बहन को मुबारकबाद देता हूं कि उसने इतनी बात पर संतोष कर लिया कि मैंने उसका पत्र आप लोगों को सुना दिया। कल भी यही सिलसिला चलेगा। विरोध करने वालों की बात सुना दी जायगी पर प्रार्थना होगी ही। लेकिन मैं आशा करता हूं कि कल ऐसा कोई न होगा जो प्रार्थना में बाधा डालना चाहता हो।

बदलाखोरी धर्म-ग्रंथ के ऊपर न होनी चाहिए

"मैं आपसे कहना चाहता हूं कि बिहार में हिंदुओं ने कम गुनाह नहीं किया, यह आप समझ लें। वहां पर नोआखाली का बदला ही नहीं, उससे ज्यादा किया गया। और फिर यह सिलसिला ऐसा चला कि डेराइस्माइलखां तक पहुंच गया। बिहार के हिन्दुओं ने जो अत्याचार किये उस पर से मुसलमान अगर कहने लगे कि हम तुलसीदासजी की रामायण नहीं पढ़ने देंगे, गीता उपनिषद् या वेद भी नहीं पढ़ने देंगे, अगर आप उसे बोलना चाहें तो अरबी ही में बोलें, तो क्या वह ठीक बात होगी ? ऐसा कहने वाले मुसलमानों से मैं पूछूंगा कि गीता और रामायण ने आपका क्या बिगाड़ा है। और वेद जो प्राचीन से प्राचीन ग्रन्थ हैं उसने क्या गुनाह किया है ? रामचन्द्रजी ने उनको क्या नुकसान पहुंचाया है ? यही बात कुरान और मुहमद साहब के लिए भी है कि उन्होंने हमारा क्या बिगाड़ा है। इसलिए आप समझेंगे कि चूंकि मैं रामायण तथा गीता पढ़ना चाहता हूं इसी वास्ते कुरान भी पढ़ना जरूरी समझता हूं।

राम-नाम की औषधि अपनाने में कसर

इसके बाद गांधीजी ने अपनी पौत्री कुमारी मनु गांधी की बीमारी और उसके अंत्रपुच्छ (अपेंडिसाइटिस) के आपरेशन की बात सुनाते हुए बताया कि मैं जिस राम-नाम की औषधि की बात करता हूं वह यहां कामयाब नहीं हुई, मिट्टी-पानी से भी रोग न सुधर सका और मजबूर होकर मुझे डाक्टरों की शरण लेनी पड़ी।

बंगाल व बिहार की स्थिति

आगे गांधी जी ने कहा--"अब आप यह सुनना चाहेंगे कि मैंने कलकत्ता और पटना में क्या किया ? कलकत्ता में क्या हुआ यह मैं अभी पूरा नहीं बता सकता। वहां मैं सुहरावर्दी साहब से मिला, और उनसे बातें कीं। अब देखना होगा कि उन बातों का नतीजा क्या आता है। जो कुछ हो, लोगों ने इतना महसूस किया कि मेरे वहां जाने से उन्हें कुछ तसल्ली मिली है। वहां शरत् बाबू भी कोशिश कर रहे हैं। पर अभी तक वहां मार-काट बन्द नहीं हुई है।

"बिहार में भी सुधार अधिक नहीं है, शरणार्थी लोग अपने घरों पर लौट रहे हैं, पर अभी न हिंदू न मुसलमान एक दूसरे के लिए बेखौफ हुए हैं। वे अबतक यह नहीं कह सकते हैं कि अब हमें डर नहीं है या अब हम कुछ ज्यादती करेंगे ही नहीं। फिर भी वहां की फिजा सुधर ही रही है इसमें कोई शक नहीं।

यहां क्यों आया ?

"अब सवाल यह है कि मैं यहां क्यों आया ? सच बात यह है कि मैं नहीं जानता कि क्यों आया ? लेकिन एक बात साफ है। मैंने जब बरसों तक कांग्रेस की सेवा की है तब वे लोग मुझे एक सेवक के नाते याद कर लेते हैं। वे मेरी बात सुनना चाहते

हैं फिर चाहे वे उसे माने या न माने।

"लेकिन इतना मैं आपको कह देना चाहता हूं कि लन्दन की तरफ देखने का जो रवैया चल पड़ा है वह ठीक नहीं है। हमारी आजादी लन्दन से आने वाली नहीं है। हिंदुस्तान की आजादी का कोहेनूर औरों के हाथों से मिलने वाला नहीं है; अपने ही हाथों से वह लिया जा सकता है।

"मैं उस कोहेनूर की बात नहीं करता हूं जो लन्दन टावर में रखा हुआ है; मैं अपने देश के स्वतन्त्रता रूपी कोहेनूर की वात करता हूं, वह कोहेनूर हमारे पास आ रहा है। अब जी चाहे तो उसे हम फेंक दें या जी चाहे तो उसे अपनाकर अपने पास रख लें। जैसा भी कुछ करना हो वह हमारे अपने ही हाथ की बात है, दूसरे के हाथ की नहीं।

"फिर हम माउण्टबेटन साहब की ओर क्यों देखें ? क्या इस ताक में रहें कि वे इंग्लैंड से हमारे लिए क्या लायेंगे ? लेकिन हमारे अखबार तो उन्हीं बातों से भरे रहते हैं कि माउण्टबेटन साहब लन्दन से यह लाने वाले हैं, वह लाने वाले हैं। हम अपने ही बल को क्यों न देखें।

"दूसरे अल्प-संख्यकों का क्या होगा ? मान लिया कि हिंदू, सिख आदि इंग्लैंड की ओर नहीं झांकना चाहते, पर मुसलमान उन्हीं की ओर देख रहे हैं। तो क्या फिर हिंदू-सिख भी उस ओर देखने लग जायं ! यदि वे देखें और उनकी कुछ सुनवाई माउण्टबेटन साहब कर भी लें तो दूसरे हिंदुस्तानियों का क्या होगा ? पारसी, जो संख्या में बहुत थोड़े हैं, उनकी बात सुनने की माउण्टबेटन को क्या पड़ी है ? और हिंदुस्तान में दूसरे भी कितने लोग हैं, जिन्हें न वायसराय पूछते हैं न दूसरे कोई।

"इस हालत में मेरा धर्म मुझको पालन करना है। यानी हिंदुस्तान का धर्म हिंदुस्तान को पालन करना है। और इस

तरह अपनी आजादी लेनी है।

"आज हममें बाज लोग दीवाने बन गए हैं। वे ठीक हों तो सच्चा बनने के लिए हैं आप और हम प्रार्थना में आते हैं। सच्चा बनने के लिए चाहिए कि हम एक-मात्र ईश्वर के ही गुलाम बनें और किसी के गुलाम न बनें। फिर आजादी हमारी अपनी ही है। क्या हम भी दीवाने बन जायं! और जब तक वह चन्द दीवाने ठीक न हो जायं तब तक क्या आप यह चाहेंगे कि माउण्टबेटन उन पर अपना अंकुश रखें और यहां बने रहें।

"मैं यह पसन्द नहीं करता। मैंने दूसरी ही बात सिखाई है। मैं यहां सन् सोलह में आया और तब से मैंने कहा है कि हर कोई अपने को देखें? अगर हम ऐसा करेंगे तो इंग्लैंड ही क्या अमरीका और रूस—तीनों मिलकर भी हमें मिटा नहीं सकते हमारे जन्म-सिद्ध अधिकार की जो चीज है वह हमसे कोई छीन नहीं सकता। आजादी हमारी है और हम सच्चे बनेंगे तो उसे हमारे पास आना ही है।"

: २० :

भारत हिंसा का पाठ नहीं पढ़ायेगा

नई दिल्ली २६ मई १९४७

आज मौन दिन होने से गांधीजी ने दिन में ही अपना प्रवचन लिख रखा था। लेकिन प्रार्थना शुरू होने से कुछ पहले उनके पास कल वाली महाराष्ट्रीय महिला का पत्र पहुंचा कि उन्होंने कल प्रार्थना करके अपना वचन भंग किया है। गांधीजी उस पत्र का उत्तर लिख कर ले आये और प्रार्थना शुरू कराने से पहले लोगों को वह सुना दिया गया।

लिखित उत्तर

"मैंने आज का भाषण लिख डाला उसके बाद करीब पांच बजे कल वाली बहन का खत आया है कि मैंने वचन का भंग करके कल प्रार्थना करवाई। मुझे ऐसा खयाल तक नहीं है। मैंने विनय किया, विरोधियों की रक्षा के लिए संयम का पाठ दिया। आपने उसे स्वीकार किया। अब भी ऐसे विरोध के कारण प्रार्थना बन्द करें तो विनय अविनय होगा और उदारता कृपणता का रूप लेगी। अहिंसा का यह लक्षण कभी नहीं है। इसलिए वह बहन माफ करे। प्रार्थना होगी।"

प्रार्थना के बाद गांधीजी का नीचे लिखा प्रवचन पढ़ा गया—"मैंने कल आपसे जो कहा था, आज वही चीज फिर दोहराता हूं। सामूहिक प्रार्थना हमारा खास फर्ज है। इसे झट से छोड़ा नहीं जा सकता। अगर कोई सामूहिक प्रार्थना के बारे में कोई विरोध उठाता है और उसका ऐसा करना अप-

राध ही है—तथा उस पर हमला होने का खतरा पैदा हो जाता है तो मूक प्रार्थना अच्छी है। आप लोग तो मेरी विनय सुन कर बराबर पूरी तरह शांत रहे और उन विरोधियों को आपने नहीं सताया। पर जब मैंने देखा कि हमारे इस संयम का दुरुपयोग होने लगा है तब मैंने दूसरा रास्ता अख्तियार किया। और मुझे यह देख कर खुशी हुई कि विरोध उठाने वाली बहन भी शांत रही। उनके मन में कुछ भी हो मैं आशा करता हूं कि शांति जारी रहेगी। इतनी सभ्यता तो हममें होनी चाहिए। आगे के लिए भी मैं आप से यह कहूंगा कि अगर कोई विरोध करे तो आप अपनी प्रार्थना जारी रखें और साथ ही साथ विरोध करनेवाले की ओर उदार रहें, रोष न करें।

"मैंने कल आप से कहा था कि हमें यह शोभा नहीं देता कि हम लंदन की ओर ताकते रहें। अंग्रेज लोग हमें आजादी नहीं दे सकते। वे तो हमारे कंधों से उतर सकते हैं। ऐसा करने का उन्होंने वचन तो दिया ही है। आजादी को सम्हालना और उसे रूप-रेखा देना हमारा काम है। यह हम कैसे कर सकते हैं? मैं समझता हूँ, जब तक हिंदुस्तान में अंग्रेजी राज है तब तक हम ठीक तरह नहीं सोच सकते। हिंदुस्तान के नकशे को बदलना ब्रिटिश सरकार का काम नहीं है। उसका काम तो यह है कि वह अपनी निश्चित की हुई तारीख के दिन या उसके पहले चली जाय; हो सके तो हिन्दुस्तान को अच्छी तरह अपना कारोबार चलाते हुए छोड़ कर जाये; मगर अराजकता का खतरा हो तो भी उसे तो चला ही जाना है।

"एक और कारण भी है कि आज हिंदुस्तान की शकल में किसी किस्म का फेरफार न किया जाय। कायदेआजम ने और मैंने एक अपील निकाली है कि राजनैतिक मकसद हासिल करने के लिए हिंसा का इस्तेमाल न किया जाय। अगर उस

अपील के बावजूद लोग पागल बन कर बड़ी किस्म की हिंसा करते रहें, और ब्रिटिश सत्ता उसके सामने झुक जाय, यह समझ कर कि एक दफा पागलपन निकल जाने पर सब ठीक हो जायेगा तो वह वहां खूनी बिरासत छोड़ जायगी और सिर्फ हिन्दुस्तान ही नहीं सारी दुनिया उसे गुनहगार मानेगी। मैं हरेक देशप्रेमी से और ब्रिटिश सत्ता से भी अनुरोध करूंगा कि कितनी भी हिंसा हो तब भी वह कैबिनेट मिशन के पिछले साल के १६ मई के दस्तावेज पर कायम रहकर हिंदुस्तान को छोड़ दे। आज ब्रिटिश सत्ता की मौजूदगी में खून, कतल, आग और उस से भी बुरी बातें देखकर हम नीचे गिरते जा रहे हैं। जब अंग्रेजी सत्ता चली जायगी तब मेरी उम्मीद है कि हममें साफ विचार करने की ताकत आवेगी और तब हम जैसा ठीक समझते होंगे एक हिंदुस्तान रखेंगे या उसके दो या ज्यादा टुकड़े करेंगे। और अगर हम तब भी लड़ते ही रहेंगे तो भी मुझे यकीन है कि हम आज की तरह नीचे नहीं गिरेंगे; हालांकि हिंसा के साथ कुछ-न-कुछ गिरावट तो होती ही है। मैं तो निराशा में भी आशा रखता हूं कि आजाद हिन्दुस्तान दुनिया को हिंसा का और भी एक नया पाठ नहीं पढ़ायेगा जिसमें कि वह पहले ही बुरी तरह बेजार है।"

: २१ :

हम पागल न बनें

नई दिल्ली २७ मई १९४७

दो दिन से जिस महाराष्ट्रीय महिला ने प्रार्थना का विरोध किया था, उसने आज भी लंबा खत गांधीजी के पास भेजा था। उसका उत्तर देने में प्रायः गांधीजी को दस मिनट लगे और प्रार्थना समाप्त होने के बाद कोई पन्द्रह मिनट तक गांधीजी ने प्रवचन किया।

कुरान की शिक्षा

प्रार्थना शुरू कराने से पहले गांधीजी ने कहा—"उस महाराष्ट्रीय बहन का लंबा खत आज भी आया है। इसमें उसने शिकायत की है कि स्वयंसेवकों ने उसे रोक कर उचित नहीं किया। उसने यह भी लिखा था कि कुरान में गैर-मुस्लिमों को मारने की बात लिखी है, इसलिए उसे नहीं पढ़ना चाहिए। गांधीजी ने कहा कि कुरान मैंने पढ़ा है और उसमें कहीं भी ऐसा नहीं लिखा है। बल्कि उसमें तो लिखा है कि गैर-मुस्लिमों से भी मुहब्बत करो। उसके पढ़ने वाले इस बात को न मानें तो कुरान का क्या दोष ? हमारे यहां भी तुलसी-रामायण, गीता, वेद में जो लिखा है उसका पालन कौन करता है ?

"मैं धर्म के नाम पर अधर्म करना नहीं चाहता। मैं एक-एक शब्द ईश्वर से डरकर मुंह से निकालता हूं। मुझे उस बहन के लिए दर्द हो रहा है कि वह जो बात जानती नहीं वह क्यों लिख रही है। क्यों वह दूसरे के कहने पर मान लेती है कि कुरान में

यह लिखा है, वह लिखा है। किंतु आप अपना मन दृढ़ करें। उसके विरोध करने पर भी प्रार्थना में ध्यान दें। अगर आप सब उसकी तरह कहेंगे तो मैं अकेला ही मरते दम तक प्रार्थना करूंगा।

स्त्री को छूना कोई पाप नहीं है

"उस पत्र में दूसरी शिकायत यह थी कि पुरुष स्वयं-सेवकों ने उसको हाथ लगाकर हटाया था। इस पर मेरा कहना यह है कि मेरी दृष्टि से इसमें कोई हर्ज की बात नहीं है। स्वयं-सेवकों का धर्म है कि गड़बड़ी मचाने वाले को फिर वह स्त्री हो या पुरुष उसे रोकें। हां स्त्री पर वे हाथ न चलावें, मारें नहीं। ठंडे दिमाग से समझावें। जब मन में किसी किस्म का विकार का भाव न हो तब स्त्री को छू देने भर से कोई पाप नहीं हो जाता। मैं भी लड़कियों के कंधों पर हाथ रख कर चलता हूँ तो क्या मैं गुनाह करता हूं! मेरी तो ये सब बेटी-जैसी हैं। अगर मेरे मन में मैला विचार पैदा हो तो वह जरूर पाप कहलायेगा। स्वयं-सेवक भी जब सभा की व्यवस्था करें तो हरेक को अपनी माता या बहन समझ कर सभा में आने वाली बहनों से बरताव करें। जैसे पुत्र अपनी माता को छुए वैसे वह भी छू सकता है, यह उसका कर्तव्य है।"

इसके बाद प्रार्थना शुरू हुई। तब उस बहन ने नारा लगाया "बंद करो प्रार्थना बंद करो" यह सुनकर गांधीजी मुस्करा दिये और आज्ञा दी कि प्रार्थना चलाते रहो।

लोगों को शांत करते हुए गांधीजी ने कहा—"आज समय तो काफी हो गया है, अतः मुझे जो कहना है जल्दी ही पूरा करूंगा।

"आप तो जानते हैं कि मैं बिहार में काम करता हूं। वहां

मुसलमान बहुत कम हैं। मुश्किल से चौदह फीसदी होंगे। उधर नोआखाली में हिंदुओं की तादाद इसी तरह कम है। नोआखाली के काम के सिलसिले में मैं बिहार चला गया।

सब हिन्दू मुसलमान नहीं बनाये जा सकते

"बिहार में जो भाई काम कर रहे हैं उनकी तरफ से टेलिफोन आया है कि अभी वहां जून की बात चल पड़ी है। इसी तरह पहले भी जब विधान-परिषद् होने वाली थी तब नौ-तारीख के बारे में डर पैदा हो गया था और हर जगह से पत्र आते थे कि हम क्या करें। नोआखाली में तो यहां तक धमकी दी जा रही थी कि पिछले (नवम्बर के) दंगे में कई हिन्दुओं को जिन्दा ही छोड़ दिया गया था; पर अबकी बार तो सारेके सारे हिन्दुओं को मुसलमान बना दिया जायेगा। तब मैंने उन से पूछा था कि आप चाहें तो मैं वहां पहुंच जाऊंगा और वहां पर अधिक क्या कर सकूंगा। अपनी अकेली जान ही दे सकता हूं। पर उन लोगों ने मुझे नहीं बुलाया और अगर आफत आये तो उसे झेलने को वे तैयार होगये। असल में मैं तो मानता ही नहीं कि सारे-के-सारे हिंदुओं को मुसलमान बनाने की बात कभी भी कामयाब हो सकती है।

बिहार के मुसलमान क्यों डरें ?

"उसी तरह बिहार में भी मुसलमानों को डरने की कोई बात नहीं। दो जून की हम फिक्र क्यों करें, हम क्यों सोचें कि वायसराय लंदन से क्या ला रहे हैं? माना कि वायसराय साहब हमारे लिए वहां से लड्डू ला रहे हैं तो भी मैं तो कह चुका कि वह हमारे किस काम का है। हमारे काम की चीज तो वही होगी जो हमने अपने आप पैदा की होगी।

"मैं पूछता हूं बिहार के मुसलमान क्यों डरें? हिन्दुओं को

भी जो राम-राम रटते हैं उन्हें अपने राम की कुछ परवाह होगी कि न होगी ?

सिंध के हिन्दुओं से

"इसी प्रकार सिन्ध के हिन्दुओं को डरने का क्या कारण है ? क्यों डरें ? वहां से मेरे पास खत आया है कि हिंदू डर रहे हैं डर छोड़ कर वे राम-राम क्यों नहीं करते ? वहां के लोग मुझे बुलाते हैं। मैं कई बरस से सिंध नहीं गया हूँ, पर सिंधी भाइयों से मेरी इतनी घनिष्ठता रही है कि एक बार मैं अपने को सिंधी कहा करता था। दक्षिण अफ्रीका में भी मेरे साथ सिंधी लोग थे। सिंधी, मारवाड़ी, पंजाबी सभी ने मेरा साथ दिया है। उनमें ऐसे भी थे जो शराब तक पीते थे और दूसरी चीज भी खाते थे। उन चीजों को छोड़ने में वे अपनी मजबूरी महसूस करते हुए भी अपने हिंदू बताते थे। उन सब से मेरी दोस्ती थी। उनमें से एक भाई लिखते हैं कि क्या तुम मुझे व सिंध को भूल गये ? पर मैं कैसे भूल सकता हूँ।

क्या हैवान बनेंगे ?

"सब जगह लोग डर रहे हैं कि दो जून को क्या होगा। कहा जा रहा है कि मुसलमान भाई बहुत-बहुत तैयारियां कर रहे हैं। लेकिन वे क्या तैयारी कर रहे हैं ? क्या हैवान बनने की तैयारी कर रहे हैं ? क्या वे मस्जिद में जाकर इबादत नहीं करते कि खुदा सबको इन्सान बनाये। हिन्दू भी कोई ऐसी खबर नहीं लिख भेजते कि वे एकांत में बैठकर ईश्वर से कहेंगे कि वह हिन्दुस्तान से अंग्रेजों को चले जाने की सुबुद्धि दे और सभी मुसलमान भाई जिन्हें पागलपन छू गया है उन्हें सयाना बनाये।

"पंजाब में भी वे डरते हैं, क्योंकि वे तादाद में कम हैं। वहां हिन्दुओं के साथ सिख भी हैं। सिख क्यों डरें ? दोनों ओर

ऐसी बात क्यों हो कि न जाने कौन पहले तलवार उठायेगा।

मुसलमान सहोदर भाई

"बिहार में अगर हिन्दू लोग मुसलमानों को मारेंगे तो वे मेरा कत्ल करेंगे। मैं तो कहता हूं कि बिहार के मुसलमान मेरे सहोदर भाई हैं। वे मुझको देखकर खुश होते हैं। उनको यह यकीन हो गया है कि यह एक शख्स तो हमारा अपना ही है। उनको अगर कोई मारता है तो वह मुझे मारता है। अगर उनकी बहन-बेटी का अपमान करता है तो वह मेरा अपमान करता है। यह बात मैं इस मंच पर से बिहार के सभी हिंदुओं को सुना देना चाहता हूं।

"और मुसलमानों को वहां डरने का क्या कारण है? दो अच्छे मुसलमान सेवक उनकी सेवा कर रहे हैं। फिर वहां के मंत्री-मंडल में श्रीकृष्ण सिनहा हैं, जो पूरे सजग हैं।

"आजकल एक अफवाह यह चल पड़ी है कि गांधी बिहार में रहकर हिंदुओं को कटवाना चाहता है। पर मैं बुलन्द आवाज से कहता हूं, कि सबके सब मुसलमान पागल बन जांय तब भी हिंदू पागल न बनें।

एक सिख सवा लाख के बराबर

"सिख भाई तो अपने लिए कहते हैं कि एक सिख सवा लाख के बराबर होता है और पांच सिख छः लाख के बराबर। उनका ऐसा कहना मुझे अच्छा लगता है। ग्रंथ साहब और गुरु जैसे उनके हैं वैसे मेरे भी हैं। मैं जब अपने को मुसलमान बताता हूं तब अपने को सिख बताने में मुझे लज्जा किस बात की? और सिखों ने तो नानकाना साहब में सत्याग्रह और शूरवीरता का बड़ा काम किया है। लेकिन आज वे तलवार की ओर देख रहे हैं।

वे यह नहीं समझते कि कभी तलवार का जमाना था तो भी अब वह चला गया है। वे नहीं जानते कि आज तलवार के भरोसे वे किसी को जिंदा नहीं रख सकते। यह एटम बम का युग है।

"गुरु गोविंदसिंह ने जब तलवार की बात सिखाई, तब की बात आज नहीं चल सकती। हां, उनकी सीख आज भी काम की है कि एक सिख सवा लाख के बराबर है। लेकिन वह ऐसा तब होगा जब वह अपने भाई के लिए और सारे हिंदुस्तान के लिए मरेगा।

बहादुर बहनें

"ऐसी बहादुर औरतें भी हुई हैं। एक जगह सब मर्द मारे गये और उनकी मदद मिलने की आशा नहीं रही, तब वे चुपचाप ताबे होने के बजाय खुद मर गईं। यह सच्ची बात है। करीब पचहत्तर बहनें इस तरह मर मिटीं, उन्होंने अपने हाथ से अपने बाल-बच्चों को पहले कत्ल किया, क्योंकि वे नहीं चाहती थीं कि दूसरे लोग उनके बालकों को सतायें।

"मैं कहूंगा कि मुसलमान हो या हिंदू, जिसने इस तरह किया है, उसका ही धर्म जिन्दा रहा है। सिखों से भी मैं कहूंगा कि जब आप एक-एक सवा लाख के बराबर हैं तब ईश्वर का ध्यान करके "सतश्री अकाल" का नारा लगाते हुए आप मर जायं। इससे ज्यादा और बहादुरी क्या हो सकती है?

बुजदिल नहीं

"मुझको भले कोई बुजदिल कहे। मैं बुजदिल हूँ यह तो ईश्वर ही जानता है। पर बुजदिल आदमी भी अगर बहादुरी की बात सिखाता है तो वह सीखनी चाहिए। मैं किसी को बुजदिल बनाना नहीं चाहता। न मैंने किसी को बुजदिल बनाया है और न मैं बुजदिल हूँ।"

: २२ :

पागलपन का इलाज

नई दिल्ली ८ मई १९४७

बहुत दिनों के बाद आज वाल्मीकि मन्दिर में गांधीजी निर्विघ्न रूप से प्रार्थना कर सके। इस पर लोगों को धन्यवाद देते हुए गांधीजी ने कहा—"आज किसी बहन या भाई ने उपद्रव नहीं मचाया और न विरोध ही किया। यह मुझे अच्छा लगा। मुझे तो यकीन है कि दीवानापन रोज नहीं चल सकता। यही बात हिंदू-मुस्लिम झगड़े के लिए भी है। मेरे पास खत चले ही आरहे हैं। कुछ भले खत भी आते हैं। कई मुसलमान भले हैं जो लिखते हैं कि हिंदू और मुसलमान का धर्म अलग हुआ तो क्या हुआ ? इस कारण उनके दिल तो अलग नहीं होने चाहिएं। कुछ हिंदू भी ऐसे हैं जो मुझे धमकियां देते हैं कि कुरान से बोलना आप बंद नहीं करेंगे तो हम आपको देख लेंगे। आपके यहां काली झंडियां लेकर हम आयेंगे (मालूम हुआ है कि गुजरात के पाकिस्तान विरोधी मोर्चे वालों ने गांधीजी को चेतावनी दी है कि यदि आठ दिन में आप अपना मुस्लिमपरस्ती का रवैया नहीं बदलेंगे तो हम आपके दिल्ली-निवासस्थान पर काली झंडियां लेकर आवेंगे।) और आकर वे करेंगे क्या ? हवा ही ऐसी है कि न कुछ सुनना न कुछ देखना, बस चीखते रहना। वे भी उसी तरह प्रार्थना में दखल देंगे। लेकिन ऐसा होगा तो भी जब तक आप लोग शांति से साथ दे रहे हैं, हमारा प्रार्थना का सिलसिला चलता ही रहेगा और अगर आप सभी लोग

काली झंडियां लेकर आयेंगे तो फिर मैं अकेला प्रार्थना करूंगा। आप मुझे पीटेंगे तो भी मैं राम-राम करता रहूंगा। अगर मैं आपसे बचने के लिए पुलिस रखूं, तलवार-बन्दूक चलाऊं तो भी आखीर में तो मुझे मरना ही है, तो फिर मैं राम-राम करते ही मरूं तो क्या बुरा है। जब मैं इस तरह मर जाऊंगा तब आप पछतायेंगे। आप अपने ही कहेंगे कि हमने क्या कर डाला, इसको मारकर कुछ पाया तो नहीं, पर यदि मैं पुलिस रखूं या आपको पीटूं तो आप मुझे मार कर यही कहेंगे, अच्छा हुआ जो इसे मार डाला। लेकिन मुझे उम्मीद है कि आप तो जिस तरह आये हैं उसी तरह शांत रहेंगे।

पागलपन का इलाज

"आज मैं आपको कुछ प्रश्नों के उत्तर दूंगा। सबके उत्तर तो आज नहीं दे सकता। कल एक भाई ने पूछा था कि अगर कुत्ता पागल हो जाय तो क्या किया जाय? क्या उसे मारा न जाय? यह अजीब प्रश्न है। पूछना तो यह चाहिए था कि इन्सान पागल हो जाय तो क्या किया जाय? पर बात तो यह है कि अगर हमारे दिल में राम है तो कुत्ता भी हमारे सामने पागल नहीं बन सकता। लेकिन एक बार मेरे एक भाई ने मेरे पास आकर कहा, 'कुत्ता पागल हुआ है काटता फिरता है, उसको क्या किया जाय?' मैंने कहा कि मेरी जिम्मेदारी पर उसे मार दिया जाय। पर वह थी कुत्ते की बात। इन्सान के पागल होने पर वह बात नहीं चलती। मुझे याद है जब मैं दस वर्ष का था, मेरा भाई दीवाना बन गया था। बाद में वह अच्छा हो गया था। अब तो वह नहीं रहा पर मुझे उसका स्मरण आज भी उतना ही ताजा है। पागलपन में वह सब को मारने को दौड़ता था लेकिन मैं उसे क्या करता? मारता! या

मेरी मां या पिताजी उसे मारते ? घर वालों में से किसी ने उसे नहीं मारा। वैद्यराज को बुलाया गया और उनसे कहा गया कि उसको बिना मारे जो कुछ इलाज किया जा सकता है वह किया जाय। वह मेरा सगा भाई था। लेकिन अब मेरे पास वह भेद नहीं रहा। आप सब मेरे लिए सहोदर भाई के समान ही हैं। अगर आप सब पागल बन जांय और मेरे पास फौज मौजूद हो तो क्या मैं आप सब पर गोली चलवा दूं ? दुश्मन भी अगर पागल बन जाय तो उस पर गोली नहीं चलाई जा सकती। जो पागल बनेगा उसे पागलखाने में भेजना होगा। आपको मालूम होना चाहिए कि हिन्दुस्तान में बहुत से पागलखाने हैं। मैंने अपनी आंखों ऐसे पागल देखे हैं जो सचमुच गोली से मार देने के लायक होते हैं। पर हम उनको डाक्टर के हाथ में छोड़ते हैं।

"मेरे एक नजदीकी मित्र थे जो मेरे भाई के बराबर थे। उनका लड़का पागल हो गया। वह दूसरों का खून करने तक हावी हो जाता था। उसके लिए मैंने नहीं कहा कि उसे गोली मार दो। मैं चाहता तो उसे मरवा सकता था, क्योंकि महात्मा कहा जाता था। हमारे यहां महात्मा कहलाने वाले को सब कुछ करने का अधिकार है। वह खून करे, व्यभिचार करे, चाहे जो करे, उसे माफ हो जाता है। उसे पूछने वाला कौन होता है ? लेकिन मुझे तो ईश्वर का डर था। मैंने सोचा, ईश्वर तो तुम्हें पूछेगा ही। सच बात तो यह है कि आज कोई महात्मा तो हमारे बीच है ही नहीं, सभी अल्पात्मा ही हैं।

"खैर, मैंने उस लड़के को डाक्टर के यहां भिजवा दिया। वहां से भी वह भाग आया। अभी तक उसका पागलपन गया नहीं है। उसके बाल बच्चे भी हैं। सभी घर वाले उसे बर्दाश्त करते हैं। मेरे मित्र के उस लड़के की तरह ही हमें इस सब

पागलपन का उपाय सोचना चाहिए।

"आज हमारा खून खौल रहा है। चारों ओर से बातें आ रही हैं कि न जाने दो जून को क्या होगा? पहले चार-पांच जगह दंगा हुआ, अब सभी जगह हिन्दुओं का खून करने की चर्चा है। और हिन्दू कहेंगे कि जब मुसलमान मारते हैं तो हम भी न क्यों न मारें? और फिर खून का दरिया बहा देंगे! यह पागलपन नहीं तो क्या है? मुझे भरोसा है कि आप लोग जो इतनी शांति से यहां बैठे हैं ऐसे पागल नहीं बनेंगे। जो पागल बने हैं और हमें मारना चाहते हैं उन्हें हम मारने देंगे। हम मर जायेंगे तो उनका पागलपन अच्छा हो जायगा। आजकल जो पागलपन फैला है वह ऐसा नहीं है, जो बात को समझे नहीं। अगर सच्चा पागल भी छुरी हाथ में लिये आता है तो हम खतरा उठाते हैं, उससे डरते नहीं हैं। इसी तरह मुसलमान भी अगर तलवार उठाकर आते हैं और पाकिस्तान मांगते हैं तो मैं कहूंगा--तलवार के जोर से पाकिस्तान नहीं ले सकते। पहले मेरे टुकड़े कीजिये और बाद में हिन्दुस्तान के।' यदि सब इसी प्रकार कहेंगे तो ईश्वर उनकी तलवार के टुकड़े कर डालेंगे।

"मैं तो मिस्कीन आदमी हूँ, लेकिन ऐन मौके पर आप मेरी बहादुरी देखेंगे। उस समय मैं किसी की लाठी के मुकाबले लाठी नहीं चलाऊंगा। मैं चाहता हूं कि पागल के सामने हम पागल न बनें। हम समझदार रहें तो सामने वाले का पागलपन चला जायगा। उनका पाकिस्तान भी चला जायगा। अगर पाकिस्तान सच्चा होगा तो वह सारा हिन्दुस्तान ही होगा।

अहिंसा को मत लजाओ

"अगर हम पागल बनेंगे तो अंग्रेज पूछेंगे कि क्या अहिंसा हमारे ही लिए थी? आपस में आप तलवार खींचते हैं? कहां

गई वह अहिंसा ? फिर कहेंगे कि अहिंसा वालों से हम अंग्रेज अच्छे थे, जो मारा तो सही पर अमन रखा। उनको तो राज चलाना है; इसलिए ऐसी बात कहेंगे। लेकिन मैं उनसे कहूंगा कि वे ऐसा न कहें। उन्हें तो जाना ही है और हमारी अहिंसा की लड़ाई के कारण जाना है। यहां करोड़ों लोगों ने अहिंसा की बहादुरी बताई। आपने अंग्रेजी झंडे को सिर नहीं झुकाया, आप जेल गये, आपने अपने घर बरबाद होने दिये। तब जाकर आज हम आजाद हो रहे हैं। पर अब उस बहादुरी के जरिये से हम आजाद होने की बात नहीं करते। आज हम ऐसा काम करने लग गये हैं कि हिंदुस्तान पर सब हंसें और थूकें।

"ऐसा हम हरगिज नहीं करेंगे। आप किसी को मारेंगे नहीं मर जायंगे तभी आप सच्ची आजादी पायंगे।

"माउण्टबेटन आ रहे हैं। वे क्या लायेंगे यह सोच कर सब डर रहे हैं। अगर वह हिंदुओं को कुछ देते हैं तो मुसलमान पागल क्यों बनें ? और मुसलमानों को दें तो हिंदू क्यों डरें ? हम उनकी ओर न देखें, दो जून को न देखें, अपनी ओर ही देखें।

"अगर वे कुछ न देंगे तो क्या सब पागल बन जायेंगे ? ऐसे पागल कि बुडढों, बच्चों और औरतों सभी को काट डालें।

सब जातियों की भलाई

दूसरा प्रश्न यह था कि अंतरिम सरकार के अंदर जो लोग हैं वे अंग्रेजों के नचाये क्यों नाचते हैं ? क्या हिंद में तीन ही कौमें हैं--हिन्दू, मुस्लिम और सिख ? वे पारसी को क्यों नहीं बुलाते ? क्या इसलिए नहीं बुलाते कि उनके पास तलवार नहीं है ? पारसी को भी बुलालें तो ईसाइयों ने क्या गुनाह किया है ? फिर यहूदियों को क्यों नहीं बुलाते ? इस प्रश्न का

उत्तर देते हुए गांधीजी ने कहा "प्रश्नकर्त्ता का लिखना ठीक ही है। मुझे भी इस बात का दर्द होता है! कांग्रेस तो सबके लिए है। कांग्रेस का सभी लोग साथ देते हैं। फिर कांग्रेस बुजदिल क्यों बनती है? कांग्रेस कोई अकेले हिन्दुओं की नहीं है। सच है कि उसमें बहुत बड़ी संख्या में हिन्दू हैं, पर दूसरे भी तो हैं। यदि हिन्दू, मुसलमान और सिख आपस में फैसला कर लेंगे तो क्या पारसियों को दबा देंगे? यहूदी और दूसरे भी जो लोग हैं वे मर जायेंगे? उन सब का समाधान हो जाने पर आरण्यकों का क्या करेंगे? उनको छोड़ देंगे? फिर वे सब कहेंगे कि हमने जो पहले कांग्रेस का साथ दिया तो क्या इस दिन के लिए? क्या कारण है जो वायसराय केवल अन्तरिम सरकार के चन्द आदमियों से ही सारी बातें करें? क्या इसलिए कि जवाहरलाल बहुत बड़े आदमी हैं? या सरदार बारडोली के बहादुर हैं, राजेन्द्र बाबू बहुत पढ़े हुए हैं और राजाजी बड़े बुद्धिमान हैं?

"मैं आप से कहना चाहता हूं कि कांग्रेस में वे ही नहीं हैं, आप सब हैं। जिन्होंने कांग्रेस को मदद दी और उसके लिए काम किया वे सब हैं। जो लोग डेपूटेशन में नहीं जाते, जो बोलते नहीं हैं, वे सब लोग भी इस में हैं। अगर तीनों कौमें मिलकर कुछ तय कर लें और दूसरों की परवा न करें, तो वह बड़ी बुरी हालत होगी और बाकी लोगों की हम पर आह पड़ेगी। इसलिए हम समझें कि जितना हम करें वह सब जातियों के लिए करें।

"जब मुसलमान भी इस बात को समझ जायंगे तब सब काम अच्छा हो जागया। और तब हमारा—मेरा व जिना साहब का दस्तावेज ठीक मान लिया जायगा कि राजनैतिक मकसद के लिए हिंसा नहीं करनी चाहिए।"

: २३ :

स्वतंत्र भारत ही विभाजन की समस्या को हल कर सकता है

नई दिल्ली २९ मई १९४७

लोगों से शांत रहने का अनुरोध करते हुए गांधीजी ने कहा—"जब तक प्रार्थना समाप्त न हो जाय और मैं अपनी बात कहना खतम न कर लूं तब तक आप मौन रहें। मैं चाहता हूं कि मैं जब तक यहां मौजूद हूं और जिंदा हूँ तब तक आप लोग जो रोज भक्ति-भाव से यहां आते हैं—जो केवल तमाशा देखने आते हैं उनकी बात जाने दीजिए—प्रभु का नाम लेने में मेरा साथ दें। और बाद में भी मेरी बात शांति से सुनें। आज जो मैं कहने वाला हूँ, बड़ी काम की बात है।"

प्रार्थना समाप्त हो जाने पर गांधीजी ने कहा—

"आज के और दो जून के बीच थोड़े ही दिन रह गए हैं। इन दिनों में रोज एक ही विषय के किसी-न-किसी पहलू पर बोलूंगा, जो आप लोगों के दिलों में सबसे ज्यादा समाया हुआ है। आप लोगों ने शांति और संयम रखकर मुझे अपनी ओर खींच लिया है और अपना दिल खोलकर रख देने को बाध्य किया है। कितना अच्छा हो कि जो लोग अपने को इस देश की संतान मानते हैं वे ठीक तरह से सोचें और बहादुरी से चलें। जरूर यह मुश्किल काम है, जब कि अखबारों में पागलपन से भरी हुई आग और मार-पीट की भयंकर खबरें छपती रहती हैं।

"मैं इस बात की कोई चिंता नहीं करता कि दो जून को क्या होनेवाला है। या माउन्टबेटन साहब आकर क्या सुनायेंगे। मेरी ऐसी आदत ही नहीं है कि सरकार क्या कहेगी इसकी चिंता में रहूं। उन्नीस सौ पन्द्रह में मैं यहां आया, तब से लेकर आज तक मैंने ऐसा ही किया है।

"मेरा जन्म तो यहीं का है। २२ वर्ष उम्र में मैं यहां से चला गया। मानो मैं बनवास में रहा और बीस बरस तक दक्षिण अफ्रीका में रहने के बाद यानी अपनी असली जवानी बिताकर मैं यहां लौटा। इस बीच मैंने वहां कोई पैसे इकट्ठे नहीं किये। मैंने शुरू में ही समझ लिया था कि भगवान् ने मुझे ऐसा ही बनाया है कि पैसों की ओर मैं न जाऊं। पर उसकी खिदमत करूं, ईश्वर ने मुझ से कहा कि तू दूसरा काम करेगा तो सफल नहीं होगा। सेवा का तरीका गीता ने मुझे यह बताया कि यह समझ कि मेरे पास जो है वह मेरा नहीं है 'तेरा है' (ईश्वर का है)। तब प्रश्न यह सामने आया कि वह "तू" (ईश्वर) कहां पर है ? जवाब मिला कि, "संसार के सारे व्यक्तियों में।" यानी जो मनुष्य-जाति की सेवा करता है वह ईश्वर की सेवा करता है।

"तब हम ईशोपनिषद् के उस मंत्र पर आ जाते हैं जिसमें कहा—'है सारा जगत ईश्वर से ही भरा है।'

"जब मैं त्रावनकोर में था तब रोजाना इस मंत्र का अर्थ सुनाता था। उसमें आगे कहा है—'तेनत्यक्तेन भुंजीथाः मा गृधः कस्यस्विद्धनम्। यानी सबकुछ छोड़कर काम कर; किसी का कुछ भी लेने का लालच मत कर।

"बात तो यह सादी है, बच्चा भी उसे समझ सकता है पर वह उसका भेद नहीं समझ सकता। हम बड़े हैं, हमें चाहिए कि उसका भेद समझें। इसलिए मैंने आपको यह बड़ी बात सुनादी। इसका भेद अगर हम समझ लें तो फिर हम किसके लिए लड़ें ?

"यह तो बड़ी बात हो गई, अब जो मैं सुनाना चाहता हूं उस बात पर आऊं। आज मैंने थोड़ा कष्ट किया है। मेरे पास इतना समय कहां कि रोज मैं अपने भाषण को अंग्रेजी में लिख दिया करूं। और हमारे अखबार जो अंग्रेजी में चलते हैं उन्हें तो मेरा भाषण छापना चाहिए ही परंतु हमारे अखबार नवीस उसे अंग्रेजी में किस प्रकार दें! वे बेचारे अंग्रेजी पूरी तरह कहां समझ पाते है? वैसे तो वे लोग बी० ए०, एम० ए० होते हैं; लेकिन इतनी अंग्रेजी नहीं जानते कि मैं जो हिन्दुस्तानी में कहता हूं उसका सही मतलब अंग्रेजी में समझा सकें! क्योंकि वह भाषा उनकी नहीं है दूसरों की है। यहां तो में हिन्दुस्तानी में कहूंगा। क्योंकि वह तो करीब-करीब मेरी भी और आप सब की पूरी-तौर से मातृभाषा है। इसलिए उसमें मैं जो कुछ कहूंगा यह आप सही-सही समझ सकते हैं। यह (डा० सुशीला नायर) मेरे भाषण को अंग्रेजी में कर तो लेती है, क्योंकि वह खासा अंग्रेजी जानती है, फिर भी उसमें कमी रह जाती है। इसलिए आज मैंने थोड़ा समय निकालकर अंग्रेजी में लिख रखा है। यहां मैं उसी को ध्यान में रखते हुए बात कहूंगा। परंतु अखबारों में वही छपेगा जो मैंने लिख रखा है।[1]

"तो शुरू में मैं उस खत की बात बता देना चाहता हूं, जिसमें मुझे प्रार्थना चालू रखने के बारे में कोसा गया है और लिखा है कि झूठा है, ठीक तरह से जवाब भी नहीं देता। ऐसा जो लिखते हैं वे बालक हैं। उम्र में भले ही सयाने हो गये हों, पर बुद्धि में बालक ही रहे हैं।

"इस पत्र का उल्लेख करते हुए कहा उनको मेरी यह बात चुभती है कि मैं क्यों यही कहता हूं कि 'मरो', 'मरो'। ऐसा क्यों

---

[1] मेरे पूछने पर गांधीजी ने कहा 'हिदुस्तान' दैनिक में तो जो मैंने हिंदी में कहा है वही छापना ठीक रहेगा। —स०

नहीं कहता कि पहले 'मारो काटो और फिर मरो'। वे चाहते हैं कि मैं हिन्दुओं से तलवार का बदला तलवार से और आग का बदला आग से लेने को कहूं। लेकिन मैं अपने सारे जीवन के विरुद्ध नहीं जा सकता और मानव कानून की जगह पाशविक कानून की हिमायत करने का अपराधी नहीं बन सकता। जब कोई मुझे मारने आवेगा तब मैं यह कहते-कहते मरूंगा कि ईश्वर तेरा भला करे। इसके बदले उनका आग्रह है कि मैं पहले मारने को कहूं और बाद में मरना पड़े तो मरने को कहूं। अगर मैं ऐसा—कहने को तैयार नहीं हूं तो वे मुझे कहते हैं कि 'तुम अपनी बहादुरी अपनी जेब में रखो'! और यहां से जंगल में भाग जाओ। पर वे ऐसा क्यों कहते हैं? इसलिए कि मुसलमान सबको मारते हैं। तो क्या इसी बात पर हिंदू भी मारने को उतारू हो जायं और फिर दोनों दीवाने बन जायं? क्या मुसलमान बिगड़ जायं तो हम भी बिगड़ें? कहा जाता है कि सब मुसलमान खराब हैं, गंदे (दिल के) हैं। और यह भी बताते हैं कि सब हिन्दू फरिश्ते हैं। लेकिन मैं इस बात को नहीं मान सकता।

"एक मुसलमान महिला का खत मेरे पास आया है, उसमें लिखा है कि जब आप ओज-अबिल्ला की ईश्वर की स्तुति करते हैं तो उसे उर्दू नज्म में क्यों नहीं करते। मेरा उत्तर यह है कि जब मैं नज्म पढ़ने लगूंगा तब उस पर खफा होकर मुसलमान पूछेंगे कि अरबी का तरजुमा करनेवाले तुम कौन होते हो? और वे पीटने आयेंगे तब मैं क्या कहूंगा?

"सही बात यह है कि जो चीज जिस भाषा में कही गई और जिस पर तप किया गया उसी भाषा में उसका माधुर्य होता है। बिशपों ने अंग्रेजी-बाइबिल की भाषा को बहुत परिश्रम से मधुर बनाया है और लेटिन से भी अंग्रेजी में

वह किस तरह मीठी हो गई है। अंग्रेजी सीखना चाहने वाले को बाइबिल तो सीखनी ही चाहिए। मैं अंग्रेजी भाषा का द्वेषी नहीं, उसका प्रशंसक हूँ। पर गलत जगह जाकर वह गंदी हो जाती है। सो मैं ओज अबिल्ला की भाषा का माधुर्य छोड़ने को तैयार नहीं हूं; क्योंकि हमारे पास ऐसे कवि नहीं हैं जो वैसी ही मधुरता से उसका अनुवाद कर सकें।

"आज मैं अहिंसा के शाश्वत नियम की बात नहीं कहूंगा। हालांकि उस पर मेरा दृढ़ विश्वास है। यदि सारा हिन्दुस्तान उसे सोच-समझकर अपना ले तो वह बेशक सारी दुनिया का नेता बन जायगा। यहां तो मैं केवल यह कहना चाहता हूं कि कोई आदमी विवेक के अलावा और किसी चीज के आगे न झुके।

"लेकिन आज कल तो हमने विवेक बिलकुल ही भुला दिया है। विवेक तभी कायम रह सकता है जब हममें बहादुरी हो। आज जो चल रहा है वह बहादुरी नहीं है। इन्सानियत भी नहीं है। हम बिलकुल जानवर जैसे बन गये हैं। हमारे अखबार रोज-रोज हमें सुनाते है कि यहां हिन्दुओं ने बरबादी कर डाली और वहां मुसलमानों ने। क्या हिंदू और क्या मुसलमान दोनों ही बुरा काम करते हैं। यह मैं मानने को तैयार हूं कि मुसलमान ज्यादा बरबादी कर रहे हैं। पर जब दोनों ही बुराई करते हैं तब किसने ज्यादा बुराई की और किसने कम, यह जानना बेकार है। दोनों गलती पर हैं।

"खबर आई है कि हमारे नजदीक ही गुड़गांव में कई गांव जल गये हैं। किसने-किसने मकान जलाये हैं इसका पता चलाने की कोशिश में मैं हूं पर सही पता लगना कठिन है। लोग कहेंगे कि जब इतने करीब में यह सब हो रहा है तब यहां बैठे मैं लम्बी-चौड़ी बातें कैसे सुना रहा हूं। जब आप लोग यहां आ गये हैं और हमारी बदकिस्मती से (गुड़गांव में) यह हो

रहा है तब अपने मन की बात मैं आप से कहूंगा ही। और मेरा यही कहना है कि हमारे चारों ओर अंगार जलते रहें तो भी हमें तो शांत ही रहना है। और चित्त स्थिर रखते हुए हमें भी इस अंगार में जलना है। हम क्यों दहशत के मारे यह कहते फिरें कि दूसरी जून को यह होनेवाला है वह होनेवाला है। जो बहादुर होंगे उनके लिए उस दिन कुछ भी होनेवाला नहीं है। यह यकीन रखिये। सब को एक बार मरना ही है। कोई अमर तो पैदा हुआ नहीं है। तो फिर हम यही निश्चय क्यों न करलें कि हम बहादुरी से मरेंगे। और मरते दम तक अपनी ओर से बुराई नहीं करेंगे। जान-बूझकर किसी को मारेंगे नहीं। एक बार मन में ऐसा निश्चय कर लेंगे तब आप स्थिर चित्त रहेंगे और किसी की ओर नहीं ताकेंगे। जो डरा-धमका कर पाकिस्तान लेना चाहेंगे उनसे कह देंगे कि इस तरह रत्ती भर भी पाकिस्तान मिलनेवाला नहीं है। आप इन्साफ पर रहेंगे, हमारी बुद्धि को समझा देंगे, दुनिया को समझा देंगे तो आप पूरा का पूरा हिंदुस्तान ले जा सकते हैं। जबर्दस्ती से तो हम पाकिस्तान कभी नहीं देंगे।

"और अंग्रेजों से क्या कहूँ। अगर वे मिशन योजना से हटते हैं तो वे दगाबाज हैं। हम दगाबाज न बनेंगे और न बनने देंगे। हमारा और उनका सम्बन्ध १६ मई की घोषणा से है उसी के आधार पर विधान-परिषद् बनी है। उसके मुताबिक हम चलेंगे। इसके अलावा हम कुछ नहीं जानते। दूसरा कुछ तभी हो सकता है जब हम खामोश हो जायं लड़ाई दंगा न रहे और हम शांत होकर बैठें। पर हम दबेंगे नहीं।

"इन चार दिनों में इतना पाठ आप सीख लें तो सब कुछ मिलने वाला है। भले ही वे सारे हथियार जो बटोरे हैं आजमा लें। जब हम इतनी बड़ी सल्तनत के मुकाबले में डट गये और

उनके इतने सारे हथियारों से नहीं डरे, उसके झंडे के सामने सिर नहीं उठाया तो अब हम क्यों लड़खड़ायें? जब कि आजादी मिलने ही वाली है, हम यह सोचने की गलती न करें कि अगर हम न झुके—चाहे यह झुकना पाशविक शक्ति के आगे ही क्यों न हो तो आजादी हमारे हाथों से निकल जायगी। अगर हम ऐसा सोचेंगे तो हमारा नाश निश्चित है।

"मैं लन्दन से आने वाले तारों में विश्वास नहीं करता। मैं यह आशा नहीं छोड़ूंगा कि ब्रिटेन गत वर्ष के १६ मई के केबिनेट मिशन के वक्तव्य की इबारत और भावना से बाल बराबर भी नहीं हटेगा जब तक कि भारत की पार्टियां अपने आप कोई फर्क करने को रजामन्द न हो जायें। इस काम के लिए दोनों को एक जगह मिलना होगा और मानने लायक हल निकालना पड़ेगा।

"यहां के अंग्रेज अफसरों के लिए कहा जाता है कि वे बदमाश हैं। इन दंगों में उनका हाथ है, वे ही हमें लड़ाते हैं। लेकिन जब तक यह गंभीर आरोप ठीक-ठीक साबित नहीं हो जाता तब तक हमें उन पर इल्जाम नहीं लगाना चाहिए। मैं तो कहूंगा कि अगर हम लड़ना नहीं चाहते तो लड़ाई कैसे होगी? मैं अगर यहां बैठी हुई अपनी लड़की से लड़ना न चाहूं तो मुझे कौन लड़ा सकता है?

"और माउंटबेटन साहब का काम आसान नहीं है। वे बड़े सेनापति हैं, बहादुर हैं; पर अपनी उस बहादुरी को वे यहां नहीं बता सकते। यहां पर वे अपनी सेना लेकर नहीं आये हैं। यहां वे फौजी वर्दी में नहीं आये हैं, सिविलियन बनकर आये हैं और उनका कहना है कि मैं अंग्रेजों से हिंदुस्तान छुड़वा देने के लिए आया हूं। अब हमें देखना है वे किस तरह जाते हैं। माउन्टबेटन साहब को अपने गवर्नर जनरल के पद को शोभित करना है। उन्हें

अपनी सारी चतुराई और सच्ची राजनीतिज्ञता बतानी है। अगर वे जरा भी चूक जायंगे, जरा भी सुस्ती कर जायंगे तो ठीक न होगा इसलिए हम और आप सब मिलकर प्रार्थना करें कि भगवान उनको सन्मति दे—और इतनी बात वे जान लें कि सोलह मई की बात से बाल-भर भी फरक जबरदस्ती से वे नहीं कर सकते। अगर करते हैं तो वह दगा होगा और दगा किसी का सगा नहीं होता। दगा का अन्त भलाई में कभी आ नहीं सकता।"

: २४ :

हिन्दू धर्म की असली शिक्षा

नई दिल्ली, ३० मई १९४७

प्रार्थना के बाद में गांधीजी ने कहा "आप लन्दन की ओर न देखें, न वायसराय की ओर देखें। इसका मतलब यह नहीं कि इंग्लैण्ड में जितने अंग्रेज हैं सब-के-सब बुरे हैं। उनमें बहुत-से भले भी हैं। माउण्टबेटन साहब भी भले हैं। पर वे सब अपने घर में भले हैं। जब यहां आकर दखल देते हैं तो वे बुरे बन जाते हैं। अब वह पुरानी बात नहीं रही कि जब अंग्रेजों की हिफाजत का वादा जरूरी समझा जाता था। सिविल सर्विस में जो अंग्रेज लोग हैं उन्हें अब हम अपने यहां नौकर रखने के लिए हम मजबूर नहीं हैं। अगर सिविलियन रहना चाहें तो रहें और अंग्रेज व्यापारी भी रहना चाहें तो वे भी रहें। लेकिन उनको बचाने के लिए यहां एक भी अंग्रेज सिपाही नहीं रह सकेगा। हिन्दुस्तानियों की खिदमत और उनकी मुहब्बत के जरिए ही वे रह सकते हैं। अगर कोई पागलपन में उन्हें नुकसान पहुंचाये तो उसकी जिम्मेदारी हम पर नहीं होगी। अंग्रेजों के हिन्दुस्तान से पूरी तरह चले जाने में कुछ देर लग सकती है। उन्होंने इसके लिए १९४८ के जून की ३० तारीख कायम की है। उस दिन को आज से पूरे बारह महीने बाकी रहे हैं। अगर वे इससे पहले जा सकें तो उन्हें जाना है। लेकिन उसके बाद तो वे एक दिन भी नहीं टिक सकते। यह तो प्रामिसरी नोट की-सी बात है। अगर प्रामिसरी नोट में इतवार के दिन रुपया देने का वचन दिया है तो उसे सोमवार पर नहीं टाला जा सकता। इसी तरह अंग्रेज

भी ३० जून के बाद यहां नहीं रह सकते। अंग्रेज-प्रजा ने उन्हें जो आदेश दिया है उसका उन्हें पालन करना है। आखिर वायसराय उसी अंग्रेज-प्रजा के नौकर हैं। इस दूसरी या तीसरी जून को वह हमें बतायंगे कि वह क्या करना चाहते हैं और किस तरह यहां से जायंगे। यह उनका कर्तव्य है और उसे पूरा करना उनका काम है। हमको अपना धर्म खुद देखना है।

मैं किसका नुमाइन्दा हूं ?

"फिर मैं सोचता हूं मैं कौन हूं ? मैं किसका नुमाइन्दा हूं ? बरसों बीते मैं कांग्रेस से बाहर निकल आया हूं। चवन्नी का मेम्बर भी नहीं हूं। पर कांग्रेस का खादिम हूं। मैंने उसकी बरसों तक सेवा की है और कर रहा हूं। इसी तरह मैं मुस्लिम लीग का भी खादिम हूं और राजाओं का भी खादिम हूं। सबका खादिम हूं, पर नुमाइन्दा किसी का नहीं हूं। हां, एक का मैं नुमाइन्दा जरूर हूं। मैं कायदे आजम का नुमाइन्दा हूं। क्योंकि उनके साथ मैंने शान्ति-अपील पर दस्तखत किये हैं। हम दोनों ने मिलकर कहा है कि हिंसा से कोई राजनैतिक बात हम नहीं ले सकते। यह बहुत बड़ी बात है। उस अपील पर दूसरे लोगों की सही भी लेने की बात थी, लेकिन जिना साहब ने कहा कि मुझे तो अकेले गांधीजी की ही सही चाहिए। इस तरह मैं जिना साहब का नुमाइन्दा बन गया। उनके अलावा मैं किसी का नुमाइन्दा नहीं हूं।

"लेकिन मैंने अपील पर हिन्दू की हैसियत से दस्तखत नहीं किये, किन्तु हिन्दू मैं जन्म से अवश्य हूं, कोई मुझे हिन्दू मिटा नहीं सकता। मैं मुसलमान भी हूं, क्योंकि मैं अच्छा हिन्दू हूँ और इसी तरह पारसी और ईसाई भी हूं। सब धर्मों की जड़ में एक ही ईश्वर का नाम है। सबके धर्म-शास्त्र एक-सी बात कहते हैं।

कुरान में गैर-मुस्लिमों को कत्ल करना नहीं लिखा

"मैंने कुरान देखा है और जैसा कि उस बहन ने लिखा था मैं नहीं मानता कि कुरान में काफिरों को कत्ल करने की बात लिखी है। मैंने बादशाह खान और अब्दुस्समदखां साहब से, जिन्होंने आज बढ़िया तरीके से आयत पढ़ी है, पूछा तो वे भी नहीं कहते कि कुरान में गैर-मुस्लिम को कत्ल करने के लिए लिखा है। बिहार के मुसलमानों में से किसी ने नहीं कहा कि क्योंकि आप अविश्वासी हैं, इसलिए हम आपको कत्ल करेंगे और नोआखाली के मौलवियों ने भी ऐसा नहीं कहा। बल्कि उन्होंने राम-धुन को ढोलक के साथ होने दिया। कुरान में जो लिखा है उसका मतलब इतना ही है कि खुदा काफिर से पूछेगा। खुदा तो सबसे पूछेगा। मुसलमान से भी पूछेगा। वह लफ्ज को नहीं पूछेगा, कामों को पूछेगा। बाकी जो गंदा देखना चाहें, हर जगह गन्दा देख सकते हैं। ऐसी कोई चीज नहीं जिसमें अच्छा व बुरा न मिला हो। हमारी मनुस्मृति में भी लिखा है कि अछूतों के कान में सीसा डालो। पर मैं कहूँगा कि हिन्दू धर्म-शास्त्रों की यह असली शिक्षा नहीं है। तुलसीदास जी ने सब शास्त्रों का निचोड़ बता दिया कि दया धर्म का मूल है। कोई भी धर्म यह नहीं सिखाता कि हम किसी का खून करें। हमको तो तुलसीदासजी के इस दोहे पर अमल करना चाहिए—

जड़ चेतन गुण दोषमय, विश्व कीन्ह करतार।
सन्त हंस गुण गहहिं पय, परिहरि वारिविकार॥

मार-काट बंद करो

गुड़गांव जिले की मार-काट का जिक्र करने के बाद गांधीजी ने कहा—"हमें तो मुसलमानों से कह देना होगा कि इस तरह

पाकिस्तान नहीं लिया जा सकता। तबतक पाकिस्तान मिलने वाला नहीं है जबतक कि यह जलाना-मारना बन्द नहीं होगा। इसी प्रकार हिन्दू भी मुसलमानों को जबर्दस्ती पाकिस्तान का नाम लेने से नहीं रोक सकते। पर मैं पूछता हूं कि ख्वामख्वाह आप क्यों पाकिस्तान के नाम पर लड़ते हैं। पाकिस्तान कौन-सा भूत है? सच्चा पाकिस्तान तो वह है जहां बच्चा-बच्चा सुरक्षित हो। चाहे पाकिस्तान हो चाहे हिन्दुस्तान हो उसमें प्रत्येक धर्म और कर्म वाले सकुशल रहने चाहिएं। फिर वे चाहे ब्राह्मण, बनिया या पंडित हो अथवा अलग-अलग धर्म के हों। इसलिए मैं जिना साहब से कहूंगा कि आइये हम सारे हिन्दुस्तान में घूमें और जोर-जबरदस्ती को बन्द करायें।

"मैं अपने साथी जिना साहब से कहता हूं और सारी दुनिया से कहता हूं कि हम तब तक पाकिस्तान की बात भी नहीं सुनना चाहते जब तक यह तशद्दुद चलता है। जब यह बन्द हो जायगा तब हम बैठेंगे और ठहरायंगे कि हमें पाकिस्तान रखना है या हिन्दुस्तान। इस तरह जब भाई-भाई होकर बैठेंगे तब हम रोशनी करेंगे और जलेबी बांटेंगे। दोस्ती से ही पाकिस्तान बन सकता है और दोस्ती से ही हिन्दुस्तान कायम रह सकता है। अगर हम लड़ते रहे तो हिन्दुस्तान तबाह हो जाने वाला है।"

अन्त में गांधीजी ने कल की बात फिर दोहराते हुए कहा कि गत वर्ष का १६ मई का निवेदन समझौते की जड़ है। उसका एक भी कामा हटाया नहीं जा सकता। अंग्रेजों को इससे बाहर कुछ भी करने का हक नहीं है और न हम ही इससे ज्यादा कुछ मांग सकते हैं। हमको यह साफ कह देना चाहिए कि चाहें हम सब मर जायं या सारा हिन्दुस्तान जल जाय—राख हो जाय, परन्तु जबर्दस्ती पाकिस्तान मिलने वाला नहीं है।

: २५ :

राजाओं को प्रजा की इच्छा माननी होगी

नई दिल्ली ३१ मई १९४७

पिछले दो-तीन दिन से गांधीजी के जो ओजस्वी भाषण हो रहे हैं उसका प्रभाव आज वाल्मीकि मन्दिर में प्रार्थना के समय दीख रहा था। रोज की अपेक्षा आज दूनी भीड़ थी। दिल्ली की इस तेज गरमी में हज़ारों आदमी कन्धे-से-कन्धा सटाकर खड़े थे। गांधीजी जब मंच पर आये तब शोर भी काफी था। लोगों को शान्त करते हुए गांधीजी ने बताया कि प्रार्थना के समय आंख बन्द रहनी चाहिए और कान खुले।

आज प्रार्थना में कुरान की आयत के पाठ के समय एक अंग्रेज़ी ढंग की हैट पहने हुए एक युवक श्रोताजनों में ही खड़ा हो गया और हवा में मुट्ठी उछाल-उछाल कर चीखने लगा कि 'मिस्टर जिना को गिरफ्तार करो; कुरान का पाठ बन्द करो; मुस्लिम लीग के सामने युद्ध जाहिर करो।' उसके चीखने-चिल्लाने पर भी प्रार्थना चलती रही। लोगों ने काफी शान्ति रखी। प्रार्थना के बाद गांधीजी ने कहा—

दुश्मन को कैसे कैद किया जाय ?

"वह भाई जो अंग्रेजी टोप लगाकर बोलता था कि 'जिना को गिरफ्तार करो।' आप जिना को गिरफ्तार करना चाहते हैं। वैसे करने की आपके पास ताकत हो सकती है और मैं भी वैसी ही ताकत रखता हूं, लेकिन मेरा तरीका दूसरा है। मैं जब से दक्षिण अफ्रिका से आया हूँ आपको वह तरीका सिखा रहा हूं।

वैसे मैं कोई ऐसा भारी शिक्षक तो नहीं हूं पर एक पागल भी अपनी बात तो बता ही सकता है। आज चौवन बरसों से मैं यही बात बताता रहा हूं कि हमें अपने शत्रु को कैद कर लेना है। आप जिना को शत्रु समझते हैं; लेकिन मैं तो किसी को शत्रु मानता ही नहीं। मैंने तो कहा है कि मैं उनका नुमाइन्दा बना हुआ हूँ। और जो मैं कहता हूं वह सचाई से ही कहता हूं। तब फिर मैं उनको शत्रु कैसे मान सकता हूं? अंग्रेज भी मेरे दुश्मन बन गये थे, लेकिन मैं उनका दुश्मन नहीं बना। मैं तो उनका दोस्त बना, उनका प्रतिनिधि बना और मैंने उन्हें उनकी भलाई की ही बात सुनाई।

जिना को कैसे कैद करें?

"आदमी दो तरह से अपने दुश्मन को कैद करते हैं। एक सख्ती से और दूसरे मुहब्बत से। मैंने आपको मुहब्बत से कैद कर रखा है। जब मैं आपको शान्त रहने के लिए कहता हूं तब आप शान्त हो जाते हैं। आपको कैद किया है यह भाषा-प्रयोग थोड़ा विनोद में है, पर भाव आप समझ गये होंगे। तो, मेरा कहना यही है कि कभी-न-कभी हम जिना साहब को जरूर कैद कर लेंगे। पुलिस उन्हें क्या कैद करेगी? पुलिस उन्हें नहीं पकड़ सकती। मुझको भी पुलिस गिरफ्तार नहीं कर सकती और न खान साहब को ही पकड़ सकती है। हां, सल्तनत चाहे तो उन्हें पकड़ सकती है, लेकिन सल्तनत के पकड़ने पर भी जिना साहब ठीक तरह कैद नहीं होंगे। सही तौर पर गिरफ्तार तो वे तब होंगे जब मैं उन्हें कैद करके यहां पर लाकर खड़ा कर दूंगा।

मीर आलम का किस्सा

"एक शख्स मीर आलम था। सरहद्दी गांधी के मुल्क का था। जैसे ये पहाड़ के से हैं, (श्रोताओं में हंसी) वह उनसे भी

ऊंचा था। पहले वह मेरा मित्र था। पर पठान तो भोले ही होते हैं। इसी कारण वे बादशाह हैं। उसको किसी ने बहका दिया कि गांधी ने पन्द्रह हजार पौण्ड जनरल स्मट्स से ले लिये हैं और कौम को बेच डाला है। बस, एक दिन वह मीर आलम मेरा दुश्मन बन कर आया। उसके हाथ में बड़ी-सी लाठी थी और उस पर सीसे की मूठ लगी थी। उसने ठीक मेरी गरदन पर वह लाठी मारी। मैं गिर पड़ा। नीचे पत्थर की फर्श थी। मेरे दांत टूट गये। ईश्वर को मंजूर था इसलिए मैं बच गया। मीर आलम को दो तीन अंग्रेजों ने जो उस रास्ते से जा रहे थे, पकड़ लिया, लेकिन मैंने उसे यह कहकर छुड़वा दिया कि "वह बेचारा दूसरे के धोखे में आ गया कि मैं लालची हूं, और इसपर फौजी पठान का खून खौल उठे और वह मारने को उतारू हो जाय तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है।" इस तरह से मीर आलम को मैंने कैद कर लिया। वह मेरा पक्का दोस्त बन गया।

"अगर ईश्वर को मंजूर होगा तो एक दिन जिना साहब भी यहां आकर बैठेंगे और कहेंगे कि मैं आपका दुश्मन न हूं और न था। मैं पाकिस्तान तो मांगता हूं, पर मेरा पाकिस्तान आला दरजे का होगा। वह सबके भले के लिए होगा। तब हम सब मिलकर रोशनी करेंगे और मिठाइयां बांटेंगे।

बहादुरी की बात

"यह मैं बुजदिली या खुशामद की बात नहीं कह रहा हूँ। मैं बहादुर बनने की ही बात कह रहा हूं। सिक्खों की तरह हमें एक-एक को सवा लाख के बराबर का बहादुर बनना है। मैं बता चुका कि प्रत्येक सिख सवा लाख के बराबर क्योंकर होता है। कृपाण के जरिये से नहीं; कृपाण तो उसके पास इसलिए होती है जिससे वह बता सके कि वह कभी भी उसके मातहत नहीं

होगा। सवा लाख मिल कर मारें या कोई अकेला मारे, तो भी वह हाथ नहीं उठायेगा। कौन कहेगा कि इस तरह मरने वाला बुजदिल है। सभी उसे सच्चा बहादुर बतायेंगे।

ताकत से पाकिस्तान नहीं

"मैंने कल कहा था कि सारा हिन्दुस्तान जल जायेगा तो भी हम ताकत के जोर से पाकिस्तान नहीं होने देंगे। बुद्धि के जरिये, हमारे दिलों पर असर डाल कर, समझा-बुझा कर आप कहेंगे और हम समझ जायेंगे कि आप तो सीधी-सी बात करते हैं, आपके दिल में कोई छल-फरेब नहीं है, तो पाकिस्तान मान लेंगे, लेकिन उस समय आप हमें विश्वास दिलायेंगे कि पाकिस्तान में किसी को भी मुसलमानों से डरने की बात नहीं रहेगी। आपने जब खुदा को हाजिर नाजिर समझ कर दस्तखत किये हैं और यह एलान कर दिया है कि राजकीय उद्देश्य की पूर्ति के लिए हिंसा नहीं होनी चाहिए, तब पाकिस्तान के लिए जोर-जबर्दस्ती कैसे उचित हो सकती है।

"हम हिंदुस्तान में बिरला का राज नहीं चाहते और भोपाल के नवाब का भी राज नहीं चाहते। बिरला कहते हैं कि हम राज करना नहीं चाहते। उसी तरह नवाब भोपाल भी अपने को रैयत के दोस्त बताते हैं। वे भी रिआया के खिलाफ होकर राज नहीं चाहते। तो फिर राज आयेगा किसके हाथ में? वह आप लोगों के हाथ में आयेगा। आपके हाथों में भी नहीं, मिस्कीनों के हाथ में हिंदुस्तान का राज होगा।

प्रजा के ट्रस्टी

"हिन्दुस्तान में कई बिरला हैं। उनकी ताकत क्या है? वे पैसे देते हैं और मजूर से मजूरी कराते हैं। जब मजूर कह दें कि हम काम नहीं करेंगे तब धनवानों के करोड़ों रुपये उनकी जेब

में रह जाने वाले हैं। अगर वे जमीन वाले हैं तो भी खुद तो जोतने वाले नहीं हैं। जब उन्हें जोतने वाला कोई न मिलेगा तो उनकी बड़ी-बड़ी जमीनें बेकार हो जायंगी। इसी तरह नवाब भोपाल की बरछी, भाले और घुड़सवार सभी निकम्मे हो जाने वाले हैं। मारमार कर वे कितनों को मारेंगे? अपनी रिआया को मार कर वे किस पर राज करेंगे? वे तभी अपनी प्रजा पर राज कर सकेंगे जब वे प्रजा के ट्रस्टी बन जायेंगे।

"इसके विपरीत अगर कोई कहता है कि नवाब भोपाल मुसलमान है इसलिए वह मुसलमान का राज कहलायेगा और कश्मीर में मुट्ठी-भर पंडितों का राज रहेगा और यह तनिक भी चलने वाला नहीं है। कश्मीर में राज मुसलमानों का होगा और भोपाल में हिन्दुओं का।

"हैदराबाद के निजाम की बात लीजिये कहते हैं कि मौका पाकर वह सारे हिन्दुस्तान को सर कर लेने वाले हैं। लेकिन कौन सर करेंगे? वहां की सारी रिआया तो हिन्दू पड़ी है।

दग़े की बात

"अंग्रेज अगर सोचते हैं कि वह हिन्दुस्तान से हटकर हैदराबाद, भोपाल, राजकोट या, इधर-उधर अड्डे जमायेंगे तो यह दग़े की बात होगी। मुझ पर ऐसी कोई छाप नहीं है। मैं तो मानता हूं कि अंग्रेजों की जाने की बात पूरी ईमानदारी की है। जब उनको भारत छोड़ना है तब उनकी सार्वभौमिकता भी खत्म होती है, फिर छोटे-मोटे अड्डे उनके क्या काम आने वाले हैं? और जब अंग्रेज नहीं रहेंगे तब राजा लोग रिआया के साथ बैठने वाले हैं।

राजा विधान परिषद् में आयें

"एक बार मालवीयजी बम्बई पधारे थे। मैं उनके साथ था। वहां कुछ महाराजाओं के पास हम दोनों गये। राजाओं ने हमें

ऊपर आसन पर बिठाया और वे हमारे घुटनों के पास नीचे बैठे। उस समय अंग्रेजी सल्तनत पूरे जोर में थी। अब जब वह जबरदस्त सल्तनत हट जाती है, तब राजा लोग तुरन्त ही समझ जाने वाले हैं कि जनता को जब मानेंगे तभी हम कायम रह सकेंगे। और जनता को मानने का तरीका यही है कि वे विधान परिषद् में आवें। अगर वे जिद पकड़ते हैं कि हम विधान-परिषद् में नहीं आते तो फिर वे राजा नहीं रह सकते।

"हिन्दुस्तान में कोई मुसलमान राजा यह नहीं कह सकता कि वह सब हिन्दुओं को मार डालेगा। अगर कोई ऐसा कहता है तो मैं उससे पूछूंगा कि अब तक वह क्यों हिन्दुओं का राजा बन कर रहा, क्यों हिंदू प्रजा का अन्न खाया? इसी प्रकार कोई राजा मुसलमान है इसी आधार पर यह कहने का हकदार नहीं हो जाता कि वह पाकिस्तान में जा मिलेगा और न हिंदू राजा हिंदू होने के कारण यह कह सकता है कि वह कांग्रेस का साथ देगा। प्रजा जहां कहे वहीं उसे जाना होगा।

हरिजन चक्रैया

भाषण की समाप्ति में गांधीजी ने आंध्र निवासी हरिजन युवक चक्रैया की दुःखद मृत्यु का समाचार विस्तार से सुनाते हुए कहा—"वह सेवाग्राम का आश्रमवासी था। नई तालीम के तरीके पर सीखा था। बड़ा परिश्रमी और दस्तकार था। झूठ, फरेब, क्रोध—जैसे दोष उसमें नहीं थे। दैववश उसके दिमाग में कुछ रोग पैदा हो गया। खुद निसर्गोपचार में ही विश्वास करता था, पर दोस्तों ने और डाक्टरों ने उनका आपरेशन करने का आग्रह किया। इस रोग से उसकी आंखों का तेज जाता रहा था फिर भी उसने आपरेशन मेजपर जाने से पहले गांधीजी को बड़ी कोशिश से पत्र लिखा था कि प्राकृतिक चिकित्सा मुझे प्रिय है

पर आपरेशन का प्रयोग कराने के लिए भी मैं तैयार हूं और मौत आयेगी तो राम-नाम लेता हुआ मरूंगा। आखिर बम्बई के अस्पताल में आपरेशन किया गया और आपरेशन मेज पर ही उसके प्राण छूट गये।"

गांधीजी ने भावावेश में कहा—"उसके जाने पर रोना आता है पर मैं रो नहीं सकता क्योंकि मैं रोऊं तो किसके लिए रोऊं और किसके लिए न रोऊं। पर भारत माता को अगर बच्चे चाहिए तो बकौल तुलसीदासजी के ऐसे ही चाहिए जो या तो दाता हो या शूर। चक्रैया दाता था क्योंकि वह निःस्वार्थ सेवक और परम संतोषी था और शूर भी था, क्योंकि उसने अपने हाथ से मृत्यु को अपना लिया। वह हरिजन था पर उसके दिल में हरिजन-सवर्ण, हिंदु-मुसलमान जैसे भेद न थे वह सबको इंसान मानता था और स्वयं सच्चा इंसान था।

"आज मैंने नबाव भोपाल और हरिजन बालक चक्रैया की बात एक साथ आपको सुना दी। भारत में दोनों के लिए स्थान है। नवाब भोपाल ट्रस्टी बनकर ही रहें और चक्रैया जैसे करोड़ों युवक निकल आवें। तभी भारत सुख से रहेगा।"

: २६ :

व्यापारियों से

नई दिल्ली, १ जून १९४७

आज भी प्रार्थना में जब कुरान की आयत बोली जा रही थी तब एक पंडित ने बाधा डाली और 'मस्जिद में शंख बाजे बजायें तब यहां कुरान पढ़ें' का नारा लगाया। लेकिन प्रार्थना चलती रही। श्रोताओं में से दो जवानों ने उस व्यक्ति का हाथ खींच कर उसे नीचे बिठा देने और चुप करने की कोशिश की तो सभा में कुछ खलबली मच गई। जब पुलिस उसे ले जाने के लिए आई तब गांधीजी ने कहा "पुलीस भाई! आप उसे न ले जायं। वहीं बैठा रहने दें और वह ज्यादा गड़बड़ी न मचावे इतना भर देखते रहें।" इस पर पुलीसवाला उन पंडितजी की बगल में शांति से बैठ गया। गांधीजी की इस सहानुभूति का प्रभाव उन पंडितजी पर भी अच्छा पड़ा। जब गांधीजी ने कहा—"कुरान की आयत तो खतम हो गई। अब भजन हम तभी कहेंगे जब ये पंडितजी इजाजत दे देंगे। वरना अब भजन बंद रहेगा।" तब उन्होंने मुस्कराते हुए और अपनी कोहनी बताते हुए गांधीजी से कहा—"देखिये, खींचातानी में मुझे यह खून निकल आया है। यही आपकी अहिंसा है?"

गांधीजी ने कुछ विनोद में कहा—"खैर, खून निकलने की बात जाने दीजिए। आप यह बताइए कि मैं प्रार्थना आगे चलाऊं या बंद कर दूं? आप कहेंगे तो भजन चलेगा, नहीं तो आज न

होगा।"

तब प्रसन्नता पूर्वक उन्होंने भजन सुनने की इच्छा प्रदर्शित की। इतनी जल्दी वह गांधीजी के मित्र बन गये यह देख कर सभा का काफी मनोरंजन हुआ। उससे पहले उन पंडितजी को शांत करते हुए गांधीजी ने कुछ बड़े महत्त्वपूर्ण वचन कहे, जिसका सार नीचे मुताबिक है। "आपके पास ही हिंदूधर्म नहीं है। मैं भी हिंदू हूं और पूरा सनातनी हूं। लेकिन हम गीता ही क्यों कहें, कुरान क्यों नहीं ! मोती तो जहां से मिले वहां से ले लेने चाहिएं। राज अब हमारे हाथ में आ रहा है। उसे हमें देने के लिए वायसराय परेशान हैं। तब क्या आप इस तरह झगड़ेंगे और अपनी अज्ञानता दिखायेंगे ? आपको विनय सीखना चाहिए। बादशाह खान से आप विनय सीख सकते हैं। आज प्रार्थना के लिए जब मनु उन्हें लिवाने गई तब उन्हों ने कहा, मुझे वहां पर देख कर किसी हिंदू के दिल में चोट पहुंचेगी, इसीलिए मैं वहां नहीं आऊंगा।' तब मैंने कहला भेजा कि 'आप तो पहाड़ जैसे हैं। मैं बनिया होकर भी नहीं डरता तो आपको क्या डर। (सारी सभा खिल-खिलाकर हंसी) और अब वे यहां आ गये हैं तो मुझसे भी अधिक बकरी जैसा गरीब होकर बैठ गये हैं। हमें भी ऐसा विनयी होना चाहिए। माना कि कुरान में कुछ ओछी बातें लिखी हैं पर कौन ग्रंथ ऐसा है जिसमें ऐसी बातें नहीं हैं। मैं तो सैकड़ों मुसलमान मित्रों में रहा हूं किसी ने मुझे यह नहीं कहा कि तू मुसलमान नहीं है, इसलिए तुझको हम बुरा मानते हैं। एक मुसलमान मित्र[1] ने—जो अब मौजूद नहीं रहे, और जो नाम के जौहरी थे तथा गुण में भी वे वैसे ही थे—मुझसे कहा था कि 'तू हम लोगों से डरा कर, क्योंकि हममें

---

१. दक्षिण अफ्रिका के सौदागर उमर झवेरी।

सभी अच्छे नहीं होते हैं।' पर मैंने उनसे कहा कि मैं किसी की बुराई क्यों देखूं? मुझे तो आपके समान भले मित्र मिल गये इसी पर संतोष है। और वे अकेले नहीं थे। ऐसे काफी नाम मेरे पास हैं। एक को तो मैंने अपना ही लड़का बनाया था वह सबकी खिदमत करनेवाला था पर ईश्वर उसे उठा लिया।[1] जब ऐसे-ऐसे अच्छे आदमी मुसलमानों में हैं, तब मैं कहता हूं कि अगर थोड़े से मुसलमान पागल बन जाते हैं तो भी हिंदू को पागल नहीं बनना चाहिए। आज तक अंग्रेजों ने तलवार के जोर से हमें शांत रखा तो क्या उनके जाने पर हम लड़ने लगेंगे? इसमें हमारी कोई शोभा नहीं है।"

भजन और धुन अच्छी तरह हो जाने के बाद गांधीजी ने लोगों को व पंडितजी को शांत रहने के लिए धन्यवाद दिया और कहा—"अगर लोग जरा-सी समझदारी से चलें तो स्वराज्य उनके हाथों में आ चुका है। क्योंकि हमारी सरकार के उप-प्रधान जवाहरलालजी हैं। वायसराय प्रधान हैं सही पर उन्हें अब शांति से बैठना है। आपके असली बादशाद जवाहरलाल हैं। वे ऐसे बादशाह हैं जो हिंदुस्तान को तो अपनी सेवा देना चाहते ही हैं, पर उसके मार्फत सारी दुनिया को अपनी सेवा देना चाहते हैं। उन्होंने सभी देशों के लोगों से परिचय किया है और उनके राजदूतों का सत्कार करने में वह बड़े कुशल हैं। लेकिन वह अकेले कहां तक कर सकते हैं?

"वह बेताज के बादशाह आप के खिदमतगार हैं। तो क्या वह बंदूक से आपकी बदअमनी को दबा देंगे? अगर आज एक को दबायेंगे तो कल दूसरे को इसी तरह दबाना पड़ेगा। फिर वह स्वराज्य तो नहीं हुआ। पंचायती राज भी नहीं हुआ। जब आप लोग अनुशासन से रहेंगे। तभी जवाहरलाल की बाद-

---

१. वीर बालक हुसैनमियां

शाहत चलेगी और हमारा स्वराज्य सुख रूप होगा।

खुद जवाहरलालजी भी किस तरह अनुशासन में रहते हैं इसका उदाहरण सुनाते हुए गांधीजी ने वह बात याद दिला दी जब कि पिछले वर्ष वह काश्मीर चले गये थे तब वेवल साहब को उनकी जरूरत पड़ गई, मौलाना साहब ने उन्हें बुलाना चाहा और मेरे समझाने पर वह कांग्रेस के प्रधान होते हुए भी किस तरह वहां का संघर्ष छोड़कर राष्ट्रपति का हुक्म मानकर यहां चले आये थे।

उसी सिलसिले में गांधीजी ने यह भी बताया कि "आज भी जवाहरलाल का चित्त काश्मीर में है जहां प्रजा के नेता शेख अब्दुल्ला सींखचों में बंद पड़े हैं। मैंने जवाहरलाल से कहा है कि 'तुम्हारी आवश्यकता यहां पर ज्यादा है। इसलिए जरूरत हुई तो मैं काश्मीर जाऊंगा और तुम्हारा काम करूंगा। तुम यहीं रहो। मैंने यह भी उनसे कहा कि यद्यपि मैं वचन से बिहार और नोआखाली में ही करने या मरने के लिए बंधा हूं, परंतु काश्मीर में भी मुसलमान भाइयों का ही सवाल है इसलिए वहां जा सकता हूं। वहां जाकर काश्मीर के राजा से मित्रता करूंगा और मुसलमानों की भलाई का काम करूंगा। लेकिन जवाहरलाल ने अभी इस बात की हां नहीं भरी है।

"सार यह कि अब जब हमारे हाथ में स्वराज्य आ गया है तब हममें से प्रत्येक को अनुशासन से, विनय से, और समझदारी से चलना चाहिए तभी हिंदुस्तान की आजादी शोभा देगी।"

इसके बाद फिर गांधीजी ने आज कल के सिलसिले को लेते हुए कहा कि "जैसे कल मैंने आप लोगों को राजाओं की बात कही थी। वैसे आज मैं व्यापारियों के बारे में कहना चाहता हूं। कल मैंने कहा था कि हिंदुस्तान में न बिरला का राज होगा न नवाब भोपाल का; न निजाम का राज होगा न काश्मीर के

महाराजा का; राजा लोग केवल हिंदुस्तान की रैयत के खिदमत-गार होंगे।

"ऐसा नहीं हो सकता कि हिंदुस्तान की रैयत एक जगह तो आजाद हो जाय और दूसरी जगह गुलाम बनी रहे। जब आजादी होगी तो वह सभी के लिए होगी।

"अब आजादी तो आ ही रही है, क्योंकि अगर अंग्रेज शरीफ हैं और मैं समझता हूं वे हैं, तो उन्हें चले जाना है। वाइ-सराय लार्ड माउण्टबेटन साहब तो यह कह रहे हैं कि हमें जल्दी-से-जल्दी यहां से चला जाना है। और वे अपना बचन पालेंगे ही।

"जब वे जा रहे हैं तब हिंदुस्तान में हमारा ही राज हो जाता है। फिर क्या जब अपना राज हो जायगा तो हम आपस में झगड़ा करेंगे? क्या राजा लोग हमको दबायेंगे? नहीं वे सभी जनता के ट्रस्टी बन जायेंगे। यानी वे सब चक्रैया जैसे जनता के सेवक बनेंगे तभी वे हमारे राजा रह सकेंगे।

"इसी तरह हमारे ऊपर व्यापारियों का राज भी नहीं होना चाहिए। हमें तो राज चाहिए भंगियों का। भंगी हमारे में सबसे ऊंचे हैं; क्योंकि उनकी सेवा सबसे बड़ी है। तभी तो मैं खुद भंगी बन गया हूं। भंगियों के राज से मेरा मतलब यह है कि एक मेहतर को आपने अपना अमात्य बना दिया तो फिर आप को उसकी बात उसी तरह माननी है जिस तरह अंग्रेजों ने अपनी सत्रह वर्ष की रानी विक्टोरिया का राज माना था और छोटे-बड़े सभी ने अपना-अपना कर्तव्य पाला था। अंग्रेज लोग कर्तव्य पालन किस तरह करते हैं, इसका मैं गवाह हूं।

पुलिस का आदर्श

"मैं कई बार लंदन गया हूं। एक बार तो वहां तीन बरस तक

रहा; पर तब मैं लड़का था। बाद में भी दो-तीन बार मैं लंदन हो आया हूँ। वहां पर लोग इतने समझदार हैं और कायदे के पाबन्द हैं कि पुलिस को हाथ में कभी बन्दूक नहीं लेनी पड़ती। केवल एक छोटा-सा डंडा वे अपने हाथ में रखते हैं। लोग जानते है कि वे हमारे खिदमतगार हैं इसलिए उनके कहने के मुताबिक चलते हैं। पुलिस भी लोगों का काम पूरी कोशिश से कर देती है। वहां पर रिश्वत नहीं चलती। कोई देने जाय तो भी पुलिस लेती नहीं।

"हमारे हिंदुस्तान की पुलिस को भी अब ऐसा ही बनना है। उन्हें चाहिए कि वे बिलकुल रिश्वत न लें। अगर उनका पेट नहीं भरता तो वे सरदार साहब से अपनी तनख्वाह बढाने के लिए कहें; बल्देवसिंह से कहें; नेहरूजी से कहें। जब बड़े-बड़े अफसर और प्रधान लोग हजारों पाते हैं तब सिपाही को क्यों पांच ही दस रुपये दिये जायं। वे लोग इंतजाम करेंगे पर रिश्वत लेनी छोड़नी चाहिए।

व्यापारियों को सलाह

"व्यापारियों के लिए भी मुझे यही कहना है। वे सब एक हो जायं और मिल कर कहदें कि हम सबको सच्चा बनिया और सच्चा मारवाड़ी बनना है। सच्चा बनिया वह है जो सच्चा तोल तौलता है। हमारे यहां जितने बनिये, जितने मारवाड़ी और जितने व्यापारी हैं उन सबको इकट्ठे होकर निश्चय करना है कि हम में से कोई चोर बाजार नहीं करेगा, कोई रिश्वत नहीं लेगा और न देगा।

"इतनी बात वे कर लेते हैं तो फिर राजेंद्रबाबू को जो मजबूरी महसूस होती है और सबको खाना खिलाने में उनके रास्ते में जो कठिनाइयां पैदा हो जाती हैं वे जाती रहेंगी। मेरे पास एक

खत आया है कि 'आपने नमक कर उठवा तो दिया पर नमक अब पहले से भी ज्यादा महंगा हो गया।' ऐसा क्यों होता है ? मैं कहूंगा कि नमक कर उठ जाने पर तो हमें नमक करीब-करीब मुफ्त में मिल जाना चाहिए। इसके लिए व्यापारियों को अपना व्यापार भूल कर हिंदुस्तान के लिए ही व्यापार करना होगा। उन्हें चाहिये कि वे चोर बाजार बिलकुल भुला दें। जब ऐसा होगा तभी अंतरिम सरकार के वजीर अपना-अपना काम कर सकेंगे। और राजाजी, राजेन्द्रबाबू, जवाहरलालजी, मथाई, भाभा और लीग के चारों वजीर तभी आपकी हर तरह की सेवा कर सकेंगे। अगर इसके बाद भी हिंदुस्तान को खाना-पीना नहीं मिलता, मुल्क की खुशहाली नहीं बढ़ती तो फिर आप लोग उन्हें निकाल बाहर कीजिये।

"लेकिन आप उन्हें कैसे निकालेंगे क्या आप वायसराय के हाथों उन्हें निकलवायेंगे ? नहीं, वायसराय से तो आप आराम से बैठने के लिए कहेंगे। आप खुद अपने वजीरों को कैद करेंगे। जैसा कि कल मैंने जिना साहब को कैद करने का तरीका बताया था। और तब आप उनसे अपने मन का काम करवा लेंगे।

"मैंने जवाहरलालजी से सुना है कि लंदन में लोग भूखों मर रहे हैं। यह सुन कर मुझे दुःख हुआ। चाहे अंग्रेजों ने हमारे साथ कितना ही गुनाह किया हो तो भी उन्हें खाना तो मिलना ही चाहिए।

"हमारा मुल्क बहुत बड़ा है। हमारे व्यापारी ठीक से चलें और उनमें अक्ल हो तो हम कहेंगे कि जब तक हिंदुस्तान जिंदा है तब तक दुनिया कैसे भूखों मरेगी; हम उसे खाना देंगे। मैं तो बनिया हूं तिजारत जानता हूँ, यदि सब बनिये और व्यापारी मुझे मदद दें, अंतरिम सरकार भी मदद दे और सब मुसलमान मदद दें तो मैं सबको खाना दे सकता हूं। मैं इस बात को मानने

के लिए कतई तैयार नहीं हूं कि हमारे मुल्क में अन्न की पैदावार कम है। अगर आप काफी मेहनत करें, अक्ल से काम लें और ईश्वर की कृपा से ठीक वर्षा हो जाय, तो यहां भरपूर खाना मिल सकता है। लेकिन अकेले हाथ से तो ताली नहीं बजती। मुझे सबकी मदद मिले तभी ताली बज सकती है। और इतनी जोर की बज सकती है कि आप सभी प्रसन्न होंगे और दुनिया भी प्रसन्न होगी।

"अगर आजाद हिंदुस्तान में सभी अपने धर्म का पालन करें तो सारा हिंदुस्तान खुश हो सकता है, यह मैं निश्चयपूर्वक आप से कहता हूं।"

: २७ :

डाक्टरों से और वैज्ञानिकों से

नई दिल्ली २ जून १९४७

गांधीजी का मौन होने से नीचे लिखा संदेश पढ़ा गया—

"राजनैतिक क्षेत्र में क्या हुआ या क्या हो रहा है यह मैं आपको बता नहीं सकता। लेकिन तीन-चार दिन से जो मैं कहता आया हूं; वही आज आपको याद दिलाना चाहता हूं। यानी आम जनता को फिक्र नहीं करनी चाहिए कि वायसराय विलायत से क्या लाये हैं। हमें तो इस बात पर ही सोच विचार करना है कि जैसा भी मौका सामने आवेगा, उस के बारे हमारा धर्म क्या होना चाहिए । यह बात तो देश को साफ कर देनी चाहिए कि वह जबर्दस्ती से कोई चीज कबूल नहीं करेगा।

"इन तीन-चार दिनों से जिस सोच विचार का सिलसिला हमने चलाया है। उसको लेते हुए अब हमारे सामने सवाल आता है कि हमारे डाक्टर और वैज्ञानिक देश के लिए क्या कर रहे हैं। वे लोग विदेशी मुल्कों में तो नई-नई बातें और इलाज के नये तरीके सीखने के शौक से जाते हैं। मैं तो उनसे कहूँगा कि उन्हें अपना ध्यान हमारे मुल्क की सात लाख देहात की ओर देना चाहिए। फिर तो उन्हें फौरन पता चलेगा कि हमारे सब डाक्टर और डाक्टरनियां वहीं काम पर जुट सकते हैं। लेकिन पश्चिम के तरीके से वे नहीं जुट सकेंगे, बल्कि हमारे अपने वे देहात में जुट सकेंगे । तब उन्हें बहुत से देसी इलाजों का भी पता चलेगा जिसे वे अच्छी तरह काम में ला सकेंगे। हमारे देश में इतनी जड़ी बूटियां हैं कि हिंदुस्तान को बाहर से दवाइयां मंगाने

की जरूरत है ही नहीं। लेकिन दवा से ज्यादा फायदेमन्द तो यह होगा कि वे हमारी जनता को सही जीवन जीने का ठीक तरीका बता दें। और वैज्ञानिकों से मैं क्या कहूं। क्या वे ज्यादा खुराक पैदा करने की ओर ध्यान दे रहे हैं? और वह भी नकली खाद के जरिये नहीं बल्कि जमीन को बाकायदा अच्छी तरह जोत-बो कर और कुदरती खाद दे कर। नोआखाली में मैंने देखा कि वहां के लोग एक जंगली फूल, कुंभी जो नदियों का पानी रोक देता है, उसका भी उपयोग कर लेते हैं। ऐसे काम हमारे डाक्टर तब करेंगे जबकि वे अपने लिए नहीं बल्कि देश के लिए जीना सीखेंगे।

"कल मैंने जवाहरलालजी के अमूल्य काम के बारे में जिक्र किया था। मैंने उन्हें हिंदुस्तान का बेताज का बादशाह कहा था। आज जब अंग्रेज अपनी ताकत यहां से उठा रहे हैं तब जवाहरलाल की जगह कोई दूसरा ले नहीं सकता। जिसने विलायत के मशहूर स्कूल हैरो और केम्ब्रिज के विद्यापीठ में तालीम पाई है और जो वहां बैरिस्टर भी बने हैं उनकी आज अंग्रेजों के साथ बातचीत करने के लिए बहुत जरूरत है। लेकिन अब वह समय जल्दी ही आरहा है कि जब हिंदुस्तान को अपनी रिपब्लिक का पहला प्रधान चुनना होगा। चक्रैया जिंदा होता तो मैं उसका नाम आप लोगों के सामने रखता। अगर कोई बहादुर मेहतर लड़की· हो बिना स्वार्थ की हो और शुद्ध हो तो मैं तहे दिल से चाहूंगा कि ऐसी कन्या हमारी पहली प्रेसीडेंट बने। यह कोई बेकार का ख्वाब नहीं है। ऐसी लड़कियां जरूर मिल सकेंगी अगर हम उन्हें ढूंढने की कोशिश करें। क्या मैंने गुलनार, मौलाना मोहम्मद अली साहब की लड़की को नहीं चुना था। लेकिन उस बेवकूफ लड़की ने तो श्वैब कुरैशी साहब से शादी करली। वह एक वक्त तो फकीर थी और जब अली भाई

जेल में थे तब मुझ से मिली थी। अब गुलनार तो कई होशियार बच्चों की मां है लेकिन वह मेरी वारिस अब नहीं बन सकती।

"हमारे भविष्य के प्रेसीडेंट को अंग्रेजी जानने की आवश्यकता नहीं होगी। उनकी मदद के लिए ऐसे लोग जरूर होंगे जो सियासत में होशियार होंगे और विदेशी भाषाएं भी जानते होंगे। लेकिन यह सब स्वप्न तो तभी पूरे हो सकते हैं जबकि हम एक दूसरे को मारने से बाज आयें और पूरा-पूरा ध्यान देहात की तरफ दें।"

: २८ :

पंचायती राज्य कैसे हो ?

नई दिल्ली ३ जून १९४७

आज सायंकाल प्रार्थना सभा में प्रवचन करते हुए गांधीजी ने कहा--"हमारी समझ से यदि लीग ने तारीफ के लायक काम नहीं किया है तो हम कहें कि उसने तारीफ के लायक काम नहीं किया। इसी तरह अगर कांग्रेस ने तारीफ के लायक काम नहीं किया है तो हम कांग्रेसवालों से भी कहें कि आपका काम तारीफ के लायक नहीं है। जब ऐसा होगा तभी वह पंचायती राज बनेगा। अगर एक गिरोह अपने मन से चलता रहे तो वह पंच का राज नहीं हुआ।

"जनतंत्र वह है जिसमें रास्ते चलने वाला जो बोले वह भी सुना जाय। जब हम जनतंत्र कायम कर रहे हैं तब हमारा राज्य वाइसराय के घर में नहीं है और वह जवाहरलाल के घर में भी नहीं है। मैंने तो जवाहरलाल को बेताज का बादशाह कहा है। और हम तो गरीब है। ऐसे गरीब कि हम पैदल चलेंगे, मोटर में नहीं बैठेंगे। अगर कोई मोटर में बिठाने आवे तोभी हम कहेंगे 'आपकी मोटर आपको मुबारिक हो हम तो पैदल ही जाने वाले हैं। भूख ज्यादा लगेगी तो एक रोटी ज्यादा खा लेंगे'। पंचाजती राज में इस तरह रास्ते चलने वालों का ही राज होता

है। हरदम जो मोटर पर ही चलता रहता है वह तो बिगड़ जाता है। महलों में रहने वाला आदमी राज्य नहीं चला सकता। इसी लिए मैंने कहा कि अंग्रेज जो दुनिया के बादशाह बने हुए हैं वे हमारे लिए कुछ भी सोचें तो उनसे हमारा काम नहीं बनता। अगर हिंदुस्तान का बादशाह भी कुछ सोचे और हमारी समझ में वह ठीक नहीं है तो हम कहें कि वह ठीक नहीं है।

"कल मैंने कहा था कि चोर बाजार के लिए बनिये गुनहगार हैं। सामान्य ताजीर और मुझ में फर्क इतना ही है कि मैं सारे हिन्दुस्तान की भलाई करता हूं और दूसरे ताजीर अपना घर भरते हैं। जैसे राजेन्द्रबाबू सारे हिंदुस्तान को खाना खिलाने की फिकर करते हैं उसी तरह मैं भी करता हूं।

चोर बाजार का केन्द्र सेक्रेटेरियट है

"मुझसे कहा गया है कि आजकल का व्यापार बनियों के हाथ में तो बहुत कम रह गया है। बहुत थोड़े ही बनिये चोर बाजार कर सकते हैं। यह सारी अंधाधुन्दी सरकारी सेक्रेटेरियट की वजह से है क्योंकि सारा काम सरकार करती है। खाना देना राजेन्द्रबाबू के हाथ में है जो बिहार के बादशाह हैं और कपड़ा देना राजाजी के हाथ में जो मद्रास के लोकप्रिय मंत्री रह चुके हैं। फिर भी लोगों को चीजें नहीं पहुंचतीं क्योंकि सिविल सर्विस में बड़ा भ्रष्टाचार चल रहा है। अगर राजेन्द्र बाबू और राजाजी के अगल-बगल में बदमाश सेवक हैं और उन लोगों की देखभाल नहीं कर पाते तो उस बुराई में राजाजी और राजेन्द्र बाबू का भी ऐब माना जायगा। मैं नहीं जानता कि सरकारी नौकरों को ऐसा बताना कहां तक गलत है। लेकिन इतना जरूर कहूंगा कि हम में से कोई चोर बाजार का काम न

करे। सरकारी अफसर अगर ऐसा करते हैं कि जिन पर उनकी मेहरबानी होती है उन्हें उनके घर के आदमियों की संख्या से दुगना-तिगने राशन टिकट दे देते हैं तो वह कार्ड लेने वाला और देने वाला दोनों ही बदमाश हैं। हो सकता है कि आज तक ऐसा जो चला है वह बहुत कुछ अंग्रेजों के रौब और डर के मारे चला है लेकिन अब भी यह सिलसिला जारी रहता है तो फिर भगवान ही हिंदुस्तान का भला कर सकता है। पर अब वह नहीं होना चाहिए। आज ऐसी बात नहीं रही कि साहब बहादुर ने जो हुक्म दिया, वह जैसा भी हो हमें पालना ही है। अब हम पर विदेशी मालिक नहीं है। राजेन्द्र बाबू ऐसा हुक्म नहीं दे सकते। उनके पास पुलिस है ही नहीं जो जबरदस्ती हुक्म मनवा सके। राजाजी या नेहरूजी या सरदार भी अपना हुक्म इस तरह नहीं मनवा सकते। सरदार बल्देवसिंह के पास फौज है सही। पर वे भी यह नहीं कह सकते कि मैं सारी फौज तुम लोगों पर छोड़ दूंगा और तुम्हें दबा दूंगा। अंग्रेज अफसर को आप निकाल नहीं सकते थे, आप इन्हें निकाल सकते हैं। वे आपको खुश करके ही आप पर राज कर सकते हैं।

आज से पंचायती राज प्रारम्भ

"मैं आप लोगों को यह बताना चाहता हूं कि आज से आप का पंचायती राज शुरू हो गया है। पूरा राज हाथ आने में अब बारह महीने हैं तब तक भगवान ही जाने क्या होता है क्या नहीं। पर आपको पंचायती ढंग से आज से ही अपनाना है। हममें कोई देश का नुकसान करके अपना पेट न पाले।

"जो सिविल सर्विस वाले हैं—चाहे वे गोरे हों या काले, हिंदू हों या मुसलमान, सेक्रेटेरियट में काम करने वाले हों या पुलिस में बड़े अफसर हों, जिस-जिसको मेरी आवाज पहुँचती

है उनसे मैं कहूंगा कि अब आपका फर्ज दस गुना बढ़ गया है। आप लोग सब अब साफ़ और सुथरे बन जायं। तभी स्वराज्य का यह सारा काम आसान हो जायगा और आजादी का सब को अनुभव मिलेगा।"

: २६ :

वह अब भी बदला जा सकता है

नई दिल्ली ४ जून १९४७

प्रार्थना के बाद गांधीजी ने कहा—

"आप लोग जानते ही हैं कि मैं इस समय सीधा वाइसराय से मिलकर आरहा हूं। इसका मतलब यह नहीं कि मैं उनसे कोई चीज लेने के लिए गया था। न उन्होंने ही मुझे कुछ देने के लिए बुलाया था। बल्कि हमारी जो बात चल रही थी वह पूरी भी नहीं हो पाई थी। फिर भी मैंने माउण्टबेटन साहब से इजाजत लेली और कहा, 'जहां तक बन पड़े और जहां तक इन्सान के काबू की बात है, मैं प्रार्थना का समय चूकना नहीं चाहता।' उन्होंने मेरी इस बात की कद्र की और कहा हमारी बातें बाद में हो जायंगी।

"मैंने आपसे कहा था कि हम मजबूर होकर पाकिस्तान के लिए एक इंच भी जगह देने वाले नहीं हैं। यानी हिंसा से खौफ खाकर नहीं देंगे। बुद्धि से यानी शांति से वे अपनी बात हमें समझा दें और वह हमारी बुद्धि को जंचेगी तभी हमें पाकिस्तान देना है।

"मैं यह नहीं कह मकता कि यह सारा बुद्धि का ही प्रयोग हुआ है। कांग्रेस वर्किंग कमेटी कहती है कि 'हमने डर के मारे कुछ नहीं दिया है। इतने सारे लोग मर रहे हैं या मकान, जायदाद जल रही है, यह देख कर हम डरे नहीं हैं। हिंसा के सामने हम लाचार हो गए, ऐसी बात हरगिज

नहीं है। हमें आप डरपोक न समझें। लेकिन जब हमने देखा कि मुस्लिम लीग को हम और किसी भी तरीके से मना ही नहीं सकते, तब हमने यह रास्ता पसन्द किया है, क्योंकि एक बार मुस्लिम लीग कुछ भी बात मान लेती है तो हमारा काम सरल हो जाता है। सार यह कि हमने डरकर नहीं परिस्थिति को देखकर पाकिस्तान व हिंदुस्तान का बटवारा मान लिया हैं।

"हम किसी को मजबूर नहीं करना चाहते। बहुत-बहुत कोशिशें कीं। बहुत समझाया पर वे लोग विधान-परिषद् में आए ही नहीं और लीग वाले यही कहते रहे कि वहां आने में हमें हिंदू बहुमत का डर लगता है।'

अंग्रेजों को तो यहां से जाना ही है

"ऐसी हालत में वाइसराय क्या करें। वे कहते हैं कि हमें हर हालत में १९४८ की जून में हिंदुस्तान छोड़ जाना है। आप उन्हें रोकें तो भी वे उससे ज्यादा रुकना नहीं चाहते। वे कहते हैं कि हमें हिंदुस्तान को पूरी आजादी देनी ही चाहिए। ऐसा वे क्यों कह रहे हैं, यह अलग बात है। आप कहेंगे कि अब वे दुनिया में नहीं रहे हैं इसलिए वे मजबूर हो गए हैं। हम तो चाहेंगे कि वे आज भी फर्स्ट क्लास पावर बने रहें। ठीक है कि उन्होंने डेढ़ सौ बरस तक हमको सताया है और यह भी मुझे याद है कि आज ३२ बरस से हम उनके साथ लड़ रहे हैं। पर यह सब जानते हुए भी मैं कभी अपने दुश्मन को दुश्मन नहीं बनाता। मैं तो तब भी ईश्वर से कहूंगा कि 'हे ईश्वर तू उनका भला कर, और ईश्वर, जो न्याय होगा सो करेगा।'

"उसकी अमोध शक्ति के बारे में इस समय अधिक नहीं कहूँगा। इतना हम समझ लें कि हरेक इंसान भूलों से भरा पड़ा है। हिंदू, सिख, मुसलमान सभी। ऐसा कह सकते हैं कि

मुसलमानों ने बड़ी गलती की है, पर हम अपने को अच्छे किस आधार पर कहें। न्याय करना ईश्वर पर ही छोड़ें।

पाकिस्तान मांगना गलत चीज थी

"इतना मैं कहूंगा कि उनका पाकिस्तान मांगना गलत चीज थी। पर वे दूसरा कुछ सोच ही नहीं पाते। वे कहते हैं कि हम वहां रह ही नहीं सकते जहां ज्यादा हिंदू हों। इसमें उनका नुकसान है और मैं ईश्वर से मांगता हूं कि जल्द-से-जल्द वह उन्हें इस नुकसान से बचा लें। जब मेरा भाई, मेरा सहधर्मी या विधर्मी भी मेरा नुकसान करना चाहे तो मैं खुद उसमें सहयोग नहीं दे सकता। वह भले ही उसे नुकसान न माने पर जब मैं उसे नुकसान समझता हूँ तो उसमें मैं उसका साथ कैसे दूंगा? ऐसा करूंगा तो मैं चक्की के दोनों पाटों के बीच पिस जाने वाला हूं। मैं अपना पाट अलग ही क्यों न रखूं?

वायसराय का कोई हाथ नहीं

"रही अंग्रेजों की बात। इसका मैं आपको इतमीनान दिलाता हूँ। वायसराय के भाषण को देखते हुए नहीं पर अपनी निजी बातचीत के आधार पर कहना चाहता हूं कि इस निर्णय के पीछे वायसराय का कोई हाथ नहीं है। सब नेताओं ने मिल कर इस निश्चय को किया है। नेता लोग कहते हैं कि हम लोगों ने सात-सात बरस तक कहा, हिंदुस्तान एक है। केबिनेट मिशन ने भी अच्छा निर्णय दिया लेकिन लीग मुकर गई और यह रास्ता लेना पड़ा। उन्हें फिर हिंदुस्तान में वापिस आना ही है। पाकिस्तान बन गया तो भी आपस में लेन-देन चलेगी ही, आना-जाना भी रहेगा। हम उम्मीद रखें कि हमारा सहयोग बना रहेगा।

कांग्रेस के विरुद्ध बगावत न हो

"लेकिन अब यह फैसला हो गया, तो क्या मैं यह कहूँ कि

हम सब कांग्रेस से बागी बन जायं। या वायसराय से कहूँ कि आप बीच में पड़ो। वायसराय तो कहते हैं कि मैं यह चाहता नहीं था। जवाहरलाल कांग्रेस की ओर से कहते हैं कि उन्हें भी यह बात पसन्द नहीं है; पर वे सब परिस्थिति के कारण लाचार बन गये हैं तलवार के कारण नहीं क्योंकि हिंदू, सिख सभी कह रहे हैं कि हम अपने घर में रहेंगे उनके यहां नहीं। हिंदू, सिक्खों के अमल में रहने को तैयार हैं क्योंकि सिक्ख कभी तलवार के जोर से नहीं कहते कि तुम्हें गुरु ग्रंथ के सामने सिर झुकाना ही पड़ेगा।

"मैंने मास्टर तारासिंह से भी, जो आज मिलने आये थे, कहा कि आप एक नहीं सवा लाख बन जायं; बिना मारे मरना सीख लें तो पंजाब का सारा इतिहास बदल जायेगा और हिंदुस्तान का भी इतिहास बदलेगा। सिक्ख तादाद में जरा से हैं पर बहादुर हैं। इस लिए अंग्रेज उनसे डरते हैं। अगर सिक्ख सच्चे बहादुर बनें तो फिर खालसा का राज दुनिया भर में हो जाय।

"आपका दर्द भुलाने के लिए मैंने यह सब बताया। आप दिल में दर्द न माने कि हिंदुस्तान के दो हिस्से हो गये। आपने जब मांगा है तब वह दिया गया है। कांग्रेस ने नहीं मांगा था। मैं तो यहां था ही नहीं। पर कांग्रेस लोगों के मन की बात जान लेती है। उसने जान लिया कि खालसा भी यही चाहते हैं और हिंदू भी। आपके हाथ से कुछ गया नहीं है। न सिक्ख के हाथ से न मुसलमानों के हाथ से ही कुछ गया है। वायसराय ने व्याख्यान में तो कहा ही है और मुझे भी विश्वास दिलाया है कि आप सब मिलकर जब आवेंगे तब हमारा यह फैसला खत्म हो जायगा। आप मिलकर जो कहेंगे वही होगा। मेरा (वायसराय का) काम इतना ही है कि जब तक सत्ता हस्तांतरित होती है तब तक यहां के अंग्रेज लोग ईमानदारी से काम करें और शांति से चले जायं

यह देखूं। इंग्लैंड के लोग यह नहीं चाहते कि उनके जाने पर यहां अंधाधुंधी फैल जाय।'

हम जब चाहें उसे बदल सकते है

"मैंने तो कह दिया था कि आप अराजकता की फिक्र न करें। मैं तो जुआ खेलने वाला ठहरा। पर मेरी कौन सुने ? आप मेरी नहीं सुनते; मुसलमानों ने मुझे छोड़ दिया; और कांग्रेस को भी मैं अपनी बात पूरी-पूरी मनवा नहीं सकता। वैसे कांग्रेस का गुलाम हूं क्योंकि हिंदुस्तान का हूं। मैंने १६ मई की बात मनवाने का पूरा प्रयत्न किया। पर अब जो हो गया है वही हम स्वीकार कर लें। इसमें यह खूबी भी है कि हम जब चाहे उसे मिटा सकते हैं।

"अन्त में मैं इतना कहूंगा कि आप वायसराय को भूल जायं तो अच्छा है। मुझे यह बुरा लगता है कि हम आपस में सीधी बात न करें और सारी बात वायसराय की मध्यस्थी से चलें। लीग वाले वायसराय से कहें वायसराय कांग्रेस से कहें और कांग्रेस फिर वायसराय से कहे, यह हमें शोभा नहीं देता। पर मुस्लिम लीग मानती ही नहीं तब क्या हो। कांग्रेस मान जाती है और सिक्ख कांग्रेस में शामिल हो गये हैं। तब वायसराय को दिन-रात जिना साहब की मिन्नत करनी पड़ी कि 'साहब, थोड़ा तो नीचे उतरिये।' और ऐसा करके उन्होंने यह रास्ता निकाला। इतना करते हुए भी वायसराय कहते हैं कि मेरे दिल में डर बना रहता है कि लीग क्या कहेगी, कांग्रेस क्या कहेगी। लेकिन ईश्वर का नाम लेकर मैं करता हूँ। तो हम उनकी ईमानदारी में विश्वास रखें, जब तक कोई बुरा अनुभव नहीं हो।

"लेकिन जिना साहब से मैं कहता हूँ, मिन्नत करता हूँ कि

अब तो आप हम सब से सीधी बात करें। जो हुआ ठीक है पर आगे की सब कार्रवाई हम मिल कर करें। वायसराय को अब आप भूल जायं और अब जो समझौते करने है उसे करने के लिए आप हम लोगों को अपने पास बुला लें, ताकि हमारा सबका भला हो।"

: ३० :

मैं सात्विक अनशन ही करूंगा

नई दिल्ली ५ जून १९४७

प्रार्थना के बाद आज सबसे पहले गांधीजी ने बौद्ध-विद्वान श्री कौसंबी की मृत्यु का दुःखद समाचार सुनाते हुए कहा–"शायद आपने उनका नाम नहीं सुना होगा। इसलिए शायद आप वह दुःख मानना नहीं चाहेंगे; वैसे किसी मृत्यु पर हमें दुःख मानना चाहिए भी नहीं। लेकिन इन्सान का स्वभाव है कि वह अपने स्नेही या पूज्य के मरने पर दुःख मनाता ही है। हम लोग ऐसे बने हैं कि जो अपने काम की डुग्गी पिटवाता फिरता है और राज्य-कारण में उछालें भरता है, उसको तो हम आसमान पर चढ़ा देते हैं लेकिन मूक काम करने वालों को नहीं पूछते।

"कौसंबीजी ऐसे एक ही मूक कार्य-कर्ता थे। उनका जन्म गांव में हुआ था। जन्म से वह हिंदू थे, पर उनको ऐसा विश्वास बैठ गया था कि बौद्ध धर्म में अहिंसा, शील आदि जितने बढ़े चढ़े हुए हैं, उतने दूसरे धर्म में, वेद-धर्म में भी नहीं है। इस लिए उन्होंने बौद्ध-धर्म स्वीकार किया और बौद्ध शास्त्रों के अध्ययन में लग गये और उसमें इतने बड़े विद्वान् हो गये कि शायद ही हिंदुस्तान में उनकी बराबरी का और कोई हो। उन्होंने गुजरात विद्यापीठ व काशी विद्यापीठ में पाली भाषा पढ़ाई थी और अपनी अगाध विद्वता का उन्होंने ज्ञान-दान किया।

"उन्होंने मेरे पास १०००) भेज दिये, जो किसी ने उनको दिये थे। उन्होंने मुझको लिखा था कि किसी को पाली

पढ़ने के लिए लंका भेज देना।

"लेकिन मैंने उनसे पूछा कि क्या लंका जाकर पढ़ने से किसी को बौद्ध-धर्म प्राप्त हो जायगा? मैंने तो दुनिया में बौद्धों से कहा है कि आप को अगर बौद्ध-धर्म जानना है तो आप उसके जन्म स्थान भारत में ही उसे पायंगे। जहां पर वेद-धर्म से वह निकला है, वहीं आपको उसे खोजना है। और शंकराचार्य जैसे अद्वितीय विद्वान् जो प्रच्छन्न बुद्ध कहलाये उनके ग्रंथों को भी आप समझेंगे तब बौद्ध धर्म का गूढ़ रहस्य आप जान पायंगे।

"लेकिन कौसंबी जी की विद्वत्ता से मैं अपनी तुलना नहीं कर सकता। मैं तो इंग्लैड में भोज खाकर बना हुआ बैरिस्टर हूं। मेरे पास संस्कृत का ज्ञान जरा-सा है। अगर आज मैं महात्मा महात्मा बना हूँ तो इसलिए नहीं कि अंग्रेजी का बैरिस्टर हूं, पर इसलिए कि मैंने सेवा की है। और वह सेवा सत्य और अहिंसा के द्वारा की है। और इस सत्य और अहिंसा की पूजा में जो थोड़ी-सी सफलता मुझे मिलती चली गई उसी के कारण आज मेरी थोड़ी-बहुत पूछ है।

इसके बाद गांधीजी ने विस्तार से कौसंबीज़ी के लम्बे अनशन की कथा सुनाई। उनकी समझ में यह समा गया कि अब यह शरीर अधिक काम करने के योग्य नहीं रहा है। तो उन्होंने अनशन करके प्राण-त्याग करने की ठानी। टंडनजी के कहने पर गांधीजी ने उनका अनशन उनकी (कौसंबीजी की) अनिच्छा से तुडवाया। पर उनका हाज़मा बहुत खराब हो चुका था और कुछ भी खुराक ले ही नहीं सकते थे तब दुबारा सेवाग्राम में चालीस दिन तक केवल जल पर ही रह कर उन्होंने शरीरांत किया। बीमारी में नाम-मात्र की सेवा और औषधि भी नहीं ली। उनके जन्म-स्थान गोवा में जाने का मोह भी तजा और अपने पुत्र आदि को अपने पास न आने की आज्ञा दी। मृत्यु के

बाद के लिए कह गए कि 'मेरा कोई स्मारक न बनाया जाय।' शरीर को जलाने या दफनाने में जो सस्ता पड़े वह किया जाय और इस तरह उन्होंने बुद्ध का नाम रटते-रटते अंतिम गहरी निद्रा ली, जो हरेक जन्मने वाले को कभी न कभी लेनी ही है। मृत्यु हरेक का परम मित्र है, वह अपने कर्म के मुताबिक आवेगा ही। भले ही कोई यह बतादे कि अमुक का जन्म अमुक समय होगा पर मौत कब आवेगी यह कोई भी आज तक नहीं बता पाया है। चक्रैया के किस्से में हमने यही देखा।

"आपका मैंने इसमें इतना समय लिया इसलिए मैं क्षमा चाहता हूं।"

मैं अनशन करके क्यों मरूं

इसके बाद गांधीजी ने आगे कहा:—

"कल रात मेरे पास तार आया कि 'आपने चार-पांच दिन इतनी लंबी-लंबी बातें बनाई कि हम एक इंच भी पाकिस्तान मजबूरी से देना नहीं चाहते—बुद्धि से हृदय को जागृत करके भले ही जो चाहें सो लें। लेकिन वह तो बन गया। अब आप इसके खिलाफ अनशन क्यों नहीं करते?"

"और वे पूछते हैं कि तब आपने ऐसी बातें क्यों कही थीं और अब आप ठंडे क्यों बने हैं? आप कांग्रेस के बागी क्यों नहीं बनते और उसके गुलाम बनते हैं? आप उसके खादिम कैसे रह सकते हैं? अब आप अनशन करके मर क्यों नहीं जाते?"

"ऐसा कहने का उनका हक है। पर मुझको उस भाई पर गुस्सा करने का हक नहीं है। गुस्सा करने का मतलब है थोड़ा पागल होना। अंग्रेजी में कहा है 'एंगर इज शार्ट मेडनेस' और गीता में भी कहा है 'क्रोधात्भवति संमोहः संमोहात्स्मति विभ्रमः'

तो मैं गीता सीखा हुआ आदमी गुस्सा कैसे करूं ?

"किसी के कहने पर अनशन कैसे करूं ? मैं मानता हूं कि मेरे जीवन में एक और उपवास लिखा है। आगाखान महल के उपवास के बाद से ही मेरे दिल में यह बात जमी हुई है कि वह आखिरी उपवास नहीं था एक और उपवास मुझे करना होगा। लेकिन वह किसी के कहने पर मैं नहीं करूंगा। खुदा जब कहेगा, करूंगा।

दंगे चलते रहने पर अनशन

"मैंने कह दिया है कि मैं जिना साहब का साक्षी बन गया हू। वे चाहते हैं देश में शांति हो और मैं भी यह चाहता हूं। फिर भी अगर जगह-जगह दंगा चलता ही रहता है और सारा हिन्दुस्तान डांवाडोल हो जाता है, तथा ईश्वर मुझसे कहता है—यानी मेरा दिल मुझसे कहता है कि अब संसार से तुझे उठ जाना है तो मैं वैसा करूंगा ही। श्री जिना ने मुझसे दस्तखत लिये कि सियासी मामलों में हिंसा नहीं करनी है। और माउंटबेटन ने भी मुझ पर अपना जादू चलाया तथा कृपलानी या नेहरू के दस्तखत न लेकर मेरे ही दस्तखत लिये; और मैंने जवाहरलाल की राय से उन्हें दस्तखत दे दिये। तब हम इस बातके तीन हिस्सेदार बन गये हैं। हमारे दोनों के दस्तखत हैं, इसलिए और माउंटबेटन–वायसराय के नाते नहीं, पर माउंटबेटन के नाते, क्योंकि वह गवाह से भी ज्यादा बन गये हैं।

देश को शांत रहना है

"मतलब यह है कि सारे हिन्दुस्तान को शांत रहना है। अगर वह नहीं रहता तो क्या करना है यह जिना साहब को उनका खुदा बतायेगा। माउंटबेटन साहब को उनका गॉड बतायेगा और मुझे अपना परमात्मा बतायेगा।

"लेकिन आपके द्वारा मैं उन दोनों से कहना चाहता हूं कि वे जब कहेंगे तब मैं उनके साथ पैदल या सवारी में जैसे भी वे ले जाना चाहें मैं जाऊंगा। हवाई जहाज से मैं नहीं जा सकता। उसमें उसमें चलकर नीचे क्या दीखेगा? मैं कभी हवाई जहाज में चला नहीं हूं। हां, उसे नीचे से देखता हूं और एक मछली-सा वह दीखता है।

गुड़गांव अभी जल रहा है

"गुड़गांव अभी तक जल रहा है। आज की खबर नहीं मिली है, पर वहां जाट और मेवों ने आमने-सामने मोर्चा लगा रखा है। इतना अच्छा है कि वे ऐसा पागलपन नहीं चाहते कि बच्चों औरतों और बुड्ढों को मारने लगे। वे सिपाही की तरह आपस में टक्कर लेते हैं। पर वे लड़ें ही क्यों? यह चलता है, इसमें मेरी भी शरम है जिना की भी है और माउंटबेटन के लिए भी शरम की बात है। इसी तरह सरदार बल्देवसिंह और जवाहर लाल के लिए भी यह शरम की बात है। यह अच्छा हुआ कि दो जून को कोई खास बात न हुई और न चार को भी हुई।

"पर एक काम बन गया है सही। पाकिस्तान और हिन्दुस्तान बन गये और उनको विधान-परिषद् बनादी गई है। क्या अब उन्हें मिटाने के लिए मैं मरने बैठूं? इस तरह मैं मरने वाला नहीं हूं।

औद्योगीकरण गांवों में होगा

"मेरे लिए ध्यान देने को एक बहुत बड़ा काम पड़ा है। कहते हैं कि अब हिन्दुस्तान का औद्योगीकरण होनेवाला है! मेरा औद्योगीकरण तो देहातों में होगा। यानी घर-घर में चरखा चले-गा और गांव-गांव में कपड़ा तैयार होगा।

"अगर वे कहते हैं कि एक बिरला मिल है उसकी हम

हज़ार मिल बनायेंगे—बिरला का नाम मैं इसलिए लेता हूं कि वे मेरे दोस्त है बाकी मेरा मतलब हरेक मिलवाले से है—तो मैं वह पसंद नहीं करूंगा। अगर भूकंप हो जाय या अपने आप बिरला मिल जल जाय तो मुझे हरज नहीं है। न मैं उस नुकसानी के लिए बिरल-बन्धु के पास एक आंसू गिराऊंगा। हां, यदि कोई जान बूझकर उनकी मिलें नष्ट करने जाता है तो मैं उसे डांट लगा दूंगा।

"ऐसा मालूम होता है कि आज कांग्रेस ने यह तय कर लिया है कि वह हिन्दुस्तान-भर में बहुतसी मिलें बना दें और कलपुर्जे बिछा दें। और वह चाहती है कि सारे हिंदुस्तान में बहुत बड़ी फौज बन जाय। तो उसमें मेरा हाथ नहीं है। बिहार में जो मार-काट हुई उसमें मेरा हाथ कहां था ? और आज हिन्दुस्तान में कौन-सी ऐसी चीज हो रही है जिससे मुझे खुशी हो सके। तो भी मैं पड़ा हूं। क्योंकि कांग्रेस बहुत बड़ी संस्था हो गई है। उसके सामने मैं उपवास नहीं कर सकता। लेकिन आज मैं भट्टी में पड़ा हूं और मेरे दिल में अंगार जल रहा है। फिर भी मैं जिन्दा क्यों हूं यह मेरा ईश्वर ही जानता है। जैसा भी हूं, आखिर कांग्रेस का खादिम ही हूं। अगर कांग्रेस पागलपन पर उतर आवे तो क्या मैं भी पागलपन करूं ? क्या मैं मरकर यह सिद्ध करने बैठूं कि मेरी ही बात सच्ची है ! मैं तो कांग्रेस की, आपकी, मुसलमानों की, और अपने साझी जिना साहब की बुद्धि पर चोट करना चाहता हूं और उनके हृदय पर कब्जा करना चाहता हूं।

"जिना साहब से कहूंगा कि अब तो आपका 'पाकिस्तान जिन्दाबाद' होगया न ! अब आप माउन्टबेटन साहब के पास क्यों जाते हैं ? कांग्रेस के पास क्यों नहीं जाते ? आप बादशाह खान को और डा० खान साहब को क्यों नहीं बुलाते ? उन्हें

क्यों नहीं समझाते कि 'देखिए तो सही, यह पाकिस्तान कैसा अच्छा गुलाब का फूल है ?

"लेकिन पाकिस्तान के बारे में मेरे पास शिकायतें आ रहीं हैं। आज ही एक खत मिला है जिसमें लिखा है कि एक अंग्रेज कम्पनी हथियार बनाने के लिए लाहौर जायेगी। यह भी कहा जाता है कि मुस्लिम लीग ने कामनवेल्थ में रहना तय कर लिया है। वह औपनिवेशिक स्वराज्य ही कायम रखेगी।

कांग्रेस ने कोई गुनाह नहीं किया

"कांग्रेस ने औपनिवेशिक स्वराज्य स्वीकार कर कोई गुनाह नहीं किया है। उसने तो वह आरजी तौर पर तत्काल अंग्रेजों को हटाने के लिए स्वीकार किया। पर विधान बनते ही वह मुकम्मिल आजादी ले लेगी। फिर मुस्लिम लीग क्या औपनिवेशिक पद पर ही बनी रहेगी ? हमारे दोनों विधान एक से होने चाहिए। दोनों ने कहा है कि हमें मुकम्मिल आजादी चाहिए। तब मुकम्मिल आजादी को ही लेने का जिना का भी धर्म हो जाता है। आपस में लड़कर इस धर्म का पालन नहीं किया जा सकता।

"जबकि सारे हिंदू मनाते-मनाते थक गये तब भी आपने न माना तो आपको पाकिस्तान दे दिया कि बाद में तो शांति मिलेगी।

"कोई कहे कि मैंने ऐसा क्यों होने दिया। तो क्या मैं ऐसा करूं कि कांग्रेस मुझ से पूछ कर ही सब काम करे। मैं ऐसा दीवाना नहीं बना हूं। और मैं कांग्रेस का बागी बनूंगा इसका मतलब सारे हिन्दुस्तान का बागी बनूंगा क्योंकि कांग्रेस सारे देश की है। ऐसा मैं तभी करूंगा जब मैं देखूंगा कि कांग्रेस तो पूंजीपतियों की हो गई है।

"लेकिन अभी तो मेरी समझ से कांग्रेस गरीबों का ही काम करती है। भले ही उसका रास्ता मुझ से अलग हो, भले उसका दिमाग हथियार, फौज, कारखानों में लगा हो। मुझे तो उनकी बुद्धि से समझाना है, अनशन से नहीं।

राक्षसी अनशन नहीं करूंगा

"अनशन भी राक्षसी हो सकता है। ईश्वर भी मुझे ऐसे राक्षसी अनशन से बचाये, वह मुझ से राक्षसी कार्य, राक्षसी उच्चार, राक्षसी विचार सभी से बचाये रखे। अच्छा हो कि ऐसा मैं करूं उससे पहले वह मुझे उठा ले। मैं जब करूंगा सात्विक और दैवी अनशन ही करूंगा।"

: ३१ :

'अब भी सुधार की बहुत गुंजाइश है'

नई दिल्ली, ७ जून १९४७

आज प्रार्थना के समय गांधीजी अत्यन्त दुःखी हो गये और बड़ी मुश्किल से अपने अश्रुओं को छिपा पाये जब कि उन्होंने कहा कि "मैं विनय से कहता हूं कि प्रार्थना में दखल देना बेहूदापन है। मैं प्रार्थना तो रोक नहीं सकता, वह चलेगी ही। पर देखता हूं कि रोज कोई न कोई शिकायत रहती ही है। इससे मेरा दिल बहुत दुखता है।" इतना कहते-कहते उनका दिल भर आया और आधी क्षण मौन साध कर उन्होंने अपने को कुछ संम्हाल लिया।

बिना किसी पूर्व सूचना के आज भी प्रार्थना में दखल दिया गया। जब कुरान की आयत का पाठ शुरू हुआ, तब तेरह-चौदह वर्ष के एक बालक ने सीटी बजानी शुरू की और कहने लगा 'प्रार्थना यहां नहीं होने दी जायेगी'। उसके हाथ से किसी ने सीटी छीन ली तो उसने बांसुरी निकाली। वह भी ले ली गई। फिर भी वह शोर मचाने लगा तब उसे डांट-डपट कर बैठाने के लिए एक-दो युवक आगे बढ़े तो दूसरे सज्जन ने यह मुठभेड़ तुरन्त शांत कर दी। गांधीजी इस सारे समय में आंख बन्द करके प्रार्थना करते रहे। पर प्रार्थना समाप्त होने पर उन्होंने अपने हृदय का दुःख प्रगट करते हुए ऊपर के वचन कहे।

विभाजन का निर्णय अच्छा नहीं लगा

आज के सारे प्रवचन में गांधीजी के गहरे दुःख की और

व्यथित हृदय की छाप बनी रही। उन्होंने कहा—"आज मुझे वही सिलसिला कायम रखना है, यानी वायुमण्डल में मंडराती बात पर ही मैं कहना चाहता हूं, क्योंकि मुझ पर बहुत काफी दबाव पड़ रहा है कि जब तक वाइसराय का ऐलान नहीं हुआ तब तक तो मैं मुखालफत करता रहा और बार-बार मैंने कहा कि हम जबरदस्ती कुछ भी मंजूर करने वाले नहीं हैं और अब मैं चुप हो गया हूं। मुझसे यह जो कहा जाता है, ठीक कहा जाता है। मैं कबूल करता हूं कि मुझे भी यह निर्णय अच्छा नहीं लगा है, लेकिन दुनिया में कई चीजें ऐसी होती रहती हैं जो अपने मन की नहीं होतीं, फिर भी हम उसे सहन करते हैं। इसी तरह इसको भी हमें सहन करना है।

"एक अखबार में निकला है कि 'अब भी अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी को हक है कि वह इसे नामंजूर कर दे।' मैं भी मानता हूं कि अ० भा० कां० समिति को ऐसा करने का पूरा हक है कि वे इस बात को स्वीकार न करें। लेकिन जिसके प्रति आज तक हम वफादार रहे, जिस कांग्रेस ने दुनिया में नाम कमाया और जिसने काफी काम भी किया उसकी मुखालफत एकदम से नहीं करनी चाहिए।

"बहुत से सनातनी छुआछूत के भूत को मानते हैं और उस के पालन में धर्म समझते हैं। लेकिन हम में कौन सच्चा सनातनी है इसका न्याय तो ईश्वर ही चुकायेगा। इसी तरह अगर कांग्रेस भी अधर्म को धर्म का लिबास पहनाती है तो हमें कांग्रेस बन्द कर देनी पड़ेगी। कांग्रेस को तो कौन मार सकता है? पर हम उसके सामने मर जायेंगे। आत्महत्या करके नहीं मरेंगे पर हम तब तक उसका मुकाबला करेंगे और उसके आगे सिर नहीं झुकायेंगे जब तक हम उसे सही रास्ते पर नहीं लायेंगे या खुद मर नहीं जायेंगे। लेकिन ऐसा तब करेंगे जब हम देखेंगे कि

कांग्रेस जान-बूझ कर गलती करती है। मेरी समझ से इस समय तो वह ऐसा नहीं कर रही है। न उसने पहले ऐसी गलतियां की हैं। यदि वह अधर्म को ही धर्म मानकर आज तक चलती तो वह वहां तक नहीं पहुंच पाती जहां तक आज पहुंची है।

"यह कहना कि कांग्रेस कार्य-समिति को यह करने से पहले अ० भा० कां० समिति से पूछना चाहिए था, ठीक नहीं है। कदम-कदम पर कार्य-समिति पूछने बैठे तो वह काम नहीं कर सकती। बाद में उसे हक है कि वह कार्य-समिति का विरोध करे और चाहे तो उसे अलग करके नई समिति बना ले।

"जब मैं कांग्रेस में बाकायदा काम करता था और कांग्रेस के विधान को अमल में लाने का मुझे अधिकार था, तब भी एक पुरानी बहस में मैंने कहा था कि हम महासमिति के ३०० या १००० सदस्यों को (क्योंकि एक बार उतने सदस्य भी होने की बात थी) बार-बार इकट्ठा नहीं कर सकते। इस तरह काम करना कार्य-समिति के लिए अव्यावहारिक हो जायगा। पर बाद में महासमिति कार्य-समिति से अवश्य जबाब-तलब कर सकती है। दुबारा वह गलती न करे, इस हेतु से उन्हें नालायक करार देकर हटा सकती है और नई समिति बना सकती है।

नई कार्य-समिति चुनी जा सकती है।

"फर्ज कीजिए कि कार्य-समिति ने अखिल भारतीय कां० समिति के नाम कई लाख रुपये की हुंडी निकाल दी और अ० भा० कां० समिति को वह पसन्द न आई। तो भी उसे वह हुंडी सकारनी तो होगी ही लेकिन दुबारा ऐसी गलती न हो इसलिए वह उस कार्य-समिति को खत्म कर सकती है और नई चुन सकती है—बल्कि उसे ऐसा ही करना चाहिए।

"यही कायदा इस पाकिस्तान हिंदुस्तान के मामले में लागू होता है। वह चीज हो गई है पर अभी उसमें दुरुस्ती की बहुत

बड़ी गुंजाइश है। हम चाहें तो हिंदुस्तान व पाकिस्तान को—या और जो कोई नाम धरो वह—बिगाड़ भी सकते हैं और सुधार भी सकते हैं। यह सही है कि कांग्रेस लोग की नुमाइन्दा नहीं है पर कांग्रेस के लिए मेरे मन में जो चित्र बना हुआ है उसके मुताबिक वह हिंदुस्तान भर के सभी व्यक्तियों की प्रतिनिधि है। इसलिए कांग्रेस कभी यह नहीं कह सकती कि चूंकि मुसलमानों ने हमारा भारी नुकसान किया है इस कारण हम भी उसका बुरा ही करेंगे। ऐसा करने पर कांग्रेस, 'कांग्रेस' नहीं रह जाती। जब मैं गोलमेज में गया तब भी मैंने यही कहा था कि वे हमारा बिगाड़ेंगे तो भी मैं उनका भला ही करूंगा।"

राजाओं को सामयिक चेतावनी

इसके बाद राजाओं की बात करते हुए गांधीजी ने कहा कि कांग्रेस पंचायती राज कायम करना चाहती है। राजाओं की भी वह अहितैषी नहीं बनेगी पर राजा तभी रह सकेंगे जब वे औंध के राजा की तरह अपनी प्रजा के ट्रस्टी बन कर रहेंगे। प्रजा की सत्ता को मानने के कारण औंध जैसा नन्हा राज्य चिरजीवी बन सकेगा। लेकिन उसके मुकाबले में करोड़ों की सम्पत्ति वाला काश्मीर का राज्य अगर अपनी प्रजा की बात को नहीं मानता है तो वह मिट जायेगा। इन राजाओं ने अंग्रेज बादशाह के बूते अब तक भले मनचाहा किया पर अब उन्हें समझ लेना चाहिए कि उनकी सत्ता का मूल आधार प्रजा ही है। काश्मीर का नाम मैंने इस वास्ते लिया कि आज वह हमारी दृष्टि के सामने है। पर यह बात सभी रजवाड़ों के लिए है।"

कांग्रेस लोगों की संस्था बनी रहे

फिर मूल बात पर आते हुए गांधीजी ने कहा कि मैंने इतनी लम्बी बात इसलिए की कि कांग्रेस लोगों की संस्था बनी रहे और

लोग कांग्रेस की मर्यादा में रहें। यानी कांग्रेस के प्रति विनय रखें और अनुशासन का पालन करें। अगर हम आपस में लड़ने बैठेंगे तो कांग्रेस मिट जाने वाली है। अगर आपको कार्य-समिति का काम पसन्द नहीं है तो अब की अ० भा० कां० समिति में आप वैसा साफ-साफ बता दें। मैं तो वहां आना नहीं चाहता। हुक्म होगा तो आऊंगा पर मेरे अकेले की आवाज सुनेगा कौन ? आखिर पंच आप हैं। आप विनय के साथ कांग्रेस से कह सकते हैं कि 'आपने जो किया है 'वह हमें पसन्द है' या 'नापसन्द है।'

"कांग्रेस का धर्म अब यह बन गया है कि पाकिस्तान का हिस्सा छोड़कर जो उसके हाथ में रह जाता है उसे वह अच्छे-से-अच्छा बनावे और पाकिस्तान वाले अपने हिस्से को कांग्रेस वालों से भी अच्छा बनावें। तो फिर दोनों मिल जाते हैं और हम सुख से रह सकते हैं।"

अन्त में गांधीजी ने जिना साहब के प्रति अपनी रोज की अपील आज भी काफी विस्तार से दोहराई। और हिंदू-मुस्लिम-पारसी सभी को अपने पास बुला कर समझौता करने, वायसराय को परेशानी से और कांग्रेसी नेताओं की बेकार की दौड़-धूप से बचाने की तथा ऐसा पाकिस्तान बनाने की बात कही कि जिसमें भगवद्गीता का पाठ भी कुरान शरीफ के बराबर ही किया जा सके और मंदिर तथा गुरुद्वारा की भी मस्जिद के समान ही इज्जत की जाय ताकि पाकिस्तान के आज तक के विरोधी भी अपनी भूल पर पछतावें और आला पाकिस्तान की प्रशंसा ही प्रशंसा करें।

: ३२ :

बंटवारे का काम आपस में मिलकर कर लें

नई दिल्ली, ६ जून १९४७

गांधीजी की प्रार्थना में आज फिर एक बहन ने विरोध किया।

शुरू में ही गांधीजी ने कहा : "मैं उसकी लम्बी चिट्ठी सुनाने में समय नहीं खोऊंगा। मेरा खयाल था कि अब लोग मुझे समझ गए हैं। पर देखता हूँ कि ऐसा हमारा शुभ नसीब नहीं है। धर्म के नाम से अधर्म हो रहा है, पर हमें अधर्म सहना ही होगा। अगर वह बहन बीच में बोलने लगे तो आप उसे तंग न करें। अब तो उसने आगे कदम बढ़ाया है और मुझे लिखा है 'आप भाषण भी न करें'। वह कुछ भी कहे, प्रार्थना बंद न होगी और भाषण भी बन्द न होगा। ऐसा हर कोई आदमी करने लगे तो हिंदुस्तान का राज चलने वाला नहीं है। आप लोग शांत रहें।"

प्रार्थना नियमपूर्वक हुई और वह महिला बीच-बीच में चिल्लाती रही।

गांधीजी का विनोद

प्रार्थना के बाद भाषण शुरू करते हुए गांधीजी ने विनोद किया—"मैं देखता हूँ कि आपको गरमी सता रही है, लेकिन मैं सुनाने और आप सुनने के लिए लाचार हैं। पर आप शांत

रहूँ, तभी सुना सकता हूँ। इसका मतलब यह नहीं कि आप कागज या रूमाल से थोड़ी बहुत हवा भी न लें। गरम ही सही पर हवा मुझे भी मिल रही है। यह लड़की मेरे लिए पंखा कर रही है, तो मैं आपको क्यों रोकूं? (इस पर सारी सभा में आधी मिनट तक जोर की हँसी हुई, क्योंकि गांधीजी के पीछे एक पुरुष पंखा कर रहा था जिसे उन्होंने लड़की बता दिया था। गांधीजी खुद भी यह देखकर बहुत ही खिलखिला कर हंसे और अपनी भूल सुधारी)। अगर आप सभी पंखा चलावें तो मैं नहीं कहूंगा कि पंखा चलाना औरत का ही काम है। आप पंखा ला सकते हैं। औरत भी तो मरद बन सकती हैं। वह मन को गिरावें नहीं तो वह अबला नहीं है 'बेटर हाफ' है।"

ईश्वर के सामने सब गोपियां हैं

इसके बाद आचार्य कृपलानी के भतीजे श्री गिरधारी कृपलानी ने मधुर कंठ से जो भजन सुनाया उसकी प्रशंसा करते हुए गांधीजी बोले कि भजन में गोपी ने कहा है 'बंसरी सुन वह बन में जाना चाहती है' लेकिन यह भजन केवल औरत के ही लिए नहीं है। ईश्वर के सामने हम सभी गोपियां हैं। ईश्वर स्वयं न नर है, न नारी है, उसके लिए न पंक्ति, भेद है, न योनि भेद, वह 'नेति नेति' हैं। यह हृदय रूपी बन में रहता है और उसकी बंसी है अन्तरनाद। हमें निर्जन बन में जाने की आवश्यकता नहीं है। अपने अन्तर में हमें ईश्वर का मधुर नाद सुनना है और जब हममें से हरेक वह मधुर नाद सुनने लगेगा तब हिंदुस्तान का भला होगा।

गांधीजी ने आगे कहा—"आज ठीक मौके से यह भजन सुनाया गया है। वह बहन मुझसे कहती है 'तुम बन में चले जाओ, तुम्हींने जिना को बिगाड़ा है। पर मैं कौन होता हूँ उसे बिगाड़ने वाला? मैं अगर कुछ आशा कर सकता हूँ तो

उन्हें दुरुस्त ही कर सकता हूं। लाठी से नहीं, बल्कि प्रेम से। लाठी या एटम बम से तो विनाश हो सकता है। एटम बम ने नाश ही किया है किसी को अपनी ओर खींचा नहीं है। मनुष्य को अपनी ओर खींचने वाला अगर जगत में कोई असली चुम्बक है तो वह केवल प्रेम ही है; इसका मैं साक्षी हूं। वह कहती है 'कुरान मत पढ़ो; अब बात ही मत करो, जंगल में जाकर रहो।' पर मैं बन में जाऊं तो भी आप मुझे खींच लेने वाले हैं। इन्सान साथ ही साथ रहने के लिए पैदा हुआ है। अगर मैं यह कला सीख पाया होता कि बन में बैठा रहूं वहीं आपको खींच सकूं तो फिर मुझे न भाषण देने पड़ते, न कुछ कहना पड़ता। मैं एकान्त में बैठा मौन रखता और आप मेरे मन की बात करते। पर अभी ईश्वर ने मुझे इस योग्य नहीं बनाया।"

अंग्रेज १५ अगस्त तक चले जायंगे

गांधीजी ने फिर आगे चलकर कहा—

"आप जानना चाहते होंगे कि आज इतनी देर बैठ कर मैंने वाइसराय से क्या बातें की और उनसे क्या लाया। वे क्या देते? वे तो बेचारे हैं। उनको न कुछ लेना है, न देना है। वे तो कहते हैं कि 'मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि हिन्दुस्तान का हरेक आदमी--हिंदू, मुसलमान, सिक्ख सब--इस बात पर विश्वास करें कि मैं यहां लूटने या आपस में फिसाद कराने के लिए नहीं आया हूं। हो सके तो शांति कराकर, वरना जैसे भी हो, चले जाने के लिए ही आया हूं। हम १५ अगस्त के बाद यहां नहीं रहेंगे। अगर गवर्नर-जनरल रहेंगे तो भी आपके कहने पर। इस समय हमारे पास औपनिवेशिक स्वराज्य से अधिक कुछ नहीं है, जो हम दे सकें। हमको आपने मार भगाया होता तो और बात थी लेकिन मित्रता के साथ जाने में यही तरीका श्रेष्ठ है।

"वायसराय ने यह भी बताया कि 'हम इसलिए मित्रता-पूर्वक जाते हैं कि हिन्दुस्तान ने हमें मारकर फेंकने की कोशिश नहीं की। सन् ४२ में रेल, तार आदि काटे सही पर वे थोड़े आदमी थे, करोड़ों ने ऐसा नहीं किया। लेकिन आपने शराफत बरती। आपने हम से इतना ही कहा 'आप चले जाओ' क्योंकि आपको यह बुरा लगा कि हमने हिंद में जहर फैलाया है। लेकिन कांग्रेस ने हमें जहर नहीं दिया। उसने केवल असहयोग किया और हम समझ गये कि बिना मार्शल-ला के हम यहां नहीं रह सकते हैं, इसलिए हमने जाना स्वीकार किया।'

गांधीजी ने आगे कहा--"अगर हमारा सहयोग पूरा-पूरा होता तो आज से बहुत पहले और कहीं अच्छे तरीके पर अंग्रेज चले गये होते। कांग्रेस ने विद्यार्थियों से, नौकरों से, और सिपाहियों से भी कहा था कि आप सब वहां से निकल आवें। लेकिन वे कमजोर रहे उन्हें छोड़ नहीं सके। फिर भी आप लोगों ने यह नहीं कहा कि 'हम उन्हें मार डालेंगे। उन्हें जहर दे देंगे। हमारी इस शक्ति को अंग्रेजों ने परख लिया और इस कारण वे जा रहे हैं। लेकिन वाइसराय कहते हैं कि 'अब भी लोग हमपर भरोसा नहीं करते। एक अखबार वाले ने लिखा है कि 'अंग्रेज यहां सत्ता जमाने आये हैं और भारत के दो टुकड़े करके जा रहे हैं ताकि दोनों टुकड़े लड़ेंगे और एक-न-एक अंग्रेज का दामन पकड़ेगा। तो उन्हें यहां रहना मिल जायेगा।"

वाइसराय की इस शिकायत पर गांधीजी ने टिप्पणी की कि 'यह तो दगा होगी और मुझे आशा है कि अंग्रेज इस बार दगा न करेंगे। अगर करें तो भी हम खुद बहादुर बनें। बहादुर लोग धोखे से क्यों डरेंगे ? जब वे मेरे साथ शराफत से बात करते हैं तो मैं क्यों शंका करूं। मुझसे वाइसराय ने पूछा, 'तुझे तो मुझ पर विश्वास है या तुझे भी नहीं है ? तब मैंने उनसे

कहा कि 'मुझे विश्वास न होता तो मैं आपके पास आता ही नहीं। मैं सत्यवादी हूं, शरीफ हूं।'

गांधीजी ने कहा—"वाइसराय से ऐसी हमारी बातें चलती रहीं और यह जो पाकिस्तान व हिंदुस्तान बना दिया गया है उसके बारे में मेरे दिल में जो परेशानी है, वह भी मैंने वाइसराय को सुना दी। तब उन्होंने मुझे बताया कि यह अंग्रेज का किया हुआ नहीं है कांग्रेस और लीग ने मिल कर जो मांगा है वही दिया गया है। और हम तुरन्त ही इसलिए नहीं चले जा सकते कि एक छोटे घर के सामान के बटवारे में उसकी फेहरिस्त बनाने में कुछ देर लगती है तो यह तो इतने बड़े मुल्क की बटवारे की बात है।' फिर भी मैंने उनसे कहा कि अब आप आराम करें। यह बटवारे आदि का काम हम आपस में मिलकर कर लें, यही अच्छा है।"

जिना साहब से फिर अपील

अन्त में गांधीजी ने फिर से जिना साहब के प्रति अपील की कि 'आप लोगों के मार्फत दो-चार दिन से मिन्नत कर रहा हूं और आज भी करता हूं कि अब आपको जो चाहिए था मिल गया—चाहे कुछ कम मिला पर वह क्या है यह तो बताइये! उसका नाम ही नाम गुलाब का है या उसमें खुशबू भी है? सुंघाइये तो सही तथा यह तो बताइये कि आपके यहां सिक्खों को और हिंदुओं को जगह है या उन्हें गुलाम रहना है? और सीमा प्रांत में जनमत लेकर आप क्या सीमाप्रांत के भी दो टुकड़े करना चाहते हैं। और बलूचिस्तान के भी।

"क्या आप अब भी अपनी कार्रवाई से नहीं बतायेंगे कि आजतक मुसलमानों ने हिंदू को अपना दुश्मन माना पर अब नहीं मानेंगे। पठान का हिस्सा नहीं करेंगे। बलूच का हिस्स

भी नहीं करेंगे और हिंदू-हिंदू का भी नहीं करेंगे। हिंदुस्तान अखंड रहेगा पर भाई-भाई के तौर पर हम उसमें बंटवारा कर लेंगे। और अंग्रेज के बिना हमारी गाड़ी चलेगी।

"मेरी इस बात पर वे मुझे गाली दें तो मुझे गम नहीं है। मुझे तो कल भी गाली मिली थी कि 'तू मर क्यों नहीं जाता।' पर वे खुलासा तो करें कि उसका मन्शा क्या है? अब भी मेरे पास क्यों नहीं आते? आपके पास क्यों नहीं आते। कांग्रेसी या गैर कांग्रेसी को अपने पास क्यों नहीं बुलाते? एक जमाना था जब कांग्रेस-लीग का समझौता उन्होंने किया था। अब और पक्का और अटूट समझौता क्यों नहीं करते।

"हम सब मिलकर कोशिश करें कि दुश्मन न रहकर आपस में दोस्त बनें। यह काम अकेले वायसराय नहीं कर सकते, अकेली कांग्रेस भी नहीं कर सकती; सब मिल कर ही दोस्त बन सकते हैं।"

: ३३ :

मुझसे किसी का बिगाड़ नहीं होगा

नई दिल्ली, ८ जून १९४७

रविवार की भीड़ की वजह से आज गांधीजी को प्रार्थना से पहले शांति स्थापित करने में करीब तीन मिनट खर्च करने पड़े। लोगों से उन्होंने कहा आकाश से गोले भी क्यों न बरसाये जायं और कैसा भी उपद्रव क्यों न हो, ईश्वर भजन के समय हमारी शांति भंग नहीं होनी चाहिए। जैसे गोपी बंसी का नाद बन में सुनती है वैसे ही ईश्वर का भक्त अन्तर्नाद हृदय में सुनता है। इसे अंग्रेजी में 'वाइस आव साइलेन्स' कहा गया है, यानी वह नाद तभी सुनाई देता है जब हम शांत रहें।

अभूतपूर्व मृत्यु

प्रार्थना के बाद में गांधीजी ने कहा, आप लोगों को मैंने कह तो दिया है कि प्रोफेसर कोसांबीजी जो बड़े विद्वान् थे और पाली भाषा में अग्रगण्य माने जाते थे वे अभी-अभी सेवाग्राम आश्रम में चल बसे। उनके बारे में वहां के संचालक बलवंतसिंह का पत्र है, जिसमें कहा गया है कि "ऐसी मृत्यु आज तक मैंने नहीं देखी। यह तो बिल्कुल ऐसी हुई जैसी कबीरजी ने बताई है—

दास कबीर जतन सो ओढ़ी,
ज्यों-की-त्यों घर दीनी चदरिया,

इसके बाद गांधीजी ने अक्षरशः वह सारी चिट्ठी खुद पढ़ कर सुनादी जिसका सार यह था कि ४ जून के दोपहर डेढ़ बजे कौसांबीजी ने प्राण त्याग किया। उससे कुछ घंटे पहले काका

साहब कालेलकर ने आकर उनसे विनती की कि अंतिम दर्शन के लिए वे अपने पुत्र-पुत्री को अपने परिवार के साथ उनके पास आने दें, पर कौसांबीजी ने इशारे से इसके लिए मना करदी। फिर पूर्व की ओर का दरवाजा खुलवाया। अपनी सेवा में रहे हुए शंकरन्‌जी के ऊपर हाथ रख आशीर्वाद ।दिये और आराम से चले गये। मानो मृत्यु रूपी कोई महातीर्थ यात्रा के लिए प्रयाण किया हो। उनका दाह संस्कार आचार्य विनोबाजी, काका साहब और वर्धा को सभी संस्थाओं के लोगों की उपस्थिति में उसी टेकरी पर हुआ जहां पर कुछ वर्ष पहले श्री आर्य नायकम्‌जी के पुत्र का किया गया था। और बाद में काका साहब ने उनकी जीवन कथा सुनाई।"

गांधीजी ने कहा कि "इस तरह हम सभी लोग मृत्यु की मैत्री साध लें तो हिंदुस्तान का भला ही होने वाला है।

लड़ाई बन्द की जाय

गुड़गांव जिले में हो रही लड़ाई के बारे में बोलते हुए गांधी जी ने कहा कि "मुझसे किसी ने कहा कि 'आप पंच बन जाइए और इन मेवों और जाटों का झगड़ा निपटा दीजिये'; पर मैं कैसे पंच बनूं? एक तो मेरी जान-पहिचान उन लोगों में से किसी से नहीं है। दूसरे पंच वह हो सकता है जिसके हाथ में अपना फैसला मनवाने की शक्ति हो। मेरे हाथ में न बन्दूक है न मैं अदालत की शरण लूंगा। लेकिन मुझे लगता है कि अब उनको शांत हो जाना चाहिए। भला हो गया या बुरा, अब तो लीग-कांग्रेस में भी समझौता हो गया है। और अब वहां तक नहीं लड़ते रहना चाहिए जहां तक दो में से एक हार कबूल नहीं कर मेव भी बहादुर हैं और जाट-अहीर भी ऐसे नहीं हैं कि अपने लिए किसी को यह कहने दें कि वे मार खा गये। यह अच्छा

है कि वे बालक, बूढ़े और औरतों को नहीं मारते। हथियार भी दोनों ने काफी बना लिये हैं। वीरता से लड़ते हैं, परन्तु नुकसान होता ही है। झोंपड़ी जल जाने से गरीब को इतना ही दुःख होता है जितना राजा को महल के जलने से होता है। हमारे इतने नजदीक लड़ाई हो रही है पर हम कुछ नहीं कर पाते। वहां अंधेरा-सा छा गया है। लेकिन आप लोगों में से (श्रोताओं में से) जो उन्हें जानते-पहचानते हैं वे उनके पास मेरी आवाज पहुंचा सकें तो पहुंचावें और लड़ाई बन्द कराने की कोशिश करें।

बंगाल की चर्चा करते हुए गांधीजी ने कहा कि "मुझसे कहा गया है कि बंगाल के मामले को मैं बिगाड़ रहा हूं। मेरा दावा है कि मुझसे कोई काम बिगड़ता नहीं। बंगाल, बिहार या नोआ-खाली का किसी का भी काम मेरे हाथ से बिगड़ा नहीं है मुझसे तो सुधार ही हो सकता है—और हुआ है। अब पंजाब की तरह बंगाल के भी दो हिस्से होने वाले हैं। बंगाल के हिस्से में मुसलमानों की अक्सरियत है और दूसरे हिस्से में हिंदुओं की। बहुत सारे हिंदू चाहते हैं कि हमारा हिस्सा तकसीम कर दिया जाय क्योंकि "कहां तक अशांति बर्दाश्त की जाय। अपना घर बन जायगा तो उसमें शांति से तो रहा जा सकेगा। बंगाल की मुस्लिम लीग ने इस बात को मानने से इन्कार कर दिया है। लेकिन वहां की लीग की बात को मानता कौन है ? 'नई योजना में बंगाल का बटवारा निश्चित है।

"अब मुझ पर दोष लगाया जाता है कि मैं बंगाल को तकसीम होने देना नहीं चाहता। ठीक है मैं यह नहीं चाहता। पर मैं तो यह जरा भी पसन्द नहीं करता कि सारे मुल्क के हिन्दुस्तान व पाकिस्तान जैसे दो टुकड़े किये जायं। मेरा साहस तो यहां तक है कि अगर मैं अकेला हिंदू रहूंगा तो भी मुसलमान अक्सरियत वालों के

बीच बना रहूंगा। अधिक-से-अधिक वे क्या करेंगे; मुझे मार डालेंगे, इतना ही न ! लेकिन वे नहीं मारेंगे। एक आदमी की वे रक्षा करेंगे। ईश्वर ही बचायेगा। अकेले आदमी की रक्षा ईश्वर करता ही है। इसीलिए उसे 'निर्बल के बल राम' कहा जाता है। मुझे बिलकुल ही प्रिय नहीं है कि बंगाल को तकसीम किया जाय। लेकिन मैं ऐसा आदमी नहीं हूं कि मैं यह कह दूं कि "हिंदू डर के मारे दब जायं और अपने जानमाल की हिफाजत के विचार से अपनी इच्छा को छोड़ दें। अगर वे मानते हैं कि अपने टुकड़े में वे आराम से रह सकेंगे तो ऐसा कोई न समझे कि मैं उनके बीच में दखल देने वाला हूं।

"परसों या नरसों मेरे पास शरत्‌बाबू आये थे। वे नहीं चाहते कि बंगाल के हिस्से हों। वे कहते हैं सारे प्रान्त की एक ही संस्कृति हैं, एक-सा खान-पान है तो केवल धर्म के बहाने दो टुकड़े क्यों किये जांय। पर शरत्‌बाबू की बात वे जानें और मेरी मैं अपनी जानूं। लेकिन लोगों को पूरा हक हैं कि वे अपने मन की करें। बहुत आदमियों की राय के बीच मेरे एक आदमी की राय रोड़ा नहीं बन सकती।

"और मैं तो हमेशा ही अच्छी बात में साथ देता हूं। अगर बुरा आदमी भी मुंह से रामनाम निकालता है तो क्या में उसके साथ बैठ कर रामनाम न लूं ? मैं उसके साथ जरूर रामनाम लूंगा और शरीफ कहा जाने वाला आदमी शैतान का काम करे तो क्या मैं उसका साथ दूंगा। अगर ऐसा करूं तो फिर मैं गांधी नहीं। गांधी से शैतान की पूजा कभी नहीं होगी। और जो कोई भला काम है, प्रेम का काम है, उसमें मेरा हिस्सा है।

विभाजन रोकने के लिए पैसे

"मुझे पता चला है कि आज तो बंगाल का विभाजन रोकने के

लिए पैसे उड़ रहे हैं ! पैसे से कोई स्थायी चीज नहीं हो सकती। पैसे से पाये गये वोट दमदार नहीं होते। ऐसे काम में मेरी शिरकत हरगिज नहीं हो सकती। जो काम गुंडेपन से किया जाता है उसमें फिर वह करने वाले मां-बाप अथवा पत्नी या बेटे ही क्यों न हों—मैं कभी भी साथ नहीं दे सकता।

"इसलिए मैं शरद् बाबू से कहूंगा कि आप के दिल में और मेरे दिल में बंगाल का विभाजन न होने देने की बात है पर अभी हम उस विभाजन न करने की बात को भूल जांय। बुरे साधन से वह नहीं हो सकता। नापाक साधन से ईश्वर नहीं पाया जा सकता और बुरी चीज को पाने का साधन साफ नहीं हो सकता।"

: ३४ :

'यथा प्रजा तथा राजा'

नई दिल्ली, ७ जून १९४७

मौनवार होने से गांधीजी का लिखित सन्देश सुनाया गया।

"मेरे पास कुछ खत आये हैं जिनमें कहा गया है कि अल्लोपनिषद्, जिसके बारे में मैंने आपको एक रोज बताया था तो किसी धर्म शास्त्र के संग्रह में नहीं है। मैंने तो याददाश्त से ही ऐसा कहा था। इसलिए मैंने एक मित्र से पूछा और मुझे उनसे यह जवाब मिला है कि जिस संग्रह का स्मरण मुझे था उसमें अल्लोपनिषद् का जिक्र है और उसमें कहा गया है कि उसमें ७ मंत्र हैं। ये उपनिषद अथर्ववेद के जमाने से है। लेखक ने और बहुत कुछ बताया है जो ज्यादातर विद्यार्थियों के लिए है। इसलिए मैं आपको खत का वह भाग नहीं सुनाता।

"इसके अलावा मेरे पास एक खत श्री जयचंद्र विद्यालंकार का भी आया है। जयचंद्रजी ने लिखा है कि 'महाराणा कुंभा ने, जो राणा सांगा के बाबा थे, सर्व प्रथम आक्रमणकारी मुसलमानों का संगठित विरोध किया और गुजरात तथा मालवा के मुस्लिम प्रदेश को जीत कर चित्तौड़ में से एक कीर्ति-स्तम्भ स्थापित किया। उस स्तम्भ पर अनेक हिन्दू देवी-देवताओं के चित्रों के साथ ब्रह्मा, विष्णु, महेश के चित्र के बगल में ही अल्ला का नाम भी खोदा हुआ है। महाराणा रणजीतसिंह व छत्रपति शिवाजी जैसे हिन्दू गौरवों की इस्लाम के प्रति श्रद्धा प्रसिद्ध ही है। जो हिन्दू धर्म-अभिमानी आपकी प्रार्थना में कुरान पढ़ने पर आपत्ति

करते हैं वे विजय-स्तम्भ में अल्ला के नाम पर क्यों नहीं आपत्ति करते।

"इसके बाद विद्यालंकारजी ने यह बताते हुए कि हिन्दू-मुस्लिम वैमनस्य का कारण गलत ढंग का लिखा इतिहास है, मुझसे अनुरोध किया है कि मैं ठीक ढंग से इतिहास पढ़ाने की ओर ध्यान दूं नहीं तो हिन्दू-मुस्लिम एकता के सारे प्रयत्न बालू की भीत की तरह ढह जायंगे।

हमारी भूल

"आजकल तो मेरे पास बहुत ऐसे खत आते रहते हैं जिनमें मेरे ऊपर हमला होता है। एक मित्र लिखते हैं कि 'आप जो कहा करते थे कि हिन्दुस्तान का काटना तो समझो मेरे शरीर को काटना है, तो आज आपकी यह बात कितनी कमजोर पड़ गई है, और मुझे इस बटवारे का सख्त विरोध करने को कहते हैं। मैं तो अपना इसमें कोई भी दोष नहीं देखता। जब मैंने कहा था कि हिन्दुस्तान के दो भाग नहीं करने चाहिएं तो उस वक्त मुझे विश्वास था कि आम जनता की राय मेरे पक्ष में है। लेकिन जब आम राय मेरे साथ न हो तो क्या मुझे अपनी राय जबरदस्ती लोगों के गले मढ़नी चाहिए ? मैंने यह भी जरूर कई बार कहा है कि असत्य और बुराई के साथ तो कभी समझौता नहीं करना चाहिए और आज मैं दावे से कह सकता हूं कि अगर तमाम गैर मुसलिम लोग मेरे साथ हों तो मैं हिन्दुस्तान के दो टुकड़े न होने दूंगा। लेकिन आज मुझे स्वीकार करना पड़ता है कि आम राय मेरे साथ नहीं और इस कारण मुझे पीछे हटकर बैठना चाहिए। जो सबक हम ३० साल से सीखते आये हैं उसे आज हम भूल रहे हैं—कि असत्य और हिंसा पर जीत केवल सत्य और अहिंसा से ही हो सकती है। अधीरज को धीरज से ही

मारा जा सकता है और गरमी को सरदी से। आज तो हम अपनी परछाईं से भी डरने लगे हैं। जो मुझे पाकिस्तान का विरोध करने के लिए कहते हैं उनमें और मेरे में कोई समानता नहीं, सिवा इसके कि देश का बंटवारा हम दोनों को नापसंद है। मेरे और उनके विरोध में बुनियादी फरक है। प्रेम और वैर का मेल किस तरह से हो सकता है?

वाइसराय पर आरोप क्यों?

"एक दूसरे भाई लिखते हैं कि यह वाइसराय तो दूसरे वाइसरायों से ज्यादा खतरनाक हैं। दूसरों ने तो हमें नंगी तलवार दिखाकर दबाया और इसने अपनी जबान से कांग्रेस को धोखा देकर फांस लिया। मैं तो इस राय से हरगिज सहमत नहीं हो सकता। लिखने वाले ने (मेरी राय में) बिना जाने और बिना चाहे वाइसराय साहब की काफी तारीफ की है और साथ-ही-साथ कांग्रेसी मंत्रियों की अक्ल और काबलियत की निंदा। लेखक यह साफ सीधी बात क्यों नहीं पहचान सकते कि आम राय कांग्रेस के नेताओं के साथ है—यानी वह लोग जो राय रखने के लायक हैं। नेता मूर्ख तो हैं नहीं। उन्हें भी देश का बंटवारा निहायत बुरा लगता है। लेकिन वे मुल्क के नुमाइन्दे होकर आम राय के खिलाफ नहीं जा सकते। उनके हाथों में जो शक्ति है सो लोगों के द्वारा ही है। लेखक के हाथ में सत्ता होती तो शायद हालत यही नहीं होती। और किसी भी हालत में यह तो उचित नहीं कि वाइसराय साहब की निंदा की जाय जब नेता हमारे चुने हुए हों या हमारे अपने लोग खुद मुल्क के साथ बेवफाई करें। यह कहावत कि 'यथा राजा तथा प्रजा', उतनी सत्य नहीं है जितनी यह बात कि 'यथा प्रजा तथा राजा।'

: ३५ :

लोक मत को जाग्रत करें

नई दिल्ली, १० जून १९४७

आज सायं प्रार्थना के बाद अपने प्रवचन में गांधीजी ने कहा—"जो कुछ बंगाल-विभाजन के बारे में मैंने कहा है, उसमेंमैंने किसी पर इल्जाम नहीं लगाया है। मैंने जो बातें सुनीं थीं वही बताई हैं। बंगाल का हिस्सा न किया जाय यह सारा-का-सारा एक बना रहे यह किसको पसन्द न आयगा। पर झूठ से, फरेब से या रिश्वत से बंगाल को एक रखने की कोई बात करे तो मैं उनका साथ नहीं दे सकता। अगर किसी बंगाली ने—ख्वाह वह हिंदू हो या मुसलमान—ऐसा नहीं किया है तो फिर कोई बात रह ही नहीं जाती। कोई व्यर्थ में मेरी बात अपने ऊपर क्यों ले ले ?

"लेकिन लोगों को वहम जरूर है कि बंगाल में गलत चीज हो रही है। जिन्होंने मुझे खबर दी है उन्होंने नाम और पते भी दिये हैं। पर उन्हें यहां खोलना मैं ठीक नही समझता। अगर उन्होंने मुझे झूठी खबर दी है तो यह बुरी बात है और उन्हें सजा मिलनी चाहिए। पर मैं किस को सजा दूं ? किसी को सजा देने शक्ति मैं नहीं रखता।

जाग्रत लोकमत

"पर मेरे पास एक बुलंद चीज है और वह है लोकमत। लोकमत में बड़ी प्रचंड शक्ति है। अभी हमारे यहां इस शब्द का अर्थ पूरे जोर से प्रगट नहीं हुआ है; पर अंग्रेजी में उस शब्द का अर्थ बड़ा जोरदार है। अंग्रेजी में इसे 'पब्लिक ओपीनियन'

कहते हैं और उसके सामने बादशाह भी कुछ नहीं कर सकता। चर्चिल जो इतना बड़ा बहादुर है और जो ऊंचे खानदान का, बड़ा भारी वक्ता, बहुत ही विद्वान्—मेरे जैसा अनजान बिलकुल नहीं है, यह सब कुछ होते हुए भी अपनी गद्दी न सम्हाल सका। इसका मतलब यह है कि वहां का लोकमत बहुत जाग्रत है। इसलिए उसके सामने किसी की नहीं चल सकती।

"आज हमारे यहां का लोकमत इस तरह जाग्रत नहीं है। अगर जाग्रत होता तो मेरे जैसा निकम्मा व्यक्ति महात्मा न बन बैठता। और महात्मा बन जाने के बाद मैं जो कुछ करूं वह सहन न कर लिया जाता। जैसा कि आज हिंदुस्तान में किसी महात्मा कहे जाने वाले को कोई पूछता ही नहीं—चाहे वह कुछ भी उलटा-सीधा करे।

"टाल्स्टाय एक बड़ा योद्धा था पर जब उसने देखा कि लड़ाई अच्छी चीज नहीं है तब लड़ाई को मिटा देने की कोशिश करते-करते वह मर गया। उसने कहा है कि दुनिया में सबसे बड़ी शक्ति लोकमत है और वह सत्य और अहिंसा से पैदा हो सकता है।

"यही काम मैं कर रहा हूं। परन्तु यदि हमारे लोकमत में सच्ची बहादुरी और सच्चाई नहीं आई तो उससे कुछ बनने वाला नहीं है।

"लेकिन आज तो ऐसा नहीं है। १५ अगस्त को जो औपनिवेशिक स्वराज्य आ रहा है, उसको हम नहीं चाहते ऐसा मुझे लगता है। कारण यह कि हमारे यहां पूर्ण आजादी के लिए बरसों से लोकमत बन गया है। देश को यह औपनिवेशिक स्वराज्य की बात चुभती है। यह चुभना ठीक भी है और ठीक नहीं भी। ठीक इसलिए नहीं कि हम उसकी ताकत नहीं समझते। एक तो यह कि इसके जरिये अंग्रेज दो ही महीने में यहां से चले जाते हैं। दूसरे

यह कि जब चाहें तब हम औपनिवेशिक दर्जे को हटा सकते हैं। अगर हम पागल ही रहें तो उसमें दूसरों का क्या दोष है? खैर, लोकमत की बात पर आऊं, अगर वह जाग्रत रहता है, तो सबका अच्छा ही होने वाला है। अगर लोकमत यह समझे कि 'रिश्वत नहीं खाई', 'बुरा काम नहीं किया' और इस हालत में बंगाल एक रहने का तय करता है तो अच्छा ही है। लेकिन हम पुश्तों से कायर रहे हैं, गुलाम रहे हैं; इसलिए हमारे यहां हमारे हाथ से गंदी चीजें बन जाती हैं।

"लेकिन अगर किसी ने गंदा काम नहीं किया और दूसरा कोई लांछन लगाता है तो जी क्यों दुखाया जाय? मसलन कई ऐसे बड़े-बड़े ओहदेदार होते हैं जो नापाक नहीं होते, चोखे रहते हैं; फिर भी उन पर रिश्वत का इलजाम लगाया जाता है। लेकिन वे इस बात से परेशान नहीं होते। अगर कोई मुझे बदमाश बतावे और नापाक कहे तो क्या मैं रोने बैठूं? किसी के कहने पर मैं क्या बदमाश साबित हो जाऊंगा? यह मैं मानता हूं कि कुछ लोगों का गलत शिकायत करना द्वेषभाव और बुजदिली कहायेगा। हमें किसी की बुराई नहीं करनी चाहिए, भला ही देखना चाहिए। अगर आजाद बनान चाहते हैं तो औरों की बुराई न देखें भलाई देखें और उसका सिंचन करें।

पाकिस्तान को दूसरा राष्ट्र क्यों मानूं?

"अब मैं ऐसा मानकर चलता हूं कि हिन्दुस्तान के हिस्से हो गये हैं और सब कांग्रेस ने मजबूरी से कबूल किया है। लेकिन हिन्दुस्तान के टुकड़े हो जाने पर अगर हम खुश नहीं रह सकते; तो हम रंजीदा भी क्यों हों? हमें अपने दिल के टुकड़े नहीं होने देने चाहिएं। हृदय को चूर-चूर होने से बचाना चाहिए। वरना, जिना साहब की बात सही साबित हो जायगी कि हम दो राष्ट्र हैं। मैंने कभी यह माना ही नहीं। जब कि हमारे उनके मां-बाप एक थे

तो महज धर्म बदलने से क्या राष्ट्र बदल जायगा ? जब कि सिन्ध, पंजाब और शायद सीमा प्रान्त भी पाकिस्तान में चले जायंगे तो क्या वे अब हमारे नहीं रहे ? मैं तो ब्रिटेन तक को गैर नहीं मानता तो पाकिस्तान को दूसरा राष्ट्र क्यों मानूं ?

"कहने को तो मैं हिन्द का हूं और हिन्द में बम्बई प्रान्त का और उसमें गुजरात का। गुजरात में फिर काठियावाड़ का तथा उसमें भी छोटे-से देहात पोरबन्दर का। लेकिन पोरबन्दर का हूं इसीलिए सारे हिन्द का भी हूं अर्थात् मैं पंजाबी भी हूं और पंजाब में जाऊंगा तो उसे अपना समझकर वहां रहूंगा और मार डाला जाऊंगा तो मर जाऊंगा।

लड़ाई की बात भूल जाओ

"मुझे खुशी है कि जिना साहब ने कहा है कि पाकिस्तान शहनशाह का नहीं जनता का रहेगा और अल्प मत को भी बराबर का माना जायगा। उनकी इस बात में इतना इजाफा मैं करना चाहूंगा कि जैसा वे कहते हैं वैसा करें भी। अपने पैरोकारों को भी वे यह बात समझा दें और कह दें कि 'अब लड़ाई की बात भूल जाओ।'

"हम भी अपने यहां अल्प मत को दबाने की सोचेंगे नहीं। मुट्ठी-भर पारसियों का भी हमारे यहां साझा रहेगा। अगर हिन्दू-मुसलमान दोनों मिलकर पारसी से कहें कि 'तुम शराब पीते हो इसलिए निकम्मे हो, तुम्हें हम मार डालेंगे' तो वह बुरा होगा। पारसी तो मेरे मित्र हैं और उन्हें मैं कहता हूं कि शराब नहीं छोड़ोगे तो अपनी मौत मरोगे, पर हम उन्हें नहीं मारेंगे। इसी तरह पंजाब में सिख और हिन्दुओं की हिफाजत होनी चाहिए। मुसलमान उनसे मुहब्बत से बरतें और कहें कि आप आराम से रहें आप हमारे भाई हैं। अगर वे जबरदस्ती करने

लगें, तो हिन्दू-सिख मरने से न डरें और कहें मजबूरन न हम इस्लाम मंजूर करेंगे, न मजबूरन गोश्त खायंगे। हिन्दुओं को ऐसा नहीं समझना चाहिए कि वे एक नई प्रजा बन गये हैं जिसमें मुसलमान रह ही नहीं सकते। हम बहुमत वाले हिन्दुस्तान में हैं। बहुमत को जाग्रत करके हमें बहादुरी से काम करना है। बहादुरी तलवार में नहीं है। हम सच्चे बनेंगे, ईश्वर के बन्दे बनेंगे और जरूरत पड़ने पर मरेंगे भी। जब ऐसा करेंगे तब हिन्दुस्तान अलग और पाकिस्तान अलग यह बात नहीं रह जायगी। और ये कृत्रिम हिस्से निकम्मे बन जायेंगे। अगर हम लड़ाई करेंगे तो हम पर दो राष्ट्र का इलजाम सच्चा साबित होगा। इसलिए आप और मैं ईश्वर से प्रार्थना करें कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान अलग तो हुए, पर अब हमारे दिल अलग-अलग न हों।"

: ३६ :

'पठानों को क्यों बांटा जाय ?'

नई दिल्ली, ११ जून १९४७

आज शाम को प्रार्थना के बाद गांधी जी ने कहा—"यद्यपि बंगाल के जो टुकड़े होने वाले हैं उनके बारे में मैंने दो दफा कह दिया है फिर भी तीसरी बार उस बारे में कहना जरूरी हो गया है। एक शख्स का बहुत ही गुस्से से भरा हुआ कागज मेरे पास आया है। इतना गुस्सा करने की जरूरत ही क्या है ? अभी मैंने बताया था कि गुस्सा करना पागलपन है।। हमें अपनी बुद्धि शांत रखकर सब बातों को समझना चाहिए।

"वह पत्र में आगे लिखते हैं कि मैंने बंगाल को बड़ा नुकसान पहुंचाया है। पर मैंने कैसे नुकसान पहुंचाया ? और क्या नुकसान पहुंचाया ? मैंने तो जो बात हो रही थी वह सुना दी। तथा मैंने इतना ही कहा था कि बंगाल के टुकड़े मैं नहीं चाहता लेकिन इंसाफ से बाहर कुछ नहीं होना चाहिए। ख्वाह हिंदू हो, मुसलमान हो अथवा ईसाई—अगर वह बंगाली है और अपनी मातृभाषा को कायम रखना चाहता है, अपने मुल्क को एक रखना चाहता है, तो वह अच्छी बात है। लेकिन अच्छी बात के लिए साधन भी अच्छे ही बरतने चाहिए। टेढ़े रास्ते से सीधी बात को नहीं पहुंचा जा सकता। पूरब को जाने के लिए पच्छिम की ओर नहीं चलना चाहिए। मैं बंगालियों से कहूंगा कि मैं अपनी बात पर कायम हूं। अगर बंगाल के टुकड़े हों तो आप ही कर सकते हैं, न हो तो आप ही उसे रोक सकते हैं। आप जो न चाहें वह न हो। इसी में इंसाफ और सचाई है।

अल्प-संख्यकों की रक्षा सरकार का फर्ज

"आज मेरे पास केम्बेलपुर के कुछ भाई आए। वे इस बात से घबराए हुए हैं कि पाकिस्तान में उनकी हालत क्या होगी ? उन पर कैसी बीतेगी। और अब वे वहां पर कैसे रहें ?

"मैंने उन भाइयों से कहा कि आप अपने मन में ऐसा समझ लें कि हम हिंदुस्तान में ही पड़े हैं। जब हमारा भूगोल एक है तब महज कह देने भर से पाकिस्तान वाला हिस्सा हिन्दुस्तान से नहीं मिट सकता, और मेरी राय में आप वहीं बने रहिये !"

"मेरे इस कथन पर उन लोगों ने पूछा—"तो हम सब मिल कर एक जगह रहें ?" मैंने उनसे ऐसा करने से भी मनाही की और उनसे कहा कि नोआखली के हिंदुओं और बिहार के मुसलमानों से भी ऐसा करने को मना किया है और यह भी कहा है कि हमें हथियार भी नहीं रखने चाहिएं।"

"जहां पर अल्पमत वाले थोड़े-से आदमियों का रक्षण सरकार नहीं कर सकती वहां पर उस सरकार को बने रहने का कोई हक नहीं रहता। अगर हिंदुस्तान की सरकार चन्द मुसलमानों के जानो-माल की हिफाजत नहीं कर सकती तो उस सरकार को उलट देना चाहिए और पाकिस्तान में अगर थोड़े हिंदू और सिखों की खैरियत नहीं रहती तो उसे भी खतम हो जाना चाहिए। जहां पर बहुमत वाले अल्पमत वालों को मार डालें, वह तो जालिम हुकूमत कहलायेगी। उसे स्वराज्य नहीं कहा जा सकता।

"तो फिर क्या हमने जो इतनी लड़ाई ली, इतना सत्याग्रह किया वह सब चूल्हे से निकलकर भट्टी में पड़ने के लिए ? लेकिन मेरी बात पर केम्बेलपुर वालों ने कहा 'आप महात्मा हैं आप महात्मा की-सी बातें करते हैं। हम लोग ताजीर हैं, वहां हमारा व्यापार चलता है, और हम बाल-बच्चेदार हैं हम आपकी

तरह कैसे कर सकते हैं ? तब मैंने कहा, 'मेरे पास दूसरी चीज नहीं हैं। मैं यही कहते-कहते बुढ्ढा हो गया और अखीर तक यही कहूंगा। अगर कोई कहता है कि हम बहादुर नहीं बन सकते, हम डरपोक ही रहेंगे तो यह बात ठीक है। लेकिन इंसान डरपोक बनने के लिए थोड़े ही पैदा हुआ है ? फिर यह कैसे कहा जायगा कि मनुष्य ईश्वर का तेज है—खुदा का नूर है। गाय-बैल में ईश्वर का तेज है ऐसा किसी ने कहा है और हम मनुष्यों में ईश्वर का तेज है, वह क्या डरने के लिए और एक दूसरे का गला काटने के लिए है।

पाकिस्तान से न डरो

"पाकिस्तान को देखकर सहम जाने की कोई बात नहीं है। मैं तो मिट्टी का पुतला हडी-पसली जिसकी दीख रही है ऐसा मामूली-सा आदमी हूँ। और बहादुर बनने की बात कह रहा हूं लेकिन जिना साहब तो इतना बड़ा काम कर रहे हैं। किसी के ख्वाब में भी नहीं था कि कभी ऐसा बन पायेगा। पर पाकिस्तान बन गया, जिना साहब ने उसे पा लिया। कांग्रेस को मजबूर होकर वह मंजूर करना पड़ा। पर मैं सोचता हूं कि कांग्रेस उस पर दु:ख क्यों माने ? मैं भी क्यों बुजदिल बनूं ? मैं क्यों मान लूं कि हमारे टुकड़े हो गए हूं जिसको ईश्वर ने एक बना रखा है उसको दो कौन कर लकता है ?

" और जिना साहब ने बातें भी ऐसी ही की हैं। उनसे जब पूछा जाता है कि क्या पंजाब से हिन्दू, सिख भाग जायं, तो वे कहते हैं 'हमारे यहां सब एक ही तराजू से तोले जायंगे। सबका 'अदल इन्साफ' इन्साफ होगा। वे भागे क्यों ?

सीमांत की समस्या

"बादशाह खान मेरे दोस्त हैं। मौलाना आजाद तथा जवाहरलाल के महल छोड़कर मेरी झोंपड़ी में आकर टिकते हैं।

यहां गोश्त नहीं मांगते। मेरे साथ ही रोटी-फल लेते हैं, वे पूरे फकीर हैं। उनके भाई डा० खान साहब बिना उनकी मदद के काम नहीं चला सकते। हम उन्हें सीमांत गांधी कहते हैं पर वहां गांधी को ही कोई नहीं जानता तो सीमांत गांधी को कौन जाने ? वहां तो यह बादशाह कहलाते हैं और जिस झोंपड़ी में जाइए वहां पठान अपने इस बादशाह पर खुश हो जाते हैं।

"ऐसे बादशाह के इलाके में जनमत-संग्रह करने की बात तय कर दी गई है। और वह भी तब जब पठान का खून अभी ठंडा नहीं हुआ है, जिसका कि खून सदा गरम ही रहता आया है और बादशाह ने अपनी जिंदगी उस खून को ठंडा करने में खपा रखी है।

"वहां मत लिया जायगा तब सब-के-सब न पाकिस्तान की कहेंगे न हिंदुस्तान की। तब क्या आप पठान के दो टुकड़े कर डालेंगे ? इसलिए बादशाह खान से कहता हूं कि यदि जिना साहब आश्वासन देकर भली प्रकार समझा दें तो आप पाकिस्तान से क्यों डरें ? सब पठान इकट्ठे होकर क्यों न रहें।

"और जिना साहब ने जब मेरे साथ अपील निकाली है—दस्तखत किये हैं—कि लड़ाई से कोई राजनैतिक काम नहीं किया जायगा। तो फिर वे क्यों नहीं कह देते कि अब हम जनमत-संग्रह नहीं करेंगे। वाइसराय ने तो वादा किया है कि तीनों पार्टी मिलकर जो तय करेंगे वह मान लेंगे। तो अब कायदे आजम सबको बुला कर समझा दें कि पाकिस्तान में एक बच्चे तक को तकलीफ नहीं होगी। कांग्रेस वाले यहां की बातें बतला दें कि हम सब भाई-भाई बन कर रहेंगे और पाकिस्तान वाले भी यह बता दें कि वे जहर नहीं फैलावेंगे।

अगर आपस में जहर फ़ैल जायगा तो वह बहुत बुरी चीज होगी। अंग्रेज यहां से तो चले जायंगे पर बाद में मुसलमान और

हिन्दुओं को कोसेंगे कि हम तो पाकिस्तान बनाना ही चाहते थे लेकिन जब दोनों विधान-परिषद में इकट्ठे बैठे ही नहीं और हमें तो जाना ही था इसलिए यह तीसरा रास्ता निकाला। फिर भी शांत नहीं हुई।

"लेकिन मुझे दुःख है कि यद्यपि माउण्टबेटन बुरा करने के लिए नहीं आए। पर उनके हाथ से बुरा हो जाने वाला है। ऐसा तो कभी होता नहीं कि कोई सारी दुनिया को खुश ही रख सके फिर वह तो बहादुर सेनापति रहे हैं। वे पाकिस्तान वालों से भी और कांग्रेस वालों से भी कह सकते हैं कि तुम्हारी यह बात ठीक नहीं है। और लीग से अब भी वे कह सकते हैं कि आप लोगों ने जिस गेंद के लिए जो जिद पकड़ी थी वह गेंद आपको मिल गई। अब बताइये कि यह पाकिस्तान क्या चीज है। उसमें कौन-सा सौंदर्य है। वे इतना तो कह दें कि अब हमारा पाकिस्तान बन गया, अब हम भाई-भाई बनकर रहना चाहते हैं।

"सारी दुनिया भी यह देखना चाहती है कि हम एक हैं। इब्न सऊद तक ने कायदेआजम को तार दिया है कि आपको पाकिस्तान मिल गया। अब हमें आशा रखनी चाहिए कि दुनिया में शांति ही रहेगी। कायदेआजम ने भी उत्तर में लिखा है 'दुनिया में शांति ही रहेगी' पर वह कैसे रहेगी? हिंदुस्तान में अशांति होगी तो दुनिया में शांति कहां से आवेगी।

"मैं फिर जिना साहब से कहूंगा कि आपको दोस्ताना तौर से सबको अपनी ओर खींचना है। सबको सन्तोष देना है वरना दुनिया का बुरा हाल होने वाला है। हिंदुस्तान का बुरा होने वाला है मुसलमान का बुरा होगा और हिंदू का भी बुरा होगा। मैं यह एक ही चीज कहूंगा।"

: ३७ :

दिलों के टुकड़े न हों

नई दिल्ली, १२ जून १९४७

आज संध्या-प्रार्थना के समय गांधीजी के साथ अखिल भारतीय राष्ट्रीय मुस्लिम मजलिस के अध्यक्ष जनाब ख्वाजा अब्दुल मजीद साहब बैठे थे और बहुत मधुर स्वर से उन्होंने कुरान की आयत सुनाई।

प्रार्थना के बाद गांधीजी ने कहा:—

"आप लोग देख रहे हैं कि मेरी दाहिनी ओर ख्वाजा साहब बैठे हुए हैं। इनके बारे में एक बार मैं आपको पहले सुना चुका हूं कि किस प्रकार मैं स्वामी सत्यदेव के साथ इनके घर पहुंचा था और सत्यदेवजी मुसलमान के हाथ का पानी तक नहीं पी सकते थे। लेकिन तब भी ख्वाजा साहब ने बुरा नहीं माना और उदार स्वागत किया। उस समय ये अलीगढ़ यूनीवर्सिटी के ट्रस्टी थे। बाद में असहयोग आंदोलन में शरीक होने के लिए इन्होंने ट्रस्टीपन छोड़ दिया। जहां तक मुझे याद है, जब मैं वहां गया था तब वहां लीग की मीटिंग हो रही थी। मैंने वहां पूछा था कि यहां भी कोई सत्याग्रही मिलेगा या नहीं? मौ० मुहम्मद अली और मौ० शौकत अली तब नजरबन्द थे और उनके कैद होने के बारे में वहां सब मायूस होरहे थे। तब ख्वाजा साहब ने मुझसे कहा था कि आपको ढाई सत्याग्रही मिल सकते हैं। उनमें एक तो थे श्वेब कुरेशी, जो काफी-प्रख्यात और बहादुर जवान थे। दूसरे साहब थे मौजूद, जो कि पक्के सत्याग्रही थे। एक बार लोगों ने

उन्हें मारा और उनके हाथ में दो जगह चोटें आईं तब भी वे शांत रहे और ताकत होने पर भी मार सहन की; लेकिन जवाब में हमला नहीं किया। इन दोनों का परिचय कराने के बाद ख्वाजा साहब ने कहा था आधा सत्याग्रही मैं हूं। और तब से ख्वाजा साहब मेरे सगे भाई की तरह बनकर रहे हैं।

"वे नहीं चाहते थे कि देश के हिस्से हों पर हिस्से हो ही गये। तो वे मेरे पास अपना दुःख प्रगट करने आये हैं। मैंने उनसे कहा हम रोने वाले नहीं हैं। और मैंने उन्हें हंसा दिया।

दिलों के टुकड़े न हों

"चोट तो सप्रू साहब को भी बहुत पहुंची है कि यह क्या कर दिया गया। ठीक है कि यह लीग के मन की चीज है; पर कांग्रेस को यह बात पसन्द नहीं आई है। जब ऐसा है, यानी जिस बात पर दोनों राजी नहीं हैं वह बात कहां तक चल सकती है? भले ही भूगोल के टुकड़े हो गये हों, पर दिलों के टुकड़े नहीं हुए तो हमें रोना नहीं है। क्योंकि जब तक दिलों के टुकड़े नहीं होते तब तक खैर ही है। फिर चाहें मुल्क के हिस्से पाकिस्तान हिन्दुस्तान कुछ भी हों। हम एक ही हो जाने वाले हैं। यह नहीं कि वे थककर और परेशान होकर हमें मिलने आयंगे। पर हमारा बरताव ऐसा होगा कि चाहने पर भी वे हमसे अलग रह नहीं सकेंगे।

"जवाहरलाल के दिल में यह बात बहुत खटकती है कि अब हम शेष हिस्से को हिंदुस्तान कहें। उसका कहना ठीक ही है कि जब उनका पाकिस्तान बन गया तब भी हमारा हिंदुस्तान कैसे बन सकता है। इसका अर्थ तो यही होगा कि यह हिस्सा हिंदुओं का हो गया। फिर ईसाई, यहूदी और बाकी मुसलमान क्या करें, यहां से हट जायं? पन्तजी ख्वाजा साहब को, जो

युक्त प्रान्त के रहने वाले हैं, और उनके पुराने मित्र हैं, कहेंगे कि आप युक्तप्रान्त से हट जाइए ?

"अगर ऐसा हम करेंगे तो जिना साहब की बात सही साबित हो जायगी 'कि उनके दिल पहले से ही फटे हुए हैं।'

"लेकिन इतिहास ऐसा नहीं बताता है। बड़े इतिहास-वेत्ता श्री जयचन्द्र जी का पत्र मैंने आपको बताया था। वे कहते हैं कि जब हिंदु-मुसलमान आपस में लड़ते थे तब भी धर्म के नाम से एक दूसरे को नहीं मारते थे। अपने बचपन में भी हम लोग एक दूसरे को अलग अनुभव नहीं करते थे। पुराने जमाने में जब जैलाब्दिन साहब हिंदुओं के साथ काशी की यात्रा के लिए जाते थे और रास्ते में जो मंदिर टूटे पाये जाते थे, उनकी मरम्मत भी कराते थे। चित्तौड़ में विजय-स्तंभ -पर अल्ला का नाम मिलता है।

"फिर आज हमारे दिल ऐसे क्यों बिगड़ जायं कि न साथ बैठ सकें न एक-दूसरे को अच्छी नजर से देख सकें।

"माना कि थोड़े मुससमान बिगड़ भी गये तो क्या हम भी बिगड़ जायं ? जवाहरलालजी ऐसा नहीं चाहते। कहते हैं जब तक इसमें मुसलमान शामिल थे तब तक हमारे देश का नाम हिन्दुस्तान बहुत अच्छा था, क्योंकि उस समय यह अर्थ निकलता था कि जो हिन्दुस्तान में पैदा हुआ है उसका स्थान हिन्दुस्तान में है। चाहे फिर वह किसी धर्म का हो।

हिन्दुस्तान हिन्दुओं का ही नहीं है

"अब हिन्दुस्तान का अर्थ लगाया जाता है कि वह हिंदुओं का है। और हिंदू भी कौन ? सवर्ण। पर मैंने कहा है कि सवर्ण तो हमारे यहां—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, सभी मिलाकर थोड़े हैं बहुत बड़ी तादाद तो शूद्र और अछूतों तथा आरण्यकों की है। उनकी बड़ी तादाद पर क्या थोड़े से सवर्ण राज करेंगे ? ठीक है

कि आज उनकी चलती है पर अछूत, आरण्यक आदि को अलग करके सवर्ण लोग राज करेंगे तो जिना साहब की बात ठीक ही साबित होगी कि 'थोड़े से ऊंचे हिंदू बाकी सबको कुचलकर रखना चाहते हैं तो क्या हम ऐसे पाजी बनेंगे ?' तो जिना साहब के दो भिन्न राष्ट्र के सिद्धांत को स्वीकार करेंगे ? यानी जब मेरा लड़का मुसलमान बना तो वह अलग राष्ट्र का हो गया ? अगर हम अपने तीन चौथाई भाइयों को जंगली बनायेंगे और उन्हें छोड़कर राज करेंगे तो उसका अर्थ यही होगा कि सचमुच जैसा जिना ने कहा है वैसे हमारा हिन्दुस्तान बन गया।

"और तब पारसीस्तान सिक्खों के सिक्खिस्तान आरण्यकों के आरण्यकस्तान और अछूतों के अछूतस्तान की उत्पत्ति हो जायगी और हिन्दुस्तान हिन्दुस्तान न रहकर उसके टुकड़े-टुकड़े हो जायगा।

"अगर अंग्रेज हिन्दुस्तान के ऐसे टुकड़े करना चाहते हैं तो अंग्रेजों के लिए दुनिया में स्थान रहने वाला नहीं है।

बीता उसका शोक न करें

"यानी जो बन गया है उस के लिए हमें रोना नहीं है। जवाहरलाल ने इसका नाम 'यूनियन आफ इंडियन रिपब्लिक' (भारतीय प्रजातंत्र संघ) दिया है। यानी सभी इसमें मिलकर रहेंगे। अगर कोई भाग जाना चाहता है तो उसे हम रहने को मजबूर नहीं करेंगे। लेकिन जो रहेंगे उन्हें भाई बनाकर ही रखेंगे। हम उन्हें इस तरह रखेंगे कि वे महसूस करें कि हम भागेंगे नहीं क्योंकि हम अलग टुकड़े में नहीं हैं। हम संघ के वफादार रहेंगे तथा संघ की सेवा करेंगे।

"आज किसी ने मुझसे पूछा कि अब हिन्दुस्तानी का क्या काम ? यह प्रश्न नहीं उठाना चाहिए। अगर हम यह सोचें कि

उनके यहां उर्दू चले और हमारे यहां हिन्दी, तो हम पर वही, भिन्नता का इल्जाम साबित हो जायगा। हिंदुस्तानी का मतलब यहीं है कि आसान बोली बोली जाय और वही लिखी-पढ़ी जाय। पहले तो वह हमारे यहां चलती भी थी अब तो फारसी की भर-मार वाली उर्दू चलती है, वह जनता समझ नहीं सकती और हिंदी में जब ठूंस-ठूंस कर संस्कृत शब्द भरे जाते हैं तब वह भी जनता के काम की नहीं होती। अगर हम ऐसी भाषा में बोलें तो सप्रू साहब जैसों को हमें अपने यहां से निकाल देना पड़े। वे हैं तो हिन्दू पर उनकी मादरी जबान उर्दू है। मैं उनसे संस्कृत भरी हिन्दी में बातें करूंगा तो वे शिकायत करेंगे कि तू क्या बोल रहा है ? इसलिए हिन्दुस्तानी का—हिन्दुस्तानी सभा का—काम चालू रख कर उर्दू वालों से भी हमें अपनी मुहब्बत साबित करनी चाहिए।

हम परीक्षा में खरे उतरें

"मैं तो समझता हूं, जो हो गया है उसमें ईश्वर की मरजी है। वह हम दोनों की परीक्षा लेना चाहता है कि पाकिस्तान वाले क्या करते हैं और हिन्दुस्तान वाले कितने उदार बनते हैं। हमें इस परीक्षा में सफल होना है। मैं उम्मीद करता हूं कि हममें से कोई हिंदू ऐसा पागल बनने वाला नहीं है जो उनकी पाक चीज की कम इज्जत करे और उनकी अलीगढ़ यूनिवर्सिटी को मालवीयजी के हिन्दू विश्व-विद्यालय की तरह बढ़िया तालीमगाह न माने। अगर हम इनकी पाक जगहों को ढा देंगे तो हम खुद भी ढह जायंगे।

"इसी तरह पारसियों की अगियारी, यहूदियों के सीनेकाफ और दूसरे भी सब पूजास्थानों की हिंदू मंदिरों के समान ही हमें रक्षा करनी चाहिए। और हम यह भी कहें कि अछूतों का भी हमारे

यहां इतना आदर किया जाने वाला है जितना ऊंची-से-ऊंची जाति के सवर्ण लोगों का। सच्चा हिंदू धर्म वहीं है जिसमें सब धर्मों का समावेश हो।

जैसे को तैसा का ज़माना गया

" इसमें हमें सौ फीसदी सही उतरना है। 'जैसे को तैसा' वाला कायदा अमल में नहीं लाना है। वह तो पुराना कायदा हो गया। अब नया जमाना तो यह आया है कि अगर कोई गाली देता है तो उसका जवाब हम मुहब्बत से दें। झूठ के सामने सचाई का प्रयोग करें और कोई बेहूदापन और नीचपन करे तो उसके साथ हम उदार भाव से बरतें। यानी हर समय हर बात में हमारी आंख, कान, हाथ पाक रहें। तभी हमारी खैर है और तभी दुनिया जिंदा रहने वाली है। इसमें मुझे कोई शक नहीं है।

"ऐसा हम हरगिज न सोचें कि चलो मुसलमानों को जगह दे दी, अब हम अपने वहां मनचाहा बरतेंगे।"

: ३८ :

जान चली जाय पर हार मत मानो

नई दिल्ली, १३ जन १९४८

"भजमन प्यारे राम रहीम, भजमन प्यारे कृष्ण करीम"—यह धुन आज प्रार्थना में बोली गई थी। गांधीजी ने इस धुन का इतिहास बताते हुए कहा—"जब मैंने नोआखाली के देहातों में पैदल यात्रा की तब वहां पर लोग बहुत ही डरे हुए थे। और डरे हुए लोग राम का नाम नहीं ले सकते। फिर हमें ऐसे देहातों में और खेतों की मेडों पर से होकर चलना पड़ा कि शायद ही कोई नोआखाली में रहने वाला स्त्री या पुरुष इस तरह चला हो। पर मैं इस पैदल यात्रा में से जो शिक्षा ले सका वह दूसरे तरीके से नहीं ले सकता था। हिंदू और मुसलमान दोनों के खेतों में से हमें गुजरना पड़ता था। इसलिए वहां चलते-चलते हम दोनों नाम लेते थे।

हम कृष्ण व करीम दोनों को मानेंगे

"जब यहां भी ईश्वर है, वहां भी ईश्वर है और ईश्वर तो एक ही हो सकता है। तब दोनों अलग-अलग नाम लें और एक दूसरे के नाम बर्दाश्त न कर सकें यह तो पागलपन-सा ही दीखता है। तभी मैंने कल कहा था कि क्या हिंदुस्तान में से—हालांकि अब हिंदुस्तान नाम तो हमें छोड़ना है—रहीम का नाम लेने वाले को चला जाना होगा! और वहां—पाकिस्तान कहे जाने वाले हिस्से में—राम का नाम त्याज्य रहेगा? क्या वहां कोई कृष्ण कहेगा तो उसे निकाल दिया जायगा? वहां कुछ भी हो,

हमारे यहां यह नहीं हो सकता। हम कृष्ण को और करीम को दोनों को बराबर मानेंगे और दुनिया को भी बतायेंगे कि हम पागल बनने वाले नहीं हैं।

तुम्हें दुःख क्यों ?

"एक भाई ने मेरे पास इस आशय का एक बहुत सख्त पत्र भेजा है कि क्या तुम अब भी पागल ही रहोगे ? अब तो थोड़े दिनों में इस दुनिया से चले जाओगे तब भी कुछ सीखोगे नहीं ? यदि पुरुषोत्तमदास टंडन ने यह कहा कि 'सबको तलवार लेनी चाहिए, सिपाही बनना चाहिए और अपना बचाव करना चाहिए तो तुमको इस बात में चोट क्यों लगती है ? तुम तो गीता के पढ़ने वाले हो ! तुम्हें तो इन द्वंद्वों से परे हो जाना चाहिए और बात-बात में चोट लगा लेने या खुश होने की झंझट छोड़ देनी चाहिए। तुम उस कहानी वाले भोले साधु बाबा जैसी बात करते हो जो पानी में बहते हुए बिच्छू के डंक लगाने पर भी उसे हाथ से पकड़ कर बचाने की कोशिश करता था। अगर तुझ से अहिंसा का गीत गाये बिना रहा नहीं जाता तो कम-से-कम जो दूसरे रास्ते से जाते हैं, उन्हें तो जाने दो ! उनके बीच में रोड़ा क्यों बनते हो !'

इसका उत्तर देते हुए गांधीजी ने कहा—"अगर मैं स्थितप्रज्ञ रह सका तो अपनी एक सौ पच्चीस वर्ष की उम्र में से एक भी वर्ष कम जिंदा नहीं रहूँगा। अगर हम सब स्थितप्रज्ञ बनें तो हममें से एक भी आदमी को १२५ वर्ष से जरा भी कम जीने का कोई कारण नहीं है। वैसे भगवान चाहे तो भले मुझे आज ही उठा लें, पर अभी तुरन्त मैं चलने वाला नहीं हूं। मुझे अभी रहना है और काम करना है। पुरुषोत्तमदास टंडन मेरे पुराने साथी हैं। हम बरसों तक साथ-साथ काम करते आये हैं। मेरे जैसे ही

ईश्वर के वे भक्त हैं; जब मैंने यह सुना कि वे ऐसी बात कर रहे हैं, तब मुझे दुःख हुआ। मैंने कहा कि आज तीस बरस से भी अधिक समय से जो हमने सीखा है और जिसकी हमने लगन से साधना की है, वह क्या इस तरह गंवा दिया जायगा? बचाव के लिए तलवार पकड़ने की बात की जाती है पर आज तक मुझे दुनिया में एक भी आदमी ऐसा नहीं मिला है जिसने बचाव से आगे बढ़ कर प्रहार न किया हो। बचाव के पेट में ही वह पड़ा है। अब रही मेरे दिल पर चोट लगने की बात। अगर मैं पूरा स्थितप्रज्ञ बन गया होता तो मुझे चोट न लगती। अब भी चोट न लगे ऐसी कोशिश मैं कर रहा हूँ। कल जहां था वहां से आज कुछ-न-कुछ आगे ही बढ़ता हूं। अगर ऐसा नहीं हो तो रोज-रोज गीता में से स्थितप्रज्ञ के ये श्लोक बोलने में मैं दंभी ठहरता हूं। पर ऐसा तो नहीं हो सकता कि इन श्लोकों के बोलते भर ही कोई एक ही दिन में स्थितप्रज्ञ बन जाय।

कभी नहीं हारना है

"मैं राम-राम कहूं और वह मेरे हृदय में एक दिन में नहीं आता तो क्या मैं हार मान लूं? मेरा एक पंजाब का मित्र रामभजदत्त चौधरी था, जो अब तो (दुनिया से) चला गया है। कभी-कभी वह कविता बनाता था। जब जेल से आया तब यह कविता बना लाया था और खुद तो गा नहीं सकता था इसलिए अपनी पत्नी सरलाजी से कहता था कि यह भजन सुना दे। वह मीठे स्वर से सुनाती—'कदीं नहीं ओ हारणा, भांवे साड़ी जान जावे।' और मैंने अपने से कहा कि 'तुझे कभी नहीं हारना है।' रोज-रोज अगर स्थितप्रज्ञ गाता रहूँगा तो कभी-न-कभी मेरे हृदय में स्थितप्रज्ञता अवश्य समा जायेगी। जब ऐसा बन जाऊंगा तब टंडनजी के या किसी के कुछ कहने पर मुझे रोना या हंसना नहीं आयेगा। रोना-हंसना

दोनों ही ईश्वर को सुपुर्द कर दूंगा और दुखी नहीं होऊंगा।

अपना स्वभाव क्यों छोड़ूं ?

"बिच्छू को बचाने वाले बाबाजी की मिसाल अच्छी ही है। उनसे जब किसी नास्तिक ने कहा था कि 'बिच्छू के बचाने के फेर में क्यों पड़े हो! उसका तो स्वभाव ही डंक मारने का है। उसे मार ही क्यों नहीं डालते! तब उस बाबा ने जवाब दिया था, 'अगर बिच्छू का स्वभाव डंक मारने का है तो मनुष्य का स्वभाव भी तो बर्दाश्त करने का है। बिच्छू जब अपना स्वभाव नहीं छोड़ता तो मैं कैसे अपने स्वभाव को छोड़ूं ? क्या बिच्छू डंक मारता है तो मैं भी बिच्छू बन जाऊं और उसे मार डालूं ?'

"अखीर में उस विद्वान दोस्त ने मुझे सीख दी है कि तू जिद्दी आदमी है। अगर तू अहिंसा की अपनी हठ नहीं छोड़ता तो दूसरों को तो मत रोक, तो क्या मैं दंभी बन जाऊं ? दुनिया को भी धोखा दूं ? दुनिया फिर यही कहे कि हिंदुस्तान में एक नामधारी महात्मा पड़ा है जो अहिंसा की तो बड़ी मीठी-मीठी बात करता है, पर उसके साथी मार-काट करते रहते हैं। यानी मैं ऐसा बनूं कि 'मुख में राम और बगल में छुरी।'

ट्रावनकोर का जिक्र करते हुए गांधीजी ने कहा:—"एक बड़े दुख की बात हो गई है। मैं तो राजा-महाराजाओं का दोस्त हूं। और उनका सेवक रहा हूं। धनी लोगों का भी सेवक रहा हूं। क्योंकि मैं मिस्कीन हूं, भंगी हूं और उन राजाओं और श्रीमंतों को भंगीवास में खींच लाता हूं ताकि वे उनकी कुछ मदद करें। वे कब भंगीवास को देखते। पर मैं बड़ा मेहतर हूं तब मेरे पास यहां वे चले आते हैं।

कैसा आश्चर्य ?

"मैंने अखबारों में सर सी० पी० रामास्वामी का ऐलान देखा

वे बड़े विद्वान व्यक्ति हैं। ऐनीबेसेंट के शिष्य रहे हैं। जब मैं हरिजन यात्रा में था तब उनके निमंत्रण पर उनके यहां त्रावनकोर में मेहमान बनकर गया था। लड़ने नहीं पर मिलकर काम करने को गया था। उनसे यह बात सुनकर अच्छी नहीं लगती। अगर अखबार में गलती हो तो वे मुझे माफ करें, सही हो तो मेरी बात पर गौर करें। उन्होंने कहा है कि पन्द्रह अगस्त से जब हिंदुस्तान स्वतंत्र होगा। तब त्रावनकोर आजाद हो जायगा और उनकी वह आजादी ऐसी है कि आज से ही त्रावनकोर की स्टेट कांग्रेस के लिए सभाबन्दी करदी गई है। खबर यहां तक है कि सी० पी० रामास्वामी ने उन लोगों को त्रावनकोर छोड़कर चले जाने के लिए कहा है जो त्रावनकोर की स्वतंत्रता की मुखालफत में हों। और यह आज्ञा वे सज्जन दे रहे हैं जो खुद त्रावनकोर के नहीं, बल्कि मद्रास के रहने वाले हैं। वे किस तरह ऐसा कह सकते हैं।

"ब्रिटिश राज में आज तक त्रावनकोर को अंग्रेज शाहनशाही को सलामी देनी पड़ती थी। तो अब हिन्दुस्तान के प्रजातंत्र संघ में वह मनमानी कैसे कर सकता है। वह अब हमारा राज्य है यानी भारत के प्रजाकीय राज्य को उसे (त्रावनकोर को) अपना ही राज्य समझना चाहिए। मैंने बताया है कि प्रजाकीय राज में राजा और मेहतर की कीमत एक-सी रहनेवाली है। मनुष्य के नाते दोनों की कीमत एक ही रहेगी। पर दोनों की बुद्धिमत्ता में भेद हो सकता है। अगर त्रावनकोर के महाराजा के पास बड़ी अकल है तो उसे लोगों की सेवा में उन्हें लगानी चाहिए। अगर प्रजा को कुचलने में वे अपनी बुद्धि दौड़ाते हैं तो उनकी वह अकल फिजूल की है। अपनी सारी रैयत को कुचल कर और मार डालकर क्या त्रावनकोर नरेश निरी जमीन पर राज करेंगे?

"सुना जाता है कि हैदराबाद भी वही करने जा रहा है। अभी उसने साफ नहीं बताया है पर वे कह रहे हैं कि हम दोनों को देखेंगे, न इधर जायेंगे न उधर। लेकिन निजाम स्वतंत्र होगा तो किससे होगा ? वहां नब्बे प्रतिशत तो हिन्दू हैं और उनमें कई बड़े गण्य-मान्य व्यक्ति हैं। अगर निजाम व त्रावनकोर या दोनों की स्वतंत्रता ऐसी नहीं है कि जिसमें वहां की प्रजा अपनी आजादी महसूस नहीं करती है तो वे समझें कि उनका राज्य नहीं रह सकता। आज समय बदल गया है। वे समय को पहचानें।

अंग्रेज दगा न करे

"जो अंग्रेज यहां अच्छा करने आये हैं वे ऐसा ही करके जायेंगे क्या ? मैं अंग्रेजों को समझ नहीं पाता। लोग मुझे पागल बताते हैं कि 'तुम सब किसी पर विश्वास करते रहते हो—एक ओर मुझे इसलिए पागल बताया जाता है कि मैं अहिंसा की जिद्द नहीं छोड़ता तो दूसरी ओर अंग्रेज पर भरोसा करने पर मुझे पागल बताया जाता है। वे कहते हैं, तुम क्यों माउन्टबेटन की बात मानते हो ? अगर वे सच्चे आदमी हैं तो क्या इतने कुशल नौसेनापति होकर भी इतनी छोटी-सी बात नहीं देख पाते कि करीब छः सौ राजाओं को—जो कल तक बिना किसी के बताये एक तिनका तक नहीं तोड़ सकते थे—आज मनचाहा करने दिया जाय तो फिर आजादी एक उलझन ही हो जाती है।' यह तो ईश्वर की मेहर है कि काफी राजा लोगों ने कह दिया है कि हम भारत में ही रहेंगे।

"अंग्रेज कहते हैं कि 'हम जाने वाले हैं। दगा नहीं करेंगे।' तो हम प्रार्थना करें कि अंग्रेजों को और उनके बड़े नुमाइंदा को भगवान सन्मति दे। वे बहादुर बनें और सत्यनिष्ठ रहें ताकि

जब वे हिंदुस्तान से चले जांय तो कोई उन्हें गाली न दें कि वे हिंदुस्तान से गये तो बुरा करके गये।'

मेरा मानस तो ऐसा बना है कि वे दो महीने भी न रुकें, आज ही चले जांय। फिर बाद में हम आपस में सब बात मिल-जुलकर ठीक कर लेंगे। और मैं तो यह भी कहता हूं कि अगर हमें आपस में मरना कटना है तो भी वह हम भुगत लेंगे, पर अंग्रेज यहां से चले जांय।

"और, दोनों राजाओं से (ट्रावनकोर और निजाम से) मैं कहूंगा कि आप रहें, लेकिन रैयत के सेवक बन कर रहें। अगर कांग्रेस भी रैयत की सेवक नहीं रहेगी तो वह भी टिक नहीं सकती।

"राजा लोग यह न कहें कि कांग्रेस कौन होती है पूछने वाली! कांग्रेस ने राजाओं की काफी सेवा की है। मैं जब पढ़ता था तब की बात है कि मैसूर की राजगद्दी का कुछ किस्सा बिगड़ गया था और कांग्रेस ने मैसूर की गद्दी दिलवा दी थी। काश्मीर में भी कुछ ऐसा ही किस्सा हो गया था तब कांग्रेस ने सहायता दी थी और बड़ौदा की भी एक बार काफी मलामत होने लगी थी तब उस अपमान में से उसे (बड़ौदा को) छुड़वाने के लिए कांग्रेस ने कम प्रयत्न नहीं किया था। कांग्रेस ने यह सोचा था कि राजाओं को अपना ही समझा जाय। वे हमारा क्या बिगाड़ेंगे? समय आने पर हमारे सहयोगी बन जायंगे। इसलिए कांग्रेस ने उनका विरोध नहीं किया। अब अगर राजा यह कहते हैं कि 'मतो राजा हैं' तो यह ठीक बात नहीं है। उन्हें चाहिए कि वे विधान-परिषद् में आवें बल्कि अपनी प्रजा के प्रतिनिधियों को भेजें।

"अगर वे ऐसा नहीं करते तो मालूम होता है कि हिंदुस्तान के नसीब में झगड़ा ही झगड़ा लिखा है। अभी हिंदू व मुसल-

मान का झगड़ा पूरा निपटा नहीं है वहां अब राजाओं से लड़ने की बात सामने आ रही है। फिर सिविल सर्विस वाले हैं। मैं समझता हूं कि सिविल सर्विस ठीक तरह से सुलझ कर रहेगी और किसी झगड़े का बायस नहीं बनेगी। लड़ाई ही बढ़ने वाली हो तो और भी बहुत से छोटे-छोटे फिरके पड़े हैं जो कहेंगे कि हम इधर से खायेंगे और हम उधर से मुल्क का हिस्सा हड़पेंगे। लेकिन फिर हिन्दुस्तान का क्या होगा? इस तरह तो किसी के हाथ में कुछ रह जाने वाला नहीं है। सारा देश बर-बाद हो जायेगा।

"मेरे नसीब में जन्म से लड़ाई पड़ी है। मैं चाहता हूं कि वह और न लड़नी पड़े। फिर भी दिल को यह बर्दाश्त नहीं होता कि छोटे फिरके आपस में लड़ते रहें और हम पाई हुई आजादी खो बैठें।

"अंत में मैं कहूंगा कि हम राम-रहीम और कृष्ण-करीम रटते रहें। राजा लोगों को हम गाली न दें। पर उनसे यह जरूर कहें कि आप प्रजा के सेवक बन कर ही रह सकते हैं, स्वामी बन कर रहने की आपको कोई गुंजाइश नहीं है।"

: ३६ :

राजा जनता को अपना मालिक माने

नई दिल्ली, १४ जून १९४७

आज प्रार्थना में गाये गये भजन का उल्लेख करते हुए गांधीजी ने कहा—"गजराज की प्रार्थना का यह भजन मुझे बहुत प्रिय है। गजेन्द्र मोक्ष की कथा हमारे यहां बड़े ऊंचे प्रकार का साहित्य है। इतना शक्तिशाली होते हुए भी जब गजेंद्र हार जाता है और देखता है कि अपने बल से अब काम नहीं चल सकता, ग्राह उसे डुबा ही देगा, तब वह सोचता है कि अब भगवान की शरण लेनी चाहिए।

"हमारी भी ऐसी ही हालत है। इस समय हम समझ रहे हैं कि हम हार गये हैं। लेकिन हम हारे नहीं हैं। जो ईश्वर को अपने पास समझता है वह कभी नहीं हारता।

"मनुष्य को ईश्वर ने बनाया ही ऐसा है कि जब वह करीब-करीब डूबने को होता है, जब उसका सब कुछ लुट जाता है तभी उसे ईश्वर को पुकारने की बात सूझती है। जब वह अमन-चैन से होता है तब वह ईश्वर को नहीं पुकारता। ईश्वर ने ऐसा ही खेल रच रखा है।

ट्रावनकोर से दीवान का तार

"कल मैंने ट्रावनकोर के दीवान सर सी० पी० रामस्वामी की बात आप लोगों को सुनाई थी। आजकल तो तार और रेडियो का जमाना है। उनके कानों तक मेरी वह बात पहुंच गई और उन्होंने एक लम्बा-चौड़ा तार मेरे पास भेज दिया है। उन्होंने बहुत से खुलासे किये हैं, पर ट्रावनकोर कांग्रेस-कमेटी की सभा

करने और जुलूस निकालने को इजाजत नहीं दी है। उसके बारे में वे कुछ नहीं बोले हैं। इसमें मुझे बुराई नजर आती है। यह लक्षण अच्छे नहीं हैं। वे कहते हैं कि ट्रावनकोर तो सदा से आजाद रहा है।

"बात ठीक है, हमारे देश में पुराने जमाने में सैकड़ों राजा होते थे। पर हम हिन्दुस्तान को एक मानते थे। ऋषि-मुनियों ने देश भर में जगह-जगह तीर्थ-स्थानों की रचना की और दूसरी भी ऐसी व्यवस्थायें कर दीं कि सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक रूप से सारे मुल्क को हम एक ही अनुभव करते थे।

"पर राजकीय क्षेत्र में हमारा देश कभी एक नहीं रहा। चंद्रगुप्त या अशोक के साम्राज्य में हिंद एक हो गया था, पर तब भी एक छोटा-सा दक्षिण कोना उसके साम्राज्य से बाहर था। जब अंग्रेज आये तभी पहली बार डिब्रूगढ़ से लेकर करांची तक और कन्या कुमारी से लेकर काश्मीर तक सारा देश एक हो गया। हमारे भले के लिए नहीं पर अपने राज्य की भलाई के लिए अंग्रेजों ने ऐसा किया। इस अंग्रेजी राज में वह आजाद था ऐसा ट्रावनकोर का कहना गलत है। राजा लोग आजाद क्या थे, अंग्रेजों का गुमाश्ता थे। पूरी तौर से उनकी मातहती में दबे हुए थे। अब, जब अंग्रेजी राज जा रहा है और लोगों के हाथ में राज आ रहा है तब किसी भी राजा का यह कहना कि हम तो आजाद थे और आजाद रहेंगे, बिलकुल गलत चीज है और वह जरा भी शोभा की बात नहीं है। सर सी० पी० रामास्वामी तो मेरे दोस्त रहे हैं, सब बात सही, लेकिन मेरा लड़का ही क्यों न हो, सही बात कहने से मैं क्यों रुकूं? हिंदुस्तान जब आजाद होता है तब अगर वे यही कहते हैं कि ट्रावनकोर आजाद है तो इसका मतब यह है कि वे आजाद हिंद से लड़ना चाहते हैं।

बेकार फसाद न बढ़ावें

"मैं तो उनसे कहूंगा कि आप तख्त पर से नीचे उतरिए और ट्रावणकोर के लोगों के खादिम बनकर रहिये। जब अंग्रेजों ने आपसे एक बार राज्य छीन लिया और कुछ पैसे लेकर तथा अपनी रैयत को कुचलने का आपको अधिकार देकर वह राज आपको लौटा दिया तो उसमें इतनी फख्र की बात क्या थी? फख्र की बात तब है जब आप जनता को अपना मालिक मानें। वैसे तो हिन्दुस्तान गिरा नहीं है और अगर वह अपनी परेशानी में पड़ा है तो यह शराफत की बात नहीं है कि आप जो आदमी गिर पड़ा है उसको ऊपर से लात धर दें। हिंदुस्तान के एक चौथाई और तीन चौथाई ऐसे दो टुकड़े होते हैं तो उन टुकड़ों की बात से आपका कोई संबंध नहीं। आप शरीफ बनें और समझें। हिंद में बेकार फसाद न बढ़ावें।

एक दुःख की बात

"रावलपिंडी के कुछ भाई आये हैं। उन्होंने कुछ बातें सुनाई। सुचेता कृपलानी से भी वहां के दुःख भरे हाल मालूम हुए। पर एक बात जान कर बहुत दुःख हुआ। वह यह कि "जब तक पाकिस्तान की बात तय नहीं हुई थी तब तक तो हालात कुछ ठीक भी थे, पर अब तो वहां पर मुसलमान बड़ा त्रास दे रहे हैं। वहां के मुसलमान कह रहे हैं कि पाकिस्तान क्या है यह हम अब दिखा देंगे। सबको मुसलमानों के गुलाम बनायेंगे।"

"यहां प्रार्थना में मैं इस बात की चर्चा इसलिए कर रहा हूं कि मेरी बात सभी मुसलमानों तक पहुंच जाय। जिना साहब तक तो पहुंचेगी ही। अगर मैं गलत कहता हूं तो सब मुसलमान भाई मुझे डांटें और कहें कि ऐसी कोई बात नहीं है। पेशावर में आकर देखो तो सही कि सब हिंदू, सिख, औरत, बच्चे कितने

आराम से हैं।

"पर मेरे पास नाम पड़े हैं। दो-चार मामूली आदमियों ने ऐसा कहा हो तो समझा जा सकता है कि हर जगह कुछ गैर-जिम्मेदार आदमी होते ही हैं। लेकिन सारे मुसलमान अगर इस तरह सोचते और कहते हों तो यह बहुत बुरा है।

"जिना साहब तो कहते रहे हैं कि मुसलमानों की अकसरियत में सब छोटी तादाद वाले चैन से रहेंगे। इस के बदले यह क्या हो रहा है? पाकिस्तान बन जाने पर भी अगर ऐसा रहा, झगड़ा बढ़ता गया तो इसका यह मतलब हुआ कि हम बेवकूफ बनते रहेंगे। यानी वे तो सब सरदार बनेंगे और जो कोई विधर्मी होगा उसे उनके यहां गुलाम बनना होगा या नौकर बनकर रहना होगा, और यह कबूल करना पड़ेगा कि वह उनसे नीचा है। अगर यह सच है तो बहुत बुरी बात है। मैं तो यह सुनने को अधीर हूं कि पाकिस्तान में सबको बढ़िया तरीके से रखा गया है और मंदिर भी अच्छी हालत में हैं। जब ऐसा देखूंगा तब उनके प्रति मेरा सिर झुकेगा। अगर ऐसा न होगा तो समझूंगा कि जिना साहब गलत बात कहते थे और माउन्टबेटन साहब के लिए भी मेरे दिल में शक पैदा हो जायगा कि इतने बड़े सेना-पति होते हुए भी वे समझ नहीं पाये और उन्होंने जल्दबाजी की। मार-काट होती थी तो होती रहती पर वे यह कह सकते थे कि तलवार के सामने झुक कर हम कुछ नहीं देंगे।"

: ४० :

कमजोरों को आहसी को स्थान नहीं

नई दिल्ली, १५ जून १९४७

आज प्रार्थना के बाद महात्मा गांधी का निम्न लिखित सन्देश सुनाया गया—

"मुझे अफ़सोस है कि आज मुझे मौन जरा जल्दी लेना पड़ा, क्योंकि कल तीसरे पहर कार्य-समिति की सभा होने वाली है। इसलिए अपना सन्देश लिख कर देता हूं। दुनिया के कई मुल्कों से मेरे पास चिट्ठियां आई हैं जिसमें मुझसे एक सवाल पूछा गया है जिसका जवाब मैं आज आप लोगों के मार्फत देना चाहता हूं। वह प्रश्न संक्षेप में यह है—'आपके देश के राजनैतिक दल अपने सियासी मकसद को प्राप्त करने के लिए हिंसा का प्रयोग क्यों करते हैं? दिन-ब-दिन आपके यहां हिंसा बढ़ती ही जा रही है। क्या आप इसका कारण बता सकते हैं? तीस साल तक आपने अंग्रेजों के साथ अहिंसात्मक लड़ाई की, उसका यह नतीजा क्यों? क्या यह होते हुए, आप अभी भी जगत को अहिंसा का सन्देश देंगे?'

बहादुरों की अहिंसा

"इस सवाल का जवाब देते हुए मुझे स्वीकार करना पड़ेगा कि मैं तो दिवालिया हो गया हूं—लेकिन अहिंसा का दिवाला कभी नहीं निकल सकता। मैं पहले भी कह चुका हूं कि जिस अहिंसा का हमने इन तीस साल में उपयोग किया वह निर्बल की अहिंसा ही रही है। यह उत्तर काफी संतोषजनक है। मेरा

यह उत्तर संतोषजनक है या नहीं, यह तो आप लोग ही कह सकते हैं। पर इतना तो मुझे स्वीकार करना पड़ेगा कि आज की बदली हुई हालत में कमजोरों की अहिंसा के लिए जगह नहीं है। सच तो यह है कि हिंदुस्तान को आज तक वीरों की अहिंसा के प्रयोग करने का मौका ही नहीं मिला। अगर मैं बराबर कहता रहूं कि बहादुरों की अहिंसा के समान दुनिया में दूसरी कोई सच्ची शक्ति नहीं है तो उससे कोई खास फायदा नहीं हो सकता। इस सत्य को साबित करने के लिए तो बार-बार और विस्तार से जीवन में उसे प्रकट करने की जरूरत है। जहां तक मुझसे बन पड़ता है मैं तो अपने जीवन में उसे प्रकट करने की कोशिश कर ही रहा हूं। लेकिन शायद मेरी काबलियत कम हो, शायद मैं शेखचिल्ली हूं—तो फिर मैं लोगों को अपने पीछे चलने को क्यों कहूं जब उसका कुछ नतीजा नहीं ? यह सवाल पूछने के लायक है और मेरा उत्तर तो सीधा है। मैं किसी से नहीं कहता कि वह मेरे पीछे चले। हर एक को अपनी अन्तरात्मा की आवाज का हुक्म मानना चाहिए। अन्तरात्मा की आवाज न सुन सकें तो जैसा ठीक समझें वैसा करना उचित होगा, लेकिन किसी भी सूरत में दूसरों की नकल नहीं करना चाहिए।

अनुभव की उपयोगिता

"एक दूसरा महत्त्वपूर्ण प्रश्न भी मुझसे यह पूछा गया कि अगर आपकी पक्की राय है कि हिंदुस्तान गलत रास्ते पर जा रहा है तो फिर आप भूल करने वालों के साथ वास्ता क्यों रखते हैं। अपने बूते आप अपनी काश्त खुद क्यों नहीं कर लेते औरइस बात का विश्वास क्यों नहीं रखते कि अगर आपका रास्ता ठीक है तो आपके पुराने साथी लौटकर आपके पास आजायेंगे ? यह सवाल मुझे अच्छा लगता है। मैं उसके खिलाफ बहस नहीं

छोड़ूंगा। इतना ही कहूंगा कि मेरी श्रद्धा व मेरा ईमान ऐसा ही है जैसा पहले से था यानी मेरी समझ में उसकी ताकत कम नहीं पड़ी है यह मुमकिन है कि मेरा तरीका गलत रहा हो। मुश्किल या उलझन में पुराने नमूने या कठिनाई और उलझन के समय पुराने उदाहरण और अनुभव काम में आते हैं। लेकिन इन्सान को यंत्र बन के काम नहीं चलाना है।

"इसलिए मैं अपने सब सलाहकारों से यह प्रार्थना करता हूँ कि वे मेरे साथ धीरज रखें और इससे भी ज्यादा यह कि वे मेरी इस श्रद्धा में हिस्सेदार हों कि इस दुःखी जगत की पीड़ा हटाने के लिए कठिन होने पर भी सिवा अहिंसा के और कोई सीधा और साफ रास्ता नहीं है। मेरे जैसे लाखों आदमी इस सत्य को भले इस जीवन में सिद्ध न कर पायें, यह उनकी कमजोरी तथा नाकामयाबी होगी न कि अहिंसा की।

त्रावणकोर समझे

"एक और बात मैं आप से कहना चाहता हूं। मेरा मौन होते हुए भी त्रावणकोर के कुछ मित्र मझे आज मिलने आये थे। उन्होंने मुझे यकीन दिलाया कि जो भी मैंने उस रियासत के बारे में कहा उसमें जरा भी अत्युक्ति नहीं है। यह भी बताया कि जो जलसे किये गये उन पर लाठी चार्ज हुए और कल लगभग ३५ व्यक्ति गिरफ्तार भी किये गये। वहां आम राय का गला घोंटा जा रहा है जो भी हो मुझे जरा भी शक नहीं कि आजाद हिन्दुस्तान में एक रियासत का अपनी आजादी का ऐलान करना एक बेहूदा बात है। इसका मतलब तो यह भी हो सकता है कि उन्होंने हिन्दुस्तान के करोड़ों आजाद व्यक्तियों पर लड़ाई का ऐलान कर दिया है। यह कतई नासमझी की बात है

खासकर तब जब कि महाराजा साहब के साथ उनकी जनता का सहारा नहीं है जब तक अंग्रेज सरकार उनके पीठ के पीछे थी। तब तक ऐसा करना मुमकिन था लेकिन अब तो हालत बिलकुल बदल गई है।"

: ४१ :

हम न्याय करें

-नई दिल्ली, १६ जून १९४७

प्रार्थना के बाद गांधीजी ने कहा—

"आज सबेरे जब मेरा मौन था तो श्री पुरुषोत्तमदास टंडन आये। मैंने आपको बताया था कि जब टंडनजी ने कहा कि हरेक स्त्री-पुरुष को शस्त्रधारी बनना चाहिए और स्वरक्षा करनी चाहिए, तो यह सुन कर मुझे कैसा बुरा लगा था। एक पत्र-लेखक ने मुझसे पूछा था कि गीता पढ़ते रहने पर भी इस तरह आपको बुरा कैसे लग सकता है। उस पत्र से यह भी पता चलता था कि टंडनजी 'शठंप्रतिशाठ्यं'का सिद्धांत मानते हैं। तब टंडनजी से मैंने पूछा कि आप क्या मानते हैं ? इसका खुलासा देते हुए टंडनजी ने बताया कि "मैं 'शठंप्रतिशाठ्यं' के' सिद्धांत को तो नहीं मानता हूँ, लेकिन स्वरक्षा के लिए शस्त्रधारी बनना जरूरी है, ऐसा मैं मानता हूँ। गीता ने भी यही सिखाया है।"

"तब मैंने टंडनजी से कहा कि 'इतना तो आप उस भाई को लिख दीजिये कि आप 'शठं प्रति शाठ्यं' के मानने वाले नहीं हैं ताकि वे भ्रम में न रहें।' और स्वरक्षा के लिए हिंसा करने की बात गीता में कहीं है, यह मैं नहीं मानता। मैंने तो गीता का अलग ही अर्थ निकाला है। मेरी समझ में गीता ऐसा नहीं सिखाती है। गीता में या दूसरे किसी संस्कृत ग्रंथ में अगर ऐसी बात लिखी है तो मैं उसे धर्मशास्त्र मानने को तैयार नहीं हूँ महज संस्कृत में कुछ लिख देने से कोई वाक्य शास्त्र-वाक्य नहीं बन जाता।"

"टंडनजी ने मुझसे कहा कि 'तू ने तो उन बन्दरों को मारने के लिए भी लिखा था, जो बेहद पीड़ा पहुंचाते हैं, और खेती उजाड़ देते हैं।' लेकिन मैं तो (गांधीजी) किसी भी प्राणी को और यहां तक चींटी तक को भी मारना पसन्द नहीं करता। फिर भी खेती-बाड़ी का सवाल अलग है, और मनुष्य-मनुष्य का अलग है।"

"तब टंडनजी ने कहा, "शठंप्रतिशाठ्यं" यानी एक दांत के बदले में दो दांत निकालने की बात हम न करें और एक दांत के बदले में एक दांत व एक थप्पड़ के बदले में एक थप्पड़ की बात भी नहीं करेंगे। परन्तु हाथ में शस्त्र नहीं लेंगे। अपनी शक्ति नहीं दिखायेंगे तो स्वरक्षा किस तरह होगी?"

"इसके बारे में मेरा यह जवाब है कि स्वरक्षा जरूर की जाय। पर मेरी स्वरक्षा कैसे होगी! कोई मेरे पास आता है और कहता है 'बोल, राम-नाम लेता है या नहीं? नहीं लेगा तो यह तलवार देख!' तब मैं कहूंगा 'यद्यपि मैं हर दम राम-नाम लेता हूं, लेकिन तलवार के बल पर मैं हरगिज न लूंगा चाहे मारा क्यों न जाऊं?' और इस तरह स्वरक्षा के लिए मैं मरूंगा। वैसे कलमा पढ़ने में मेरा कोई धर्म जाने वाला नहीं है। क्या हो गया अगर मैं ठेठ अरबी में बोलूं कि 'अल्लाह एक है और उसका रसूल एक ही मुहम्मद पैगम्बर है।' ऐसा बोलने में कोई पाप नहीं और इतने भर से वे मुझे मुसलमान मानने को तैयार हैं तो मैं अपने लिए फख्र की बात समझूंगा। लेकिन जब तलवार के जोर से कोई कलमा पढ़वाने आवेगा तब कभी भी कलमा न पढ़ूंगा। अपनी जान देकर मैं स्वरक्षा करूंगा। इस बहादुरी को सिद्ध करने के लिए मैं जिंदा रहना चाहता हूँ। इसके अलावा और तरीके से मैं जीना नहीं चाहता।

"मैने कहा है कि भौगोलिक दृष्टि से हमारी भूमि के टुकड़े भले होजायं पर हमारे दिलों के टुकड़े नहीं होने चाहिएं। पर मेरी कौन सुने ? एक दिन था जब गांधी को सब मानते थे, क्योंकि गांधी ने अंग्रेजों के साथ लड़ने का रास्ता बताया था और वे अंग्रेज भी कितने, केवल पौन लाख। पर उनके पास इतना सामान था, इतनी ताकत थी कि बकौल एनीबीसेंट–रोड़े का जबाब गोली से दिया जाता था और हमारी हिंसा चल नहीं पाती थी। तब अहिंसा से काम बनता दीखता था इसलिए उस समय गांधी की पूछ थी। पर आज लोग कहते हैं कि गांधी हमें रास्ता नहीं बता सकता है इस वास्ते स्वरक्षा के लिए हमें शस्त्र हाथ में लेने चाहिए ! तो फिर यही कहना पड़ेगा कि हमने तीस वर्ष बेकार खोये जो अहिंसा की लड़ाई लड़ी। हिंसा के सहारे तुरन्त ही उनको (अंग्रेजों को) हटा देना चाहिए था।

"लेकिन मेरे ख़याल में हमने तीस वर्ष बेकार नहीं गंवाये हैं। हम पर बेहद जुल्म ढाये गये फिर भी हम अहिंसक रहे, यह अच्छा ही किया। उन्होंने अपने अस्त्र-शस्त्र सब हमारे खिलाफ बरसाये पर हम दबे नहीं। और इस तरह कांग्रेस का पैगाम सारे हिंदुस्तान में फैला। लेकिन वह सात लाख देहातों में ठीक तरह से नहीं फ़ैला, क्योंकि हमारी अहिंसा नामर्द की अहिंसा थी। उस समय हमको किसी ने एटम बम बनाना नहीं बताया था। अगर हम वह विद्या जानते होते तो उसीसे अंग्रेजों को खत्म करने की सोचते। पर दूसरा कोई चारा नहीं था इसलिए तब मेरी बात मानी गई और मेरा सिक्का जमा। पर लोग कहते हैं कि आज मेरा प्रभाव किसी पर नहीं है।

"लेकिन आप लोग जो रोज यहां प्रार्थना में आते हैं तो क्यों आते हैं। आप पर मेरा कौन-सा जोर है ? आप प्रेम से बंधकर यहां आते हैं और शान्ति से यहां बैठकर सुनते हैं।

अगर इसी तरह मेरा सिक्का आज सिर्फ़ हिन्दुओं पर ही चले तो आप देखेंगे कि बहादुरों की अहिंसा से दुनिया में हिन्दुस्तान का सिर ऊंचा उठ जायगा। मुसलमानोंसे मैं नहीं कहता। उन्होंने तो मुझे अपना शत्रु मान रखा है। पर हिन्दुओं व सिखों ने मुझे शत्रु नहीं बनाया है। लेकिन हिंदू मेरी अहिंसा की बहादुरी की बात मानें तो हमारे पास जो कुछ अस्त्र-शस्त्र होंगे, उन्हें मैं दरिया में और बम्बई की 'बेक बे' खाड़ी में डाल देने को कहूंगा और बहादुरों को अहिंसा का अमल करना सिखा दूंगा।

"कांग्रेस-महासमिति में तो मुट्ठी-भर आदमी थे। उनमें भी कुछ के दिलों में संकुचित विचार हैं, यह मैंने देखा, क्योंकि मैंने दो एक व्याख्यान सुने भी थे। लेकिन मुझे तो मुल्क-भर की बात का पता चलता है। मैं उन करोड़ों का बना हुआ हूं। वे कहते हैं कि अब मुसलमान कहां जायेगा? आज जैसा मुसलमान कर सकता है उससे कहीं ज्यादा हम कर सकते हैं, क्योंकि हम तादाद में ज्यादा हैं। अंग्रेजों के जाने पर हम उन पर अपना राज जमाएंगे। हम अपने को राज करने का हकदार इसलिए मानते हैं कि हम ज़ेल गये, हमने लाठियां खाईं, और हमने कोड़े भी खाये। पर ऐसा कहना हमें शोभा नहीं देता। यह सारी हिंसा है। अगर आप अहिंसा की बात सुनना नहीं चाहते और हिंसा की बात ही सीखते हैं तो उसमें हमारी शर्म है। इस तरह 'जैसे को तैसा' का न्याय करेंगे तो समझ लीजिए कि दोनों धर्मों का नाश है। इससे इस्लाम भी मरेगा और हिंदू धर्म भी।

"अगर हम ज़बरदस्तों की अहिंसा अपनायेंगे तो उन्होंने जो पाकिस्तान ले लिया है वह महज खिलौना रह जाने वाला है। अहिंसा से हम कुछ खोयेंगे नहीं!

"मैं तो पाकिस्तान और हिन्दुस्तान को अलग मानता ही

नहीं हूं। मुझे पंजाब जाना हो तो मैं पासपोर्ट लेने वाला नहीं हूं। सिन्ध भी मैं ऐसे ही चला जाऊंगा और पैदल जाऊंगा। कोई मुझे रोक नहीं सकेगा। भले ही वे मुझे दुश्मन कहें; पर जब मैं जाऊंगा तो किसी असेम्बली की मेम्बरी करने नहीं जाऊंगा, सेवा के लिए जाऊंगा। मेरी जिन्दगी में वह पहला मौका न होगा। नोआखाली में चला ही गया था। और अब भी कोई न समझे कि वह इस्लामिस्तान में होने को है, इसलिए मैं वहां नहीं जाऊंगा। मेरा दिल वहीं पड़ा है और वहां जाकर मैं हिन्दुओं से कहूंगा कि अगर आप सच्चे हिंदू हैं तो—चाहे कितनी ही मार-काट करने वाले आपके चारों ओर क्यों न फिरते हों—आप किसी का डर न मानें।

"लेकिन हम बहादुरों की अहिंसा तभी रख पायेंगे जब हम शराबखोरी और चोरी-जारी को छोड़ेंगे। अगर लगातार हम व्यसन-व्यभिचार में पड़े रहें तो हिंद आजाद होकर भी उसकी आजादी व्यर्थ जाने वाली है।

"बहादुरी तो मुझमें तब आयेगी जब मैं मारा जाऊं—तो भी मारने वाले के भले के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता रहूंगा। ईश्वर का नाम भी मैं केवल मुंह से न लूंगा; पर उसे अपने हृदय में जिन्दा बैठा हुआ देखूंगा। मन्दिर-मस्जिद में उसे ढूंढने नहीं जाऊंगा। अगर सब हिन्दू ऐसे हो जायं तो बहुत काफी हैं। वे ऐसी बहादुरी की अहिंसा न भी सीखें और केवल थोड़े से सिख ही बहादुरों की अहिंसा अपना लें और खालसा का एक-एक व्यक्ति सवा लाख के बराबर सच्चा बहादुर बने तो हिन्दुस्तान का काम बन जाय।

"पर आज तो बादशाह खान, जो इतने बहादुर रहे हैं, बहादुर नहीं बन सकते। वर्षों से ये पठानों को अहिंसा सिखाते आये हैं; पर आज वह कहते हैं कि 'मैं नहीं कह सकता कि मैं

हिंदुस्तान में हूं। अगर कहूंगा तो बिहार से दस गुना कांड वहीं हो जायगा। लेकिन वे क्या करें? अपने पठान भाइयों को कहां तक साहस दिलावें। अहिंसा कोई हल्दी-मिर्च तो है नहीं जो बाजार से मोल आ जायगी। अगर वे सच्ची अहिंसा दिखा पाते तो अकेला सीमाप्रांत समूचे हिंदुस्तान को बचा सकता था।

"मेरे पास नागपुर तथा बम्बई से दो पत्र आये हैं जो सही हों तो दुख की बात है। क्या आप अपने राष्ट्रीय मुसलमान भाइयों को, जिन्होंने आपके साथ इतनी यातनायें झेलीं, ऐसा कह देंगे कि आप हिंदुस्तान के नहीं हैं? मैं तो कहूंगा कि लीगी मुसलमान से भी हम न कहें कि आप जाइये! ऐसा कहना अहिंसा का न्याय नहीं है। फिर तो जिना की दो राष्ट्र की बात ठीक ही कहलायेगी और दुनिया हम पर थूकेगी। इसका मतलब तो यह है कि अभी हिंदुस्तान पूरा आजाद बना नहीं है और हम उसे हाथ से खो देने का सामान पैदा कर रहे हैं।

"मैं नहीं कहता कि मुसलमान हमारे साथ तकब्बरी कर सकते हैं। जो कुछ अंग्रेज के राज में था वह सब उन्हें नहीं दिया जा सकता। पृथक् निर्वाचन की वे मांगें तो हम नहीं देंगे। पृथक् निर्वाचन तो अंग्रेजों की जबरन जमाई हुई जहरी जड़ थी। पर हम उनके साथ न्याय तो करेंगे ही। उनके बच्चों को तालीम की सहूलियत उतनी ही देंगे जितनी अपने बच्चों को। बल्कि वे गरीब हों तो वे ज्यादा सहूलियत के हकदार होंगे। और अगर हम ऐसा इन्साफ करेंगे तो हम हिंदुस्तान के लोग बहादुर साबित होंगे।"

परिशिष्ट—१

बिगड़ी को और न बिगाड़िए

तारीख १५ जून १९४७ की रात को आठ बजे नई दिल्ली में हुई अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की ऐतिहासिक बैठक में भाषण करते हुए गांधीजी ने कहा—

"मेरी इच्छा थी कि मैं कुछ तैयारी करके आता। लेकिन मैं ऐसा कुछ न कर सका। इतना तो आप कबूल करेंगे कि देश के टुकड़े होने का जितना दर्द मुझे हो सकता है उतना और किसी को नहीं होगा। मैं नहीं मानता हूं कि इसके लिए कोई मुझसे ज्यादा दुःखी है। लेकिन जो हो गया उस पर मैं क्या कहूं? कांग्रेस को बनाने में मेरा कितना हाथ रहा है, आप जानते हैं। कांग्रेस कार्य-समिति क्यों बनाई गई? जब राज्य चलाना होता है तब प्रजा का ही राज्य हो तो भी मंत्री-मंडल बनाना ही पड़ता है। उसी तरह हमारी कार्य-समिति है। वह आपके नाम से काम करती है। उसको बनाये रखने या रद्द करने का आपको अधिकार है। उसने आपकी ओर से यह चीज मान ली है; इसलिए हमें यह सोचना है कि आपका धर्म क्या है और मेरा धर्म क्या है। आप इस प्रस्ताव को फेंकना चाहें तो फेंक सकते हैं; पर उसमें रद्दो-बदल नहीं कर सकते। कार्य-समिति ने यह जो कर लिया है वह किसी वजह से, समझकर किया है। और कांग्रेस, मुस्लिम लीग और ब्रिटिश सरकार तीनों की राय से यह हुआ है। योजना पूरी की-पूरी-कार्य समिति को भी पसंद नहीं है। मगर, फिर भी उसने उसे कबूल कर लिया है। मंत्री-मिशन की योजना अंग्रेजी सल्तनत ने बनाई थी। पर यह नई योजना ऐसी नहीं है। इसके बनाने में कांग्रेस और लीग दोनों ही शामिल हैं। इसको यदि आप फेंक देते हैं तो दुनिया कहेगी कि आप कितने गैर-जिम्मेदार आदमी हैं। इसलिए जिन्होंने आपके नाम से

काम किया है उनका साथ देना ही होगा। इस प्रस्ताव को फेंक देने पर सारा कारोबार कार्य-समिति के हाथ से आपको अपने हाथ में सम्हालना होगा। यदि आप इतना कर सकते हैं तो इस प्रस्ताव को आप फेंक सकते हैं। लेकिन यह भी नहीं भूलना चाहिए कि इस समय देश में शांति बनाये रखने की सबसे ज्यादा जरूरत है। यदि आपको यह विश्वास है कि इसे अस्वीकार करने से देश में अशांति और गड़बड़ी नहीं मचेगी तो भी आप इसे फेंक सकते हैं। आप लोग जो कुछ करना चाहते हैं, अच्छी तरह सोच-समझ कर करें।

"आजकल ऐसी बहुत-सी बातें होती हैं, जिनके लिए अंग्रेजी में मिसाल है कि 'सारा-का-सारा तो ऊंट निगल जाते हैं पर भुनगे से झिझकते हैं।' यानी जो निर्णय किया गया है उसके लाने में आप खुद हिस्सेदार हैं। और फिर आप कार्य-समिति की शिकायत करते हैं। उस कार्य-समिति की; जिसमें आपके आला दरजे के आदमी हैं। उन लोगों ने हमेशा यही कहा था कि हमें पाकिस्तान नहीं चाहिए और मैं तो उनमें भी पहले नंबर पर था जो पाकिस्तान से झिझकता था, पर मेरी बात जाने दो। यह निर्णय मैंने किया भी नहीं है। और वे लोग भी आज मजबूरन उसे कबूल करते हैं। वे महसूस कर रहे हैं कि देश में अब दो दल अलग-अलग हो ही गए हैं।

"लेकिन हमारा विधान ऐसा है और आपका धर्म भी है कि यदि आप मानते हैं कि वे गलती पर हैं और उन्हें हटाना चाहिए, तथा क्रांति कर देनी चाहिए और सारी बागडोर अपने हाथ में ले लेनी चाहिए, तथा ऐसा करने की आप अपने में भी ताकत महसूस करते हैं तो आपको ऐसा करने का पूरा अधिकार है। लेकिन मैं अपने में वह ताकत आज नहीं देखता हूं। अगर देखूं तो मैं भी साथ दूं। अगर मैं ताकत अनुभव करता तो अकेला बागी बन जाता पर आज मुझे वैसा सामान नहीं दीखता है।

"हमें बड़े-बड़े मसलों को तय करना है। केवल टीका-टिप्पणी करते

रहने से बड़े मसले हल नहीं होते। आलोचक तो हम बन जाते हैं पर काम करना आसान नहीं होता। कांग्रेस ने आज तक बहुत बड़े-बड़े काम किये हैं। उनका मूल्य कम नहीं है पर कांग्रेस ने आज तक राज्य का काम नहीं सम्हाला है। उस ओर उसने देखा तक नहीं है। वह ज्यादा जरूरी काम में लगी हुई थी; सब काम एक साथ नहीं किये जा सकते। जब हमारे सिर पर राज्य-भार उठाने का काम आ पड़ा तब हमने उसे ले लिया और अपने अच्छे-से-अच्छे आदमी उस काम में लगा दिये। वहां पर उन्हें बड़े-बड़े मसले तय करने पड़ते हैं। करोड़ों देशवासियों का काम उन्हें सम्हालना होता है।

"आलोचना तो मैं कर लेता हूं पर इससे आगे क्या? क्या मैं उनका भार उठा लूं? क्या मैं नेहरू बनूं, सरदार बनूं या राजेन्द्र बाबू बनूं? मुझे भी अगर आप उस काम में लगा दें तो मैं नहीं कह सकता कि मैं क्या कर पाऊंगा। लेकिन मैं इन लोगों की वकालत करने नहीं आया हूं। मेरी वकालत आज कौन सुनेगा? पर जब सभापतिजी ने कहा कि अपना मुंह तो बता जाओ। तब मुँह बताने के लिए आया हूं और चन्द बातें कह देता हूं।

"सबसे जरूरी बात यह है कि हम समय को समझें। यह समय ऐसा है कि हम सब अपनी जबान पर लगाम लगावें और वही करें जो हिन्दुस्तान के लिए भला हो।

"मैं आजकल क्या कर रहा हूं वह आपने अखबार में देखा होगा। पर मेरी जबान से आप सुनें। अगर कोई चीज मुझसे बुरी बन गई है तो मेरा धर्म है कि मैं उसे दुरुस्त करने में अपनी शक्ति लगाऊं। यह मेरे हाथ की बात है कि बुरी चीज को और भी बिगाड़ूं या उसे बेहतर बनाऊं। इस सिलसिले में मैं रामचन्द्रजी की मिसाल दूंगा। उनके पिता पागल हो गये और माता मूरख बन गई और उन्हें बनवास दे दिया। अयोध्यावासी सब दुःखी हो गये। पर अन्त में एक बुलंद चीज उसमें से बन गई। रामायण को मैं इतिहास नहीं मानता। पर

उसमें से जो पाठ मिलता है, रोज के काम का है। दस मुँह वाला रावण था यह कहना गलत होगा; पर अधर्म रूपी रावण तो था ही। राम ने बन में जाकर इस रावण को मार डाला यानी अधर्म को मार भगाया और धर्म को बचा लिया।

"यही हमें करना है। इस बुराई से भी हमें अच्छाई निकालनी है। मैं हारकर बैठ जाने वाला आदमी नहीं हूं। बचपन से बूढ़ेपन तक मेरी जिन्दगी लड़ाई में कटी है। और मेरी लड़ाई इस किस्म की है कि बुराई से भी अच्छाई पैदा हो जाती है। मिट्टी में अगर सोना है—मिट्टी ज्यादा और सोना बहुत कम है—तो भी उसको फेंकना नहीं चाहिए। बल्कि मिट्टी जैसी चीज से भी हमें सोना और हीरा भी निकाल लेना चाहिए।

"यह जो चीज बन गई है उसमें दोनों धर्मों की परीक्षा है। दुनिया देख रही है कि कौन क्या है। हमारे हाथ में जो तीन-चौथाई हिस्सा आया है उसमें हिन्दू धर्म की कसौटी होने वाली है। अगर आप सच्चे हिन्दू धर्म की उदारता दिखायंगे तो दुनिया की निगाह में उत्तीर्ण हो जायंगे। यदि नहीं तो अपनी ही ओर से आप जिना की बात मंजूर करेंगे कि मुसलमान और हिन्दू अलग-अलग राष्ट्र हैं। और हिंदू-हिंदू ही रहेंगे मुसलमान-मुसलमान ही; दोनों कभी मिल नहीं सकेंगे और दोनों का ईश्वर भी अलग-अलग है।

"इसलिए जो हिन्दू यहां इस सभा में आये हैं उनका अगर यह दावा है कि हिन्दुस्तान हमारा है और उसमें हिन्दुओं को ही सबसे उंचा मानेंगे तो उसका मतलब यही है कि कांग्रेस ने भूल नहीं की है। कांग्रेस कार्य-समिति ने ठीक ही आपके मन का किया है।

"लेकिन आपको हिन्दू धर्म को बचाना है तो आपको सच्चे हिंदू बनना है। फिर आपके यहां सिर्फ एक लाख पारसी हैं। आपके पूर्वजों ने उन्हें जगह दी है और ऐसा उदाहरण कायम किया है जो दुनिया के इतिहास में नहीं मिलता। क्या आप उन्हें मारेंगे ? और

उनसे भी थोड़े जो यहूदी हैं उनका क्या करेंगे ? आपको ऐसा करना है कि वे यहां अपनी पूरी आजादी अनुभव करेंगे ? फिर अछूतों का क्या करेंगे ? ऐसा कहा जाता है कि जो इस्लाम पैदा हुआ है वह अछूतपन को ही मिटाने के लिए पैदा हुआ है। अगर आप अब यह कहें कि अछूत कोई चीज नहीं, बनवासी जाति भी किसी काम की नहीं तो आप भी टिक सकने वाले नहीं, हैं। अगर आप सवर्ण-अवर्ण का भेद मूल से खतम करेंगे, शूद्र, अछूत, बनवासी आदि सभी को अपने बराबर मानेंगे। बुरी चीज में से भी हमारे हाथ अच्छाई आ जायगी। पंचायती राज में ऊंच-नीच का भेद रहना ही नहीं चाहिए। इसके विपरीत आप इन लोगों को और विधर्मियों को कुचलेंगे तो इसका मतलब होगा हम हिंदुस्तान को रखना नहीं चाहते पर खतम करना चाहते हैं। यदि जमीन का टुकड़ा हुआ तो हो गया पर अगर हम दिल का टुकड़ा करेंगे तो फिर कार्य-समिति ने जो किया है ठीक ही किया है।

"रियासतों का हमसे अलग होना छोटी बात नहीं है, यह बड़ी चीज है। आज और कल मैंने प्रार्थना में देशी राज्यों के बारे में काफी कहा है। यहां भी उसी बात को मैं संक्षेप में दोहरा दूंगा। मैं देशी राज्य का आदमी हूं और पहले मैं ही देशी राज वालों को डांटता था कि अपना बोझ कांग्रेस पर मत डालो; क्योंकि हम तीसरी ताकत से लड़ते थे और देशी राज्यों के लोग भी हमें लड़ाई में काफी मदद देते थे। मैंने सोचा था कि अभी उनकी शक्ति का संग्रह होने दो। पर अब अंग्रेजों के जाने के बाद हम राजाओं की मनमानी चलने नहीं दे सकते।

"जिनके दिल में आजाद बनने की बात है वे अपने दिल में सोचें कि अंग्रेजी सल्तनत ने उनका क्या भला किया है ? पराई अंग्रेजी सल्तनत के गुलाम होकर तो वे इतने वर्ष रहे। पर आज जब हिन्दुस्तानियों के हाथ में—करोड़ों जनता के हाथ में—बाग्-डोर आ रही है तो उनके मातहत वे नहीं रह सकते। सभी रियासतों

के दीवानोंसे में अदब से कहूंगा कि अगर वे विधान-सभा में आने के लिए राजाओं को नहीं समझाते तो वे राजा के प्रति बेवफाई करते हैं। हम राजाओं के दुश्मन बनना नहीं चाहते। वे आजाद रहना चाहें तो रह सकते हैं। उन्हें हम कैद नहीं करेंगे। अगर यहां रहना चाहें तो वे समझें कि उनकी रैयत -हमारे साथ है। वे अलग रहना चाहें तो भले ही पेरिस में या और कहीं चले जायं। पर यहां रहें तो अपनी प्रजा के नौकर बनकर ही रहें। पंचायती राज को समझें। यह मानें कि सब मनुष्य बराबर हैं। अपने लिए यह न कहें कि मैं अकेला ही ऊँचा हूँ। तब वे यावच्चन्द्र दिवाकरौ बने रह सकते हैं। वे उसी तरह प्रजा को सर्वसत्ता मानें जिस तरह अंग्रेजों की सर्वसत्ता मानते थे। तब वे अपने राज्य को आजादी से भोग सकते हैं। पर इस तरह नहीं जैसे अंग्रेजों के राज में मनमाना प्रजा का पैसा लूटते थे। लेकिन प्रजा की सेवा में अपने को लगा दें और सच्चे मित्र बनें।"

परिशिष्ट—२

सायंकाल की प्रार्थना

बौद्ध मंत्र

नम्यो हो रेंगे क्यो ।

सत् धर्म के प्रवर्तक भगवान् बुद्ध को नमस्कार करता हूँ ।

उपनिषत् मंत्र

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत् ।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम् ॥

इस जगत् में जो कुछ भी जीवन है वह सब ईश्वर का बसाया हुआ है। इसलिए तू ईश्वर के नाम से त्याग करके यथाप्राप्त भोग किया कर। किसी के धन की वासना न कर ।

यं ब्रह्मा वरुणेन्द्ररुद्रमरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवै-
वेंदैः साङ्गपदक्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगाः ।
ध्यानावस्थिततद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणा देवाय तस्मै नमः ॥

ब्रह्मा, वरुण, इन्द्र, रुद्र और पवन दिव्य स्तोत्रों से जिसकी स्तुति करते हैं, सामवेद का गान करने वाले मुनि, अंग, पद, क्रम और उपनिषद् सहित वेदों से जिसका स्तवन करते हैं, योगी लोग ध्यानस्थ होकर ब्रह्ममय मन द्वारा जिसका दर्शन करते हैं और सुर तथा असुर जिसकी महिमा का पार नहीं पाते, मैं उस परमात्मा को नमस्कार करता हूं ।

गीता : अध्याय २

अर्जुन उवाच

स्थितप्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य केशव ।
स्थितधीः किं प्रभाषेत किमासीत व्रजेत किम् ॥५४॥

५४. हे केशव ! स्थितप्रज्ञ अथवा समाधिस्थ के क्या लक्षण होते हैं ? स्थितप्रज्ञ कैसे बोलता, बैठता और चलता है ?

श्रीभगवानुवाच

प्रजहाति यदा कामान् सर्वान्पार्थ मनोगतान् ।
आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते ॥५५॥

५५. हे पार्थ ! जब मनुष्य मन में उठती हुई सभी कामनाओं का त्याग कर देता है और आत्मा द्वारा ही आत्मा में सन्तुष्ट रहता है, तब वह स्थितप्रज्ञ कहलाता है ।

दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः ।
वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते ॥५६॥

५६. दुःख से जो दुखी न हो, सुख की इच्छा न रखे, और राग, भय और क्रोध से रहित हो, वह स्थिर-बुद्धि मुनि कहलाता है ।

यः सर्वत्रानभिस्नेहस्तत्तत्प्राप्य शुभाशुभम् ।
नाभिनन्दति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥५७॥

५७. सर्वत्र राग-रहित होकर जो पुरुष शुभ या अशुभ की प्राप्ति में न हर्षित होता है, न शोक करता है, उसकी बुद्धि स्थिर है ।

यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः ।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥५८॥

५८. कछुआ जैसे सब ओर से अंग समेट लेता है, वैसे ही जब यह पुरुष इन्द्रियों को उनके विषयों से समेट लेता है, तब उसकी बुद्धि

स्थिर हुई कही जाती है।

विषया विनिवर्तन्ते निराहारस्य देहिनः।
रसवर्जं रसोऽप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्तते ॥५९॥

५९. देहधारी जब निराहार रहता है तब उसके विषय मन्द पड़ जाते हैं, परन्तु रस नहीं जाता। वह रस तो ईश्वर का साक्षात्कार होने से ही शान्त होता है।

यततो ह्यपि कौन्तेय पुरुषस्य विपश्चितः।
इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभं मनः ॥६०॥

६०. हे कौन्तेय! चतुर पुरुष के उद्योग करते रहने पर भी इन्द्रियां ऐसी प्रमथनशील हैं कि वे उसके मन को भी बलात्कार से हर लेती हैं।

तानि सर्वाणि संयम्य युक्त आसीत मत्परः।
वशे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥६१॥

६१. इन सब इन्द्रियों को वश में रखकर योगी को मुझमें तन्मय हो रहना चाहिए; क्योंकि अपनी इन्द्रियां जिसके वश में हैं उसकी बुद्धि स्थिर है।

ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते।
सङ्गात्संजायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते ॥६२॥

६२. विषयों का चिन्तन करने वाले पुरुष को उनमें आसक्ति उत्पन्न होती है, आसक्ति से कामना होती है, और कामना से क्रोध उत्पन्न होता है।

क्रोधाद्भवति संमोहः संमोहात्स्मृतिविभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ॥६३॥

६३. क्रोध से मूढ़ता उत्पन्न होती है, मूढ़ता से स्मृति भ्रान्त हो जाती है, स्मृति भ्रान्त होने से ज्ञान का नाश हो जाता है, और जिसका ज्ञान नष्ट हो गया वह मृतक तुल्य है।

रागद्वेषवियुक्तैस्तु विषयानिन्द्रियैश्चरन् !
आत्मवश्यैर्विधेयात्मा प्रसादमधिगच्छति ॥६४॥

६४. परन्तु जिसका मन अपने अधिकार में है और जिसकी इन्द्रियां रागद्वेष-रहित होकर उसके वश में रहती हैं, वह मनुष्य इन्द्रियों का व्यापार चलाते हुए भी चित्त की प्रसन्नता प्राप्त करता है।

प्रसादे सर्वदुःखानां हानिरस्योपजायते ।
प्रसन्नचेतसो ह्याशु बुद्धिः पर्यवतिष्ठते ॥६५॥

६५. चित्त प्रसन्न रहने से उसके सब दुःख दूर हो जाते हैं। जिसे प्रसन्नता प्राप्त हो जाती है, उसकी बुद्धि तुरन्त ही स्थिर हो जाती है।

नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना ।
न चाभावयतः शान्तिरशान्तस्य कुतः सुखम् ॥६६॥

६६. जिसे समत्व नहीं, उसे विवेक नहीं। जिसे विवेक नहीं, उसे भक्ति नहीं। और जिसे भक्ति नहीं, उसे शान्ति नहीं है। और जहां शान्ति नहीं, वहां सुख कहां से हो ?

इन्द्रियाणां हि चरतां यन्मनोऽनुविधीयते ।
तदस्य हरति प्रज्ञां वायुर्नावमिवाम्भसि ॥६७॥

६७. विषयों में भटकानेवाली इन्द्रियों के पीछे जिसका मन दौड़ता है उसका मन, जैसे वायु नौका को जल में खींच ले जाता है वैसे ही, उसकी बुद्धि को जहां चाहे वहां खींच ले जाता है।

तस्माद्यस्य महाबाहो निगृहीतानि सर्वशः ।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥६८॥

६८. इसलिए हे महाबाहो ! जिसकी इन्द्रियां चारों ओर के विषयों से निकलकर अपने वश में आ जाती हैं, उसकी बुद्धि स्थिर हो जाती है।

या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी ।
यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः ॥६९॥

६९. जब सब प्राणी सोते रहते हैं, तब संयमी जागता रहता है। जब लोग जागते रहते हैं, तब ज्ञानवान् मुनि सोता रहता है।

आपूर्यमाणमचलप्रतिष्ठं
समुद्रमापः प्रविशन्ति यद्वत्।
तद्वत्कामा यं प्रविशन्ति सर्वे
स शान्तिमाप्नोति न कामकामी ॥७०॥

७०. नदियों के प्रवेश से भरते रहने पर भी जैसे समुद्र अचल रहता है, वैसे ही जिस मनुष्य में संसार के भोग शान्त हो जाते हैं, वही शान्ति प्राप्त करता है, न कि कामना वाला मनुष्य।

विहाय कामान्यः सर्वान्पुमांश्चरति निःस्पृहः।
निर्ममो निरहङ्कारः स शान्तिमधिगच्छति ॥७१॥

७१. सब कामनाओं का त्याग करके जो पुरुष इच्छा, ममता और अहंकार-रहित होकर विचरता है वही शान्ति पाता है।

एषा ब्राह्मी स्थितिः पार्थ नैनां प्राप्य विमुह्यति।
स्थित्वास्यामन्तकालेऽपि ब्रह्मनिर्वाणमृच्छति ॥७२॥

७२. हे पार्थ ! ईश्वर को पहचानने वाले की स्थिति ऐसी होती है। उसे पाने पर फिर वह मोह के वश नहीं होता और यदि मृत्यु-काल में भी ऐसी ही स्थिति टिकी रहे, तो वह ब्रह्मनिर्वाण पाता है।

एकादश व्रत

अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य असंग्रह।
शरीरश्रम अस्वाद सर्वत्र भयवर्जन ॥
सर्वधर्मी समानत्व स्वदेशी स्पर्शभावना।
ही एकादश सेवावी नम्रत्वे व्रतनिश्चये ॥

अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, शारीरिक श्रम, अस्वाद, सब जगह भय का त्याग, सब धर्मों के साथ समानभाव, स्वदेशी वर्त

का पालन, स्पर्शास्पर्श भावना का त्याग—इन ग्यारह व्रतों को पालन करने का नम्रता पूर्वक निश्चय करता हूं।

कुरान की आयत

अऊज़ु बिल्लाहि मिनश् शैत्वानिर् रजीम्।
बिस्मिल्लाहिर् रहमानिर् रहीम्॥
अल् हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आलमीन्।
अर् रह्‌मानिर् रहीमि मालिकि यौमिद् दीन्।
ईयाक नअबुदु व ईयाक नस्तईन्।
इह्‌दिनस् सिरात्वल् मुस्तक़ीम्
सिरात्वल् लज़ीन अन्अम्त अलै हिम्।
ग़ैरिल् मग् दूबि अलै हिम् व लद् द्वॉल्लीन्।

मैं पापात्मा शैतान के हाथों से (अपने को) बचाने के लिए परमात्मा की शरण लेता हूँ। हे प्रभो! तुम्हारे नाम का ही स्मरण करके मैं सारे कामों का आरम्भ करता हूं। तुम दया के सागर हो, तुम कृपामय हो। तुम अखिल विश्व के पालनहार हो। तुम ही मालिक हो। मैं तुम्हारी ही मदद मांगता हूं। आखिरी न्याय देने वाले तुम ही हो। तुम मुझे सीधा ही रास्ता दिखाओ, उन्हीं का चलने का रास्ता दिखाओ जो तुम्हारी कृपा-दृष्टि पाने के काबिल हो गये हैं, जो तुम्हारी अप्रसन्नता के योग्य ठहरे, जो गलत रास्ते से चले हैं उनका रास्ता मुझे मत दिखाओ।

ईश्वर एक है, वह सनातन है, वह निरालम्ब है, वह अज है, अद्वितीय है, सारी सृष्टि को पैदा करता है, उसे किसी ने पैदा नहीं किया।

जरतुश्ती गाथा

मज़दा अत मोइ वहिश्ता
स्रवा ओस्चा श्योथनाचा वओचा।

ता—तू वहू मनंघहा
अशाचा इषुदेम स्तुतो
वमा का अथूा अहूरा फेरषेम्
वस्ना हइ श्येम् दाओ अहूम्

ऐ होरमज्द ! सर्वोत्तम धर्म के वचन और कर्म के विषय मुझे बता जिससे मैं सच्ची राह पर रह सकूं और तेरी ही महिमा को गा सकूं। तू अपनी इच्छा के अनुसार मुझे चला। मेरा जीवन चिर नूतन रहे और वह मुझे स्वर्ग-सुख का दान करे।

गांधी-विचार-धारा की

कुछ पुस्तकें—

१. गांधी-अभिनंदन-ग्रंथ
२. अहिंसा की शक्ति
३. खादी-मीमांसा
४. बापू
५. विनोबा के विचार
६. स्वराज्य-शास्त्र
७. मनन
८. साधना के पथपर
९. गांधीवादी विधान
१०. जड़ की बात
११. आत्मकथा (राजेन्द्रबाबू)
१२. विचार-पोथी (विनोबा)

सस्ता साहित्य मंडल
नई दिल्ली